व्रजभाषा सूर-कोश

(तृतीय खंड)

निर्देशक

डॉ० दीनदयालु गुप्त, एम० ए०, एल-एल० बी०, डी० लिट्०,

प्रोफेसर तथा अध्यक्ष हिंदी-विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय

संपादक

प्रेमनारायण टंडन, एम० ए०,

प्राध्यापक, हिंदी-विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय



प्रकाशक

लखनऊ विश्वविद्यालय

तीसरे खंड की शब्द-संख्या—५४२१

तीनों खंडों की शब्द-संख्या—१५६१३

मूल्य—डाकव्ययसहित ४)

स्थायी ग्राहकों से ३)

गुणा—संज्ञा पुं [सं. गुणन] गुणन क्रिया, जरब।
गुणाकर—वि. [सं. गुण+आकर] गुणनिधान।
गुणाढ्य—वि. [सं. गुण+आढ्य] गुण-संपन्न, गुणवान।
गुणातीत—वि. [सं. गुण+अतीत] गुणों के परे।
संज्ञा पुं.—परमेश्वर।
गुणानुवाद—संज्ञा पुं. [सं.] बड़ाई, प्रशंसा।
गुणित—वि. [सं.] गुणा किया हुआ।
गुणी—वि. [सं. गुणिन] गुणवाला, गुणवान।
संज्ञा पुं.—(१) निपुण या कुशल व्यक्ति। (२) जन्त्र मन्त्र या झाड़ फूँक करनेवाला।
गुणीन—वि. [हिं. गुणा] (१) गुणा किया गया। (२) गिना गया, गिनती में आया।
गुण्य—संज्ञा पुं. [सं.] (१) वह अंक जिसे गुणा करना हो। (२) गुणवान व्यक्ति।
गुत्ता—संज्ञा पुं. [देश.] (१) लगान पर खेत देने की रीति। (२) लगान, भूमिकर।
गुत्थमगुत्था—संज्ञा पुं [हिं. गुथना] (१) उलझाव, फँसाव। (२) हाथापाई, भिड़ंत।
गुत्थी—संज्ञा स्त्री. [हिं. गुथना] (१) गिरह, ग्रंथि। (२) समस्या, उलझन।
गुथति—क्रि. स. [हिं. गूथना] गूँथती है। उ.—वाके गुनगन गुथति माल कबहूँ उरते नहिं छोरी—१० उ.११६।
वि.—गूथी हुई, बनायी हुई।
गुथना—क्रि. अ. [सं. गुत्सन, प्रा. गुत्थन] (१) बँधना, फँसना, नथना। (२) टाँका या गूँथा जाना। (३) बहुत मोटी और भद्दी सिलाई होना। (४) हाथापाई करना, भिड़ जाना।
गुथवाना—क्रि. स. [हिं. गूथना] गूथने का काम कराना।
गुदकार, गुदकारा—वि. [हिं. गूदा या गुदार] (१) गूदेदार। (२) गुदगुदा, मोटा।
गुदगुदा—वि. [हिं. गूदा] (१) मुलायम। (२) गूदेदार, मांस या गूदे से युक्त।
गुदगुदाना—क्रि. अ. [हिं. गुदगुदा] (१) गुदगुदी करना। (२) हँसी के लिए छेड़ना। (३) चित्त में चाह या उत्कंठा पैदा करना।
गुदगुदी—संज्ञा स्त्री. [हिं. गुदगुदाना] (१) मीठी खुजली या सुरसुराहट। (२) चाव (३) उत्कंठा। (४) उमंग।
गुदड़िया—वि. [हिं. गुदड़ी] गुदड़ीवाला।
गुदड़ी—संज्ञा स्त्री. [हिं. गूदड़] फटे-पुराने कपड़ों से बना ओढ़ना या बिछौना, कंथा।
मुहा.—गुदड़ी के लाल—साधारण स्थान में बहुमूल्य वस्तु या महान व्यक्ति। गुदड़ी का लाल—ऐसा धनी या गुणी जिसके वेश से धन या गुण का पता न लगे।
गुदन—संज्ञा स्त्री. [हिं. गोदना] स्त्री जो गोदना गुदाये हो।
गुदना—संज्ञा पुं. [हिं. गोदना] गोदा हुआ चिन्ह।
क्रि. अ.—चुभना, धँसना, गड़ना।
गुदर—संज्ञा स्त्री. [फ़ा. गुजर] (१) निर्वाह, निभना। (२) निवेदन, प्रार्थना। (३) उपस्थिति, हाजिरी।
गुदरना—क्रि. अ. [फा. गुजर + हिं. ना (प्रत्य.)] (१) त्याग करना, अलग रहना। (२) हाल कहना, निवेदन करना। (३) बीतना, गुजरना। (४) उपस्थित या पेश किया जाना।
गुदरानना, गुदराना—क्रि. स. [फ़ा. गुजरान+हिं. ना (प्रत्य.)] (१) भेंट देना, सामने रखना। (२) हाल कहना, निवेदन करना।
गुदरिया, गुदरी—संज्ञा स्त्री. [हिं. गुदड़ी] गुदड़ी, कंथा। उ.—अब कंथा एकै अति गुदरी क्यों उपजी मति मन्द—३२३१।
गुदरैन—संज्ञा स्त्री. [हिं. गुदरना] (१) पढ़ा हुआ पाठ सुनाना। (२) परीक्षा, इम्तहान।
गुदाना—क्रि. स. [हिं. गोदना (प्रे.)] गोदने का काम कराना या गोदने की प्रेरणा देना।
गुदार—वि. [हिं. गूदा] गूदेदार, मांसल।
गुदारना—क्रि. स. [हिं. गुदरना] (१) ध्यान न देना। (२) सेवा में उपस्थित करना। (३) बिताना, गुजारना।
गुदारा—संज्ञा पुं [फ़ा. गुज़ारा] (१) नाव पर नदी पार करना। (२) नाव की उतराई। (३) निर्वाह।
वि. [हिं. गुदार] गूदेदार, मांसल।
गुद्दी, गुद्दी—संज्ञा स्त्री. [हिं. गुद्दी] (१) गुद्दी, ल्योंड़ी; गरदन के पीछे का भाग। उ.—गुदी चाँपि लै जीभ

मैंरोरी—१०-५७। (२) मींगी, गिरी।

मुहा.—आँखें गुद्दी में होना— (१) दिखायी न देना। (२) समक्ष में न आना। गुद्दी नापना—गुद्दीपर चाँटा (धौल) देना। गुद्दी से जीभ खींचना—जबरन खींचना, कड़ा दण्ड देना।

(३) हथेली का गुदगुदा भाग।

गुन—संज्ञा पुं. [सं. गुण] (१) किसी वस्तु या व्यक्ति की विशेषता या धर्म जो उससे अलग न हो सके। उ.—वेद धरत न सुन्न गुन के नखत टारन केर—सा. ६०। (२) सत्व, रज और तम। उ.—रूप-रेख-गुन-जांति, जुगति बिनु निरालंब कित धावै—१-२। (३) कला, विद्या। उ.—तंत्र न चलै, मन्त्र नहिं लागै, चले गुनी गुन हारे—३२५४। (४) प्रभाव, फल। (५) शील, सद्वृत्ति, सदाचरण, पुण्य कार्य। उ.—(क) तिनुका सौं अपने जन कौ गुन मानत मेरु समान। सकुचि गनत अपराध समुद्रहिं बूँद-तुल्य भगवान—१-८। (ख) ऐसैं कहाँ कहाँलगि गुनगन लिखत अन्त नहिं लहिए—१-११२। (६) करनी, करतूत (व्यंग्य)। उ.—लरिकाइँ तें करत अचगरी मैं जाने गुन तबहीं। ८०६। (ख) कौनैं गुन बन चली बधू तुम, कहि मोसौं सचि भाउ—६-४४। (ग) सुनहु महरि अपने सुत के गुन—१०-३०३। (घ) तुम्हरे गुन सब नीके जाने—३६१। (७) विशेषण। (८) तीन की संख्या। (९) प्रकृति। (१०) रस्सी, तागा, डोरी। उ.—(क) इन तौ करी पाछिले की गति गुन तोरयौ बिच धार—१-१७५। (ख) तमहर सुत गुन आदि अन्त कवि का मतिमन्त बिचारो—सा. ४०।

प्रत्य.—[सं. गुण] एक प्रत्यय जो संख्यावाची शब्दों के अन्त में जुड़कर उतने ही गुण होना सूचित करता है। उ.—गिरिजा पितु पितु पितु ही ते सौ गुन सी दरसावै—सा. १५।

क्रि. स. [हिं. गुनना] मनन करके, सोच विचार कर। उ. (क) हम पढ़ि गुनकै सब बिसरायौ—८९६। (ख) गिरिजा-पति-पतनी पति जा सुत गुनगुन गनन उतारै—सा. ५।

गुन अकास— संज्ञा पुं. [सं. गुण + आकाश] आकाश का गुण, शब्द। उ.—गुन अकास को सिद्ध साधना सास्त्र करत बिस्तार—सा.१०४।

गुनकारी—वि. [सं. गुण + हिं. कारी] लाभदायक, गुण करनेवाली। उ.—सिय रिपु पितु सुत बंधु तात हित जाके चरन-कमल गुनकारी—सा. १०३।

गुनगुना—वि. [अनु.] नाक में बोलनेवाला।

वि. [हिं. कुनकुना] मामूली गरम।

गुनगुनाना — क्रि. अ. [अनु.] (१) गुनगुन शब्द करना। (२) नाक में बोलना। (३) धीरे-धीरे गाना।

गुनगौरि—संज्ञा स्त्री. [सं. गुण + गौरी] (१) पार्वती के समान सौभाग्यवती स्त्री। (२) पतिव्रता नारी।

गुनज्ञा—वि. [सं. गुणज्ञ] (१) (गुणों के) पारखी। उ.—सूर स्याम सबके सुखदायक लायक गुननि गुनज्ञा—पृ० ३४६ (४४)।

गुनति—क्रि. अ. [हिं. गुनना] गुन रही है, सोच-विचार रही है। उ.—मेरौ कह्यौ नाहिंन सुनति। तबहि ते इकटक रही है, कहा धौं मन गुनति—७१६।

गुनन—संज्ञा पुं. [हिं. गुनना] मनन, विचार।

संज्ञा पुं. बहु. [हिं. गुण] (१) अनेक गुण। (२) करनी, करतूत (व्यंग्य)। उ.—उत होरी पढ़त ग्वार इत गारी गावति ए नंद नहीं जाये तुम महरि गुनन भारी—२४२६। (३) रस्सी, डोरी, तागा। उ.—मोल की बिधु कीजिए, उर बिनु गुनन की माल—सा. ८८।

गुनना—क्रि. अ. [हिं. गुणन] (१) मनन या विचार करना। (२) सोचना, समझना।

गुननि—संज्ञा पुं. बहु. [सं. गुण + नि (प्रत्य.)] अनेक गुण या विशेषताएँ। उ.—काहे न निस्तारत प्रभु, गुननि अगनि-हीन—१-१८२।

गुनभरी—वि. स्त्री. [सं. गुण + हिं. भरना, भरी] गुण वाली। उ.—सूर राधिका गुनभरी कोउ पार न पावै—१५४५।

गुनमनि—वि. [सं. गुण + मणि] गुणियों में श्रेष्ठ। उ.—ज्ञाननमनि, विद्यामनि, गुनमनि, चतुरनमनि चतुराई—१७७०।

गुन लवन—संज्ञा पु. [सं. गुण + लवण] लवण का गुण, खारापन, खारा। उ.—सिंधुजा गुन लवन कीन्हो अंत ते पहिचान—सा. ११४।

गुनवंत—वि. पुं. [सं. गुण + वंत (प्रत्य.)] जिसमें गुण हों, जो गुणवान हो।

गुनवती—वि. स्त्री. [सं. गुण + हिं. वती] गुणवाली।

गुनहगार—वि. [फ़ा.] (१) पापी। (२) दोषी, अपराधी। उ.—सिंधु तें काढ़ि संभु-कर सौंप्यो गुनहगार की नाईं—३०७७।

गुनहगारी—संज्ञा. स्त्री. [फ़ा. गुनाह] (१) पाप। (२) दोष, अपराध।

गुनही—संज्ञा पुं. [फ़ा. गुनाह] गुनहगार, अपराधी।

क्रि. स. [हिं. गुनना] समझे, बूझे, जाने। उ.—को गति गुनही सूर स्याम सँग काम बिमोह्यौ कामिनि—पृ. ३४४ (३४)।

गुना—संज्ञा पुं. [सं. गुणन] (१) एक प्रत्यय जो संख्यावाची शब्दों के अंत में लगता है। (२) गुण।

गनाधि—वि. [सं. गुण + आधि] गुणयुक्त, सगुण। उ.—निगमन नेति कह्यौ निर्गुन सों कह गुनाधि बरनिहै सूर नर—१६०६।

गुनावन—संज्ञा स्त्री. [हिं. गुनना] सोचना, विचारना।

गुनाह—संज्ञा पुं. [फ़ा.] (१) पाप। (२) अपराध।

गुनाहगार—वि. [फ़ा.] (१) पापी। (२) दोषी।

गुनाहगारी—संज्ञा स्त्री. [फ़ा.] पापी, दोषी या अपराधी होने का भाव।

गुनाही—संज्ञा पुं. [फ़ा.](१) पापी। (२) दोषी।

गुनि—क्रि. स. [हिं. गुनना] समझकर, सोचकर। उ.—(क) हरि सौं ठाकुर और न जन कौं।...। लग्यौ फिरत सुरभी ज्यौं सुत सँग, औचट गुनि गृह बन कौं—१-६। (ख) तुमहीं मन मैं गुनि धौं देखौ बिनु तप पायौ कासी—२६३७।

गुनिनि—वि. बहु. [हिं. गुणी] झाड़-फूँक करने वाले, जंत्र-मंत्र जाननेवाले। उ.—जंत्र-मंत्र कह जानै मेरौ? यह तुम जाइ गुनिनि कौं बूझौ, इहाँ करति कत फेरौ—७५३।

गुनियत—क्रि. स. [हिं. गुनना] सोचता-विचारता है, समझता-बूझता है। उ.—कैसो कनक मेखला कछनी यह मन गुनियत हैं—१४१२।

गुनिया, गुनियाला—वि. [हिं. गुणी] गुणवान्, गुणी।

संज्ञा स्त्री. [हिं. कोन] राजों, बढ़इयों आदि का गोनिया नामक औजार।

संज्ञा पुं. [सं. गुण = रस्सी] वह मल्लाह जो नाव की गून खींचता है, गुनरखा।

गुनिये—क्रि. स. [हिं. गुनना] समझिए, सोचिए। उ.—कंचन कलस गढ़ाये कब हम देखे धौं यह गुनिये—११३०।

गुनी, गुनीला—वि. [सं. गुणिन, हिं. गुणी] गुण वाला, गुणयुक्त, सगुण। उ.—गुन बिना गुनी, सुरूप रूप बिनु नाम बिना श्री स्याम हरी—१-११५।

संज्ञा पुं.—(१) कला-कुशल व्यक्ति। उ.—सुनि आनंदे सब लोग, गोकुल-गनक-गुनी – १०-२४। (२) झाड़-फूँक या जंत्र-मंत्र जाननेवाला। उ.—(क) स्याम भुजंग डस्यौ हम देखत, ल्यावहु गुनी बोलाईं—७४३। (ख) तंत्र न फुरै, मंत्र नहिं लागै, चले गुनी गुन हारे—३२५४।

क्रि. स. [हिं. गुनना] सोची, मानी, समझी। उ.—अब लौं ऐसी नाहिं सुनी। जैसी करी नंद के नंदन अद्भुत बात गुनी—सा. १०४।

गुने—क्रि. अ. बहु. [हिं. गुनना] मनन किये, सोचे, विचारे। उ.—सूत ब्यास सौं हरि-गुन सुने। बहुरौ तिन निज मनमैं गुने—१-२२८।

गुनोबर—संज्ञा पुं. [फ़ा. सनोबर] चिलगोजे का वृक्ष।

गुन्नी—संज्ञा स्त्री. [सं. गुण, हिं. गून = रस्सी] एक कोड़ा जिससे ब्रजवासी होली पर मार करते हैं।

गुन्यो—क्रि. अ. [हिं. गुनना] मनन किया, विचार किया। उ.—सुक सौं नृपति परीछित सुन्यौ। तिहिं पुनि भली भाँति करि गुन्यौ—१-२२७।

गुप—संज्ञा पुं. [अनु.] सन्नाटा, सूनसान।

गुपचुप—क्रि. वि. [हिं. गुप्त + चुप] छिपाकर, चुपचाप।

संज्ञा स्त्री.— (१) एक मिठाई। (२) एक खेल। (३) एक खिलौना।

गुपाल—संज्ञा पुं. [सं. गोपाल] श्रीकृष्ण।

गुपुत, गुप्त—वि. [सं. गुप्त] (१) छिपा हुआ, अप्रकट। उ.—(क) राजहु भए, तजत नहिं लोमहिं गुप्त नहीं जदुराइ—३११४। (ख) एक केहरि एक हंस गुपुत

रहै, तिनहिं लग्यौ यह गात—सा. उ.—३।

यौ.—जाति न गुप्त करी—छिपती नहीं। उ.—कछु इक अंगनि की सहिदानी, मेरी दृष्टि परी।……। मृग मूसी नैननि की सोभा, जाति न गुपुत करी—६-६३।

(२) जो प्रकट करने योग्य न हो, रहस्यपूर्ण। उ.—गुप्त मते की बात कहौ जनि काहू के आगे—३२२७। (३) जो शीघ्र समझ में न आ सके, गूढ़। (४) रक्षित।

संज्ञा पुं. [सं.] (१) वैश्यों की एक पदवी या जाति। (२) एक प्राचीन भारतीय राजवंश।

गुप्त काशी—संज्ञा स्त्री. [सं.] एक तीर्थ जो हरद्वार और बदरीनाथ के बीच में है।

गुप्तचर—संज्ञा पुं. [सं.] भेदिया, जासूस।

गुप्त दान—संज्ञा पुं. [सं.] दान जिसे कोई न जाने।

गुप्त मार—संज्ञा स्त्री. [सं. गुप्त + हिं. मार] (१) भीतरी चोट या आघात। (२) छिपाकर किया हुआ अनिष्ट।

गुप्ता—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) नायिका जो सुरति छिपा ले। (२) गुप्त रूप से रखी हुई अविवाहिता स्त्री।

गुफा—संज्ञा स्त्री. [सं. गुहा] कंदरा, गुहा।

गुबर्धन—संज्ञा पुं. [सं. गोवर्द्धन] गोवर्द्धन पर्वत। उ.—सूर प्रभु कर तैं गुबर्धन धरयौ धरनि उतारि—६६४।

गुबार—संज्ञा पुं. [अ.] (१) गर्द, धूल। (२) दबाया हुआ क्रोध, दुख आदि मनोभाव।

गुबिंद—संज्ञा पुं. [सं. गोविंद] श्रीकृष्ण।

गुब्बाड़ा, गुब्बारा—संज्ञा पुं. [हिं. कुप्पा] रबड़ या कागज का थैलीनुमा एक खिलौना।

गुम—संज्ञा पुं. [फ़ा.] (१) छिपा हुआ। (२) अप्रसिद्ध। (३) खोया हुआ।

गुमक—संज्ञा स्त्री. [सं. गमक = जाने या फैलनेवाला] महक, सुगंध।

संज्ञा पुं.—(१) जानेवाला। (२) सूचक, बोधक। (३) तबले की गंभीर ध्वनि।

गुमकना—क्रि. अ. [सं. गम] किसी पदार्थ आदि के भीतर ही भीतर शब्द का गूँजना।

गुमका—संज्ञा पुं. [देश.] भूसी से दाना अलगाना।

गुमकि—क्रि. स. [हिं. गुमकना] (हृदय में) शब्द गूँजकर, क्रोध से भरकर, धड़क कर। उ.—धमकि मारयौ घाउ गुमकि हृदय रह्यौ झमकि गहि केस लै चले ऐसे—२६१५।

गुमची—संज्ञा स्त्री. [सं. गुंजा] गुंजा, घुँघची।

गुमटा—संज्ञा स्त्री. [देश.] एक कीड़ा।

संज्ञा पुं. [सं. गुंबा + टा (प्रत्य.)] मत्थे या सिर की सूजन।

गुमटी—संज्ञा स्त्री. [फ़ा. गुंबद] (१) ऊपरी छत। (२) गोलाकार घर। (३) चोट के कारण सिर या माथे पर आनेवाली सूजन।

गुमना—क्रि. अ. [फ़ा. गुम] खो जाना।

गुमनाम—वि. [फ़ा.] जिसे कोई जानता न हो।

गुमर—संज्ञा पुं. [फ़ा. गुमान] (१) घमंड। (२) दबाया हुआ क्रोध आदि भाव, गुबार। (३) कानाफूसी, धीरे धीरे की हुई बात।

गुमराह—वि. [फ़ा.] (१) भूला-भटका। (२) जो उचित मार्ग पर न चले, कुमार्गी।

गुमराही—संज्ञा स्त्री. [फ़ा.] (१) भूल। (२) कुमार्ग।

गुमान—संज्ञा पुं. [फ़ा.] (१) घमंड, अहंकार, गर्व। उ.—(क) दधि लै मथति ग्वालि गरबीली।……। भरी गुमान बिलोकति ठाढ़ी, अपनैं रंग रँगीली—१०-२६६। (ख) बृन्दाबन की बीथिनि तकि तकि रहत गुमान समेत। इन बातनि पति पावत मोहन जानत होहु अचेत—१०३५। (२) अनुमान। (३) लोगों की बुरी धारणा, लोकापवाद।

गुमाना—क्रि. स. [फ़ा. गुम] खोना, गँवाना।

गुमानी—वि. [हिं. गुमान] घमंडी, अभिमानी।

गुमाश्ता, गुमास्ता—संज्ञा पुं. [फ़ा.] वह कर्मचारी जो माल खरीदने-बेचने पर नियुक्त हो।

गुमिटना—क्रि. अ. [सं. गुंफित] लिपटना।

गुमेटना—क्रि. स. [सं. गुंफित] लपेटना।

गुम्मट, गुम्मर—संज्ञा पुं. [देश.] (१) गुंबद, गुंबज। (२) चेहरे या शरीर के किसी अंग पर गोल सूजन, मसा या मांस का लोथड़ा।

गुरंब, गुरंबा—संज्ञा पुं. [हिं. गुड़ंबा] गुड़ की चाशनी में पगाया हुआ पाग।

गुर—संज्ञा पुं. [सं. गुड़] कड़ाह में गाढ़ा करके जलाया हुआ ऊख का रस, गुड़। उ.—(क) रस लैलै औटाइ करत गुर, डारि देत है खोई—१-६३। (ख) गूँगे गुर की दसा भई है पूरन स्याम सोहाग सही—१६८२। (ग) अति बिचित्र लरिका की नाईं गुर देखाइ बौरावहिं—२६८५।

संज्ञा पुं. [हिं. गुरू] अध्यापक, उपदेशक, आचार्य। उ.—तुम गुर होहु और जो सीखै तिनकी समुझ सहेली—सा. ८४।

संज्ञा [सं. गुर मंत्र] मूलमंत्र, सार, तत्व की बात। उ.—सूर भजि गोबिंद के गुन, गुर बताए देत—१-३११।

संज्ञा पुं. [सं. गुण] तीन की संख्या।

वि. [सं. गुरु] (१) भारी, बड़ा।

गुरगा—संज्ञा पुं. [सं. गुरुग] (१) चेला, शिष्य। (२) टहलुआ, नौकर। (३) दूत, चर, गुप्तचर।

गुरचियाना—क्रि. अ. [हिं. गुरुच] सिकुड़ना।

गुरची—संज्ञा स्त्री. [हिं. गुरुच] सिकुड़न।

गुरचों—संज्ञा स्त्री. [अनु.] कानाफूसी, गपचुप बात।

गुरज—संज्ञा पुं. [हिं. गुर्ज] गदा, सोंटा।

संज्ञा पुं. [फ़ा. बुर्ज़] गुर्ज, बुर्ज।

गुरदा—संज्ञा पुं. [फ़ा.] (१) कलेजे के पास का एक अंग। (२) साहस, हिम्मत। (३) छोटी तोप। (४) बड़ा चमचा।

गुरबरा—संज्ञा पुं. [हिं. गुड़ + बड़ा=पीठी की गोल चकतियाँ] उर्द की पीठी के बड़े जो गुड़ के रस में या उसकी चटनी में भिगोये गये हों। उ.—मूँग-पकौरा पनौ पतबरा। इक कोरे, इक भिजे गुरबरा—३६६।

गुरमुख—वि. [हिं. गुरु + मुख] गुरु से मंत्र लेनेवाला, जिसने दीक्षा ली हो, दीक्षित।

गुरम्मर—संज्ञा पुं. [हिं. गुड़ + अंब] आम का वह वृक्ष जिसके फल खूब मीठे हों।

गुरवी—वि. [सं. गर्व] घमंडी, अहंकारी।

गुराई—संज्ञा स्त्री. [हिं. गोरा] गोरापन।

गुराब—संज्ञा पुं. [देश.] तोप लादने की गाड़ी।

गुराव—संज्ञा पुं. [हिं. गुरिया] (१) चारे के टुकड़े। (२) चारा काटने का हथियार, गड़ासा।

गुरिंदा—संज्ञा पुं. [फ़ा. गोइंदा] गुप्तचर, भेदिया।

गुरिद—संज्ञा पुं. [फ़ा. गुर्ज़] गदा या सोंटा।

गुरिया—संज्ञा स्त्री. [सं. गुटिका] (१) माला आदि का दाना, मनका या गाँठ। (२) छोटा टुकड़ा।

गुरीरा, गुरीला—वि. [हिं. गुड़+ईला (प्रत्य.)] (१) गुड़ की तरह मीठा। (२) सुन्दर, बढ़िया।

गुरु—वि. [सं.] (१) बड़ा, लम्बा-चौड़ा। (२) भारी, वजनी। (३) जो कठिनता से पके या पचे।

संज्ञा पुं.—(१) देवताओं के आचार्य, बृहस्पति। (२) बृहस्पति नायक ग्रह। उ.—लटकन लटकि रहे भ्रू ऊपर रंग रंग मनिगन पोहे री। मानहु गुरु सनि-सुक्र एक ह्वै लाल भाल पर सोहै री—१०-१३६। (३) पुष्य नक्षत्र। (४) कुलगुरु, कुलाचार्य। (५) किसी मन्त्र का उपदेष्टा। (६) शिक्षक, उस्ताद। (७) दीर्घ मात्रावाला अक्षर। (८) वह व्यक्ति जो विद्या, वय, पद आदि में बड़ा हो। उ.—सूरज दोष देत गोबिंद कौं गुरु लोगनि न लजात—१०-२६४। (९) ब्रह्मा। (१०) विष्णु। (११) शिव। (१२) कुमंत्रणा देनेवाला व्यक्ति, गुरु घंटाल (व्यंग्य)। उ.—एक हरि चतुर हुते पहिले ही अब बहुतै उन गुरु सिखई—३३०४।

गुरु असुर—संज्ञा पुं. [सं. असुर + गुरु] दैत्यों के गुरु शुक्राचार्य। उ.—नील सेत अरु पीत लाल मनि लटकन भाल रुलाई। सनि गुरु-असुर देवगुरु मिलि मनु-भौम सहित समुदायी—१०-१०८।

गुरुआइन—संज्ञा स्त्री. [सं. गुरु+हिं. आइन (प्रत्य.)] (१) गुरु की स्त्री। (२) अध्यापिका।

गुरुआई—संज्ञा स्त्री. [सं. गुरु+हिं. आई (प्रत्य.)] (१) गुरु का धर्म। (२) गुरु का काम। (३) चालाकी, धूर्तता।

गुरुआनी—संज्ञा स्त्री. [सं. गुरु + आनी (प्रत्य.)] गुरु की स्त्री। (२) अध्यापिका।

गुरुकुल—संज्ञा पुं. [सं.] आचार्य का निवास स्थान जहाँ रहकर ही विद्यार्थी शिक्षा प्राप्त करें।

गुरुघ्न—संज्ञा पुं. [सं.] गुरु का वध करनेवाला।

गुरुच—संज्ञा स्त्री. [सं. गुंडुची] एक बेल।

गुरुज—संज्ञा पुं. [फ़ा. गुर्ज] गदा, सोंटा।

संज्ञा पुं. [अ. बुर्ज] (१) किले की बुर्जी, गरगज। (२) मीनार या अन्य इमारत का ऊपरी भाग।

गुरुजन—संज्ञा पुं. [सं.] विद्या, बुद्धि, वय, पद आदि में बड़े, पूज्य व्यक्ति।

गुरुता, गुरुताई—संज्ञा स्त्री. [सं. गुरुता] (१) भारीपन। (२) बड़प्पन। (३) गुरु या आचार्य का कर्तव्य।

गुरुत्व—संज्ञा पुं. [सं.] (१) भारीपन। (२) बड़प्पन।

गुरुत्व-केंद्र—संज्ञा पुं. [सं.] किसी पदार्थ का वह विंदु या स्थान जिसे किसी नोक पर टिकाने से वह पदार्थ ठीक ठीक तुल जाय, इधर उधर झुका न रहे।

गुरुत्वाकर्षण—संज्ञा पुं. [सं.] वह आकर्षण जिसके द्वारा पृथ्वी पर सब पदार्थ गिरते हैं।

गुरुदक्षिणा—संज्ञा स्त्री. [सं.] भेंट या दक्षिणा जो शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात आचार्य को दी जाय।

गुरुद्वारा—संज्ञा पुं. [सं. गुरु + द्वार] (१) आचार्य का निवास स्थान। (२) सिखों का पूज्य स्थान।

गुरु-बांधव—संज्ञा पुं. [सं गुरु + बन्धु, हिं. बांधव] एक ही गुरु के शिष्य, गुरु-भाई।

गुरुबिनी—संज्ञा स्त्री. [सं. गुर्विणी] गर्भवती स्त्री।

गुरुभाई—संज्ञा पुं. [सं. गुरु + हिं. भाई] एक ही गुरु के शिष्य, गुरु-बांधव।

गुरुमुख—वि. [सं. गुरु + मुख] जिसने गुरुमंत्र लिया हो, दीक्षित, गुरु के प्रति कृतज्ञ या नम्र। उ.—दुरजोधन कैं कौन काज जहँ आदर भाव न पइयै। गुरुमुख नहीं बड़े अभिमानी, कापै सेवा करइयै—१-२३६।

गुरुमुखी—संज्ञा स्त्री. [सं. गुरु + हिं.मुखी] पंजाब में प्रचलित एक लिपि जो देवनागरी का ही एक रूप है।

गुरुबिनी—संज्ञा स्त्री. [सं. गुर्विणी] गर्भवती।

गुरुवार—संज्ञा पुं. [सं.] बृहस्पति का दिन।

गुरुसिंह—संज्ञा पुं. [सं.] एक पर्व।

गुरू—संज्ञा पुं. [सं. गुरु] अध्यापक। उ.—बड़े गुरु की बुद्धि बड़ी वह काहू को न पत्यैहै—१२६३।

गुरेरना—क्रि. स. [सं. गुरु=बड़ा + हेरना = ताकना] आँखें फाड़ फाड़ कर देखना, घूरना।

गुरेरा—संज्ञा पुं. [हिं. गुलेला] मिट्टी की गोली जो गुलेल से चलायी जाती है।

गुर्ज—संज्ञा पुं. [फ़ा. गुर्ज़] गदा, सोंटा।

संज्ञा पुं. [फ़ा. बुर्ज] किले का गोलाकार स्थान जहाँ से सिपाही लड़ते हैं, बुर्ज।

गुर्जर—संज्ञा पुं. [सं.] (१) गुजरात प्रदेश। (२) गुजरात निवासी। (३) गूजर जाति।

गुर्जरी—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) गुजराती स्त्री। (२) एक रागिनी।

गुर्राना—क्रि. अ. [अनु.] क्रोधी का अभिमानवश कर्कश स्वर में बोलना।

गुर्री—संज्ञा स्त्री. [देश.] भुने हुए जौ।

गुर्वि—वि. स्त्री. [हिं. गुर्वि] विशाल, बड़ी।

गुर्विणी—वि. स्त्री. [सं.] गर्भवती।

गुर्वी—संज्ञा स्त्री. [सं.] श्रेष्ट या उत्तम स्त्री।

वि,—स्त्री. गर्भवती।

वि.—विशाल, बड़ी।

गुलंच—संज्ञा पुं. [सं.] एक प्रकार का कंद।

गुलंचा—संज्ञा पुं. [हिं. गुड़ुच] एक बेल, गुरुच।

गुल—संज्ञा पुं. [फ़ा.] (१) गुलाब का फूल। (२) फूल।

मुहा०—गुल खिलना—(१) आनंददायी घटना होना। (२) उपद्रव होना। गुल कतरना—(१) कागज-कपड़े के बेल-बूटे बनाना। (२) अद्भुत काम करना। (३) गालों में हँसते समय पड़नेवाला गड्ढा। (४) शरीर पर गरम धातु से डाला गया दाग या छाप (५) दीपक की बत्ती का जला हुआ भाग। (६) चिलम की तंबाकू का जला हुआ अंश। (७) किसी चीज पर भिन्न रंग का दाग या चिन्ह। (८) आँख का डेला। (९) अंगारा।

मुहा०—गुल बँधना—(१) कोयलों का खूब दहकना। (२) कुछ धन प्राप्त होना।

(१०) सुंदर स्त्री, नायिका।

संज्ञा पुं. [देश.] (१) हलवाई की भट्टी। (२) कनपटी।

संज्ञा पुं. [फ़ा. गुल] शोर, कोलाहल।

गुलकंद—संज्ञा पुं. [फ़ा.] चीनी में अमलतास या गुलाब के फूल धूप की गर्मी से पकाकर तैयार किया हुआ पदार्थ।

गुलअकीक—संज्ञा पुं. [फ़ा. गुल + अक़ीक़] एक पौधा।

गुलकारी—संज्ञा पुं. [फ़ा.] बेल-बूटे का काम।

गुलकेश—संज्ञा पुं. [फ़ा.] कलगे का पौधा या फूल।
गुलगपाड़ा—संज्ञा पुं. [अ. गुल + हिं. गप्प] शोर।
गुलगुला—वि. [हिं. गुदगुदा] कोमल, मुलायम।
संज्ञा पुं. [हिं. गोल + गोला] (१) एक पकवान। (२) कनपटी।
गुलगुलाना—क्रि. स. [हिं. गुलगुला] मुलायम करना।
गुलगोथना—संज्ञा पुं. [हिं. गुलगुला + तन] मोटा आदमी।
गुलचना—क्रि. स. [हिं. गुलचाना] गुलचा मारना।
गुलचाँदनी—संज्ञा पुं. [फ़ा. गुल+हिं. चाँदनी] एक पौधा या उसका फूल जो रात में खिलता है।
गुलचा—संज्ञा पुं. [हिं. गाल] फूले हुए गालों पर हलका घूँसा सप्रेम मारना।
गुलचाना, गुलचियाना—क्रि. स. [हिं. गुलचा + ना] गुलचा मारना, गाल थपथपा कर प्रेम दिखाना।
गुलछर्रा—संज्ञा पुं. [हिं. गोली + छर्रा] खूब भोग विलास करना।
मुहा०—गुलछर्रे उड़ाना—बहुत विलास करना।
गुलजार—संज्ञा पुं. [फ़ा. गुलजार] बाग-बगीचा।
वि.—हरा-भरा, जहाँ चहल-पहल हो।
गुलझटी, गुलझड़ी—संज्ञा स्त्री. [हिं. गोल + स. झट = जमाव] (१) तागे आदि के उलझने की गुत्थी। (२) सिकुड़न, शिकन।
गुलथी—संज्ञा स्त्री, [हिं. गोल + सं. अस्थि] किसी गाढ़े पदार्थ की गुठली या गोली।
गुलदस्ता—संज्ञा पुं. [फ़ा.] (१) तरह तरह के फूल पत्तिओं का बनाया हुआ गुच्छा। (२) एक घोड़ा।
गुलदाउदी, गुलदावदी—संज्ञा स्त्री. [फ़ा.] एक पौधा या फूल।
गुलदुपहरिया—संज्ञा पुं. [फ़ा. गुल + हिं. दुपहरी] एक पौधा जिसके लाल फूल दोपहर को खिलते हैं।
गुलनार—संज्ञा पुं. [फ़ा.] (१) अनार का फूल। (२) लाल रंग।
गुलफाम—वि. [फ़ा.] जिसके शरीर का रंग फूल के समान हो, सुन्दर, खूबसूरत।
गुलबकावली—संज्ञा स्त्री. [फ़ा. गुल + स. बक+अवली] एक पेड़ जिसके सफेद फूल बहुत सुगन्धित होते हैं।
गुलबदन—संज्ञा पुं. [फ़ा.] एक रेशमी कपड़ा।
गुलमखमल—संज्ञा पुं. [फ़ा.] एक पौधा या फूल।
गुलमेंहदी—संज्ञा स्त्री. [फ़ा. गुल + हिं. मेंहदी] एक पौधा।
गुलरू—वि. [फ़ा.] फूल के समान सुन्दर।
गुलशन—संज्ञा पुं. [फ़ा.] बाग, वाटिका।
गुलशब्बो—संज्ञा पुं. [फ़ा.] (१) एक पौधा जिसके सफेद फूल रात में खिलते हैं। (२) एक खेल।
गुलाब—संज्ञा पुं [फ़ा. गुल + आब] (१) पौधा जिसका फूल कोमलता और सुगंध के लिए प्रसिद्ध है। उ.—चंपक जाइ गुलाब बकुल फूले तरु प्रति बूझति कहुँ देखे नँदनंदन—१८१०। (२) गुलाब जल।
गुलाबजल—संज्ञा पुं. [हिं. गुलाब + जल] गुलाबी फूलों का अरक।
गुलाबजामुन—संज्ञा पुं. [फ़ा. गुलाब+हिं.जामुन] (१) एक मिठाई। (२) एक पौधा या उसका फल।
गुलाबपाश—संज्ञा पुं. [फ़ा.] गुलाबजल का पात्र।
गुलाबाँस—संज्ञा पुं. [फ़ा.] एक पौधा या फूल।
गुलाबा—संज्ञा पुं. [फ़ा.] एक बरतन।
गुलाबी—वि. [फ़ा.] (१) गुलाब सम्बन्धी। (२) गुलाब के रंग का। (३) गुलाबजल में बसाया हुआ। (४) थोड़ा, हलका, कम।
संज्ञा स्त्री. (१) शराब पीने की प्याली। (२) एक मिठाई। (३) एक मैना पक्षी।
गुलाम—संज्ञा पुं. [अ.] (१) खरीदा हुआ दास या सेवक। उ.—(क) सब कोउ कहत गुलाम स्याम कौ सुनत सिरात हिये—१-१७१। (ख) सूर है नंदनंद जू को लयो मोल गुलाम—सा. ११८। (२) आज्ञाकारी और नम्र सेवक, नौकर। उ.—नैन भए बजाइ गुलाम—पृ. ३२१। (३) ताश का एक पत्ता।
गुलाममाल—संज्ञा पुं. [अ.] काम की पर सस्ती चीज।
गुलामी—संज्ञा स्त्री.[अ. गुलाम + ई (प्रत्य.)] (१) सेवा, नौकरी, चाकरी। उ.—सुनि सतसंग होत जिय आलस, विषयिनि सँग बिसरामी। श्री हरि-चरन छाँड़ि बिमुखनि की निसि दिन करत गुलामी—१-१४८। (२) दासता। (३) पराधीनता।

गुलाल—संज्ञा पुं. [फ़ा. गुल्लाला] एक लाल बुकनी जो होली में चेहरे पर मली जाती है।
गुलियाना—क्रि. स. [हिं. गोलियाना] गोल बनाना।
गुलिस्ताँ—संज्ञा पुं. [फ़ा.] बाग-वाटिका।
गुलू—संज्ञा पुं. [देश.] एक बड़ा वृक्ष।
गुलूबन्द—संज्ञा पुं. [फ़ा.] (१) सूती, ऊनी या रेशमी पट्टी जो गले या सिर में लपेटी जाती है। (२) गले का एक गहना।
गुलेनार—संज्ञा पुं. [हिं. गुलनार] (१) अनार का फूल। (२) लाल रंग।
गुलेराना—संज्ञा पुं. [फ़ा. गुल + अ. राना] सुन्दर फूल।
गुलेल—संज्ञा स्त्री. [फ़ा. गिलूल] एक तरह की कमान जिससे मिट्टी की गोलियाँ चलायी जाती हैं।
गुलेलची—संज्ञा पुं. [हिं. गुलेल+ची (प्रत्य.)] गुलेल चलानेवाला व्यक्ति।
गुलेला—संज्ञा पुं [हिं. गुलेल] (१) गुलेल से चलाने की गोली। (२) बड़ी गुलेल।
गुलौर, गुलौरा—संज्ञा पुं. [सं. गुल = गुड़ हिं. औरा (प्रत्य.)] वह स्थान जहाँ गुड़ बनाया जाता है।
गुल्गा—संज्ञा पुं. [देश.] एक तरह का ताड़।
गुल्फ—संज्ञा पुं. [सं.] एँड़ी के ऊपर की गाँठ।
गुल्म—संज्ञा पुं. [सं] (१) पौधों की एक जाति। उ.—एक जाति ह्वै रहे वृन्दावन गुल्मलता कर बास—सारा. ५७९। (२) सेना का एक वर्ग। (३) पेट का रोग।
गुल्मप—संज्ञा पुं. [सं.] एक गुल्म का नायक।
गुल्लक—संज्ञा पुं. [हिं. गोलक] धन रखने का पात्र।
गुल्ला—संज्ञा पुं. [हिं गोला] (१) गुलेल की गोली। (२) एक बँगला मिठाई।
संज्ञा पुं. [हिं. गुल्ली] गन्ने की गँडेरी।
संज्ञा पुं [अ. गुल] शोर, हल्ला, कोलाहल।
संज्ञा पुं. [हिं. गुलेल] गुलेल नामक कमान।
संज्ञा पुं. [देश.] एक पहाड़ी पेड़।
गुल्लाल—संज्ञा पुं. [फा.] एक लाल फूल।
संज्ञा पुं.—श्मशान।
गुल्ली—संज्ञा स्त्री [सं. गुलिका=गुठली] (१) फल की गुठली। (२) महुए का बीज। (३) किसी चीज का छोटा नुकीला टुकड़ा। (४) लकड़ी का छोटा टुकड़ा जिसे डंडे से मारने का एक खेल होता है। (५) केवड़े का फूल। (६) एक तरह की मैना। (७) गन्ने की गँडेरी। (८) एक पासा।
गुवा, गुवाक—संज्ञा पुं. [सं.] चिकनी सुपारी।
गुवार—संज्ञा पुं. [हिं. ग्वाल] अहीर, ग्वाला।
गुवारि—संज्ञा स्त्री. [हिं. पुं. ग्वाल] ग्वालिन, गोपी। उ.—हरि कौं टेरत फिरति गुवारि —४६१।
गुवाल, गुवाला—संज्ञा पुं. [हिं. ग्वाल] ग्वाल, अहीर। उ.—(क) सब आनँद-मगन गुवाल, काहूँ बदत नहीं—१०-२४। (ख) बिहँसत हरि-संग चले गुवाला —४६६।
गुविंद—संज्ञा पुं. [सं. गोविंद] श्रीकृष्ण।
गुसल—संज्ञा पुं. [अ. गुस्ल] स्नान।
गुसलखाना—संज्ञा पुं. [अ. गुस्ल + फा. खाना] नहाने का घर या स्थान।
गुसाँई—संज्ञा पुं. [सं. गोस्वामी] (१) प्रभु, स्वामी, ईश्वर। उ.—बिनु दीन्हैं ही देत सूर-प्रभु ऐसे हैं जदुनाथ गुसाई—१-३। (२) वैष्णव-आचार्य। (३) उपदेशक, वक्ता (व्यंग्य)। उ.—होहु बिदा घर जाहु गुसाई माने रहियो नात—२६५७।
गुसा—संज्ञा पुं. [हिं. गुस्सा] क्रोध, रोष। उ.—(क) सूरदास चरननि के बलि बलि कौन गुसा तें कृपा बिसारी। (ख) रति माँगत पै मान कियौ सखि सो हरि गुसा गही—२८६६।
गुसाईं, गुसैयाँ—संज्ञा पुं. [हिं. गोसाईं, गुसाईं] (१) प्रभु, नाथ, ईश्वर। उ.—(क) मेरौ मन मति-हीन गुसाईं। सब सुखनिधि पद-कमल छाँड़ि, स्रम करत स्वान की नाईं—१०-१०३। (ख) तुम्हरीं कृपा कृपाल गुसाईं किहिं किहिं स्रम न गँवायौ—१-१६०। (२) मालिक, स्वामी। (३) पूज्य व्यक्ति। उ.—(क) खेलत मैं को काकौ गुसैयाँ—१०-२४५। (ख) नहिं अधीन तेरे बाबा के नहिं तुम हमरे नाथ-गुसैयाँ—७३५। (ग) यह सुनिकै बलदेव गुसाईं हल मूसल लियौ हाथ—सारा-८३३।
गुस्ताख—वि. [फ़ा. गुस्ताख] ढीठ, अशिष्ठ।
गुस्ताखी—संज्ञा स्त्री. [हिं.गुस्ताख] ढिठाई, अशिष्टता।
गुस्सा—संज्ञा पुं. [अ.] क्रोध, रिस।

मुहा—गुस्सा उतरना—क्रोध शांत होना। (किसी पर) गुस्सा उतारना (निकालना)—(१) क्रोध का फल चखाना। (२) एक के क्रोध का फल दूसरे को चखाना। गुस्सा थूक देना—क्षमा करना। नाक पर गुस्सा होना (रहना)— बहुत जल्दी गुस्सा हो जाना। गुस्सा पीना (मारना)—क्रोध प्रगट न करना। गुस्से से लाल होना—क्रोध से तमतमा जाना।

गुस्सैल—वि. [हिं. गुस्सा + ऐल (प्रत्य.)] बहुत जल्दी क्रोधित हो जानेवाला।

गुह—संज्ञा पुं. [सं. गुह्य] मैला, गंदा।

संज्ञा पुं. [सं.] (१) कार्त्तिकेय। (२) घोड़ा। (३) केवट जिसने श्रीराम को गंगा पार पहुँचाया था। (४) एक लता। (५) गुफा। (६) हृदय।

गुहत—क्रि. स. [हिं. गुहना] (चोटी आदि) गूँधकर, गूँधने पर। उ.—मैया, कबहिं बढ़ैगी चोटी...। काढ़त गुहत न्हवावत जैहै नागिन-सी भुईं लोटी —१०-१७५।

गुहन—क्रि. स. [हिं. गुहना] एक में पिरोने (को), गूँथने या गूँधने (को)। उ.—कहिहैं न चरनन देन जावक गुहन बेनी फूल—२७५६।

गुहना—क्रि. स. [सं. गुंफन] (१) पिरोना, गूँथना। (२) सुई-तागे से सी देना।

गुहराना—क्रि. स. [हिं. गुहार] चिल्लाकर पुकारना।

गुहरायो—क्रि. स. [हिं. गुहार, गुहराना] (१) पुकारा, चिल्लाया। (२) (जोर-जोर से चिल्ला कर) शिकायत की, उलाहना दिया। उ.—काहू के लरिकहिं हरि मार्‌यौ, भोरहिं आनि तिनहिं गुहरायौ—३६६।

गुहरावत—क्रि. स. [हिं. गुहराना] पुकारते हैं। उ.—बार बार हरि सौं गुहरावत मोहिं मँगावत पुनि-पुनि आनि लरै—१६७१।

गुहरावहु—क्रि. स. [हिं. गुहराना] शिकायत करो, पुकारो, दोहाई दो। उ.—जाइ सबै कंसहिं गुहरावहु। दधि माखन घृत लेत छँड़ाए आजुहिं मोहिं हजूर बोलावहु—१०६४।

गुहरावैं—क्रि. स. [हिं. गुहराना] पुकार करें, दोहाई दें। उ.—हम अब कहा जाइ गुहरावैं बसत तुम्हारे गाउँ—१०६२।

गुहवाना—क्रि. स. [हिं. गुहना का प्रे०]) गुँथवाना।

गुहा—संज्ञा स्त्री. [सं.] गुफा, कंदरा। उ.—(क) अयुत अधार नहीं कछु समझत भ्रम गहि गुहा रहै—३३५६। (ख) जनु सु अहेरो हति यादव पति गुहा पींजरी तोरी—१० उ.-५२।

गुहाई—संज्ञा स्त्री. [हिं. गुहना] (१) गुहने की क्रिया या भाव। (२) गुहने की मजदूरी।

गुहाए—क्रि. स. [हिं. गुहना] गुथाये या पिरोये (हुए)। उ.—इन बिरहिन मैं कहूँ तू देखी सुमन गुहाए मंग —३२२३।

गुहाना—क्रि. स. [हिं. गुहना का प्रे.] गुँथवाना।

गुहार, गुहारि, गुहारी—संज्ञा स्त्री. [सं. गो + हार] (१) रक्षा के लिए की गयी पुकार, दोहाई। उ.—(क) सृंगीरिषि तब कियौ बिचार। प्रजा दोष करै नृपति गुहार—१-२९०। (ख) दीन गुहारि सुनौ स्रवननि भरि गर्व बचन सुनि हृदय जरौं—११०३। (ग) प्रभु स्रवनन तहँ परी गुहारी—२४५६। (घ) अब यह कृपा जोग लिखि पठए मनसिज करी गुहारि —३००२।

प्र०—लगहु गुहार—दुहाई करो, पुकार लगाओ। उ.—शत्रु-सेन सुधाम फेरयौ सूर लगहु गुहार—२८३४।

(२) शोर-गुल, हो-हल्ला, कोलाहल, जोर का शब्द। उ.—(क) दौरि परे ब्रज के नर-नारी। नंद द्वार कछु होत गुहारी—३९१। (ख) धाए नंद, जसोदा धाई, नित प्रति कहा गुहारि—६०४।

गुहारना—क्रि. स. [हिं. गुहार] रक्षार्थ दुहाई देना।

गुहाल—संज्ञा पुं. [सं. गोशाला] गोशाला।

गुहि—क्रि. स. [सं. गुंफन, हिं० गुहना] गूँधकर, पिरोकर। उ.-(क) गुहि गुंजा घसि बन धातु, अंगनि चित्र ठए—१०-२४। (ख) सूरदास प्रभु की यह लीला, ब्रज-बनिता पहिरै गुहि हार—१०-१७३। (ग) संभु-भूषन बदन बिलसत कंज ते गुहि माल—सा. ६४।

गुही—क्रि. स. [सं. गुंफन, हिं. गुहना] गूँथी, एक में पिरोई, गाँथी। उ.—(क) सुभ स्रवननि तरल तरौन बेनी सिथिल गुही—१०-२४। (ख) तब कित लाड़

लड़ाइ लड़इते बेनी कुसुम गुही गाढ़ी — पृ० ३५३ (६५)।

गुहैहौं—क्रि. स. [हिं. गुहाना, गुहवाना] गुँथवाऊँगा, गुहाऊँगा। उ.—सुरभी कौ पय पान न करिहौं, बेनी सिर न गुहैहौं—१०-१६३।

गुह्य—वि. [सं.] (१) छिपा हुआ, गुप्त। (२) छिपाने योग्य। (३) गूढ़, जटिल।

संज्ञा पुं. [सं.] (१) छल-कपट। (२) कछुआ। (३) शरीर के गुप्त अंग। (४) विष्णु। (५) शिव।

गूँग, गँगा, गूँगे—संज्ञा पुं. [फ़ा. गुंग] वह मनुष्य जो बोल न सके। उ.—बहिरौ सुनै गूँग पुनि बोलै रंक चलै सिर छत्र धराई—१-१।

वि.—जो बोल न सके, मूक।

मुहा०—गूँगे का गुड़—वह विषय या बात जिसका अनुभव तो हो परंतु वर्णन न किया जा सके। उ.—(क) अमृत कहा अमित गुन प्रगटै सो हम कहा बतावैं। सूरदास गूँगे के गुर ज्यों बूझति कहा बुझावै—१६३६। (ख) गूँगे गुर की दसा भई ह्वै पूरन स्याम सोहाग सही—११८२।

गूँगी—संज्ञा स्त्री. [हिं. गूँगा] (१) गोल बिछिया जो स्त्रियाँ उँगली में पहनती हैं। (२) दोमुहाँ साँप।

वि. स्त्री.—जो गूँगी हो।

गूँगै—संज्ञा पुं. सवि. [हिं. गूँगा] गूँगे व्यक्ति को (ने)। उ.—(क) अविगत-गति कछु कहत न आवै। ज्यौं गूँगै मीठे फल कौ रस अंतरगत हीं भावै—१-२। (ख) कहि न जाइ या सुख की महिमा ज्यौं गूँगैं गुर खायो—४-३३।

गूँगौ—संज्ञा पुं. [हिं. गूँगा] गूँगा व्यक्ति, मूक प्राणी।

मुहा०—गूँगौ गुर खाइ—ऐसी बात जिसका अनुभव तो हो, परंतु वर्णन न हो सके, जैसे गुड़ के स्वाद का अनुभव करके भी गूँगा उसे कह नहीं पाता। उ.—ज्यौं गूँगौ गुर खाइ अधिक रस, सुख-स्वाद न बतावै (हो)—२-१०।

गूँच—संज्ञा स्त्री. [सं. गुंज] गुंजा, घुँघची।

गूँज—संज्ञा स्त्री. [सं. गुंज] (१) भौरों का गुंजार। (२) प्रतिध्वनि। (३) लट्टू की कील।

गूँजना—क्रि. अ. [सं. गुंजन] (१) भौरों का गुंजारना। (२) प्रतिध्वनि होना। (३) ध्वनि तरंगों का दूर तक व्याप्त होना।

गूँझा—संज्ञा पुं. [सं. गुह्यक, प्रा. गुज्झा, हिं. गूझा] बड़ी पिराक, जो आटे या मैदे की अर्द्धचंद्राकार बनती है। उ.—पिस्ता, दाख, बदाम, छुहारा, खुरमा, खाझा, गूँझा, मटरी—८१०।

गूँथना—क्रि. स. [हिं. गूथना] पिरोना, गूँधना।

गूँथि—संज्ञा पुं. [हिं. गूथना] गूथ कर, (एक लड़ी में) पिरोकर। उ.—दरसन कौं ठाढ़ी ब्रजवनिता, गूँथि कुसुम बनमाल—१०-२०६।

गूँथी—संज्ञा पुं. [हिं. गूँथना] (लड़ी में) गूँथ दी, पिरो ली। उ.—माँग पारि बेनी जु सँवारति, गूँथी सुन्दर भाँति—७०४।

गूँदना—क्रि. स. [हिं. गूँधना] गुझियाँ, पिराक, समोसे आदि का मुँह बंद करना।

गूँदे—क्रि. स. [हिं. गूँदना] गुझिया, पिराक आदि बनाये। उ.—गोझा गूँदे गाल मसूरी—२३२१।

गूँदि—क्रि. स. [हिं. गूँदना, गूँथना] चोटी गूँधकर। उ.—बूझति जननि कहाँ हुती प्यारी। किन तेरे भाल तिलक रचि कीनौ, किहिं कच गूँदि माँग सिर पारी—७०८।

गूँधना—क्रि. स. [सं. गुध = क्रीड़ा] (आटा आदि) माड़ना, मलना या मसलना।

क्रि. स. [सं. गुंथन] (माला आदि) गूँथना या पिरोना। (२) (चोटी आदि) करना।

गूग्गुल, गूगुल—संज्ञा पुं. [सं. गुग्गुल] एक गोंद जो सुगंध के लिये जलाया जाता है।

गूजर—संज्ञा पुं. [सं. गुर्जर] (१) अहीर। (२) एक क्षत्रिय जाति।

गूजरी—संज्ञा स्त्री. [सं. गुर्जरी] (२) अहीरिन, ग्वालिन, गोपी। उ.—गोरस बेचनहारि गूजरी अति इतराती—१०६५। (२) पैर का एक गहना। (३) एक रागिनी।

गूझा—संज्ञा पुं. [सं. गुह्यक, प्रा. गुज्झा] (१) आटे या मैदे का एक पकवान। उ.—गूझा बहु पूरन पूरे। भरि भरि कपूर रस चूरे—१०-१८३। (२) गूदा।

गूढ़—वि. [सं.] (१) छिपा हुआ, गुप्त। (२) विशेष अर्थ या अभिप्राय से युक्त, गंभीर। (३) कठिनता से समझ में आनेवाला, जटिल, कठिन। उ.—कहत पठवन बदरिका मोहिं गूढ़ ज्ञान सिखाइ—३-३।

संज्ञा पुं.—एक अलंकार, गूढ़ोक्ति।

गूढ़ता—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) छिपाव, गुप्तता। (२) गंभीरता, अबोध्यता। (३) कठिनता, जटिलता।

गूढ़त्व—संज्ञा पुं. [सं.] (१) गुप्तता। (२) गंभीरता, अबोध्यता। (३) कठिनता, जटिलता।

गूढ़नीड़—संज्ञा पुं. [सं.] खंजन पक्षी।

गूढ़जीवी—संज्ञा पुं. [सं. गूढ़जीविन्] (१) गुप्त रीति से जीविका प्राप्त करनेवाला। (२) गुप्त कार्य (जैसे चोरी) करके निर्वाह करनेवाला।

गूढ़पद, गूढ़पाद—संज्ञा पुं. [सं.] साँप, सर्प।

गूढ़ोक्ति—संज्ञा स्त्री. [सं.] एक अलंकार।

गूढ़ोत्तर—संज्ञा पुं. [सं.] एक अलंकार। उ.—गूढ़ोत्तर अस कहत ग्वालिनी मोहि गेह रखवारी—सा.८०।

गूथना—क्रि. स. [सं. गुंथन] (१) (माला आदि) गूँथना या पिरोना। (२) टाँकना। (३) जोड़ देना। (४) मोटी सिलाई करना, गाँथना।

गूद—संज्ञा पुं. [सं. गुप्त, प्रा. गुत्त] गूदा।

संज्ञा स्त्री. [सं. गर्त्त] (१) गड्ढा। (२) गहरा चिह्न, निशान या दाग।

गूदड़ गूदर—संज्ञा पुं. [हिं. गूथना=मोटी सिलाई करना] फटा-पुराना कपड़ा, चिथड़ा।

गूदना—क्रि. स. [हिं. गूथना] माला आदि गूँथना।

गूदा—संज्ञा पुं. [सं. गुप्त, प्रा. गुत्त] (१) फल का सरस सार भाग। (२) खोपड़ी का सार भाग, भेजा, मगज। (३) गिरी, मींगी। (४) वस्तु का सार या तत्व।

गूदरि—संज्ञा स्त्री. [हिं. गूदड़] फटा-पुराना ओढ़ना बिछौना। उ.—पाटंबर-अंबर तजि गूदरि पहराऊँ—१-१६६।

गूदे—क्रि. स. [हिं. गूदना] चोटी आदि में फूल, मोती आदि) गूँथे या पिरोये। उ.—जिहि सिर केस कुसुम भरि गूदे तेहि कैसे भसम चढ़ैए—३१२४।

गून—संज्ञा स्त्री. [सं गुण=रस्सी] (१) नाव खींचने की रस्सी। (२) रीहा नामक घास।

गूनसराई—संज्ञा स्त्री. [देश.] रोहू नामक वृक्ष।

गूमा—संज्ञा पुं. [सं. कुंभा, गुंभा] एक पौधा।

गूलर—संज्ञा पुं. [सं. उदुंबर] एक बड़ा पेड़ जिसके फल में बहुत से भुनगे रहते हैं। उ.—मैं ब्रह्मा इक लोक कौ, ज्यौं गूलर-फल जीव। प्रभु तुम्हरे इक रोम प्रति, कोटिक ब्रह्मा सींव—४६२।

मुहा०—गूलर का कीड़ा—अनुभवहीन व्यक्ति, कूपमंडूक। गूलर का फूल—वह (वस्तु, पात्र आदि) जो कभी देखने में न आवे। गूलर का फूल होना—कभी दिखायी न देना। गूलर का पेट फड़वाना (पेट फाड़कर जीव उड़ाना)—गुप्त भेद प्रकट कराना, भंडा फुड़वाना।

संज्ञा पुं. [देश.] मेढक, दादुर।

गूलू—संज्ञा स्त्री. [देश.] एक वृक्ष।

गूषणा—संज्ञा स्त्री. [सं.] मोरपंखी का अर्द्धचंद्र।

गूह—संज्ञा पुं. [सं. गुह] मल, मैला।

गृध्र—संज्ञा पुं. [सं.] (१) गिद्ध, गीध। (२) जटायु, संपाती आदि पक्षी जिनकी पौराणिक कथाएँ प्रसिद्ध हैं।

गृध्रव्यूह—संज्ञा पुं. [सं.] सेना की एक व्यूह-रचना।

गृह—संज्ञा पुं. [सं.] (१) घर (२) वंश।

गृहआस्रम—संज्ञा पुं. [सं. गृह+आश्रम] गृहस्थाश्रम जिसमें मनुष्य बाल बच्चों के साथ रहता है। उ.—गृहआस्रम है अति सुखदाई। तप तजि कै गृहआस्रम करौं—६-८।

गृहप—संज्ञा पुं. [सं.] (१) घर का स्वामी। (२) घर का रक्षक। (३) कुत्ता। (४) आग।

गृहपति—संज्ञा पुं. [सं.] (१) घर का स्वामी। (२) कुत्ता। (३) आग, अग्नि।

गृहपाल—संज्ञा पुं. [सं.] (१) घर का रक्षक। (२) कुत्ता।

गृहमणि, गृहमनि—संज्ञा पुं. [सं.] दीप, दीपक।

गृहस्त, गृहस्थ—संज्ञा पुं. [सं.] गृहस्थ (१) ब्रह्मचर्य के बाद के आश्रम का धर्म निबाहनेवाला व्यक्ति। (२) घरबारवाला व्यक्ति।

गृहस्थाश्रम—संज्ञा पुं. [सं.] ब्रह्मचर्य के पश्चात का आश्रम जिसमें स्त्री और संतान के साथ व्यक्ति रहता और उनके प्रति स्वकर्तव्य निबाहता है।

गृहस्थी—संज्ञा स्त्री. [सं. गृहस्थ+हिं. ई (प्रत्य.)] (१) गृहस्थाश्रम। (२) घर-बार। (३) लड़के-बाले। (४) घर का सामान।

गृहबासी—संज्ञा पुं. [सं. गृहवासी] घर में रहनेवाला, गृहस्थ।

गृहिणी, गृहिनी—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) घर की स्वामिनी, मालकिन। (२) पत्नी, भार्या, स्त्री।

गृही—संज्ञा पुं. [सं. गृहिन्] (१) गृहस्थ। उ.—तपसी तुमको तप करि पावै। सुनि भागवत गृही गुन गावै—१० उ.-१२७। (२) यात्री।

गृहीत—वि. [सं.] (१) स्वीकृत। (२) पकड़ा हुआ।

गृह्य—वि. [सं.] गृह-गृहस्थी-संबंधी।

गेंगटा—संज्ञा पुं. [सं. कर्कट] केकड़ा।

गेड़—संज्ञा पुं. [सं. कांड] ऊख का ऊपरी भाग।
संज्ञा पुं. [सं. गोष्ठ] अन्न रखने का घेरा, घेरा।

गेड़ना—क्रि. स. [हिं. गेड़] (१) हद बाँधना, पतली दीवार से घेरना। (२) अन्न रखने का घेरा बनाना।

गेंडली—संज्ञा स्त्री. [सं. कुंडली] कुंडल, घेरा, फेंटा।

गेंडा—संज्ञा पुं. [सं. कांड] (१) ईख का ऊपरी भाग, अगौरा। (२) गन्ना, ईख।

गेंडु, गेंडुक—संज्ञा पुं. [सं.] गेंद, कंदुक।

गेंडुआ—संज्ञा पुं. [सं. गेंडुक] (१) तकिया। (२) गेंद।

गेंडुरी, गेंडुली—संज्ञा स्त्री. [सं. कुंडली] (१) रस्सी का मेंडरा, इँडुरी, बिड़वा। उ.—काहू की छीनत हौ गेंडुरी काहू की फोरत हौ गगरी—८१३। (२) फेंटा, कुंडली, घेरा। (३) साँप की कुंडलाकार बैठक।

गेंद—संज्ञा पुं. [सं. कंदुक] रबर, चमड़े आदि का छोटा गोला जिससे लड़के खेलते हैं, कंदुक। उ.—लै कर गेंद गये हैं खेलन लरिकन संग कन्हाई—सा. १०२।

गेंदई—वि. [हिं. गेंदा] गेंदे के फूल की तरह पीला।
संज्ञा पुं.—गेंदे के फूल की तरह पीला रंग।

गेंदवा—संज्ञा पुं. [सं. गेंडुक] तकिया।

गेंदा—संज्ञा पुं. [हिं. गेंद] (१) एक पौधा जिसमें पीले फूल लगते हैं। (२) एक गहना।

गेंदुआ—संज्ञा पुं. [सं. गेंदुक] (१) तकिया। (२) गेंद।

गेंदुकि—संज्ञा पुं. [सं. कंदुक] गेंद, कंदुक। उ.—(क) कर राजति गेंदुकि नौलासी—२४४१। (ख) फूलन के गेंदुकि नवला सजि कनक लकुटिया हाथ-२५०२।

गेंदुवा—संज्ञा पुं. [सं. गेंडुक] गोल तकिया।

गे—क्रि. अ. बहु. [हिं. गया] गये। उ.—(क) तैसेहिं सूर बहुत उपदेसै सुनि सुनि गे कै बार—१-८४। (ख) बाचर खचर हार गे बनचर—सा. ११५।

गेय—वि. [सं.] गाने के योग्य।

गेरता—क्रि. स. [हिं. गेरना = गिराना] (१) गिराते हैं, नीचे डालते हैं। (२) ढालते हैं, उँडेलते हैं, मूँदते हैं। उ.—बारंबार जगावति माता, लोचन खोलि पलक पुनि गेरत—४०५।

गेरना—क्रि. स. [सं. गलन या गिरण] (१) गिराना। (२) उँडेलना। (३) (सुरमा आदि) डालना।
क्रि. अ. [हिं. घेरना] घूमना, परिक्रमा करना।

गेरवाँ—संज्ञा स्त्री. [हिं. गेराँव] पशुओं के गले पर लिपटा हुआ रस्सी का भाग।

गेरुआ—वि. [हिं. गेरू + आ (प्रत्य.)] (१) गेरू के मटमैले लाल रंग का। (२) गेरू में रँगा हुआ, जोगिया, भगवा।
संज्ञा पुं.—(१) एक कीड़ा। (२) पौधों का एक रोग।

गेरू—संज्ञा स्त्री. [सं. गवेरुक] मटमैलापन लिये हुए एक तरह की लाल मिट्टी। उ.—जैसे कंचन काँच बराबर गेरू काम सिंदूर—२६८३।

गेह—संज्ञा पुं. [सं. गृह] घर, मकान। उ.—(क) बिदुर-गेह हरि भोजन पाए—१-२३६। (ख) करि दंडवत चली ललिता जो गई राधिका गेह—१-२३६ और सारा. ६२०।

गेहनी—संज्ञा स्त्री. [हिं. गेह] घरवाली, पत्नी। उ.—तुम रानी वसुदेव गेहनी हौं गँवारि ब्रजबासी—२७१०।

गेहपति—संज्ञा पुं. [हिं. गेह + सं. पति] (१) घर का स्वामी। (२) पति, स्वामी।

गेहरा—संज्ञा पुं. [हिं. गेह] घर, गेह। उ.—मुँह की हल भलई मोहू सों करन आये जिय की जासों ताही सो तुम बिन सूनो वाको गेहरा—२००१।

गेहिनी—संज्ञा स्त्री. [सं. गृहिणी] घरवाली, पत्नी।

गेही—संज्ञा पुं. [हिं. गेह] गृहस्थ।

गेहुँअन—संज्ञा पुं. [हिं. गेहूँ] एक विषैला साँप।

गेहुँआँ—वि. [हिं. गेहूँ] गेहूँ के बादामी रंग का।
गेहु—संज्ञा पुं. [सं. गृह, हिं. गेह] घर, झाड़ी, झोपड़ी। उ.—पैरि-पैरि प्रति फिरौ बिलोकत गिरि-कंदर-बन-गेहु—६-७३।
गेहूँ—संज्ञा पुं. [सं. गोधूम] एक प्रसिद्ध अनाज।
गैंडा—संज्ञा पुं. [सं. गंडक] एक बहुत बली पशु।
गैंती—संज्ञा स्त्री. [देश.] जमीन खोदने का कुदाल।
गै—क्रि. अ. [सं. गम, हिं. गया] गये, हुये। उ.—(क) लटकन सीस, कंठ मनि भ्राजत, मनमथ कोटि बारनैं गै री—१०-५५। (ख) सुर मुनि स्रवन तजि भवन करि गवन मन रवन तनु तबहिं कहँ सुगति गै री—१६०४।
गैन—संज्ञा पुं. [सं. गमन] (१) प्रस्थान, गमन। उ.—हेरि दै-दै ग्वाल-बालक कियौ जमुन-तट गैन—४२७। (२) गैल, मार्ग, रास्ता। (३) कदम, पग। उ.—कबहुँक ठाढ़े होत टेकि कर, चलि न सकत इक गैन—१०-१०३।
संज्ञा पुं. [सं. गगन] आकाश, आसमान।
संज्ञा पुं. [सं. गयंद] हाथी।
गैना—संज्ञा पुं. [हिं. गाय] नाटा बैल।
गैनी—वि. स्त्री. [हिं. गैन = गमन + ई (प्रत्य.)] चलनेवाली, गामिनी।
संज्ञा स्त्री. [हि. खंता] कुदाल, फावड़ा।
गैब—वि. [अ. ग़ैब] छिपा हुआ, परोक्ष।
गैबर—संज्ञा पुं. [सं. गजवर] (१) बड़ा हाथी। (२) एक तरह की चिड़िया।
गैबी—वि० [अ. ग़ैब] (१) छिपा हुआ, गुप्त। (२) अजनबी, अज्ञात। (३) अबोधगम्य।
गैयर—संज्ञा पुं. [सं. गजवर] हाथी, गज।
गैयाँ—संज्ञा स्त्री. बहु. [हिं. गाय] अनेक गऊ। उ.—नंदकुमार चराई गैयाँ।
गैया—संज्ञा स्त्री. [सं. गो] गाय, गऊ।
गैर—वि. [अ.ग़ैर] (१) दूसरा, अन्य। (२) पराया, अजनबी, जो अपना न हो।
संज्ञा स्त्री.—अत्याचार, अंधेर।
संज्ञा पुं. [हिं. गैयर] हाथी।
संज्ञा स्त्री. [हिं. गैल] मार्ग, गली।
संज्ञा स्त्री. [हिं. बैर] (१) निंदा। (२) चुगली।
गैरख—संज्ञा स्त्री. [हिं. गर=गला+रखी] गले का हँसुली नामक गहना।
गैरजिम्मेदार—वि. [अ. ग़ैर + फा. ज़िम्मेदार] जो अपने दायित्व का ध्यान न रखे।
गैरत—संज्ञा स्त्री. [अ. ग़ैरत] लाज, शर्म।
गैरमामूली—वि. [अ. ग़ैर+मामूली] (१) जो साधारण न हो। (२) जो नित्य नियम के विरुद्ध हो।
गैरमुनासिब—वि. [अ. ग़ैरमुनासिब] अनुचित।
गैरमुमकिन—वि. [अ. ग़ैर+मुमकिन] असंभव।
गैरवाजिब—वि. [अ. ग़ैर+वाज़िब] अनुचित।
गैरहाजिर—वि. [अ. ग़ैर + हाज़िर] जो मौजूद न हो।
गैरहाज़िरी—संज्ञा स्त्री. [हि. गैरहाजिर] अनुपस्थिति।
गैरिक—संज्ञा पुं. [सं.] (१) गेरू। (२) सोना।
वि.—गेरू से रँगा हुआ, गेरुआ।
गैरी—संज्ञा पुं. [देश.] डाँठ या डंठलों का ढेर।
संज्ञा स्त्री. [सं. गर्त] खाद रखने का गड्ढा।
गैल—संज्ञा स्त्री. [हिं. गली] मार्ग, राह। उ.—(क) चंद्रमहिं बिसरो नभ की गैल—१८२३। (ख) मथुरा ते निकसि परे गैल माँझ आइ उहै मुकुट पीतांबर स्याम रूप काछे—२६४९।
मुहा.—गैल जाना—(१) साथ जाना। (२) अनुकरण करना। गैल करना—साथ कर देना। गैल लेना—साथ लेना।
गैला, गैलारा—संज्ञा पुं. [हिं. गैल] (१) गाड़ी के पहिये की लीक या लकीर। (२) गाड़ी का मार्ग।
गैवर—संज्ञा पुं. [सं. गज + वर] श्रेष्ठ या बड़ा हाथी। उ.—(क) हैवर गैवर सिंह हंसवर खग मृग कहँ हैं हम लीन्हे—११३१। (ख) गैवर मेटि चढ़ावत रस्ता प्रभुता मेटि करत हिनती—१२२८।
गैहै—क्रि. स. [हिं. गहना] रोकेगा, पकड़ेगा, थामेगा। उ.—जब गजेंद्र को पग तू गैहै। हरि जू ताको आनि छुटैहै—८-२।
क्रि. स. [हिं. गाना] (गीत आदि) गायगा।
गैहौं—क्रि. स. [हिं. गाना] गाऊँगा, आलापूँगा। उ.—

—सूरदास द्वै कुटिल बराती गीत सुमंगल गैहैं —१०-१६३।

क्रि. स. [हिं. गहना] (१) गहूँगा, पकड़ूँगा। उ.—सूर दिना द्वै व्रज जन सुख दै आइ चरन पुनि गैहौं—३६२३। (२) (टेक, हठ आदि) रखूँगा। उ.—आज्ञा पाय देव रघुवर की छिनक माँझ हठ गैहौं—सारा० २२४।

गैहौ—क्रि. स. [हिं. गाना] गाओगे, वर्णन करोगे, बखानोगे। उ.—भक्ति बिनु बैल बिराने ह्वैहौ। पाउँ चारि, सिर सृंग, गुंग मुख, तब कैसैं गुन गैहौ—१-३३१।

गोंइँठा—संज्ञा पुं. [सं. गो+विष्ठा] कंडा, उपला।

गोंइँड़, गोइँड़ा—संज्ञा पुं. [हिं. गाँव+मेड़] गाँव के आसपास की भूमि।

गोंइँयाँ—संज्ञा पुं., स्त्री. [हिं. गोइयाँ] साथ में रहनेवाला मित्र, साथी। उ.—रुहठि करै तासौं को खेलै रहे बैठि सब गोइँयाँ (ग्वैयाँ)—१०-२४५।

गोंई—संज्ञा स्त्री. [हिं. गोहन] बैलों की जोड़ी।

गोंठ—संज्ञा स्त्री. [सं. गोष्ठ] धोती की लपेट जो कमर पर रहती है, मुर्री।

गोंठना—क्रि. स. [सं. कुंठन] (१) नोक या धार कुंद कर देना। (२) गुझिया, समोसे आदि गूँधना।

क्रि. स. [सं. गोष्ठ, प्रा. गोट+ना (प्रत्य.)] चारों ओर लकीर से घेरना।

गोंठनी—संज्ञा स्त्री. [हिं. गोंठना] गोंठने का औजार।

गोंड—संज्ञा पुं. [सं. गोंड] (१) मध्य प्रदेशीय एक जाति। (२) बंग और भुवनेश्वर के बीच का प्रदेश। (३) एक राग।

संज्ञा पुं. [सं. गोष्ठ] गैयों का बाड़ा।

वि. [सं. कुंड] जिसकी नाभि निकली हो।

गोंडरा—संज्ञा पुं. [सं. कुंडल] (१) मोट के मुँह पर बँधी लोहे या लकड़ी की गोल छड़। (२) गोल वस्तु, मँड़रा। (३) लकीर का घेरा।

गोंडरी—संज्ञा स्त्री. [सं. कुंडली] (१) गोल वस्तु, मँड़रा। (२) इँडुरी।

गोंडल, गोंडला—संज्ञा पुं. [सं. कुंडल] लकीर का घेरा।

गोंड़ा, गोंड़े—संज्ञा पुं. [सं. गोष्ठ] (१) पशुओं का बाड़ा। (२) मोहल्ला, पुरा। (३) चौड़ी सड़क। (४) आँगन, सहन। (५) बारात की न्योछावर, परछन। (६) गाँव के समीप की भूमि। उ.—निकसि व्रज के गई गोड़े—१०-८०।

गोंद—संज्ञा पुं. [सं. कुँदुरू या हिं. गूदा] वृक्षों के तने से निकला हुआ लस जो चिपचिपा होता है। उ.—(क) एक अंस बृच्छनि कौं दीन्हौं। गोंद होइ प्रकास तिन कीन्हौं-६-५। (ख) बाइ बिरंग बहेरा हरैं कहूँ बैल गोंद ब्यापारी—११०८।

संज्ञा स्त्री. [सं. गुंद्रा] एक घास।

संज्ञा स्त्री. [हिं. गोंदी] एक पेड़। हिंगोट।

गोंदनी—संज्ञा स्त्री. [हिं. गोंद] एक पेड़। हिंगोट।

गोंदपँजीरी—संज्ञा स्त्री. [हिं. गोंद+पँजीरी] पँजीरी या पाग जिसमें गोंद मिला हो।

गोंदपाक, गोंदपाग—संज्ञा पुं. [हिं. गोंद+ पाक = पाग] चीनी में पगा हुआ गोंद, गोंद की पपड़ी या कतली। उ.—पेठा पाक, जलेबी, कौरी। गोंदपाक, तिनगरी, गिंदौरी—३९६।

गोंदमखाना—संज्ञा पुं. [हिं. गोंद+मखाना] मखाने के साथ चीनी में पगा हुआ गोंद।

गोंदरा—संज्ञा पुं. [सं. गुंद्रा] एक नरम घास।

गोंदरी—संज्ञा स्त्री. [सं. गुद्रा] एक घास। चटाई।

गोंदला—संज्ञा पुं. [सं गुद्रा] नागरमोथा। एक घास।

गोंदा—संज्ञा पुं. [हिं. गूँधना] (१) भुने चनों का गूँधा हुआ बेसन। (२) मिट्टी का गारा।

गोंदी—संज्ञा स्त्री. [सं. गोवंदनी = प्रियंगु] (१) गोंदनी का पेड़। (२) इंगुदी, हिंगोट।

मुहा.—गोंदीं सा लदना—(१) फलों से लद जाना। (२) शरीर में बहुत से दाने निकलना।

गोंदीला-वि. [हिं. गोंद+ईला (प्रत्य.)] जिस (वृक्ष) से गोंद निकले।

गो—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) गाय, गऊ। उ.—ल्याए ग्वाल घेरि गौ, गोसुत—४७१। (२) किरण। (३) इंद्रिय। (४) वाणी, वाक्शक्ति। (५) सरस्वती। (६) आँख। (७) बिजली। (८) पृथ्वी।

(९) दिशा। (१०) माता। (११) दूध देनेवाले पशु। (१२) जीभ, जिह्वा।

संज्ञा पुं.—(१) बैल। (२) शिव का नंदी। (३) घोड़ा। (४) सूर्य। (५) चंद्र। (६) बाण, तीर। (७) गवैया। (८) प्रशंसा करनेवाला। (९) आकाश। (१०) स्वर्ग। (११) जल। (१२) बज्र। (१३)। शब्द। (१४) नौ का अंक। (१५) शरीर के रोम।

अव्य. [फ़ा.] यद्यपि।

क्रि. अ. [हिं. गया] गया। उ.—दूर बढ़ि गो स्याम सुंदर ब्रज संजीवन मूर—सा. ३८।

गोइँठा—संज्ञा पुं. [सं. गो+विष्ठा] कंडा, उपला।

गोइँड़—संज्ञा पुं. [सं. गोष्ठ] (१) गाँव की सीमा। (२) गाँव के आसपास की भूमि।

गोइंदा—संज्ञा पुं. [फ़ा.] गुप्त भेदिया, गुप्तचर।

गोइ—क्रि. स. [हिं. गोना] छिपाकर, लुकाकर।

मुहा.—लेत मन गोइ—मन चुरा लेते हैं, मन हर लेते हैं। उ.—नागर नवल कुँवर बर सुंदर, मारग जात लेत मन गोइ—१०-२१०। मन धरयौ गोइ—मन चुराकर रख लिया, छिपा लिया। उ.—कहौ घर हम जाहिं कैसे मन धरयौ तुम गो—इ ११९४। राखहु गोइ—छिपाकर या सम्हाल कर रखो। उ.—हाँसी होन लगी है ब्रज में जोगहु राखहु गोइ—३०२१।

संज्ञा पुं. [हिं. गोल, गोय] गेंद।

गोइन—संज्ञा पुं.—एक तरह का मृग।

गोइयाँ—संज्ञा पुं., स्त्री. [हिं. गोहनियाँ] साथ में रहनेवाला, साथी, सहचर, सखी,सहेली।

गोई—क्रि. स. [हिं. गोना] छिपा लिया, लुका लिया। उ.—सूर बचन सुनि हँसी जसोदा, ग्वालि रही मुख गोई—१०-३२२।

मुहा.—लै गयो मन गोई—मन चुरा लिया, हर लिया या मुग्ध कर लिया। उ.—(क) सूरदास सुख मूरि मनोहर लै जो गयौ मन गोई—२८८१। (ख) कपट की करि प्रीति लै गयौ मन गोई—३२०९।

संज्ञा पुं., स्त्री. [हिं. गोइयाँ] साथी, सखी।

गोऊ—वि. [हिं. गोना + ऊ (प्रत्य)] छिपानेवाला, हरनेवाला। उ.—सूरदास जितने रंग काछत जुवती-जन-मन के गोऊ हैं।

गोए—क्रि. स. [हिं. गोना] छिपा लिये, अदृश्य कर दिये। उ.—चतुरानन बछरा लै गोए, फिरि मांडव आए तिहिं ठाँव—४३८।

गोकंटक—संज्ञा पुं. [सं.] गोखरू।

गोकन्या—संज्ञा स्त्री. [सं.] कामधेनु।

गोकर—संज्ञा पुं. [सं.] सूर्य, रवि।

गोकर्ण—संज्ञा पुं. [सं.] (१) मलाबार का वह क्षेत्र जो शिव की उपासना के लिए प्रसिद्ध है। (२) इस क्षेत्र की शिवमूर्ति। (३) खच्चर। (४) एक साँप। (५) बालिश्त, बित्ता। (६) काश्मीर का एक प्राचीन राजा। (७) शिव का एक गण। (८) एक मुनि। (९) गाय का कान।

वि.—जिसके कान गाय की तरह लंबे हों।

गोकर्णी—संज्ञा स्त्री. [सं.] मुरहरी नामक लता।

गोकील—संज्ञा पुं. [सं.] (१) हल। (२)मूसल।

गोकुंजर—संज्ञा पुं. [सं.] (१) बैल। (२) शिव का नंदी।

गोकुल—संज्ञा पुं. [सं.] (१) गैयों का झुंड या समूह। (२) गैयों के रहने का स्थान, गोशाला, खरिक। (३) एक प्राचीन गाँव जो वर्तमान मथुरा के पूर्व दक्षिण में प्राय: तीन कोस पर जमुना के दूसरे किनारे स्थिति था। अब यह महाबन कहलाता है। श्रीकृष्ण की बाल्यावस्था यहीं बीती थी। वर्तमान गोकुल इससे भिन्न नये स्थान पर है।

गोकुलचंद—संज्ञा. पुं. [सं. गोकुल +चंद्र] गोकुल-वासियों को चंद्रमा के समान सुख-शांति देनेवाले श्रीकृष्ण। उ.—हिंडोरना झूलत गोकुलचंद—२२८१।

गोकुलनाथ, गोकुलपति, गोकुलराइ—संज्ञा पुं [सं.] गोकुल के स्वामी श्रीकृष्ण। उ.—गोकुलनाथ नाथ सब जनके गोपति तुम्हरे हाथ—सा. ७६४।

गोकुलस्थ—वि. [सं.] गोकुलग्राम निवासी।

संज्ञा पुं. [सं.] (१) वल्लभी गोसाइयों का एक भेद। (२) तैलंग ब्राह्मणों का एक भेद।

गोकोस—संज्ञा पुं. [सं. गो + क्रोश] उतनी दूरी जहाँ तक गाय का रँभाना सुनाई दे, छोटा कोस।

गोक्ष—संज्ञा पुं. [सं.] जोंक नामक कीड़ा।
गोखग—संज्ञा पुं. [सं. गो+खग] थलचर, पशु।
गोखरू—संज्ञा पुं. [सं. गोक्षुर] एक पौधा, उसका फल।
गोख—संज्ञा पुं. [सं. गवाक्ष] मोखा, झरोखा।
संज्ञा पुं. [हिं. गो+खाल] गाय का कच्चा चमड़ा।
गोखुर—संज्ञा पुं. [सं.] (१) गाय का पैर। (२) गाय के खुर का थल पर बना चिन्ह।
गोखुरा—संज्ञा पुं. [हिं. गो+खुर] एक साँप।
गोगा—संज्ञा पुं. [देश.] छोटा काँटा, मेख।
गोगापीर—संज्ञा पुं. [हिं. गो+पीर] एक पीर जो देवताओं के समान पूजा जाता है।
गोग्रासि—संज्ञा पुं. [सं.] श्राद्ध आदि के आरंभ में गाय के लिए निकाला गया भोजन।
गोघरी—संज्ञा स्त्री. [देश.] एक तरह की कपास।
गोघात—संज्ञा स्त्री. [सं.] गाय की हत्या।
गोघातक, गोघाती—संज्ञा पुं. [सं.] गाय का हत्यारा।
गोघ्न—संज्ञा पुं. [सं.] (१) गाय का हत्यारा या बधिक। (२) अतिथि, मेहमान।
गोचंदन—संज्ञा पुं. [सं.] एक तरह का चंदन।
गोचंदना—संज्ञा स्त्री. [सं.] एक जहरीली जोंक।
गोचना—क्रि. स. [पुं. हिं. अगोछना] रोकना।
संज्ञा पुं. [हिं. गेहूँ+चना] मिला हुआ गेहूँ-चना।
गोचर—वि. [सं.] जिसका ज्ञान इंद्रियों द्वारा हो।
संज्ञा पुं. [सं.] (१) बात या विषय जिसका ज्ञान इंद्रियों द्वारा हो। (२) गैयों के चरने का स्थान, चरने का स्थान, चरी, चरागाह। (३) प्रदेश, प्रांत।
गोचरी—संज्ञा स्त्री. [हिं. गो+चरना] भिक्षावृत्ति।
गोचर्म—संज्ञा पुं. [सं.] गाय का चमड़ा।
गोची—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) एक मछली। (२) हिमालय की स्त्री का नाम।
क्रि. सं. भूत. [हिं. गोचना] रोकी, थाम ली।
गोजई—संज्ञा स्त्री. [हिं. गेहूँ+जौ] मिला हुआ गेहूँ-जौ।
गोजर—संज्ञा पुं. [सं.] बूढ़ा बैल।
संज्ञा पुं. [हिं. गुनगुना] कनखजूरा नामक कीड़ा।
गोजरा—संज्ञा पुं. [हिं. गेहूँ+जौ] जौ मिला गेहूँ।
गोजा—संज्ञा पुं. [सं. गवाजन] पौधों का नया कल्ला।
संज्ञा पु.—गाय या पशु हाँकने की लकड़ी।
गोजिह्वा—संज्ञा स्त्री. [सं.] गोभी नामक घास।
गोजी—संज्ञा स्त्री. [सं. गवाजन] (१) गाय या पशु हाँकने की लकड़ी। (२) लाठी, लट्ठ।
गोजीत—वि. [सं.] इंद्रियों को जीतनेवाला।
गोझनवट—संज्ञा स्त्री. [देश.] साड़ी का अंचल।
गोझा—संज्ञा पुं. [सं. गुह्यक] (१) गुझिया नामक पकवान। उ.—(क) गोझा बहु पूरग पूरे। भरि भरि कपूर रस चूरे। (ख) गोझा गूँदे गाल मसूरी—२३२१ (२) लकड़ी की कील, गुज्झा। (३) एक घास। (४) जेब, खीसा।
गोट—संज्ञा स्त्री. [सं. गोष्ट] किनारा, किनारे का फीता।
संज्ञा पुं. [सं. गोष्ठ] गाँव, खेड़ा, टोली।
संज्ञा पुं. [हिं. गोल] तोप का गोला।
संज्ञा स्त्री. [सं. गोष्ठी] (१) मंडली (२) सैर जिसमें कच्ची रसोई का स्वयं प्रबंध किया जाय।
संज्ञा स्त्री. [हिं. गोटी] कंकड़ आदि का टुकड़ा।
संज्ञा स्त्री [सं. गुटिका] चौपड़ की गोटी।
गोटा—संज्ञा पुं. [हिं. गोट] (१) सुनहला-रुपहला फीता या गोट। (२) सुपारी, धनिया इलायची आदि का भुना हुआ मसाला।
संज्ञा पुं. [सं. गुटिका] (१) चौपड़ की गोटी। (२) तोप का गोला।
गोटी—संज्ञा स्त्री. [सं. गुटिका] (१) कंकड़ पत्थर का छोटा टुकड़ा। (२) चौपड़, शतरंज आदि का मोहरा (३) एक खेल। (४) लाभ या आमदनी का उपाय।
मुहा.—गोटी जमना. (बैठना)—उपाय लग जाना। गोटी जमाना (बैठाना)— उपाय लगाना।
गोटू—संज्ञा स्त्री. [देश.] घटिया चिकनी सुपारी।
गोठ—संज्ञा स्त्री. [सं. गोष्ठ] (१) गोशाला, गोस्थान। उ.—गो-सुत गोठ बँधन सब लागे, गो-दोहन की जूनटरी—४०४। (२) श्राद्ध। (३) सैर-सपाटा।
गोठिल—वि. [सं. कुठित] कुंद धारवाला।
गोड़—संज्ञा पुं. [सं. गम, गो] पैर, पाँव। उ.—(क) निसिदिन फिरत रहत मुँह बाए, अहमिति जनम बिगोइसि। गोड़ पसारि पर्यौ दोउ नीकैं,

अब कैसी कह होइसि—१-३३३। (ख) सूर सो मनसा भई पाँगुरी निरखि डगमगे गोड़—१३४७। (ग) सैल से मल्ल वै धाइ आये सरन कोऊ भले लागे तब गोड़ पर थरथराने—२५६६।

मुहा.—गोड़ भरना—(१) पैर में महावर लगाना। (२) वर के पैर में महावर लगाना।

गोड़इत—संज्ञा पुं. [हिं. गोइँड़+ऐत (प्रत्य.).] चौकीदार, पहरेदार।

गोड़ई—संज्ञा पुं. [हिं. गोइँड़+ऐत (प्रत्य.)] (१) चौकीदार। (२) चिट्ठी ले जानेवाला पुराना कर्मचारी।

गोड़ना—क्रि. स. [हिं. कोड़ना] (१) कुछ गहराई तक मिट्टी खोदना, पेड़ की जड़ के पास की मिट्टी खोदना। (२) (किसी काम को) बिगाड़ देना।

गोड़वरियाँ—संज्ञा स्त्री. [हिं. गोड़] पैताना।

गोड़वाना—क्रि. स. [हिं. गोड़ना का प्रे.] (१) गोड़ने का काम करना। (२) कोई काम बिगाड़ देना।

गोड़सँकर—संज्ञा पुं. [हिं. गोड़+साँकर] स्त्रियों के पैर का एक गहना।

गोड़सिया—वि. [हिं. गोड़+सिहाना] जलने, कुढ़ने या ईर्ष्या रखनेवाला।

गोड़हरा—संज्ञा पुं. [हिं. गोड़ा+हरा (प्रत्य.)] पैर का एक गहना, कड़ा।

गोड़ाँगी—संज्ञा पुं. [हिं. गोड़+अँगिया] (१) पायजामा। (२) जूता।

गोड़ा—संज्ञा पुं. [हिं. गोड़] (१) पलँग का पाया। (२) छोटा घोड़ा।

संज्ञा पुं. [हिं. गोड़ना] थाला, आलबाल।

गोड़ाई—संज्ञा पुं. [हिं. गोड़ना] गोड़ने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

गोड़ाना—क्रि. स. [हिं. गोड़ना का प्रे.] गोड़ने का काम कराना।

गोड़पाई, गोड़ापाही—संज्ञा स्त्री. [हिं. गोड़=पाँव+पाई=ताने का सूत फैलाने का ढाँचा] (१) मंडल में घूमने की क्रिया। (२) किसी स्थान पर बार बार आने की क्रिया।

गोड़ारी—संज्ञा स्त्री. [हिं. गोड़ाई] ताजी खोदी घास।

संज्ञा स्त्री. [हिं. गोड़+आरी (प्रत्य.)] (१) पलँग का पैताना। (२) जूता।

गोड़ाली—संज्ञा स्त्री. [हिं. गाँडर] गाँडर दूब।

गोड़ियाँ—संज्ञा पुं. [हिं. गोड़] पैर, पाँव। उ.—छोटी छोटी गोड़ियाँ, अँगुरियाँ छबीली छोटी, नख-ज्योती, मोती मानौ कमल-दलनि पर—१०-१५१।

संज्ञा पुं. [हिं. गोटी=युक्ति] उपाय करनेवाला।

संज्ञा पुं. [देश.] मल्लाह।

गोड़ी—संज्ञा स्त्री. [हिं. गोटी=लाभ] लाभ, फायदा।

मुहा०—गोड़ी जमना (लगना)—लाभ या सफलता होना। गोड़ी हाथ से जाना—हानि होना।

संज्ञा स्त्री. [हिं. गोड़=पैर] पैर, चरण।

मुहा०—गोड़ी आना (पड़ना)—किसी का चरण पड़ना, आना।

गोणी—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) टाट का बोरा, गोन। (२) एक माप या तौल। (३) बहुत महीन कपड़ा।

गोत—संज्ञा पुं. [सं. गोत्र] (१) कुल, वंश। उ.—(क) राम भक्त-बत्सल निज बानौ। जाति, गोत, कुल, नाम गनत नहिं, रंक होइ कै रानौ—१-११। (ख) तुम बड़े जदुबंस राजा मिले दासी गोत—२६८२। (ग) इतनिक दूरि भये कुछ औरे बिसरयौ गोकुल गोत—३३६४। (२) समूह, जत्था। उ.—सुनि यह स्याम बिरह भरे।......। सखिन तब भुज गहि उठाए कहा बावरे होत। सूर प्रभु तुम चतुर मोहन मिलो अपने गोत—३४२६।

गोतना—क्रि. सं. [हिं. गोता] (१) गोता देना, डुबाना। (२) नीचे की तरफ ले जाना।

क्रि. अ.—(२) नीचे झुकना। (१) औंधाना।

गोतम—संज्ञा पुं. [सं.] (१) गोत्र चलानेवाला व्यक्ति। (२) एक ऋषि।

गोतमी—संज्ञा स्त्री [सं.] गोतम की स्त्री अहल्या।

गोता—संज्ञा पुं. [सं.] डुब्बी, डुबकी।

मुहा०—गोता खाना—(१) डुबकी लगाना। (२) धोखे में आना। गोता खात—धोखे में आते हैं। उ.—भवसागर मैं पैरि न लीन्हौ।..........। अति गंभीर, तीर नहिं नियरैं, किहिं बिधि उतरयौ जात?

नहीं अधार नाम अवलोकत जित तित गोता खात—१-१७५। गोता देना—(१) डुबाना। (२) धोखा देना। गोता मारना (लगाना) (१) डुबकी लगाना। (२) काम करते-करते बीच बीच में नागा करना।

गोताखोर, गोतामार—संज्ञा पुं. [हिं. गोता + अ. खोद, हिं. मारना] डुबकी लगानेवाला।

गोतिन—संज्ञा स्त्री. [हिं. गोत] सखी, सहेली।

गोतिया—वि. [सं. गोत्र + इया (प्रत्य.)] अपने गोत्र वाला (व्यक्ति)।

गोती—वि. [सं. गोत्रीय] अपने गोत्र का, गोत्रीय, भाई-बंधु। उ.—बिधु आनन पर दीरघ लोचन, नासा लटकत मोती री। मानौ सोम संग करि लीने, जानि आपने गोती री—१०-१३६।

गोतीत—वि. [सं. गो + अतीत] जो ज्ञानेन्द्रियों द्वारा जाना न जा सके, अगोचर।

गोत्र—संज्ञा पुं. [सं.] (१) संतान। (२) नाम। (३) क्षेत्र। (४) राजा का छत्र। (५) समूह। (६) वृद्धि, बढ़ती। (७) धन-संपत्ति। (८) पहाड़। (९) भाई। (१०) वंश, कुल। (११) वंश या कुल की संज्ञा जो उसके प्रवर्तक के अनुसार होती है।

गोत्रज—वि. [सं.] एक ही वंश-परम्परावाला।

गोत्रसुता—संज्ञा स्त्री. [सं.] पार्वती जी।

गोत्री—वि. [सं.] समान गोत्र का, गोतिया।

गोत्रोचार—संज्ञा पुं. [सं.] विवाह में वर-वधू के वंश, गोत्र आदि का परिचय।

गोदंती—संज्ञा पुं. [सं.] एक मणि।

गोद—संज्ञा स्त्री. [सं. क्रोड़] (१) उत्संग, कोरा, ओली।

मुहा०—गोद का—(१) छोटा बच्चा जो गोद में ही रहे। (२) बहुत पास का। गोद बैठना—दत्तक बनना। गोद लेना—दत्तक बनाना। गोद देना—अपने लड़के को दूसरे को इसलिए देना कि वह उसे अपना दत्तक पुत्र बना ले।

(२) आँचल। उ.—(क) सबरी कटुक बेर तजि, मीठे चाखि, गोद भरि ल्याई। जूठनि की कछु संक न मानी, भच्छ किए सत-भाई—१-१३। (ख) तिल चाँवरी गोद भरि दीन्ही फरिया दई फारि नव सारी—७०८।

मुहा०—गोद पसार कर विनती करना (माँगना)—बहुत दीनता से प्रार्थना करना। करई गोद पसारि—अधीरता से विनती करती हैं। उ.—खूझा मरुआ कुंद सौं कहैं गोद पसारी।·······। बार बार हा हा करैं कहुँ हौ गिरिधारी—१८२२। गोद भरना-(१) शुभ या विशेष अवसरों पर सौभाग्यवती स्त्री के अंचल में नारियल आदि पदार्थों के साथ आशीर्वाद देना। (२) संतान होना। लेहु गोद पसारि—श्रद्धा भक्ति के साथ ग्रहण करो। उ.—दियौ फल यह गिरि गोबर्धन लेहु गोद पसारि—६५०।

गोदनहर, गोदनहारी—संज्ञा स्त्री. [हिं. गोदना + हर, हारी (प्रत्य.)] गोदना गोदने का काम करनेवाली।

गोदनहरा—संज्ञा पुं. [हिं. गोदना + हारा (प्रत्य.)] टीका लगाने या गोदना गोदनेवाला।

गोदना—क्रि. स. [हिं. खोदना = गड़ना] (१) नुकीली चीज चुभाना या गड़ाना। (२) कोई काम करने के लिए बार-बार जोर देना। (३) छेड़छाड़ करना, ताना मारना। (४) हाथी के अंकुश मारना। (५) गोड़ना। (६) अस्पष्ट लिखना।

संज्ञा पुं.—(१) गुदा हुआ काला-नीला चिन्ह। (२) टीका लगाने की सुई। (३) गोड़ने का औजार।

गोदनी—संज्ञा स्त्री. [हिं. गोदना] (१) गोदने की सुई। (२) चुभाने-गड़ाने की नुकीली चीज।

गोदा—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) गोदावरी नदी। (२) गायत्री स्वरूपा महादेवी।

संज्ञा पुं. [देश.] कटवाँसी बाँस।

संज्ञा पुं. [हिं. गोजा] नयी शाखा या डाल।

संज्ञा पुं. [हिं. घौद] पीपल आदि के पके फल।

संज्ञा पुं. [हिं. गोद] कोरा, ओली, गोदी। उ.—धन्य नंद धनि धन्य जसोदा। धनि धनि तुमैं खिलावति गोदा—१०७२।

गोदान—संज्ञा पुं. [सं.] (१) गाय दान देने की क्रिया। (२) विवाह के पूर्व का एक संस्कार।

गोदावरी—संज्ञा स्त्री. [सं.] दक्षिण भारत की प्रसिद्ध नदी जो नासिक के पास से निकलती और बंगाल की खाड़ी में गिरती है।

गोदी—संज्ञा स्त्री. [हिं. गोद] कोरा, ओली।
संज्ञा पुं. [देश.] एक तरह का बबूल।

गोध, गोधा—संज्ञा स्त्री. [सं. गोधा] गोह नामक पशु।

गोधन—संज्ञा पुं. [सं.] (१) गौओं का समूह। उ.—(क) माधौ जू, यह मेरी इक गाइ।........। हित करि मिलै लेहु गोकुलपति, अपने गोधन माहँ—१-५१। (ख) कमलनयन घनस्याम मनोहर सब गोधन को भूर। (२) गो-रूपी संपत्ति। (३) चौड़े फल का तीर।
संज्ञा पुं. [सं. गोवर्द्धन] गोवर्द्धन पर्वत।
संज्ञा पुं. [देश.] एक पक्षी।

गोधर—संज्ञा पुं. [सं.] पहाड़, पर्वत।

गोधापदी, गोधावती—संज्ञा स्त्री. [सं.] एक लता।

गोधी—संज्ञा स्त्री. [सं. गोधूम] एक तरह का गेहूँ।

गोधूम—संज्ञा पुं. [सं.] (१) गेहूँ। (२) नारंगी।

गोधूमक—संज्ञा पुं. [सं.] गेहुँअन नामक साँप।

गोधूलि, गोधूली—संज्ञा स्त्री. [सं.] संध्या का समय जब चरकर लौटती हुई गैयों के खुरों से उड़ी धूल सब तरफ छा जाती है।

गोध्र—संज्ञा पुं. [सं.] पहाड़, पर्वत।

गोनंद—संज्ञा पुं. [सं.] कार्तिकेय का एक गण।

गोन—संज्ञा स्त्री [सं. गोणी] (१) बैलों आदि पर लादने की खुरजी जिसका एक-एक भाग दोनों तरफ रहता है। (२) टाट का बोरा या थैला।
संज्ञा स्त्री. [सं. गुण] नाव खींचने की रस्सी।
संज्ञा स्त्री. [देश.] एक तरह की घास।

गोनरा—संज्ञा पुं. [सं. गुत] एक तरह की घास।

गोनर्द—संज्ञा पुं. [सं.] (१) नागरमोथा। (२) सारस पक्षी। (३) एक प्राचीन देश। (४) महादेव।

गोनस—संज्ञा पुं. [सं.] (१) एक साँप। (२) एक मणि।

गोना—क्रि. स. [सं. गोपन] छिपाना, लुकाना।

गोनिया—संज्ञा स्त्री. [सं. कोण, हिं. कोना+इया (प्रत्य.)] बढ़ई का एक औजार।
संज्ञा पुं. [हिं. गोन=बोरा+इया (प्रत्य.)] बोरा ढोनेवाला पशु या मनुष्य।
संज्ञा पुं. [हिं. गोन=रस्सी+इया (प्रत्य.)] नाव की रस्सी खींचनेवाला।

गोनी—संज्ञा स्त्री [सं. गोणी] (१) टाट का थैला या बोरा। (२) सन, पटुआ।

गोपँगना—संज्ञा. स्त्री. [सं. गोपांगना] गोप जाति की स्त्री, गोपी। उ.—हरि कौं बिमल जस गावति गोपँगना—१०-११२।

गोप—संज्ञा पुं. [सं.] (१) गाय की रक्षा करनेवाला। (२) ग्वाला, अहीर। (३) गोशाला का प्रबंधक। (४) राजा। (५) रक्षक। (६) एक गंधर्व। (७) एक ओषधि। (८) गाँव का मुखिया।
संज्ञा पुं. [सं. गुंफ] गले का एक गहना।
क्रि. स. [हिं. गोपना] छिपाकर, लुकाकर, गुप्त रखकर। उ०—कहौ नहीं साँची सो हमसौं जिनि गोप करो सुनिकै अक्रूर बिमल स्तुति मानै—२५५७।
वि. [सं. गुप्त] छिपा हुआ, गुप्त।

गोपक—संज्ञा पुं. [सं.] गोप, ग्वाला, अहीर। उ.—नाम गोपाल जाति कुल गोपक गोप गोपाल उपासी—३३१४।

गोपजा—संज्ञा स्त्री. [सं. गोप+जा] गोप जाति की कन्या या बालिका।

गोपति—संज्ञा पुं. [सं.] (१) शिव। (२) विष्णु। (३) श्रीकृष्ण। (४) सूर्य। (५) राजा। (६) बैल। (७) एक ओषधि। (८) ग्वाल। (९) नंदजी। उ.—हमरे तो गोपति-सुत अधिपति बनिता और रन ते—सा. उ. ३४।
क्रि. स. [गोपना] छिपाती है।

गोपद—संज्ञा पुं. [सं. गोष्पद] (१) गौओं के रहने का स्थान। (२) जमीन पर बना गाय के खुर का चिह्न। (३) गाय के पैर। उ.—मोहनि कर तैं दोहनि लीन्हीं गोपद बछरा जोरे—७३२।

गोपदल—संज्ञा पुं. [सं.] सुपारी का पेड़।

गोपदी—वि. [सं. गो+पद+ई (प्रत्य.)] गाय के खुर के समान छोटा।

गोपन—संज्ञा पुं. [सं.] (१) छिपाव, दुराव। (२) रक्षा। (३) व्याकुलता। (४) दीप्ति।

गोपना—क्रि. स. [सं. गोपन] छिपाना, लुकाना।

गोपनीय—वि. [सं.] छिपाने योग्य, गोप्य।

गोपपति—संज्ञा पुं. [सं.] श्रीकृष्ण । उ.—दीनदयाल, गोपाल, गोपपति, गावत गुन आवत ढिग ढरहरि —१-३१२ ।

गोपांगना—संज्ञा स्त्री. [सं.] गोप जाति की स्त्री ।

गोपा—वि. [सं.] (१) छिपानेवाला । (२) नाशक ।
संज्ञा स्त्री.—(१) अहीरिन । (२) एक लता । (३) गौतम बुद्ध की पत्नी, यशोधरा ।

गोपाल—संज्ञा पुं. [सं.] (१) गाय का पालन-पोषण करनेवाला । (२) ग्वाला, अहीर । (३) इंद्रिय-निग्रह करनेवाला । (४) श्रीकृष्ण । उ.— गाइ लेहु मेरे गोपालहिं—१-७४ । (५) राजा । (६) एक छंद ।

गोपालक—संज्ञा पुं. [सं.] (१) ग्वाला, अहीर । (२) शिव । (३) राजा ।

गोपालिका—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) ग्वालिन । (२) एक ओषधि । (३) एक कीड़ा ।

गोपाली—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) गाय पालनेवाली । (२) ग्वालिन, अहीरिन ।

गोपाष्टमी—संज्ञा स्त्री. [सं.] कार्तिक शुक्ल अष्टमी जब श्रीकृष्ण ने गैया चराना शुरू किया था ।

गोपिकन—संज्ञा स्त्री. बहु. [सं. गोपिका] गोपियों से । उ.—आरजपंथ छिड़ाय गोपिकन अपने स्वारथ भोरी—२८६२ ।

गोपिका—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) गोप की स्त्री, गोपी । (२) अहीरिन, ग्वालिन । (३) छिपानेवाली ।

गोपित—वि. [सं.] छिपा हुआ, गुप्त ।

गोपिनी—वि. स्त्री. [सं.] छिपानेवाली ।
संज्ञा स्त्री. [सं.] श्यामलता ।

गोपिया—संज्ञा स्त्री. [सं.] जाल का झोला जिसमें कंकड़-पत्थर रखकर चलाये या फेंके जायँ ।

गोपी—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) ग्वालिनी, गोपपत्नी या गोपकुमारी । (२) व्रज की गोपालक जाति की वे स्त्रियाँ या कन्याएँ जो श्रीकृष्ण से प्रेम करती थीं और जिन्होंने उनकी बालक्रीड़ा तथा अन्य लीलाओं का सुख उठाया था । (३) एक लता ।
वि.—छिपाने या गुप्त रखनेवाली ।
क्रि. स. [हिं. गोपना] छिपायी या गुप्त रखी ।

गोपीकामोदी—संज्ञा स्त्री. [सं.] एक रागिनी ।

गोपीचंद—संज्ञा पुं. [सं. गोपी + हिं. चंद] भर्तृहरि की बहन मैनावती का पुत्र जो रंगपुर (बंगाल) का राजा था और माता के उपदेश से वैरागी हो गया था ।

गोपीचंदन—संज्ञा पुं. [सं.] एक पीली मिट्टी जो द्वारका के उस सरोवर से निकलती है जिसके किनारे जाकर, श्रीकृष्ण के स्वर्गवासी होने पर, अनेक गोपियों ने प्राण तजे थे ।

गोपीजन—[सं. गोपी + जन=समूह] गोपियों का समूह । उ.—गाइ-गोप-गोपीजन कारन गिरि कर-कमल लियो—१-१२१ ।

गोपीत—संज्ञा पुं. [सं.] एक खंजन पक्षी ।

गोपीता—संज्ञा पुं. [सं. गोपी] गोपकन्या, गोपी ।

गोपीथ—संज्ञा पुं. [सं.] (१) सरोवर जहाँ गैयाँ जल पिएँ । (२) एक तीर्थ । (३) रक्षा । (४) राजा ।

गोपीनाथ—संज्ञा पुं. [सं.] गोपियों के स्वामी श्रीकृष्ण । उ.—कहै सूरदास, देखि नैनन की मिटी प्यास, कृपा कीनी गोपीनाथ, आए भुवतल मैं—८-५ ।

गोपुच्छ—संज्ञा पुं. [सं.] (१) गाय की पूँछ । (२) एक बंदर । (३) एक हार । (४) एक बाजा ।

गोपुत्र—संज्ञा पुं. [सं.] सूर्य-पुत्र कर्ण ।

गोपुर—संज्ञा पुं. [सं.] (१) नगर का द्वार । उ.—ऐसे कहत गये अपने पुर सबहिं विलच्छन देख्यौ । मनिमय महल फटिक गोपुर लखि कनक भुमि अवरेख्यौ —सारा. ८२० । (२) किले का द्वार । (३) द्वार, दरवाजा । (४) स्वर्ग, गोलोक । उ.—करि प्रतिहार तज्यौ सुर गोपुर कंचकोट सन फूल्यौ—२७५२ ।

गोपेन्द्र—संज्ञा पुं. [सं.] (१) श्रीकृष्ण । (२) गोपों में श्रेष्ठ श्रीनंद ।

गोप्ता—वि. [सं.] रक्षा करनेवाला, रक्षक ।
संज्ञा पुं. [सं. गोप] विष्णु ।
संज्ञा स्त्री.—गंगा ।

गोप्रवेश—संज्ञा पुं. [सं.] गोधूली, संध्या ।

गोप्य—वि. [सं.] (१) छिपाने लायक । (२) छिपाया हुआ । (३) रक्षा करने योग्य ।

गोफ—संज्ञा पुं. [सं.] (१) दास, सेवक । (२) दासीपुत्र । (३) गोपियों का समूह ।

गोफण, गोफन, गोफना—संज्ञा पुं. [सं. गोफण] जाल का झोला जिसमें कंकड़-पत्थर रखकर चलाये जायँ।

गोफा—संज्ञा पुं. [सं. गुंफ] (१) नया मुँहबँधा पत्ता। संज्ञा स्त्री.—तहखाना, गुफा।

गोबर—संज्ञा पुं. [सं. गोमय] गाय का मल।

गोबरगणेश गोबरगनेस—वि. [हिं. गोबर + गणेश] (१) भद्दा, कुरूप। (२) मूर्ख। (३) निकम्मा।

गोबरी—संज्ञा स्त्री. [हिं. गोबर + ई (प्रत्य.)] (१) कंडा, उपला। (२) गोबर की लिपाई।

गोबरैल, गोबरौरा, गोबरौला—संज्ञा पुं. [हिं. गोबर + ऐला या औला (प्रत्य.)] गोबर में उत्पन्न एक कीड़ा।

गोबर्धन—संज्ञा पुं. [सं. गोवर्द्धन] (१) गायों की वृद्धि करनेवाला। (२) व्रज का एक पर्वत। प्रसिद्धि है कि एक बार बहुत वर्षा होने पर श्रीकृष्ण ने इसे उँगली पर उठा लिया था।

गोबर्धनधारी—संज्ञा पुं. [सं. गोवर्द्धन + धारी] गोबर्धन पर्वत को उठानेवाले, श्रीकृष्ण।

गोबिंद, गोबिन्दा—संज्ञा. पुं. [सं. गोपेंद्र, या गोविंद, हि. गोविंद] (१) श्रीकृष्ण। (२) परब्रह्म।

गोबिया—संज्ञा पुं. [देश.] एक तरह का बाँस।

गोबी, गोभी—संज्ञा स्त्री. [सं. गोजिह्वा] (१) एक घास। (२) एक शाक। (३) पौधों का एक रोग।

गोभ, गोभा—संज्ञा स्त्री.—लहर।

गोभुज—संज्ञा पुं. [सं.] राजा।

गोभृत—संज्ञा पुं. [सं.] पर्वत, पहाड़।

गोमंत—संज्ञा पुं. [सं.] सह्याद्रि की एक पहाड़ी जहाँ गोमती देवी का स्थान है।

गोम—संज्ञा स्त्री.[देश.] (१)घोड़ों की भँवरी। (२)पृथ्वी।

गोमती—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) उत्तर प्रदेश की एक प्रसिद्ध नदी। उ.—मन यह करत विचार गोमती तीर गये—१०-३४७। (२) बंगाल की एक नदी। (३) गोमंत पर्वत की एक देवी। (४) एक मंत्र।

गोमतीशिला—संज्ञा स्त्री. [सं.] हिमालय की एक शिला जहाँ अर्जुन का शरीर गला था।

गोमय, गोमल—संज्ञा पुं. [सं.] गोबर।

गोमर—संज्ञा. पुं. [सं. गो + हिं. मर (प्रत्य.)] गाय को मारने वाला, गोहिंसक, कसाई।

गोमा—संज्ञा पुं. [देश.] गोमती नदी।

गोमाय, गोमायु—संज्ञा पुं. [सं. गोमायु] (१) सियार, गीदड़। उ.—चल्यौ भाजि गोमायु जंतु ज्यों लैके हरि कौ भाग—सारा.२६७। (२) एक गन्धर्व।

गोमी—संज्ञा पुं. [सं. गोमिन्] (१) सियार। (२) पृथ्वी।

गोमुख—संज्ञा पुं. [सं.] (१) गाय का मुख। उ.—गउ चराइ, मम त्वचा उपारौ। हाड़न कौ तुम बज्र सँवारौ सुरपति रिषि की आज्ञा पाई। लिए हाड़, दियौ बज्र बनाई। गौमुख असुध तदहिं तैं भयौ—६-५।

मुहा०—गोमुख नाहर (व्याघ्र)—वह मनुष्य जो देखने में तो सीधा हो, पर वास्तव में बड़ा क्रूर और अत्याचारी हो। (२) नरसिंहा नामक बाजा। उ.—एक पटह, एक गोमुख, एक आवझ, एक झालरी, एक अमृत कुंडल रवाब भाँति सौं दुरावै—२४२५। (३) एक शंख। (४) माला रखने की थैली जिसकी बनावट गाय के मुख की सी होती है। (५) नाक नामक जल जंतु। (६) योग का एक आसन। (७) टेढ़ा मेढ़ा घर। (८) हल्दी-चाँवल का ऐपन।

गोमुखी—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) माला रखने की ऊनी थैली। (२) गंगोत्तरी का वह स्थान जहाँ से गंगा निकलती है और जिसकी बनावट गाय के मुख की सी है। (३) एक नदी। (४) घोड़ों के ऊपरी होठों की एक भँवरी।

गोमुद्दी—संज्ञा स्त्री. [सं.] एक प्राचीन बाजा।

गोमूत्रिका—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) एक चित्रकाव्य। (२) एक घास।

गोमेद—संज्ञा पुं. [सं.] (१) गोमेदक मणि। (२) शीतल चीनी।

गोमेदक—संज्ञा पुं. [सं.] (१) एक मणि, राहु-रत्न। (२) काला विष। (३) एक साग।

गोमेध—संज्ञा पुं. [सं.] गोसव यज्ञ।

गोयँड़—संज्ञा स्त्री. [हिं. गाँव + मेंड़] गाँव के आसपास की भूमि।

गोय—संज्ञा पुं. [हिं. गोल] गेंद।

गोया—क्रि. वि. [फ़ा.] मानो।

गोयो—क्रि. स. [हिं. गोना] छिपाया, लुप्त किया, दूर

किया, मिटाया। उ.—गोकुल गाय दुहत दुख गोयो कूर भए ए बार—२८०७।

गोर—संज्ञा स्त्री. [फ़ा.] मृत शरीर की कब्र।

संज्ञा पुं. [अ. ग़ार] फारस का एक प्रदेश।

वि. [सं. गौर] (१) गोरा। उ.—(क) द्वै ससि स्याम नवल घन द्वै कीन्हें विधि गोर—१६१६। (ख) बलि तुहि जाउँ बेगि लै मिलाऊ स्याम सरोज बदन तुव गोर—२२१५। (ग) मनमोहन पिय दूल्हा राजत दुलहिन राधा गोर—सारा. १०६६। (२) उजला।

गोरका—संज्ञा पुं. [देश.] अँयल नामक वृक्ष।

गोरख अमली (इमली)—संज्ञा स्त्री. [हिं. गोरख+इमली] एक बड़ा पेड़ जिसे कल्पवृक्ष भी कहते हैं।

गोरखधंधा—संज्ञा पुं. [हिं. गोरख+धंधा] (१) कई तारों-कड़ियों आदि का समूह जिन्हें जोड़ना या अलग करना कठिन होता है। (२) झगड़ा या उलझन का काम। (३) झगड़ा, उलझन।

गोरखनाथ—संज्ञा पुं. [सं. गोरक्षनाथ] गोरखपुर के एक प्रसिद्ध सिद्ध जिनका संप्रदाय अभी तक है।

गोरखपंथी—वि. [हिं. गोरखनाथ+पंथी] गोरखनाथ का अनुयायी।

गोरखमुंडी—संज्ञा स्त्री. [सं. मुंडी] मुंडी नामक घास।

गोरखा—संज्ञा पुं. [हिं. गोरख] (१) नैपाल का एक प्रदेश। (२) इस प्रदेश का निवासी।

गोरखी—संज्ञा स्त्री. [हिं. गोरख] एक लता जिसमें फूट नामक ककड़ी फलती है।

गोरज—संज्ञा पुं. [सं.] गैयों के (चलते समय) खुरों से उड़ी हुई धूल।

गोरटा—वि. पुं. [हिं. गोरा] गोरे रंग का, गोरा।

गोरस—संज्ञा पुं. [सं.] (१) दूध। (२) दधि, दही। उ.—(क) गोरस मथत नाद इक उपजत, किंकिनि धुनि सुनि स्रवन रमापति—१०-१४६। (ख) रैनि जमाई धर्यौ हो गोरस, पर्यौ स्याम कैं हाथ—१०-२७७। (ग) गोरस बेचन गई बबा की सौं हौं मथुरा तें आई-२५४८। (३) मठा, छाछ। (४) इंद्रियों का सुख, विषय-सुख।

गोरसा—संज्ञा पुं. [सं. गोरस] बच्चा जो केवल ऊपरी (विशेषतः गाय के) दूध पर पला हो।

गोरसी—संज्ञा स्त्री. [सं. गोरस+ई (प्रत्य.)] दूध गरमाने की अँगीठी।

गोरा—वि. [सं. गौर] (१) उज्ज्वल वर्ण का। (२) उजला, सफेद।

संज्ञा पुं.—उज्ज्वलवर्ण का व्यक्ति।

गोराई—संज्ञा स्त्री. [हिं. गोरा+ई+या आई] (१) गोरापन। (२) उज्ज्वलता। (३) सुंदरता।

गोरिल्ला—संज्ञा पुं. [अफ्रिका] एक बनमानुष।

गोरी—संज्ञा स्त्री. [सं. गौरी, हिं. पुं. गोरा] गौर वर्ण की स्त्री, रूपवती रमणी। उ.—जौ तुम सुनहु जसोदा गोरी—१०-२८६।

वि.—उजले रंग की, सफेद। उ.—अपनी अपनी गाइ ग्वाल सब आनि करौ इक ठौरी। पियरी, मौरी, गोरी गैनी, खैरी, कजरी जेती—४४५।

गोरू—संज्ञा पुं. [सं. गो] (१) सींगवाला पशु, चौपाया, मवेशी। (२) दो कोस की नाप।

गोरूप—संज्ञा पुं. [सं.] महादेव।

गोरे, गोरैं—वि. [सं. गौर, हिं. गोरा] गोरे, गौर वर्ण के। उ.—गौरैं भाल बिंदु बंदन, मनु इंदु प्रात-रवि काँति—७०४।

गोरोचन—संज्ञा पुं. [सं.] एक प्रकार का सुगंधित द्रव्य। उ.—(क) बदन सरोज तिलक गोरोचन, लटलटकनि मधुकर-गति डोलनि—१०-१२१। (ख) सुंदर भाल-तिलक गोरोचन, मिलि मसि-बिंदुका लाग्यौ री—१०-१३७।

गोरोचना—संज्ञा स्त्री. [सं.] गोरोचन।

गोलंदाज—संज्ञा पुं. [फ़ा.] गोला चलानेवाला।

गोलंदाजी—संज्ञा स्त्री [फ़ा.] गोला चलाने की कला।

गोलंबर—संज्ञा पुं. [हिं. गोल+अंबर] (१) गुंबद। (२) गोलाई। (३) बाग का गोल चबूतरा।

गोल—वि. [सं.] (१) जिसका घेरा वृत्ताकार हो। (२) अंडे, नीबू आदि के आकार का।

मुहा०—गोल गोल—(१) मोटे तौर पर, स्थूल रूप से। (२) साफ साफ नहीं। गोल बात—जो बात बिलकुल स्पष्ट या साफ न हो। गोल मटोल (मठोल)—(१) मोटे तौर पर। (२) मोटा और नाटा।

(३) कम ऊँचाई का पर ज्यादा मोटाईवाला। गोल होना— (१) चुप हो जाना। (२) चुपके से चले जाना।

संज्ञा पुं. [सं.] (१) वृत्त, घेरा। (२) गोला। (३) एक ओषधि। (४) मैनफल या मदन वृक्ष।

संज्ञा पुं. [फ़ा. गोल] झुंड, समूह।

संज्ञा पुं. [सं. गोल (योग)] गोलमाल, गड़बड़, खलबली, हलचल।

मुहा.—गोल पारना (मारना)—गड़बड़, खलबली या हलचल मचाना। पारयो गोल—खलबली पैदा कर दी, हचचल मचा दी। उ.—ल्याए हरि कुसलात धन्य तुम घर घर पारयो गोल—३२६५।

गोलक—संज्ञा पुं. [सं.] (१) गोलोक। (२) गोल पिंड। (३) मिट्टी का गोल घड़ा। (४) फूलों का सार, इत्र। (५) आँख की पुतली। (६) गुंबद। (७) धन जोड़ने का पात्र। (८) गल्ला, गुल्लक। (९) आँख का डेला। उ.—(क) अपने दीन दास कैं हित लगि, फिरते सँग सँगहीं। लेते राखि पलक गोलक ज्यों, संतन तिन सबहीं—१-२८३। (ख) अति उनींद अलसात कर्मगति गोलक चपल सिथिल कछु थोरे। (ग) अति बिसाल बारिज-दल-लोचन, राजति काजर-रेख री। इच्छा सौं मकरंद लेत मनु अलि गोलक के बेप री—१०-१३६।

गोलमाल—संज्ञा पुं. [हिं. गोल (योग)] गड़बड़ी।

गोला—संज्ञा पुं. [हिं. गोल] (१) गोल बड़ा पिंड। (२) तोप से चलाने का गोल पिंड। (३) नारियल की गरी। (४) रस्सी, सूत आदि की गोल पिंडी।

संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) गोदावरी नदी। (२) सखी, सहेली। (३) मंडल। (४) गोली।

गोलाई—संज्ञा स्त्री. [हिं. गोल + आई (प्रत्य.)] गोल होने का भाव, गोलापन।

गोलाकार, गोलाकृति—वि. [सं.] गोल आकार या आकृतिवाला।

गोलार्द्ध—संज्ञा पुं. [सं.] पृथ्वी का आधा भाग।

गोलियाना—क्रि. स. [हिं. गोल] (१) गोल करना या बनाना। (२) समूह या गोल बाँधना।

गोली—संज्ञा स्त्री. [हिं. गोला] (१) छोटा गोल पिंड। (२) ओषधि की बटी। (३) बालकों के खेलने का गोल पिंड। (४) गोली का खेल। (५) सीसे का गोल छर्रा जो बंदूक से चलाया जाता है।

मुहा०—गोली खाना—घायल होना। गोली बचाना—संकट टल जाना। गोली मारना—परवाह न करना।

गोलोक—संज्ञा पुं. [सं.] (१) विष्णुलोक, जो बैकुंठ के दक्षिण में बताया जाता है। (२) स्वर्ग। (३) व्रजभूमि।

गोलोकेश—संज्ञा पुं. [सं. गोलोक + ईश] श्रीकृष्ण।

गोलोचन—संज्ञा पुं. [सं. गोरोचन] एक सुगंधित द्रव्य।

गोवत—क्रि. स. [हिं. गोना] छिपाते हैं। उ.—कबहूँ नैन की कोर निहारत कबहूँ बदन पुनि गोवत—१६६६।

गोवति—क्रि. स. स्त्री. [हिं. गोना] छिपाती है। उ.—सूरदास प्रभु तजो गर्व तैं नये प्रेम गति गोवति—१८००।

गोवध—संज्ञा पुं. [सं.] गाय की हत्या।

गोवना—क्रि. स. [हिं. गोना] (१) छिपाना। (२) खोना।

गोवर्द्धन—संज्ञा पुं. [सं.] (१) वृन्दावन का एक पर्वत जिसे श्रीकृष्ण ने उँगली पर उठाया था। (२) मथुरा का एक प्राचीन नगर और तीर्थ।

गोविंद—संज्ञा पुं. [सं. गोपेंद्र, प्रा. गोविंद] (१) श्रीकृष्ण। (२) वेदांत का ज्ञाता। (३) बृहस्पति। (४) परब्रह्म। (५) गोशाला का अध्यक्ष।

गोविंदपद—संज्ञा पुं. [सं.] मोक्ष, मुक्ति।

गोवीथी—संज्ञा स्त्री. [सं.] चंद्र मार्ग का एक अंश।

गोवै—क्रि. स. [हिं. गोवना, गोना] छिपाता है, लुकाता है। उ.—मालन लागि उलूखल बाँध्यो, सकल लोग व्रज जोवै। निरखि कुरुख उन बालनि की दिसि, लाजनि अँखियनि गोवै—३४७।

गोश—संज्ञा पुं. [फ़ा.] कान, श्रवण।

गोशमायल—संज्ञा पुं. [फ़ा.] पगड़ी में लगा मोतियों का गुच्छा जो कान के पास रहता है।

गोशमाली—संज्ञा स्त्री. [फ़ा.] (१) कान उमेठना। (२) कड़ी चेतावनी देना।

गोशा—संज्ञा पुं. [फ़ा.] (१) कोना, कोण। (२) एकांत स्थान। (३) दिशा, ओर। (४) कमान के सिरे।

गोशाला—संज्ञा स्त्री. [सं.] गैयों के रहने का स्थान।

गोश्त—संज्ञा पुं. [फ़ा.] मांस, आमिष।

गोष्ठ—संज्ञा पुं. [सं.] (१) गोशाला, (२) पशुशाला। (३) सलाह, परामर्श। (४) दल, मंडली।

गोष्ठशाला—संज्ञा स्त्री. [सं.] सभाभवन।

गोष्ठी—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) सभा, मंडली। (२) बात चीत। (३) सलाह, परामर्श।

गोष्पद—संज्ञा पुं. [सं.] (१) गोशाला। (२) गाय के खुर के बराबर गड़ा।

गोस—संज्ञा पुं. [सं.] (१) एक झाड़। (२) प्रभात।

गोसई—संज्ञा स्त्री. [देश.] कपास का एक रोग।

गोसनि—संज्ञा पुं. [फ़ा. गोशा + नि (प्रत्य.)] कमान के दोनों सिरों से। उ.—यह अचरज सुबड़ो जिय मेरे वह छाँड़नि बह पोसनि। निपट निकामजानि हम छाँड़ी ज्यों कमान बिन गोसनि—१०उ. ८८।

गोसमायल—संज्ञा. पुं. [फ़ा. गोशमायल] पगड़ी में लगी मोतियों की गुच्छी जो कानों के पास लटकती है। उ.—पाग ऊपर गोसमायल रंग रंग रचि बनाइ—२३५०।

गोसव—संज्ञा पुं. [सं.] गोमेध।

गोसा—संज्ञा पुं. [सं. गो] उपला, कंडा।

संज्ञा पुं. [हिं. गोशा] (१) कोना। (२) किनारा।

गोसाँई, गोसाई—संज्ञा पुं. [सं. गोस्वामी] (१) गैयों का स्वामी। (२) स्वर्ग का स्वामी, ईश्वर। (३) संन्यासियों का एक संप्रदाय। (४) विरक्त साधु। (५) वह जिसने इंद्रियों को जीत लिया हो। (६) मालिक, प्रभु।

गोसुत—संज्ञा पुं. [सं. गो+सुत] गाय का बच्चा, बछड़ा। उ.—(क) गोपी-ग्वाल-गाय-गोसुत-हित सात दिवस गिरि लीन्हयौ—१-१७। (ख) गोकुल पहुँचे जाइ गए बालक अपने घर। गोसुत अरु नर नारि मिली अति हेत लाइ गर।

गोसूक्त—संज्ञा पुं. [सं.] अथर्ववेद का एक अंश जिसमें ब्रह्मांड-रचना का गाय के रूप में वर्णन है।

गोसैयाँ—संज्ञा पुं. [हिं. गोसाई] प्रभु, नाथ।

गोस्वामी—संज्ञा पुं. [सं.] (१) वह जिसने इंद्रियों को जीता हो। (२) वैष्णवाचार्यों के वंशधर या गद्दी के अधिकारी।

गोह—संज्ञा स्त्री. [सं. गोधा] एक जंगली जंतु।

संज्ञा पुं.—उदयपुरी राजवंश का एक पूर्व पुरुष।

गोहन—संज्ञा पुं. [सं. गोधन = गौओं का समूह] (१) संग, साथ। उ.—(क) भागैं कहाँ बचौगे मोहन। पाछैं आइ गई तुव गोहन—१०-७६६। (ख) बरन बरन ग्वाल बने महरनंद गोर जने एक गावत एक नृत्यत एक रहत गोहन—२४२८। (ग) जाके दृष्टिपरे नंदनंदन सोउ फिरत गोहन डोरी डोरी—१४६६। (२) साथी, सहचर। उ.—(क) सूरदास प्रभु मोहन गोहन की छवि बाढ़ी मेटति दुख निरखि नैन मैन के दरद को—पृ. ३५२ (८२)। (ख) बार बार भुज धरि अंकम भरि मिलि बैठे दोउ गोहन—पृ. ३१५।

गोहनियाँ—संज्ञा स्त्री. [हिं. गोहन + इयाँ (प्रत्य.)] साथ रहनेवाला, संगी, सहचर।

गोहर—संज्ञा स्त्री. [सं. गोधा] बिसखोपरा जंतु।

गोहरा—संज्ञा पुं. [सं. गो + ईल्ल] कंडा, उपला।

गोहराना—क्रि. अ. [हिं. गोहार] आवाज देना।

गोहरायौ—क्रि. अ. भूत. [हिं. गोहराना] पुकारा, गोहार मचायी। उ.—को यह लिये जात कहँ हमको कृष्ण-कृष्ण कहि गोहरायौ—२३१६।

गोहलोत—संज्ञा पुं. [सं. गोह] गहलौत क्षत्रिय।

गोहार, गोहारि, गोहारी—संज्ञा स्त्री. [सं. गो + हार (हरण)] (१) पुकार मचाना, जोर से दुहाई देना, रक्षा या सहायता के लिए चिल्लाना। उ.—धावहु नंद गोहारि लगौ किन तेरौ सुत अँधवाह उड़ायौ—१०-७७। (२) शोर-गुल, कोलाहल। (३) भीड़ जो पुकार सुनकर इकट्ठा हो।

गोही—संज्ञा स्त्री. [सं. गोपन] (१) दुराव, छिपाव। (२) छिपी हुई बात, गुप्त बात। उ.—अपनो बनिज दुरावत हौ कत नाउँ लियौ इतनौ ही। कहा दुरावत हौ मो आगे सब जानत तुव गोही—११०३। (३) महुए का बीज। (४) फलों का बीज, गुठली।

गोहुअन, गोहुवन—संज्ञा पुं. [हिं. गेहूँ] एक साँप।

गोंहुं—संज्ञा पुं. [सं. गोधूम] गेहूँ।
गोहेरा—संज्ञा पुं. [सं. गोधा] बिसखोपरा जंतु।
गौं—संज्ञा स्त्री. [सं. गम, प्रा. गँव] (१) सुयोग, सुअवसर। (२) मतलब, अर्थ। उ.—तुम तौ अलि उनहीं के संगी अपना गौं के टेकौ—३२८७।
मुहा०—गौं का—(१) विशेष कामका, उपयोगी। (२) स्वार्थी, मतलबी। गौं का यार (साथी)—मतलबी या स्वार्थी मित्र। गौं गाँठना (निकालना)—काम निकालना, स्वार्थ साधना। गौं पड़ना—गरज अटकना, काम पड़ना।
(३) ढब, चाल, ढंग। उ.—(क) यह सखि मैं पहिलैं कहि राखी असित न अपने होंहीं। सूर काटि जौ माथौ दीजै चलत आपनी गौं हीं—३०५६। (ख) हम बावरी त्यों न चलि जान्यौ ज्यों गज चलत आपनी गौ हैं—३४२८। (४) पक्ष, पार्श्व।
गौंटा—संज्ञा पुं. [हिं. गाँव+टा (प्रत्य०)] (१) छोटा गाँव। (२) गाँव के लाभ के लिए किया गया खर्च।
गौंहाँ—वि. [हिं० गाँव+हाँ (प्रत्य.)] गाँव-संबंधी।
गौ—संज्ञा स्त्री. [सं.] गाय, गैया।
गौख—संज्ञा स्त्री. [सं. गवाक्ष] (१) छोटी खिड़की, झरोखा। (२) बाहरी दालान, चौपाल, बैठक।
गौखा—संज्ञा पुं. [सं. गवाक्ष] झरोखा, छोटी खिड़की।
संज्ञा पुं. [हिं. गौ=गाय+खाल] गाय का चमड़ा।
गौखी—संज्ञा स्त्री. [हिं. गौखा] जूता।
गौगा—संज्ञा पुं. [अ. ग़ौग़ा] (१) शोरगुल, हो हल्ला। (२) अफवाह, जनश्रुति।
गौचरी—संज्ञा स्त्री. [हिं. गौ+चरना] गाय चराने का कर जिससे कुछ भूमि चराई की छोड़ी जाती है।
गौड़—संज्ञा पुं. [सं.] (१) प्राचीन वंग प्रदेश। (२) इस प्रदेश का निवासी। (३) ब्राह्मणों की एक जाति। (४) राजपूतों की एक जाति। (५) कायस्थों की एक जाति। (६) एक राग जो तीसरे पहर और संध्या को गाया जाता है।
गौड़िया—वि. [सं. गौड़+इया (प्रत्य.)] गौड़देशीय।
यौ.—गौड़िया सम्प्रदाय—चैतन्य महाप्रभु का वैष्णव संप्रदाय।
गौड़ी—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) गुड़ से बनी मदिरा। (२) काव्य की परुषावृत्ति। (३) एक रागिनी।
गौड़ेश्वर—संज्ञा पुं. [सं.] श्रीकृष्ण चैतन्य स्वामी जो गौरांग महाप्रभु भी कहलाते हैं।
गौण—वि. [सं.] (१) अप्रधान, जो मुख्य न हो। (२) सहायक, संचारी।
गौणी—संज्ञा स्त्री. [सं.] जो मुख्य न हो।
संज्ञा स्त्री.—लक्षणा का एक भेद।
गौतम—संज्ञा पुं. [सं.] (१) गोतम ऋषि के वंशज। (२) एक न्यायशास्त्र-प्रणेता ऋषि। (३) बुद्ध देव। (४) सप्तर्षि मंडल का एक तारा। (५) वह पर्वत जिससे गोदावरी निकलती है। (६) एक ऋषि जिन्होंने अपनी पत्नी अहल्या को इन्द्र के साथ अनुचित संबंध करने के कारण शाप देकर पत्थर का बना दिया था। (८) क्षत्रियों की एक जाति।
गौतमतिया—संज्ञा स्त्री. [सं. गौतम = हिं. तिया] गौतम ऋषि की स्त्री अहल्या। इन्द्र ने छल करके इसका सतीत्व नष्ट किया, यह भेद जानने पर गौतम ने इसे शाप देकर पत्थर का बना दिया। भगवान् रामचन्द्र ने विश्वामित्र के साथ जाते समय इसका उद्धार किया।
गौतमी—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) गौतम ऋषि की पत्नी अहल्या। (२) कृपाचार्य की पत्नी। (३) गोदावरी नदी। (४) गौतम ऋषिकृत स्मृति। (५) दुर्गा।
गौद, गौदा—संज्ञा पुं. [देश.] (केले आदि) फलों का गुच्छा, घौद।
गौदान—संज्ञा पुं. [हिं. गोदान] गाय को संकल्प करके दान करने की क्रिया।
गौदुमा—वि. [हिं. गाय + दुम + आ (प्रत्य.)] गाय की पूँछ की तरह मोटे से क्रमशः पतला होता जाना, उतार-चढ़ाव, गावदुम।
गौन—संज्ञा पुं. [सं. गमन] जाना, चलना, यात्रा करना। उ.—(क) तात बचन रघुनाथ माथ धरि, जब बन गौन कियो—९-४६। वि.—चंचल, स्थिर।
गौनई—संज्ञा स्त्री. [सं. गायन] गान, संगीत।
गौनहर—संज्ञा स्त्री. [हिं. गौनहारी] गाने-बजानेवाली।
गौनहर, गौनहाई—वि. [हिं. गौना + हाई (प्रत्य.)] जिसका गौना हाल ही में हुआ हो।

गौनहार—संज्ञा स्त्री. [हिं. गौना + हार (प्रत्य.)] वह स्त्री जो दुलहिन के साथ उसकी ससुराल जाय।

गौनहारिन, गौनहारी—संज्ञा स्त्री. [हिं. गाना + हारी (वाली)] गाने-बजाने का काम करनेवाली स्त्रियाँ।

गौना—संज्ञा पुं. [सं. गमन] (१) गमन, प्रस्थान, जाना। उ.—(क) अका बकासुर तबहिं सँहारयौ, प्रथम कियौ बन गौना—६०१। (ख) मो देखत अबहीं कियौ गौना—२४२१। (२) विवाह के बाद की एक रीति जिसमें वर वधू को ससुराल से बिदा करा कर घर ले आता है, मुकलावा, द्विरागमन।

गौने—क्रि. अ. [सं. गमन] गये, प्रस्थान किया। उ.—(क) की हरि आजु पंथ यहि गौने की धौं स्याम जलद उनयौ—१६२८। (ख) सूरदास प्रभु मधुबन गौने तो इतनो दुख सहियत—२८५६।

गौमुखी—संज्ञा स्त्री. [सं. गोमुखी] धन रखने की थैली।

गौर—वि. [सं.] गोरे चमड़ेवाला, गोरा। उ.—गौर बरन मोरे देवर सखि, पिय मम स्याम सरीर—९-४४। (२) उजला, सफेद।

संज्ञा पुं. [सं.] (१) लाल रंग। (२) पीला रंग। (३) चंद्रमा। (४) सोना। (५) तौलने का तीन सरसों के बराबर भाग। (६) केसर। (७) एक मृग। (८) सफेद सरसों। (९) चैतन्य महाप्रभु का नाम।

संज्ञा पुं. [सं. गौड़] गौड़।

संज्ञा पुं. [अ. ग़ौर] (१) सोच-विचार, चिंतन। (२) ध्यान, ख्याल।

गौरता—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) गोरापन। (२) सफेदी।

गौरव—संज्ञा पुं. [सं.] (१) महत्व, बड़प्पन। (२) भारीपन। (३) आदर, सम्मान। (४) उत्कर्ष।

गौरवान्वित, गौरवित—वि. [सं.] (१) महिमामय। (२) सम्मानित, मान्य।

गौरांग—संज्ञा पुं. [सं.] (१) विष्णु। (२) श्रीकृष्ण। (३) चैतन्य महाप्रभु।

गौरा—संज्ञा स्त्री. [सं. गौर] (१) गोरे रंग की स्त्री। (२) पार्वती जी। (३) हल्दी। (४) एक रागिनी।

संज्ञा पुं. [सं. गोरोचन] एक सुगंधित द्रव्य।

गौरी—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) गोरे रंग की स्त्री। (२) पार्वती जी। (३) आठ वर्ष की कन्या। (४) हल्दी। (५) तुलसी। (६) गोरोचन। (७) सफेद रंग की गाय। (८) गंगा नदी। (९) चमेली। (१०) पृथ्वी। (११) गुड़ से बनी शराब, गौड़ी। (१२) एक रागिनी जो श्रीराग की स्त्री मानी जाती है। उ.—(क) मालवाई राग गौरी अरु आसावरी राग—२२१३। (ख) बेनु पानि गहि मोको सिखावत मोहन गावन गौरी—२८७३।

गौरीचंदन—संज्ञा पुं. [सं.] लाल चंदन।

गौरीज—संज्ञा पुं. [सं. गौरी+ज] (१) अभ्रक। (२) कार्तिकेय। (३) गणेशजी।

गौरीनाथ, गौरीपति —संज्ञा पुं. [सं.] शिव, महादेव। उ.—गौरीपति पूजति ब्रजनारि—७६६।

गौरीशंकर—संज्ञा पुं. [सं.] (१) महादेव। (२) हिमालय की सबसे ऊँची चोटी।

गौरीश, गौरीस—संज्ञा पुं. [सं.] शिव, महादेव।

गौरैया—संज्ञा स्त्री.—एक काला जल-पक्षी।

गौला—संज्ञा स्त्री. [सं.] गौरी, पार्वती।

गौल्मिक—संज्ञा पुं. [सं.] सिपाहियों के गुल्म का नायक।

गौवन—संज्ञा स्त्री. बहु. [सं. गो+हिं. बन, अन] गैयों ने। उ.—कमल-बदन कुँभिलात सबन के गौवन छाँड़ी तृन की चरनी—३३३०।

गौहर—संज्ञा पुं. [फ़ा.] मोती, मुक्ता।

गौहरा—संज्ञा पुं. [हिं. गौ + हरा] गैयों का स्थान।

ग्याति—संज्ञा स्त्री. [हिं. जाति] वंश, कुल, जाति।

ग्यान—संज्ञा पुं- [सं. ज्ञान] जानकारी, ज्ञान।

ग्यारह—वि. [सं. एकादश, प्रा. एगारस] दस और एक।

संज्ञा पुं.—दस और एक सूचक संख्या।

ग्रंथ—संज्ञा पुं. [सं.] (१) पुस्तक। उ.—पहिले ही अति चतुर हुते अरु गुरु सब ग्रंथ दिखाये—३३६३। (२) गाँठ, ग्रंथि, गुत्थी। उ.—जिय परी ग्रंथ कौन छोरे निकट ननँद न सास—३४८ (५७)। (३) गाँठ लगाने की क्रिया। (४) धन।

ग्रंथकर्ता, ग्रंथकार—संज्ञा पुं. [सं.] ग्रंथ का रचयिता।

ग्रंथचुम्बक—संज्ञा पुं. [सं. ग्रंथ+चुंबक = घूमनेवाला] वह पाठक जिसने ग्रंथ का अध्ययन और मनन भली भाँति न किया हो।

ग्रंथचुम्बन—संज्ञा पुं. [सं. ग्रंथ + चुंबन] ग्रंथ का सरसरे ढग से पाठ मात्र करना, अध्ययन-मनन न करना ।

ग्रंथन—संज्ञा पुं. [सं.] (१) दो चीजों को गाँठ देकर जोड़ना । (२) जोड़ना । (३) गूँथना ।

संज्ञा पुं. बहु. [सं. ग्रंथ] अनेक ग्रंथ ।

ग्रंथना—क्रि. स. [हिं. ग्रंथन] (१) जोड़ना, बाँधना । (२) गूँथना ।

ग्रंथसंधि—संज्ञा स्त्री. [सं.] ग्रंथ-विभाग अध्याय आदि ।

ग्रंथसाहब—संज्ञा पुं. [हिं. ग्रथ + साहब] सिक्खों का धर्मग्रंथ जिसमें उनके गुरुओं के उपदेश संकलित हैं ।

ग्रंथालय—संज्ञा पुं. [सं.] पुस्तकालय ।

ग्रंथि—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) गाँठ । उ.—कारो कारो कुटिल अति कान्हर अन्तर ग्रंथि न खोलै—३०६१ । (२) बंधन । (३) मायाजाल । (४) गाँठ होने का रोग (५) कुटिलता ।

ग्रंथित—वि. [सं. ग्रंथन] (१) गूँथा हुआ । (२) जिसमें गाँठ लगी हो । उ.—जैसो कियो तुम्हारे प्रभु अलि तैसो भयो तत्काल । ग्रंथित सूत्र धरत तेहि ग्रीवा जहाँ धरत बनमाल—३३३३ ।

ग्रंथिबंधन—संज्ञा पुं. [सं.] विवाह के समय वर-कन्या के दुपट्टे का परस्पर गँठबंधन ।

ग्रंथिभेद—संज्ञा पुं. [सं.] गिरहकट ।

ग्रंथिल—वि. [सं.] गँठीला, गाँठदार ।

संज्ञा पु.—(१) करीलवृक्ष । (२) अदरक । (३) कँटायवृक्ष । (४) चोरक नामक गंधद्रव्य ।

ग्रंथै—क्रि. स. [हिं. ग्रंथना] गुहते या गूँथते हैं ।उ.—जा सिर फूल फुलेल मेलि कै हरि-कर ग्रंथैं मोरी

ग्रंस—संज्ञा पुं. [सं. ग्रंथि = कुटिलता] (१) छल-कपट । उ.—सखी री मथुरा मैं दो हंस । वै अक्रूर ए ऊधो सजनी जानत नीके ग्रंस—३०४६ । (२) छल कपट करनेवाला व्यक्ति । (३) दुष्ट व्यक्ति ।

ग्रथित—वि. [हिं. गुँथना] गुँथा हुआ, गुंफित । उ.—ऐसैं मैं सबहिन तैं न्यारौ, मनिन ग्रंथित ज्यौं सूत—२-३८ ।

ग्रसत—क्रि. स. [हिं. ग्रसना] पकड़ लेता है, ग्रस लेता है, पकड़ने पर । उ.—ग्राह ग्रसत गज कौं जल बूड़त, नाम लेत वाकौं दुख टारयौ—१-१४ ।

ग्रसन—संज्ञा पुं. [सं.] (१) निगलना, भक्षण करना । (२) पकड़, ग्रहण । (३) चंगुल में फाँसना । (४) ग्रास । (५) ग्रहण ।

ग्रसना—क्रि. स. [सं. ग्रसन] (१) बुरी तरह पकड़ना, चंगुल में फाँसना । (२) सताना ।

ग्रसि—क्रि. स. [सं. ग्रसन, हिं. ग्रसना] ग्रास करके, दाँत से पकड़कर । उ.—(क) कहौ तौ गन समेत ग्रसि खाऊँ, जमपुर जाइ न राम—९-१४८ । (ख) सिंह को सुत हर-भूषण ग्रसि ज्यों सोइ गति भई हमारी—सा. उ. २६ ।

ग्रसित—वि. [हिं.ग्रसना] (१) ग्रसा हुआ, जकड़ा जाकर । उ.—(क) काम-क्रोध-मद लोभ-ग्रसित हौं विषय परम विष खायौ—१-१११ । (ख) हरि उर मोहनी बेलि लसी । तापर उरग ग्रसित तब सोभित पूरन अंश ससी - सा. उ. २५ । (२) पीड़ित । (३) खाया हुआ ।

ग्रसिहै—क्रि. स. [हिं. ग्रसना] ग्रस लेगा, पकड़ लेगा । उ.—रूप, जोबन सकल मिथ्या, देखि जनि गरबाइ । ऐसेहिं अभिमान आलस, काल ग्रसिहै आइ —१-३१५ ।

ग्रसी -क्रि. स. [हिं. ग्रसना] ग्रसता है । उ.—चन्द्रुश्रुवा उरहार ग्रसी ज्यों छिन पुनि-या बपु रेष—सा. उ. २६ ।

वि. [हिं. ग्रस्त] ग्रसित, ग्रस्त ।

ग्रस्त—वि. [हिं. ग्रसना] (१) जकड़ा या पकड़ा हुआ । (२) पीड़ित । (३) खाया हुआ, ग्रसित ।

ग्रस्यौ—क्रि. स. [हिं. ग्रसना] बुरी तरह पकड़ लिया, ग्रस लिया । उ.—ग्रस्यौ गज ग्राह लै चल्यौ पाताल कौं, काल कैं त्रास मुख नाम आयौ—१-५ ।

ग्रह—संज्ञा पुं [सं.] (१) वे तारे जो सूर्य की परिक्रमा करते हैं । (२) नौ की संख्या । (३) ग्रहण करना । (४) कृपा । (५) चंद्र या सूर्य-ग्रहण । (६) राहु ।

वि.—बुरी तरह जकड़ने या तंग करनेवाला ।

ग्रहक—संज्ञा पुं. [सं.] ग्रहण करनेवाला, ग्राहक ।

ग्रहण—संज्ञा पुं. [सं.] (१) सूर्य आदि ज्योति-पिंडों के ज्योति मार्ग में किसी अन्य आकाशचारी पिंड के आ जानेके कारण होनेवाली रुकावट या ज्योति-अवरोध । (२) पकड़ने या लेने की क्रिया । (३) स्वीकृति, मंजूरी । (४) अर्थ, तात्पर्य, मतलब ।

ग्रहणि, ग्रहणी—संज्ञा स्त्री. [सं.] शरीर की एक नाड़ी। (२) एक रोग।

ग्रहणीय—वि. [सं.] ग्रहण करने योग्य।

ग्रहदशा—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) ग्रहों की स्थिति। (२) ग्रहों की स्थिति के अनुसार मनुष्य की भली-बुरी दशा। (२) अभाग्य, बुरी दशा।

ग्रहपति—संज्ञा पुं. [सं.] (१) सूर्य। (२) शनि। (३) आक या मदार का वृक्ष।

ग्रहपति-सुत-हित अनुचर को सुत—संज्ञा पुं. [सं.] ग्रहपति = सूर्य + सुत (सूर्य का पुत्र=सुग्रीव) + हित = मित्र (सुग्रीव का मित्र राम) + अनुचर (राम का अनुचर या सेवक हनुमान) + सुत (हनुमान का सुत या पुत्र मकरध्वज और कामदेव का भी एक नाम है मकरध्वज)]। काम उ.—ग्रहपति सुत-हित-अनुचर कौ सुत जारत रहत हमेस—सा. २७।

ग्रहबसु—संज्ञा पुं. [सं. ग्रह-बसु (बसु आठ हैं। अतः आठवाँ ग्रह हुआ राहु। फिर राहु से अर्थ लिया राह)] राह, रास्ता। उ.—ग्रहबसु मिलत संभु की सैना चमकत चित न चितैहै—सा. १०।

ग्रहमुनि-दुत—संज्ञा स्त्री. [सं. ग्रह+मुनि (मुनि सात हैं; अतः ग्रह-मुनि का अर्थ हुआ सूर्य से सातवाँ ग्रह शनि जिसका दूसरा नाम है मंद) + द्युति = प्रकाश] मंद प्रकाश। उ.—ग्रहमुनि-दुत हित के हित कर ते मुकर उतारत नाथे—सा. ६।

ग्रहमुनि-पिता-पुत्रिका—संज्ञा स्त्री. [सं. ग्रह + मुनि मुनि सात हैं, अतः ग्रहमुनि का अर्थ हुआ सातवाँ ग्रह = शनि) + पिता (शनि के पिता=सूर्य)+पुत्रिका सूर्य की पुत्रिका या पुत्री यमुना)] यमुना नदी। उ.—ग्रहमुनि पिता-पुत्रिका को रस श्रुति अदभुत गति मातो—सा. ११।

ग्रहमैत्री—संज्ञा. स्त्री. [सं.] वर-कन्या के ग्रहों की अनुकूलता जिसका विचार विवाह के समय होता है।

ग्रहयज्ञ—संज्ञा पुं. [सं.] ग्रहों की उग्रता या कोप-शांति के लिए किया गया पूजन या यज्ञ।

ग्रहराज—संज्ञा पुं. [सं.] (१) सूर्य। (२) चंद्रमा। (३) बृहस्पति।

ग्रहवेध—संज्ञा पुं. [सं.] ग्रहों की स्थिति, गति आदि का परिचय वेधशाला के यंत्रों द्वारा जानना।

ग्रहित—क्रि. स. [हिं. ग्रहना] पकड़ा, ग्रहण किया, आच्छादित किया, अवरोध किया। उ.—चारु स्रव-ननि ग्रहित कीनी झलक ललित कपोल—१३५१।

ग्रहीत—वि. [हिं. ग्रहण] पकड़ा हुआ, ग्रहण किया हुआ, स्वीकृत, अंगीकृत।

ग्रहीता—वि. पुं. [हिं. ग्रहीत] लेने या ग्रहण करनेवाला।

ग्राम—संज्ञा पुं. [सं.] (१) छोटी बस्ती, गाँव। (२) बस्ती, आबादी, जनपद। (३) समूह, ढेर। (४) शिव। (५) संगीत का सप्तक।

ग्राममृग, ग्रामसिंह—संज्ञा पुं. [सं.] कुत्ता।

ग्रामिक—वि. [सं.] ग्राम-संबंधी, गाँव का।

ग्रामी—वि. [सं. ग्राम] गाँव का उ.—जो तन दियौ ताहि बिसरायौ, ऐसौ नोनहरामी। भरि भरि द्रोह बिसैं कौं धावत, जैसैं सूकर-ग्रामी—१-१४८।

ग्रामीण—वि. [सं.] (१) देहाती (२) गँवार।
संज्ञा पुं. (१) मुरगा। (२) कुत्ता।

ग्राम्य—वि. [सं.] (१) गाँव-सम्बन्धी, गाँव का। (२) मूर्ख। (३) असली, प्राकृत।
संज्ञा पुं.—(१) काव्य का एक दोष, जिसमें ग्रामीण विषयों या प्रयोगों की अधिकता हो। (२) अश्लील प्रयोग। (३) बैल आदि गाँव के पालतू पशु।

ग्राव—संज्ञा पुं.—(१) ओला। (२) पत्थर। (३) पहाड़ी।

ग्रास—संज्ञा पुं. [सं.] (१) कौर, गस्सा, निवाला। (२) पकड़ने की क्रिया। (३) ग्रहण लगना।

ग्रासक—वि. [सं.] (१) पकड़नेवाला। (२) निगलने वाला। (३) छिपाने या दबानेवाला।

ग्रासत—क्रि. स. [हिं. ग्रासना] खाते हैं, भोजन करते हैं। उ.—सालन सकल कपूर सुवासत। स्वाद लेत सुंदर हरि ग्रासत—३९६।

ग्रासना—क्रि. स. [सं. ग्रास] (१) पकड़ना, धरना। (२) निगलना। (३) कष्ट देना, सताना।

ग्रासित—वि. [हिं. ग्रासना] ग्रसा हुआ, जकड़ा या फँसा हुआ। उ.—इहिं कलिकाल-व्याल-मुख-ग्रासित सूर सरन उबरै—१-११७।

ग्रासै—क्रि. स. [हिं. ग्रासना] ग्रस सकता है, निगलता है। उ.—मारि न सकै, बिघन नहिं ग्रासै, जम न चढ़ावै कागर—१-६१। (२) कष्ट देता या सताता है।

ग्रास्यौ—क्रि. स. भूत. [हिं. ग्रासना] ग्रस लिया, निगल लिया। उ.—सबनि सनेहौ छाँड़ि दयौ। हा जदुनाथ जरा तन ग्रास्यौ, प्रतिभौ उतरि गयौ—१-२६८।

ग्राह—संज्ञा पुं. [सं.] (१) मगर, घड़ियाल। (२) ग्रहण। (३) पकड़ लेना। (४) ज्ञान। (५) ग्रहण करनेवाला, ग्राहक।

ग्राहक—संज्ञा पुं. [सं.] (१) ग्रहण करने या लेने वाला। (२) खरीदनेवाला। (३) एक साग।

ग्राहना—क्रि. स. [सं. ग्रहण] लेना, ग्रहण करना।

ग्राही—संज्ञा पुं. [सं.] ग्रहण या स्वीकार करनेवाला व्यक्ति।

ग्राह्य—वि. [सं.] (१) लेने योग्य। (२) मानने या स्वीकार करने योग्य। (३) जानने योग्य।

ग्रीखम—संज्ञा स्त्री. [सं. ग्रीष्म] गरमी की ऋतु।

ग्रीव, ग्रीवा—संज्ञा स्त्री. [सं.] गर्दन। उ.—ग्रीव कर परसि पग पीठि तापर दियौ उर्बसी रूप पटतरहिं दीन्हीं—२५८८।

ग्रीवी—संज्ञा पु. [सं. ग्रीविन्] (१) वह जिसकी गर्दन लंबी हो। (२) ऊँट।

ग्रीषम—संज्ञा स्त्री. [सं. ग्रीष्म] (१) गरमी की ऋतु। (२) वह जो उष्ण हो।

ग्रीषमरिपुन—संज्ञा पुं. [सं. ग्रीष्म=गर्मी+रिपु=शत्रु (गर्मी का शत्रु पयोधर ; पयोधर के दो अर्थ हैं—(१) एक बादल। (२) स्तन ; यहाँ दूसरा अर्थ लिया गया है)] स्तन, कुच। उ.—सुद्ध आखर भरत ग्रीषम रिपुन मध्ये साप—सा.-२।

ग्रीष्म—संज्ञा पुं. [सं.] (१) गर्मी की ऋतु। (२) वह जो गर्म या उष्ण हो।

ग्रवेयक—संज्ञा पुं. [सं.] (१) गले में पहनने का गहना। (२) हाथी की हैकल।

ग्रेह—संज्ञा पुं. [सं. गृह., हिं. गेह] घर। उ.—नीकन अदभुत बात लई। आपु ना तजत ग्रेह पुर में करबर सूर सई—सा. ११५।

ग्रेही—संज्ञा पुं. [हिं. गेह, ग्रेह] गृहस्थ। उ.—सहज माधुरी अंग अंग प्रति सहज सदावन ग्रेही—१४८५।

ग्लान—वि. [सं.] (१) रोगी, बीमार। (२) थका हुआ, क्लांत, श्रांत। (३) कमजोर, निर्बल।

संज्ञा स्त्री.—दीनता, निरीहता।

ग्लानि—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) मानसिक शिथिलता, अनुत्साह, अक्षमता। (२) अपने अनुचित कार्यों के विचार से उत्पन्न खेद या खिन्नता। उ.—ताकैं मन उपजी तब ग्लानि। मैं कीन्हीं बहु जिय की हानि —४-१२। (३) बीभत्स रस का एक स्थायी भाव।

गवाँड़ा—संज्ञा पुं. [सं. गुड] (१) घेरा, वृत्त। (२) मकानादि के चारो ओर का बाड़ा। (३) बाड़े या चारदीवारी से घिरा हुआ स्थान।

गवाच्छ—संज्ञा पुं. [सं. गवाक्ष] छोटी खिड़की, झरोखा। उ.—सखा सहित गए माखन-चोरी। देख्यौ स्याम गवाच्छ पंथ ह्वै, मथति एक दधि भोरी —१०-२७०।

ग्वार—संज्ञा पुं. [हिं. ग्वाल] अहीर, ग्वाल। उ.—(क) सोर सुनि नंद-द्वार आए निकल गोपी-ग्वाल—३५७। (ख) उत होरी पढ़त ग्वार इत गारी गावति ए नंद नहीं जाये तुम महरि गुनन भारी —२४२६।

संज्ञा स्त्री. [सं. गोराणी] एक पौधा जिसकी फलियों की तरकारी और बीजों की दाल होती है।

ग्वारिन, ग्वारी—संज्ञा स्त्री. [हिं. ग्वार] एक पौधा।

ग्वारिनी—संज्ञा स्त्री. [हिं. ग्वालिन] अहीरिन। उ.—ढूँढ़त फिरत ग्वारिनी हरिकौं, कितहूँ भेद नहिं पावति —४५६।

ग्वाल—संज्ञा पुं. [सं. गो + पाल, प्रा. गोवाल] (१) गाय पालने-चरानेवाले, अहीर। (२) व्रज के गोपजातीय बालक जो श्रीकृष्ण के बाल-सखा थे। (३) दो अक्षरों का एक छन्द।

ग्वालककड़ी—संज्ञा स्त्री [हिं. ग्वाल+ककड़ी] जंगली चिचड़ा नामक ओषधि।

ग्वालदाड़िम—संज्ञा पुं. [हिं. ग्वाल + दाड़िम] एक पेड़।

ग्वालनी—संज्ञा स्त्री. [हिं. ग्वाल] अहीरिन। उ.—गूढ़ोत्तर अस कहत ग्वालिनी—सा. उ. ८०।

ग्वाला—संज्ञा पुं. [हिं. ग्वाल] अहीर।

ग्वालिन, ग्वालिनियाँ, ग्वाली—संज्ञा स्त्री. [हिं. ग्वाल]

(१) ग्वाल जाति की स्त्री, अहीरिन (२) गँवार या मूर्ख स्त्री। उ.- (क) हम ग्वाली तुम तरनि रूप रस रवि-ससि मोहै—११४१। (ख) जाको ब्रह्मापार न पावत ताहि खिलावति ग्वालिनियाँ—१०-१३२।

संज्ञा स्त्री. [हिं. ग्वार] ग्वार नामक पौधा।

संज्ञा स्त्री. [सं. गोपालिका] एक बरसाती कीड़ा।

ग्वाह—संज्ञा पुं. [हिं. गवाह] गवाह, साक्षी।

ग्वैंठना—क्रि. स. [सं. गुंठन, हिं. गुमेठना] मरोड़ना, ऐंठना, घुमाना, टेढ़ा करना।

ग्वैंठा—वि. [हिं. ऐंठा (अनु.) ऐंठा हुआ, टेढ़ा-मेढ़ा।

संज्ञा पुं. [हिं. गोंइठा] गोबर का कंडा, उपला।

ग्वैंड़—संज्ञा स्त्री. सीमा हद।

ग्वैंड़े,ग्वेंड़ा—संज्ञा पुं. [हिं. गाँव+इड़ा]गाँव के आसपास की भूमि। उ.—(क) गोकुल के ग्वैंड़े एक साँवरो सो ढोटा माई—८७२। (ख) निकसि गाँव के ग्वैंड़े आये—१०१८।

क्रि. वि.—निकट, पास, करीब।

ग्वैंयाँ—संज्ञा स्त्री. पुं. [हिं. गोहनियाँ, गोइयाँ] (१) साथ का खिलाड़ी। उ.—रुहठि करै तासौं को खेलै रहे बैठि जहँ-तहँ सब ग्वैयाँ—१०-२४५। (२) सखा, साथी, सहचर। उ.—सूधी प्रीति न जसुदा जानै, स्याम सनेही ग्वैंयाँ—३७१।

घ

घ—हिंदी वर्णमाला का चौथा व्यंजन; उच्चारण जिह्वामूल या कंठ से होता है; स्पर्श वर्ण; इसमें घोष, नाद, संवार और महाप्राण प्रयत्न होते हैं।

घँगोल—संज्ञा पुं [देश.] कुमुद।

घँघरा—संज्ञा पुं. [हिं. घघरा] स्त्रियों का लहँगा।

घँघराघोर—संज्ञा पुं. [देश.] छुआछूत न मानना।

घँघरी—संज्ञा स्त्री. [हिं. घघरी] छोटा लहँगा।

घँघोरना, घँघोलना—क्रि. स. [हिं. घन + घोलना] (१) पानी में कुछ घोलना। (२) पानी गंदा करना।

घंट—संज्ञा पुं. [सं. घट] (१) घड़ा। (२) जलपात्र जो मृतक-क्रिया में पीपल से बाँधा जाता है।

घंट, घंटा—संज्ञा पुं. [सं. घंटा] (१) धातु के औंधे पात्र में लगे लंगर या लट्टू से बजनेवाला बाजा। उ.—घंट बजाइ देव अन्हवायौ—१०-२६१। (२) धातु का गोल पत्तर जो मुँगरी से बजाया जाता है।

मुहा०—घंटे मोरछल से उठाना—किसी वृद्ध वृद्धा के शव को बाजे-गाजे से श्मशान ले जाना।

(३) घड़ियाल जो समय की सूचना के लिए बजाया जाता है। (४) छोटी-छोटी घंटियाँ जो पशुओं के गले में बाँधी जाती हैं। उ.—कटि किंकिन नूपुर बिछुयनि धुनि। मनहु मदन के गज-घंटा सुनि—१००५। (५) घंटे का शब्द या ध्वनि। (६) दिन रात का चौबीसवाँ भाग, साठ मिनट का समय। (७) ठेंगा, सींगा।

मुहा०—घंटा दिखाना—कोई चीज माँगने पर न देना, सींगा दिखाना। घंटा हिलाना—व्यर्थ के काम में समय नष्ट करना।

घंटाकरन घंटाकर्ण—संज्ञा पुं. [सं. घंटा + कर्ण] शिव का एक उपासक जो कान में इसलिए घंटा बाँधे रहता था कि विष्णु या राम का नाम लिये जाने पर उसे हिला दूँ और वह नाम सुन न सकूँ।

घंटाघर—संज्ञा पुं. [हिं. घंटा + घर] वह ऊँचा स्थान जिस पर बहुत बड़ी घड़ी लगी हो।

घंटिका—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) छोटा घंटा। (२) घुँघरू।

संज्ञा स्त्री.—छोटे छोटे लंबे घड़े जो रहँट में लगे रहते हैं, घरिया। उ.—स्रवन कूप की रहँट घंटिका राजत सुभग समाज।

घँटियार—संज्ञा पुं [हिं. घाँटी] पशुओं के गले में काँटे पड़ने का एक रोग।

घंटी—संज्ञा स्त्री. [सं. घंटिका] छोटी लुटिया।

संज्ञा स्त्री. [सं. घंटा] (१) बहुत छोटा घंटा। (२) घंटी बजने का शब्द। (३) घुँघरू। (४) गले की हड्डी का उभरा हुआ भाग। (५) गले का कौआ।

घंटील—संज्ञा स्त्री. [देश.] एक घास।

घई—संज्ञा स्त्री. [सं. गंभीर] (१) पानी का भँवर या

चक्कर, प्रवाह। (२) थूनी, टेक।

वि. [सं. गंभीर] गहरा, अथाह।

घउरी—संज्ञा स्त्री. [हिं. घवरि] फल-पत्तियों का गुच्छा।

घघरा—संज्ञा पुं. [हिं. घन + घेरा] स्त्रियों का लहँगा।

घघरी—संज्ञा स्त्री. [हिं. घघरा] छोटा लहँगा।

घचाघच—संज्ञा स्त्री. [अनु.] नरम चीज में नुकीली चीज घुसने या धँसने का शब्द।

घट—संज्ञा पुं. [सं.] (१) घड़ा, जलपात्र, कलसा। उ.—(क) माधौ, नैंकु हटकौ गाइ। ...। अष्टदस घट नीर अँचवति, तृषा तउ न बुझाइ—१-५६। (ख) नैन घट घटत न एक घरी। कबहुँ न मिटत सदा पावस ब्रज लागी रहत झरी—३४५५। (२) पिंड, शरीर। (३) मन, हृदय। उ.—(क) जो घट अंतर हरि सुमिरै। ताको काल रूठि का करिहै, जो चित चरन धरै—१-८२। (ख) वै अबिगत अबिनाशी पूरन सब घट रह्यौ समाइ—२६८८।

मुहा०—घट में बसना (बैठना)—(१) मन में बसना, ध्यान रहना। (२) बात समझ में आ जाना।

वि.—[हिं. घटना] कम, थोड़ा, छोटा।

घटक—संज्ञा पुं. [सं.] (१) मध्य में होनेवाला, मध्यस्थ। (२) विवाह तै करानेवाला, बरेखिया। (३) दलाल। (४) चतुर व्यक्ति। (५) वंश-परंपरा बतानेवाला। (६) घटा। (७) दो पक्षों का मध्यस्थ।

घटकना—क्रि. स. [हिं. घूँटना] पी जाना।

घटकर्ण—संज्ञा पुं. [सं.] कुंभकर्ण।

घटका, घटकी—संज्ञा पुं. [अनु. घर्र घर्र] कफ रुकना।

मुहा०—घटका लगना—मरते समय कफ रुकना।

घटकार—संज्ञा पुं. [सं.] कुम्हार।

घटज—संज्ञा पुं. [सं. घट + ज] अगस्त्य मुनि।

घटत—क्रि.अ. पुं. [हिं. कटना] कम होता है, क्षीण होता है, घटते-घटते। उ.-(क) हमारे निर्धन के धन राम। चोर न लेत, घटत नहिं कबहूँ, आवत गाढ़ैं काम—१-६२। (ख) नैन घट घटत न एक घरी। कबहुँ न मिटत सदा पावस ब्रज लागी रहत झरी—३४५५। (ग) दुतिया चंद बहुत ही बाढ़ै घटत घटत घटि जाइ—१-२६५।

घटति—क्रि. अ. स्त्री. [हिं. कटना] कम या क्षीण होती है। उ.—(क) सिर पर मीच, नीच नहिं चितवत, आयु घटति ज्यौं अंजुलि पानी—१-१५६। (ख) जिह्वास्वाद, इंद्रियनि-कारन, आयु घटति दिन मान—१-३०४।

घटती—संज्ञा स्त्री. [हिं. घटना] (१) कमी, कोर-कसर।

मुहा०—घटती का पहरा—अवनति के दिन।

(२) हीनता, अप्रतिष्ठा। उ.—घटती होइ जाहि ते अपनी कीजै ताको त्याग—१०६५।

घटदासी—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) नायक-नायिका का मेल करानेवाली। (२) कुटनी।

घटन संज्ञा पुं. [सं.] (१) गढ़ा जाना। (२) होना, उपस्थित होना।

घटना—क्रि. अ. [सं. घटन] (१) होना, घटित होना। (२) मेल मिल जाना। (३) उपयोग में आना।

क्रि. अ. [हिं. कटना] कम या क्षीण होना।

संज्ञा स्त्री. [सं.] होनेवाली बात, वाकया।

घटबढ़—संज्ञा स्त्री. [हिं. घटना + बढ़ना] कमीबेशी।

वि.— कमबेश, न्यूनाधिक, कम ज्यादा।

घटयोनि—संज्ञा पुं. [सं. घट + योनि] अगस्त्य मुनि।

घटवाई—संज्ञा पुं. [हिं. घाट + वाई] (१) घाट का कर लेनेवाला। (२) कर या तलाशी के लिए रोकनेवाला। उ.—आवत जान न पावत कोऊ तुम मग में घटवाई। सूर स्याम हमको बिरमावत खीझत बहिनी माई—११४४।

संज्ञा स्त्री. [हिं. घटना] कम करवाई।

घटवाना—क्रि. स. [हिं. घटाना का प्रे.] कम कराना।

घटवार, घटवाल—संज्ञा पुं. [हिं. घट + वाला] (१) घाट का कर या महसूल उगाहनेवाला। (२) मल्लाह, केवट। (३) घाट पर दान लेनेवाला ब्राह्मण, घाटिया। (४) घाट का देवता।

घटवारिया, घटवालिया—संज्ञा पुं. [हिं. घाट + वाला] नदी के घाट पर बैठकर दान लेनेवाला पंडा।

घटवाही—संज्ञा स्त्री. [हिं. घाट] घाट का कर।

घटसंभव—संज्ञा पुं. [सं.] अगस्त्य मुनि।

घटसुत—संज्ञा पुं. [सं. घट + सुत] अगस्त्य ऋषि जो घट से उत्पन्न माने जाते हैं।

घट-सुत-अरितनयापति—संज्ञा पुं. [सं. घटसुत = अगस्त्य ऋषि + अरि=शत्रु (अगस्त्य का शत्रु समुद्र)+ तनया (समुद्र की पुत्री लक्ष्मी) + पति (लक्ष्मी के पति विष्णु = श्रीकृष्ण)] श्रीकृष्ण। उ.—घटसुतअरितनयापति सजनी नाहिं नेह निबहो री —सा. उ. ५१।

घटसुत-असनसुत—संज्ञा पुं. [सं. घटसुत = अगस्त्य ऋषि + असन = भोजन (अगस्त्य ऋषि का भोजन समुद्र जिसका उन्होंने पान किया था) + सुत (समुद्र का पुत्र, चंद्रमा)] चंद्रमा। उ.—घटसुत असन समै सुत आनन अमीगलित जैसे मेत—सा. २६।

घटस्थापन—संज्ञा पुं. [सं.] (१) किसी मंगल कार्य के पूर्व जल से भरा घड़ा पूजन के स्थान पर स्थापित करना। (२) नवरात्र का पहला दिन जब घट की स्थापना होती है।

घटहा—संज्ञा पुं. [हिं. घाट + हा (प्रत्य.)] (१) घाट का ठेकेदार। (२) नदी पार पहुँचानेवाली नाव।

घटा—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) उमड़े हुए मेघ, घिरे हुए बादल, मेघमाला। उ.—उड़त फूल उड़गन नभ अंतर, अंजन घटा घनी—२-२८। (२) समूह।

घटाई—क्रि. स. स्त्री. [हिं. घटाना] कम की, क्षीण कर दी। उ.—केतिक राम कृपन, ताकी पितु-मातु घटाई कानि—६-७७।

संज्ञा स्त्री. [हिं. घटना+ई (प्रत्य.)] (१) हीनता। (२) अप्रतिष्ठा, बेइज्जती।

घटाटोप—संज्ञा पुं. [सं.] (१) बादलों की चारो ओर घिरी हुई घटा। (२) गाड़ी, पालकी आदि को ढकनेवाला कपड़ा या ओहार। (३) चारो ओर से घेर लेनेवाला दल या समूह।

घटाना, घटावना—क्रि. स. [हिं. घटना] (१) कम करना। (२) निकाल लेना। (३) अपमान या अप्रतिष्ठा करना।

क्रि. स. [सं. घटन] (१) घटित करना। (२) भाव, अर्थ अथवा परिणाम के विचार से ठीक ठीक सिद्ध करना या पूरा उतारना।

घटाव—संज्ञा पुं. [हिं. घटना] (१) कमी, न्यूनता। (२) अवनति, पतन। (३) नदी का घटना।

घटावत—क्रि. स. [हिं. घटाना] कम करते या घटाते हैं। उ.—बहुत कानि मैं करी सजनी अब देखौ मर्याद घटावत—पृ. ३२६।

घटावै—क्रि. स. [हिं. घटना] कम या क्षीण करे। उ.—ऐसौ को अपने ठाकुर कौ इहिं बिधि महत घटावै —१-१६२।

घटि—वि [हिं. घटना] (१) कम, हीन, घटकर। उ.—(क) अजामिल गनिका हैं कहा मैं घटि कियौ, तुम जो अब सूर चित तैं बिसारे—१-१२०। (ख) मरियत लाज पाँच पतितनि मैं, हौं अब कहौ घटि कातैं—१-१३७। (ग) दुतिया-चंद बढ़त ही बाढ़ै, घटत घटत घटि जाइ—१-२६५। (घ) बिधि-मर्यादा लोक की लज्जा तृन हूँ तें घटि मानैं —पृ. ३४१ (१३)। (२) तुच्छ, नीच, गिरी हुई। उ.—(क) डर पावहु तिनको जे डरपहिं तुम ते घटि हम नाहीं—१११९। (ख) कहाहम या गोकुल की गोपी बरनहीन घटि जाति—३२२२।

घटिक—संज्ञा पुं. [सं.] घंटा बजानेवाला।

घटिका—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) एक घड़ी (२४ मिनट) का समय। (२) घड़ी यंत्र। (३) छोटा घड़ा।

घटित—वि. [सं.] (१) बना या रचा हुआ, रचित। (२) (बात या घटना) जो हुई हो। (३) भाव, अर्थ आदि के विचार से ठीक उतरा हुआ।

घटिताई—संज्ञा स्त्री [हिं. घटी] कमी, त्रुटि। उ.—रनहूँ में घटिताई कीन्हीं। रसना, स्रवन, नैन के होते की रसनाहीं को नहिं दीन्हीं।

घटिया—वि. [हिं. घट + इया (प्रत्य.)] (१) कम मोल का, सस्ता। (२) तुच्छ, नीच।

घटिहा—वि. [हिं. घात + हा (प्रत्य.)] (१) मौका देखकर स्वार्थ साधनेवाला। (२) चतुर। (३) धोखेबाज। (४) आचरणहीन। (५) दुष्ट, दुखदायी।

घटी—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) एक घड़ी (२४ मिनट) का समय। (२) घड़ी यंत्र। (३) घंटा घड़ी। (४) रहँट की घरिया।

संज्ञा स्त्री. [हिं. घटना] (१) कमी, हानि, घाटा।

मुहा.—घटी आना (पड़ना)—हानि होना।

क्रि. अ.—कम हुई, क्षीण हुई। उ.—हृदय की कबहुँ न जरनि घटी। बिनु गोपाल बिथा या तन की कैसैं जाति कटी—१-६८।

घटूका—संज्ञा पुं. [सं. घटोत्कच] घटोत्कच नामक भीमसेन का पुत्र जो हिडिंबा से पैदा हुआ था।

घटै—क्रि. अ. [हिं. घटना] (१) कम होता है, छोटा होता है, क्षीण होता है, घटता है। उ.—(क) घटै पल-पल, बढ़ै छिन-छिन, जात लागि न बार—१-८८। (ख) ब्रह्मबान कानि करी, बल करि नहिं बाँध्यौ। कैसैं परताप घटै, रघुपति आराध्यौ—६-९७। (२) बीते, समाप्त हो, व्यतीत हो। उ.—नींद न परै, घटै नहिं रजनी व्यथा बिरह-ज्वर भारी—२७८२।

घटैगौ—क्रि. अ. [हिं. घटना] (१) कम होगा, क्षीण होगा। (२) हानि या घाटा होगा, छोटा या तुच्छ हो जायगा। उ.—इहिं बिधि कहा घटैगौ तेरौ? नंदनंदन करि घर कौ ठाकुर, आपुन ह्वै रहु चेरौ—१-२६६।

घटो—संज्ञा पुं. [सं. घट] घड़ा, कलश।

घटोत्कच—संज्ञा पुं. [सं.] भीमसेन का एक पुत्र जो हिडिंबा राक्षसी से पैदा हुआ था।

घटोद्भव—संज्ञा पुं. [सं.घट + उद्भव] अगस्त्य मुनि।

घटोर—संज्ञा पुं. [सं. घटोदर] मेढ़ा, मेड़।

घट्ट—संज्ञा पुं. [सं.] घाट।

घट्टकर—संज्ञा पुं. [हिं. घाट+कर] घाट का कर।

घट्टा—संज्ञा पुं. [हिं. घटना] (१) घाटा, हानि। (२) कमी, घटी (३) दरार, छेद। (४) घट्ठा।

घट्ठा—संज्ञा पुं. [सं. घट्ट] हाथ-पैर आदि में अधिक या नये काम के कारण पड़ जानेवाला कड़ा या उभड़ा हुआ चिन्ह।

घड़घड़—संज्ञा पुं. [अनु.] घड़घड़ाने का शब्द।

घड़घड़ाना—क्रि. अ. [अनु.] गड़गड़ाने का शब्द होना।

क्रि. स.—गड़गड़ाने का शब्द करना।

घड़घड़ाहट—संज्ञा स्त्री. [अनु. घड़घड़] (१) घड़घड़ शब्द होने का भाव। (२) बादल गरजने या गाड़ी चलने का शब्द।

घड़त—संज्ञा स्त्री. [हिं. गढ़त] बनावट, ढाँचा।

घड़नई, घड़नैल—संज्ञा पुं. [हिं. घड़ा + नैया (नाव)] बाँस में घड़े बाँधकर बनाया हुआ नाव का ढाँचा।

घड़ना—क्रि. स. [हिं. गढ़ना] रचना, बनाना।

घड़ा—संज्ञा पुं. [सं. घट] मिट्टी का गगरा।

मुहा.—घड़ों पानी पड़ना—लज्जा के कारण सिर नीचा हो जाना, बहुत लज्जित होना।

घड़ाई—संज्ञा स्त्री. [हिं. गढ़ाई] गढ़ने की क्रिया।

घड़ाना—क्रि. स. [हिं. गढ़ाना] गढ़वाना।

घड़ामोड़—वि. [हिं. गढ़+मोड़ना] शूरवीर।

घड़िया—संज्ञा स्त्री. [सं. घटिका] (१) मिट्टी का एक पात्र जिसमें चाँदी गलायी जाती है, घरिया। (२) मिट्टी का छोटा प्याला। (३) शहद का छत्ता। (४) गर्भाशय। (५) रहँट की ठिलियाँ।

घड़ियाल—संज्ञा पुं. [सं. घटिकालि, प्रा० घड़िआलि= घंटों का समूह] थालीनुमा बड़ा घंटा।

संज्ञा पुं. [हिं. घड़ा + आल = वाला] एक बड़ा जलजंतु, ग्राह।

घड़ियाली—संज्ञा पुं. [हिं. घड़ियाल] घंटा बजानेवाला।

संज्ञा स्त्री—घंटा जो पूजन में बजाया जाता है।

घड़िला—संज्ञा पुं. [हिं. घड़ा] छोटा घड़ा।

घड़ी—संज्ञा स्त्री. [सं. घटी] (१) २४ मिनट का समय।

मुहा०—घड़ी-घड़ी—बार बार। घड़ी तोला, घड़ी माशा—कभी एक बात कभी दूसरी। घड़ी गिनना—(१) उत्कंठा से प्रतीक्षा करना। (२) मृत्यु का आसरा देखना। घड़ी में घड़ियाल है—(१) जिंदगी का कोई ठिकाना नहीं। (२) जरा देर में उलट-पुलट हो जाती है। घड़ी देना—मुहूर्त या सायत बताना। घड़ी भर—थोड़ी देर। घड़ी-सायत पर होना—मरने के करीब होना।

(२) समय, काल। (३) उपयुक्त अवसर। (४) समयसूचक यंत्र।

घड़ीसाज—संज्ञा पुं. [हिं. घड़ी + फ़ा. साज] घड़ी की मरम्मत करनेवाला।

घड़ीसाजी—संज्ञा स्त्री. [हिं. घड़ीसाज] घड़ीसाज का काम।

घड़ोला—संज्ञा पुं. [हिं. घड़ा+ओला (प्रत्य.)] छोटा घड़ा।

घड़ौंची—संज्ञा स्त्री. [हिं. घड़ा + औंची (प्रत्य.)] घड़ा रखने की चौकी या तिपाई।

घण—संज्ञा पुं. [हिं. घन] घन, बादल।
घतर—संज्ञा पुं. [देश.] प्रभातकाल, तड़का।
घतिया—संज्ञा पुं. [हिं. घात + इया (प्रत्य.)] घात करने या धोखा देनेवाला।
घतियाना—क्रि. स. [हिं. घात] घात या दाँव में लाना। (२) चुराना, छिपाना।
घन—संज्ञा पुं. [सं.] (१ क) मेघ, बादल। उ.—किधौं घन बरसत नहिं उन देसनि। (१ ख) पयोधर, स्तन। उ.—पगरिपु लगत सघन घन ऊपर बूझत कहा बतैहै—सा. १६। (ख) नीकनन तें दिवस डारत परत घन पै हेर—सा. ६०। (२) लोहारों का बड़ा हथोड़ा। (३) लोहा। (४) मुख। (५) समूह। (६) कपूर। (७) घंटा। (८) लंबाई, चौड़ाई और ऊँचाई का विस्तार। (९) एक सुगंधित घास। (१०) अबरक। (११) कफ। (१२) झाँझ, मँजीरा आदि बाजे। (१३) शरीर।
वि.—(१) घना, गझिन। (२) गठा हुआ, ठोस। (३) दृढ़, मजबूत। (४) बहुत अधिक।
घनक—संज्ञा स्त्री. [अनु.] गरज, गड़गड़ाहट।
घनकना—अ. [अनु.] गरजना।
घनकारा—वि. [हिं. घनक] गरजनेवाला।
घनकोदंड—संज्ञा पुं. [सं.] इंद्रधनुष, मदाइन। उ.—कुटिल भू पर तिलक-रेखा, सीस सिखिनि सिखंड। मनु मदन धनु-सर-सँधाने, देखि घनकोदंड—१-३०७।
घनगरज—संज्ञा स्त्री. [हिं. घन + गरज] (१) बादल गरजने की ध्वनि। (२) एक पौधा। (३) एक तोप।
घनघनाना—क्रि. अ. [अनु.] घन घन शब्द होना।
क्रि. स.—(१) घनघन करना। (२) घंटा बजाना।
घनघनाहट—संज्ञा स्त्री. [अनु.] घनघन शब्द या भाव।
घनघोर—संज्ञा पुं. [सं. घन+घोर] (१) भीषण ध्वनि, घनघनाहट। (२) बादल की गरज।
वि.—(१) बहुत घना। (२) बहुत भयानक।
घनचक्कर—वि. [सं. घन = चक्कर] (१) चंचल बुद्धिवाला। (२) मूर्ख। (३) निठल्ला। (४) आतशबाजी, चरखी। (५) सूर्यमुखी का फूल। (६) चक्कर।
घनता—संज्ञा स्त्री. [सं.] घना या ठोसपन।
घनतार, घनताल—संज्ञा पुं. [सं.] (१) चातक पक्षी। (२) करताल, झाँझ।
घनतोल—संज्ञा पुं. [सं.] चातक पक्षी, पपीहा।
घनत्व—संज्ञा पुं. [सं.] (१) घनापन। (२) लंबाई, चौड़ाई और मोटाई का विस्तार। (३) अँगुओं का गठाव, ठोसपन।
घनदार—वि. [सं. घन, फ़ा. दार (प्रत्य.)] घना, गुंजान।
घननाद—संज्ञा पुं. [सं.] (१)बादलों की गरज। (२) रावण का पुत्र मेघनाद। (३) भीषण शब्द।
घनपति—संज्ञा पुं. [सं. घन + पति=स्वामी] इंद्र।
घनप्रिय—संज्ञा पुं. [सं.] (१) मोर, मयूर। (२) मोर-शिखा नामक घास।
घनफल—संज्ञा पुं. [सं.] (१) लंबाई, चौड़ाई और मोटाई (या ऊँचाई) का गुणनफल। (२) किसी संख्या को दो बार उसीसे गुणा करने पर प्राप्त फल।
घनबान—संज्ञा पुं. [हिं. घन + बाण] एक बाण।
घनबेल—वि. [हिं. घन + बेल] बेल-बूटेदार, जिसमें बेल-बूटे बने हों। उ.—कहुँ कहुँ कुचन पर दरकी अँगिया घनबेलि।
घनबेली—संज्ञा स्त्री. [सं. घन + हिं. बेल] बेला नामक पौधे की एक जाति।
घनमूल—संज्ञा पुं. [सं.] घनराशि का मूल अंक।
घनरस—संज्ञा पुं. [सं.] (१) जल, पानी। (२) कपूर। (३) हाथी का कोढ़ के समान एक रोग।
घनवर्द्धन—संज्ञा पुं. [सं.] धातु को पीट कर बढ़ाना।
घनवाह—संज्ञा पुं. [सं.] वायु।
घनवाहन—संज्ञा पुं. [सं.] इंद्र जिसका वाहन मेघ है।
घनश्याम—वि. [सं.] बादल के समान श्याम।
संज्ञा पुं.—(१) काला बादल। (२) श्रीकृष्णचंद्र। (३) श्रीरामचंद्र।
घनसागर—संज्ञा पुं. [सं.] (१) जल। (२) कपूर।
घनसार, घनसारि—संज्ञा पुं. [सं. घनसार] कपूर। उ.—पवन पानि घनसारि सुमन दै दधिसुत-किरनि भानु भई भुंजैं—२७२१।
घनस्याम—वि. [सं. घनश्याम] बादल-सा काला।
संज्ञा पुं. (१) काला बादल। उ.—तड़ित-बसन,

घन-स्याम-सदेश तन, तेज पुंज तम कौं त्रासै—१-६६ । (२) श्रीकृष्ण । उ.—अंत के दिन कौं हैं घनस्याम—१-७६ ।

घनहर—संज्ञा पुं. [हिं. घान+हारा (प्रत्य.)] अनाज भुनाने के लिए भड़भूँजे के पास लेजानेवाला ।

घनहस्त—संज्ञा पुं. [सं.] एक हाथ लंबा, चौड़ा और मोटा या ऊँचा पिंड, क्षेत्र या मान ।

घना—वि. [सं. घन] (१) सघन, गझिन । (२) घनिष्ट, निकट का (३ बहुत अधिक, ज्यादा ।

घनाक्षरी—संज्ञा पुं. [सं.] दंडक, मनहर या कवित्त ।

घनाघन—संज्ञा पुं. [सं.] (१) इंद्र । (२) मस्त हाथी। (३) बरसनेवाला बादल ।

घनात्मक—वि. [सं.] (१) जिसकी लंबाई, चौड़ाई और मोटाई समान हो। (२) घनफल ।

घनानंद—संज्ञा पुं. [सं] (१) गद्यकाव्य का एक भेद । (२) हिंदी का एक प्रसिद्ध कवि ।

घनाली-संज्ञा स्त्री. [सं. घन + अवली] घन-समूह ।

घनिष्ट—वि. [सं.] (१) घना, बहुत अधिक । (२) पास का, गहरा (संबंध आदि) ।

घनी-वि. [सं. घन] (१) सघन, गुंजान । (२) घनिष्ट, निकट की । (३) बहुत अधिक । उ.—कहा कमी जाके राम धनी । मनसानाथ मनोरथपूरन, सुख-निधान जाकी मौज घनी—१-३९ ।

घने—वि. [सं. घन] अनेक (संख्यावाचक) ।

घनेरा—वि. [हिं. घना] बहुत अधिक (परिमाण-वाचक), अतिशय ।

घनेरे—वि. [हिं. घने + एरे (प्रत्य.)] बहुत, अधिक, अगणित (संख्या में) । उ.—भैया-बंधु-कुटुंब घनेरे, तिनतैं कछु न सरी—१-७१ ।

घनेरो, घनेरौ—वि. [हिं. घनेरा] (१) अधिक, अगणित(संख्यावाचक) । उ.—(क) जो बनिता-सुत जूथ सकेले, हयगय बिभव घनेरौ । सबै समर्पौ सूर स्याम कौं, यह साँचौ मत मेरौ—१-२६६ । (ख) मैं निर्धन, कछु धन नहीं, परिवार घनेरौ—६-४२ । (२) बहुत अधिक (परिमाणवाचक), अतिशय । उ.—(क) जु पैचाहि लै स्याम करत उपहास घनेरो—१११९ । (ख) निज जन जानि हरि इहाँ पठायौ दीनो बोझ घनेरो—३४११ ।

घनो, घनौ—वि. [हिं. घना] बहुत अधिक (परिमाण-वाचक), ज्यादा । उ.—रवि-सुत-दूत बारि नहिं सकते, कपट घनौ उर बरतौ—१-२०३ ।

घनोपल—संज्ञा पुं. [सं. घन+उपल=पत्थर] ओला ।

घन्नई—संज्ञा पुं. [हिं. घड़नैल] घड़ों से बनायी नाव ।

घपचियाना—क्रि. अ. [हिं. घपची] घबराना।

घपची—संज्ञा स्त्री. [हिं. घन+पंच] मजबूत पकड़ ।

घपला—संज्ञा पुं. [अनु.] गड़बड़, गोलमाल ।

घपुआ, घप्पू—वि. [हिं. भकुआ] मूर्ख ।

घपूचंद—संज्ञा पुं. [हिं. घपुआ] मूर्ख आदमी ।

घबड़ाना, घबराना—क्रि. अ. [सं. गह्वर या हिं. गड़बड़ाना] (१) व्याकुल, अधीर या अशांत होना । (२) सकपकाना, भौचक्का होना (३) जल्दी करना, आतुर होना । (४) ऊबना, जी उचाट होना ।

घबड़ाहट, घबराहट—संज्ञा स्त्री. [हिं. घबराना] (१) व्याकुलता, अधीरता, अशांति । (२) सकपकाहट, कर्तव्यविमूढ़ता। (३) हड़बड़ी । (४) ऊबासी ।

घबराने—क्रि. अ. [हिं. घबराना] (१) व्याकुल या अधीर हुए । (२) सकपका गये, भौचक्के हो गये। उ.—पाती बाँचत नंद डराने। कालीदह के फूल पठावहु सुनि सबही घबराने—५२६ ।

घमका—संज्ञा पुं. [अनु.] (१) घूँसा । (२) वह प्रहार जिससे 'घम' शब्द हो ।

घमंड—संज्ञा पुं. [स. गर्व] (१) अभिमान, गर्व ।

मुहा०—घमंड पर आना (होना)—इतराना, अभिमानना । घमंड निकलना (टूटना)—गर्व चूर होना ।

(२) बल, वीरता, जोर, भरोसा। उ.—जासु घमंड बदति नहिं काहुहिं कहा दुरावति मोसौं ।

घमंडिन—संज्ञा स्त्री. [हिं. घमंड] गर्वीली, अभिमानिनी ।

घमंडी—वि. [हिं. घमंड] गर्वी, अभिमानी ।

घम—संज्ञा पुं. [अनु.] धमाके का शब्द ।

घमक—संज्ञा स्त्री. [अनु.] घूँसे के प्रहार का शब्द ।

घमकना—क्रि. अ. [अनु. घम] 'घम' शब्द होना।
क्रि. स.—'घम' से घूँसा मारना।
घमका—संज्ञा पुं. [अनु.] 'घम' से प्रहार का शब्द।
संज्ञा पुं. [हिं. घाम] ऊमस, घमसा।
घमकि—क्रि. वि. [हिं. घमकना] 'घम घम' की ध्वनि करके। उ.—(एरी) आनँद सौं दधि मथति जसोदा, घमकि मथनियाँ घूमै—१०-१४७।
घमखोर—वि. [हिं. घाम+फ़ा. खोर (खानेवाला)] जो घाम या धूप में रह सके।
घमघमाना—क्रि. अ. [अनु.] गंभीर शब्द करना।
क्रि. स.—(१) घूँसा मारना। (२) प्रहार करना।
घमर—संज्ञा पुं. [अनु.] भारी शब्द, गंभीर ध्वनि। उ.—(क) त्यौं त्यौं मोहन नाचै ज्यौं ज्यौं रई-घमर कौ होई (री)—१०-१४८। (ख) माखन खात पराये घर कौ। नित प्रति सहस मथानी मथिऐ, मेघ-शब्द दधि-माट घमर कौ—१०-३३३।
घमरा—संज्ञा पुं. [सं. भृंगराज] भँगरा बूटी।
घमरौल—संज्ञा स्त्री. [अनु. घमघम] (१) शोर-गुल, हो-हल्ला। (२) गड़बड़घोटाला।
घमस, घमसा—संज्ञा स्त्री. पुं. [हिं. घाम] (१) ऊमस, तपन। (२) घनापन, सघनता।
घमसान—संज्ञा पुं. [अनु. घम+सान] घोर युद्ध।
घमाका—संज्ञा पुं. [अनु. घम] 'घम' का शब्द।
घमाघम—संज्ञा स्त्री. [अनु. घम] (१) घमघम की ध्वनि। (२) धूमधाम, चहलपहल।
क्रि. वि.—(१) घमघम करके। (२) धूमधाम से।
घमाघमी—संज्ञा स्त्री. [हिं. घमाघम] मारपीट।
घमाना—क्रि. अ. [हिं. घाम] धूप खाना।
घमायल—वि. [हिं. घाम] धूप में पका हुआ फल।
घमासान—संज्ञा पुं. [हिं. घमासान] घोर युद्ध।
घमीला—वि. [हिं. घाम] घाम में मुरझाया हुआ।
घमोई—संज्ञा स्त्री. [देश.] बाँस का एक रोग।
घर—संज्ञा पुं. [सं. गृह] (१) मकान, गृह, गेह।
मुहा०—अपना घर (समझना)—घर की तरह निःसंकोच व्यवहार का स्थान। घर उजड़ना—(१) कुल परिवार की धन-संपत्ति नष्ट होना। (२) घर के प्राणियों का तितर-बितर हो जाना। घर करना—(१) बसना, रहना। (२) किसी वस्तु के लिए स्थान निकालना। (३) घर का प्रबंध करना। (स्त्री का) घर करना—(१) पत्नी की तरह रहना। (२) बस जाना। उ.—सनु सीरज घर कियौ बारिज पर—१०-६३। आँख (चित्त, मन, हृदय) में घर करना—(१) बहुत पसंद आना। (२) बहुत प्रिय लगना। घर का (की)—(१) अपना, निजी। उ.—मिसरी सूर न भावत घर की चोरी को गुड़ मीठो—सा. ६०। (२) आपस का, आपसी। (३) अपने परिवार का व्यक्ति। (४) पति, स्वामी। घर का अच्छा—अच्छे खाते पीते परिवार का। घर का आदमी—भाई-बंधु। घर का उजाला—(१) कुल की कीर्ति फैलानेवाला। (२) बहुत प्यारा। (३) बहुत सुन्दर। घर का घरवा (घरौवा) कराना—घर उजाड़ना। घर का बोझ उठाना (सम्हालना)—घर का प्रबंध करना। घर का भेदी—घर की सब बातें जाननेवाला। घर का भेदी (भेदिया) लंका दाहै (ढाहै)—घर का भेद बतानेवाला घर का सर्वनाश करा देता है। घर का काटने दौड़ना—घर का सूनापन भयानक लगना। घर का न घाट का—(१) जो न इधर का हो न उधर का, दोनों तरफ जिसका आदर न हो। (२) निकम्मा, बेकाम। घर का मर्द (शेर, वीर, बहादुर)—घर ही में डींग हाँकनेवाला, जो बाहर कुछ न कर सके। घर के बाढ़े—घर में या शत्रु के पीठ पीछे डींग हाँकनेवाला, सामने कुछ न कर सकनेवाला। उ.—(क) तुम कुँवर घर ही के बाढ़े अब कछू जिय जानिहौ—२२५६। (ख) अब घर के बाढ़े हौ तुम ऐसे कहा रहे मुरझाई—२२६१। घर ही की बाढ़ी घर में ही घमंड दिखानेवाली। उ.—ग्वालिन घर ही की बाढ़ी। निस दिन देखत अपने ही आँगन ठाढ़ी। घर का नाम उछालना (डुबोना)—कुल-परिवार की बदनामी कराना। घर की बात—कुल-परिवार की बात या इज्जत। घर की तरह बैठना (रहना)—आराम से बैठना या रहना। घर की खेती—अपने यहाँ पैदा होनेवाली चीज, जो खरीदी न गयी हो। घर के घर—(१) चुपचाप, गुप्त रीति से। (२)

बहुत से घर। घर खोना—घर का नाश करना। घर-घर—सभी घरों में। घर चलना—(१) घर का नाश होना। (२) घर की बदनामी होना। घर-घाट—(१) रंग-ढंग। (२) प्रकृति, स्वभाव। (३) ठौर-ठिकाना। घर-घाट जानना—सभी भेद जानना। घर घालना—(१) घर का नाश करना। (२) घर की बदनामी कराना। (३) प्रेम करके घर बरबाद करा देना। घर घुसना—हर समय घर ही में रहनेवाला। घर चलना—निर्वाह होना। घर चलाना—निर्वाह करना। घर डुबोना—(१) घर बरबाद करना। (२) घर की बदनामी कराना। घर डूबना—(१) घर बरबाद होना। (२) घर की बदनामी होना। घर जमना—गृहस्थी का सामान जुटना। घर जाना—कुल का नाश होना। घर जुगुत—गृहस्थी का प्रबंध। घर-झँकनी—घर-घर झाँकनेवाली। घर तक पहुँचना—माँ-बहन या बापदादे को गाली देना। घर देखना—किसी के घर माँगने जाना। घर देख लेना (पाना)—एक बार कुछ पाकर परच जाना। किसी के घर पड़ना—पत्नी के रूप से रहना। (वस्तु) घर पड़ना—किस भाव से घर आना। घर पीछे—एक एक घर से। घर फटना—(१) बुरा लगना। (२) घर वालों में झगड़ा होना। घर फूँक तमाशा देखना—घर की संपत्ति आदि का नाश करके मनोरंजन करना या प्रसन्न होना। घर फोड़ना—घर वालों में झगड़ा कराना। घर बंद होना—(१) घर में ताला पड़ना। (२) घर वालों का तितर-बितर हो जाना। (३) घर से संबंध न रहना। घर बिगाड़ना—(१) घर की संपत्ति नष्ट करना। (२) घरवालों में फूट पैदा करना। (३) घर की बहू-बेटी को बुरे मार्ग पर ले जाना। घर बनना—घर की आर्थिक दशा सुधरना। घर बनाना (१) जम कर रहना। (२) घर की आर्थिक दशा सुधारना। (३) अपना घर भरना, अपना लाभ करना। घर बरबाद होना—घर की आर्थिक दशा बिगड़ना। घर बसना—(१) घर की दशा सुधरना। (२) विवाह होना। घर बसाना—(१) घर की दशा सुधारना। (२) विवाह करना। घर बैठना—(१) एकांत में रहना (२) स्त्रियों में रहना। (३) काम छोड़ बैठना। (४) पत्नी-रूप में रहने लगना। घर बैठे रोटी—बेमेहनत की जीविका। घर बैठे बैठे—(१) बिना काम किये। (२) बिना कहीं गये-आये। (३) बिना यात्रा किये। घर भर—परिवार के सब लोग। घर भरना—(१) अपना ही लाभ करना। (२) हानि की पूर्ति होना। (३) घर में मेहमान आना। घर में—स्त्री, घरवाली। घर में डालना-पत्नी-रूप में रख लेना। घर में पड़ना—पत्नी रूप से रहना। घर से—पास से। घर से पाँव निकालना—मनमाने ढंग से घूमना-फिरना। घर से बाहर पाँव निकालना—हैसियत से ज्यादा काम करना। घर से देना—(१) अपने पास से देना। (२) हानि उठाना। घर सेना—(१) घर में पड़े रहना। (२) बेकार बैठना। घर होना—(१) निबाह होना। (२) परस्पर प्रेम या मेल होना।

(२) जन्मभूमि, जन्मस्थान। (३) कुल, वंश। (४) कार्यालय। (५) कोठरी, कमरा। (६) रेखाओं से घिरा स्थान, खाना। (७) चौपड़, शतरंज आदि का खाना। उ.—चौपरि जगत मड़े दिन बीते। गुन पासे क्रम अंक चार गति सारि न कबहूँ जीते। चारि पसारि दिशानि, मनोरथ घर फिरि फिरि गिनि आने—१-६०।

मुहा०—घर बंद होना—गोटी चलने का रास्ता बंद होना।

(८) कोश, डिब्बा। (९) (संदूक, अलमारी आदि का) खाना। (१०) (पानी आदि के समाने का) स्थान। (११) (नगीना आदि जड़ने का) स्थान। (१२) छेद, बिल। (१३) स्वर। (१४) उत्पत्ति का कारण। (१५) गृहस्थी, घरबार। (१६) गृहस्थी का सामान। (१७) (चोट या वार का) स्थान। (१८) आँख का गड्ढा। (१९) चौखटा। (२०) भंडार, खजाना। (२१) दाँव-पेंच, युक्ति। (२२) (बाँस का) समूह।

घरऊ—वि. [हिं. घर + आऊ (प्रत्य.)] घरेलू, घराऊ।

घरघराना—क्रि. अ. [अनु.] 'घरघर' ध्वनि करना।

संज्ञा पुं. [हिं. घर + घराना] कुल, परिवार।

घरघराहट—संज्ञा स्त्री. [अनु.] (१) घरघर की ध्वनि। (२) कफ के कारण कंठ से साँस लेते समय निकलने वाला शब्द।

घरघालै, घरघालक, घरघालन—वि. [हिं. घर+घालना] (१) घर की आर्थिक दशा बिगाड़नेवाला। (२) कुल में कलंक लगानेवाला।

घरजाया—संज्ञा पुं. [हिं. घर + जाया] घर का गुलाम।

घरणी—संज्ञा स्त्री. [हिं. घरनी] घरवाली, स्त्री।

घरदासी—संज्ञा स्त्री. [हिं. घर + सं. दासी] पत्नी।

घरद्वार—संज्ञा पुं. [हिं. घर + सं. द्वार] (१) रहने का स्थान, ठौर, ठिकाना। (२) गृहस्थी, घरबार। (३) मकान, जायदाद।

घरद्वारी—संज्ञा स्त्री. [हिं. घरद्वार] कर जो घर पीछे लगे।

घरन—संज्ञा स्त्री. [देश.] पहाड़ी भेड़, जुँबली।

घरनाल—संज्ञा स्त्री. [हिं. घड़ा + नाली] एक तोप।

घरनि, घरनी—संज्ञा स्त्री. [सं. गृहिणी, प्रा. घरणी] घरवाली, भार्या, गृहिणी। उ.—तरुवर-मूल अकेली ठाढ़ी दुखित राम की घरनी। बसन कुचील, चिहुर लपिटाने, बिपति जाति नहिं बरनी—६-७३। (ख) जाकी घरनि हरी छल-बल करि, लायो बिलँब न आवत—६-१३३। (ग) सूरदास धनि नंद की घरनी, देखत नैन सिराइ—१०-३३।

घरफोड़ना, घरफोर—वि. [हिं. घर + फोड़ना] घरवालों में झगड़ा-बखेड़ा करानेवाला।

घरफोरी—वि. [हिं. घर + फोड़ना] घरवालों में फूट या कलह करानेवाली।

घरबसा—संज्ञा पुं. [हिं. घर + बसना] उपपति, प्रेमी।

घरबसी—संज्ञा स्त्री. [हिं. घर +बसना] रखेली। घर में पत्नी की तरह रहनेवाली प्रेमिका।

वि. स्त्री. (१) घर की दशा सुधारनेवाली। (२) घर की दशा बिगाड़नेवाली (व्यंग्य)।

घरबार—संज्ञा पुं. [हिं. घर + बार=द्वार] (१) रहने का स्थान, ठौर ठिकाना। (२) घर का जंजाल, गृहस्थी। (३) निज की सारी संपत्ति, गृहस्थी का साज-सामान, घरद्वार। उ.—तुम्हरै भजन सबहि सिंगार। जो कोउ प्रीति करै पद-अंबुज, उर मंडत निरमोलक हार। किंकिनि नूपुर पाट-पटंबर, मानो लिये फिरै घरबार—१-४१।

घरबारी—संज्ञा पुं. [हिं. घर+बार] बाल-बच्चोंवाला, गृहस्थ। उ.—अब तो स्याम भये घरबारी।

घरबैसी—संज्ञा स्त्री. [हिं. घर + बैठना] उपपत्नी।

घरमकर—संज्ञा पुं. [सं. घर्मकर] सूर्य।

घरमना—क्रि. अ. [सं. घर्म + ना (प्रत्य.)] बहना।

घररघरर—संज्ञा पुं. [अनु.] घिसने का शब्द।

घररना—क्रि. अ. [हिं. घररघरर] घिसना, रगड़ना।

घरवा, घरवाहा—संज्ञा पुं. [हिं. घर + वा या वाहा (प्रत्य.)] (१) छोटा-मोटा घर (२) घरौंदा।

घरवात—संज्ञा स्त्री. [हिं. घर + वात (प्रत्य.)] घर का साज-सामान या धन-संपति, गृहस्थी।

घरवाला—संज्ञा पुं. [हिं. घर + वाला (प्रत्य.)] (१) घर का स्वामी या मालिक। (२) पति।

घरवाली—संज्ञा स्त्री. [हिं. घर + वाली (प्रत्य.)] (१) घर की मालिकिन या स्वामिनी। (२) पत्नी।

घरसा—संज्ञा पुं. [सं. घर्ष] रगड़ा, घिस्सा।

घरहाँई, घरहाई—संज्ञा स्त्री. [हिं. घर+सं. घाती, हिं. घाई] (१) घर में झगड़ा करानेवाली स्त्री। (२) घर की बुराई करने या कलंक लगानेवाली स्त्री।

वि.—(१) झगड़ा करानेवाली। (२) कलंक, लांछन या दोष लगानेवाली स्त्री।

घराऊ—वि. [हिं. घर + आऊ (प्रत्य.)] (१) घर का, घरेलू। (२) निजी, आपसी।

घराती—संज्ञा पुं. [हिं. घर + आती (प्रत्य.)] विवाह में कन्या-पक्ष के लोग।

घराना—संज्ञा पुं. [हिं. घर + आना (प्रत्य.)] वंश, कुल।

घरि—संज्ञा स्त्री. [हिं. घड़ी] घड़ी भर का समय। उ. —(क) तुरतहिं देत बिलंब न घरि कौ—१०-१८१। (ख) और किए हरि लगी न पलक घरि—३४०६।

घरिआर, घरियार—संज्ञा पुं. [हिं. घड़ियाल] (१) घंटा-घड़ियाल। उ.—सुनत शब्द घरियार के नृप द्वार बजावत—२५६०। (२) घड़ियाल नामक जल जंतु।

घरिक—क्रि. वि. [हिं. घड़ी+एक] घड़ी भर, थोड़ी देर। उ.—(क) तरु दोउ धरनि गिरे भहराइ।.... ....। कोउ रहे अकास देखत, कोउ रहे सिरनाइ। घरिक लौं जकि रहे जहँ तहँ, देह गति बिसराइ—३८७। (ख) घरिक मोहिं लगि है खरिका मैं, तू जनि आवै हेत—६७६।

घरिया—संज्ञा स्त्री. [हिं. घड़िया] मिट्टी का एक पात्र जिसमें सोना-चाँदी गलायी जाती है।

घरियाना—क्रि. स. [हिं. घरी] (कपड़े आदि की) तह लगाना, लपेटना।

घरियारी—संज्ञा पुं. [हिं. घड़ियाल] घंटा बजानेवाला।

घरी—संज्ञा स्त्री. [हिं. घड़ी](१) काल का एक समय जो चौबीस मिनट के बराबर होता है। उ.—(क) राम न सुमिरयौ एक घरी—१-७१। (ख) मोकौं मुक्ति बिचारत है प्रभु पचिहौ पहर-घरी—१-१३०। (२) समय, अवसर। उ.—(क) बहुरि हिमाचल कैं सुभ घरी। पारबती ह्वै सो अवतरी—४-७। (ख) मेरे कहैं बिप्रनि बुलाइ, एक सुभ घरी धराइ, बागे चीरे बनाइ भूषन पहिरावौ—१०-३५।

संज्ञा स्त्री. [हिं. घर=कोठा, खाना] तह, परत।

प्र.—करत घरी—बाँधते हो, लपेटते हो, सम्हालते हो। उ.—इन निर्गुन निर्मोल की गठरी अब किन करत घरी—३१०४।

घरीक—क्रि. वि. [हिं. घड़ी + एक] एक घड़ी भर।

घरुआ, घरुवा—संज्ञा पुं. [हिं. घर + वा (प्रत्य.)] घर का ठीक-ठीक, बँधा-बँधाया प्रबंध या खर्च।

घरू—वि. [हिं. घर + ऊ (प्रत्य.)] घर का, रेलू।

घरेला, घरेलू वि. [हिं. घर + एला, एलू (प्रत्य.)] (१) पालू, पालतू। (२) निजी, घर का। (३) घर का बना या तैयार किया हुआ।

घरै—संज्ञा सवि. [सं. गृह, हिं. घर] घर की। उ.—स्याम अकेले आँगन छाँड़े, आपु गई कछु काज घरै- १०-७६।

घरैया—वि. [हिं. घर + ऐया (प्रत्य.)] र का, घरेलू।

संज्ञा पुं.— घर का आदमी, संबंधी।

घरो—संज्ञा पुं. [हिं. घड़ा] घड़ा, गगरा।

घरौंदा, घरौंधा—संज्ञा पुं. [हिं. घर + औंदा (प्रत्य.)] (१) बच्चों द्वारा बनाया हुआ धूल-मिट्टी का घर। (२) छोटा-मोटा कच्चा घर।

घरौना—संज्ञा पुं. [हिं. घर + औना (प्रत्य)] (१) घर, मकान। (२) छोटा घर, घरौंदा।

घर्घर—संज्ञा पुं. [सं.] एक प्राचीन बाजा।

संज्ञा पुं. [अनु.] घड़घड़ाहट, घरघर शब्द।

घर्म—संज्ञा पुं. [सं.] घाम, धूप।

घर्मबिंदु—संज्ञा पुं. [सं.] पसीना।

घर्मांशु—संज्ञा पुं. [सं.] सूर्य।

घर्रा—संज्ञा पुं. [हिं. घररघरर] (१) आँख में लगाने का अंजन। (२) कफ से गले की घरघराहट।

मुहा०—घर्रा चलना (लगना)—मरते समय कफ के कारण साँस का घरघराहट के साथ निकलना।

घर्राटा—संज्ञा पुं. (अनु. घर्र + आटा (प्रत्य.)] गहरी नींद में नाक से निकलनेवाला 'घरघर' का शब्द।

मुहा०—घर्राटा भरना—गहरी नींद में सोना।

घर्षण—संज्ञा पुं. [सं.] रगड़, घिस्सा।

घर्षित—वि. [सं.] रगड़ा हुआ, रगड़ खाया हुआ।

घलना—क्रि. अ. [हिं. घालना] (१) छूट जाना, गिर पड़ना, फेंका जाना। (२) हथियार चल जाना, गोली छूट पड़ना। (३ मारपीट हो जाना।

घलाघल, घलाघली—संज्ञा स्त्री. [हिं. घलना] मारपीट।

घलुआ—संज्ञा पुं. [हिं. घाल] घेलौना, घाता।

घवद—संज्ञा स्त्री. [हिं. गौद, घौंद] फलों का गुच्छा।

घवरि—संज्ञा स्त्री [सं. गह्वर] फल पत्तियों का गुच्छा।

घसकना—क्रि. अ. [हिं. खिसकना] सरकना, खिसकना।

घसखुदा—वि. [हिं. घास+खोदना (१) जो घास खोदता हो। (२) मूर्ख, गँवार, अनाड़ी।

घसना—क्रि. स. [सं. घर्षण] रगड़ना, घिसना।

क्रि. स. [सं. घसन] खाना, भक्षण करना।

घसि—क्रि. अ. [हिं. घिसना, घसना] (१) घिसकर, रगड़कर, पीसकर। उ.—(क) गुहि गुंजा, घसि बन धातु, अंगनि चित्रे ठए—१०-२४। (ख) एकनि कौं पुहुपनि की माला, एकनि कौं चंदन घसिनीर—१०-२५ (ग) घसि कै गरल चढ़ाइ उरोजनि, लै रुचि सौं पय प्याऊँ—१०-४९। (२) (अपराध स्वीकार करके क्षमा मागते या बिनती करते हुए माथा आदि चरणों या देहली पर) घिसकर या रगड़कर। उ.—जावक रस मनौ संबर अरिगन पिया मनायी पद ललाट घसि—१६५४।

घसिटना—क्रि. अ. [सं. घर्षित + ना (प्रत्य.)] रगड़ खाते हुए खिंचना।

घसियारा—संज्ञा पुं. [हिं. घास + आरा (प्रत्य.)] (१) घास खोदनेवाला। (२) मूर्ख, नासमझ।

घसियारिन, घसियारी—संज्ञा स्त्री [हिं. घसियारा] (१) घास बेचनेवाली। (२) मूर्ख या नासमझ स्त्री।

घसीट—संज्ञा स्त्री. [हिं. घसीटना] (१) जल्दी लिखने का भाव (२) जल्दी लिखा हुआ लेख। (३) घसीटने का भाव।

वि.—(१) जल्दी जल्दी लिखा हुआ। (२) घसीटा हुआ।

घसीटना—क्रि. स. [सं. घृष्टि, प्रा. घिष्ट + ना (प्रत्य.)] (१) रगड़ते हुए खींचना, कढ़ोरना।

यौ—घसीटा-घसीटी—खींचातानी।

(२) जल्दी से लिखकर चलता करना। (३) किसी झगड़े या मामले में जबरदस्ती शामिल करना।

घसेहो—क्रि. स. [हिं. घसना] घिस चुके हो, रगड़ आये हो। उ.—लटपटी पाग महावर के रँग मानिनि पग पर सीस घसेहो—१६५५।

घहनाना—क्रि. अ. [अनु.] किसी धातु खंड (घंटे आदि) पर आघात का शब्द होना, घहराना।

घहनाने—क्रि. अ. [हिं. घहनाना] (घंटे आदि) बजने या घनघनाने लगे।

घहरत—क्रि. अ. [हिं. घहरना] घोर शब्द करता है, गरजता है। उ.—गर्जत ध्वनि प्रलयकाल गोकुल भयौ अंधकाल चकृत भए ग्वालबाल घहरत नभ करत चहल—६४८।

घहरना—क्रि. अ. [अनु.] गंभीर, घोर या भीषण ध्वनि करना, गरजना।

घहराइ—क्रि. अ. [हिं. घहराना] गरजकर, गंभीर शब्द करके, घहराकर। उ.—(क) गगन घहराइ जरी घटा कारी—३८४। (ख) फूले बजावत गिरि गिरी गार मदन भेरि घहराइ अपार संतन हित ही फूल डोल—२४१३।

घहरात—क्रि. अ. [हिं. घहराना] घोर शब्द करते हैं। उ.— गगन भेद घहरात थहरात गात—६६०।

घहरान—संज्ञा स्त्री. [हिं. घहराना] गंभीर ध्वनि।

घहराना—क्रि. अ. [अनु.] गरजना, गंभीर या घोर ध्वनि करना, भीषण शब्द निकालना।

घहरानि, घहरानी—संज्ञा स्त्री. [हिं. घहराना] गंभीर ध्वनि, तुमुल शब्द, गरज। उ.—सुनत घहरानि ब्रज लोग चकित भए, कहा आघात धुनि करत आव—२०-६२,

क्रि. अ.—गरजने लगी, घोर शब्द किया।

घहरारा—संज्ञा पुं. [हिं. घहराना] घोर शब्द, गरज।

वि.—घोर शब्द करनेवाला, गरजनेवाला।

घहरारी—संज्ञा स्त्री. [हिं. घहरारा] गंभीर ध्वनि।

वि.—गंभीर ध्वनि करनेवाली, गरजनेवाली।

घहरि—क्रि. अ. [हिं. घहरना] गूँजना, शब्दायमान होना। उ.—मथति दधि जसुमति मथानी, धुनि रही घर-घहरि—१०-६७।

घहरै—क्रि. अ. [हिं. घहरना] घोर शब्द करता है। उ.—इहिं अंतर अँधवाह उठ्यो इक, गरजत गगन सहित घहरै—१०-७६।

घाँ—संज्ञा स्त्री. [सं. ख या घाट=ओर] (१) दिशा, दिक्। उ.—किहिं घाँ के तुम बीर बटाऊ कौन तुम्हारौ गाउँ—६४४। (२) ओर, तरफ, पक्ष। उ.—(क) गर्भ परीछित रच्छा कीनी, हुतौ नहीं बस माँ कौ। मेटी पीर परम पुरुषोत्तम, दुख मेट्यौ दुहुँ घाँ कौ——१-११३। (ख) सूर तबहिं हम सौं जौ कहती तेरी घाँ ह्वै लरती—१२७१।

घाँघरा, घँघरो, घाँघरो—संज्ञा पुं. [सं. घर्घर=क्षुद्र-घंटिका] स्त्रियों का घेरदार पहनावा, लहँगा।

घाँची—संज्ञा पुं. [हिं. घान + ची] तेली।

घाँटी—संज्ञा स्त्री. [सं. घंटिका] (१) गले की भीतरी घंटी, कौआ। (२) गला।

घँटो—संज्ञा पुं. [हिं. घट] एक तरह का गाना।

घाँइ,घाँही—संज्ञा स्त्री. [हिं. घाँ] (१) ओर, तरफ, पक्ष। (२) दिशा।

घा—संज्ञा स्त्री. [हिं. घाँ] ओर, तरफ।

घाइ—संज्ञा पुं. [हिं. घाव] घाव, जख्म, चोट, आघात। उ.—हरि बिछुरे हम जिती सहत हैं तिते बिरह के घाइ—३१५६।

क्रि. स. [हिं. घाना] मारकर, नाश करके।

घाइल—वि. [हिं. घायल] जिसे घाव लगा हो, जखमी, घायल।

घाईं—संज्ञा स्त्री. [हिं. घाँ, घा] (१) ओर, तरफ। (२) दिशा। (३) दो वस्तुओं के बीच का स्थान, संधि। (४) बार, दफा। (५) पानी का भँवर।

घाई—संज्ञा स्त्री. [सं. गभस्ति=उँगली] (१) दो उँगलियों के बीच की संधि। (२) पेड़ी और डाल के बीच का कोना।

संज्ञा स्त्री. [हिं. घाव] (१) चोट, आघात, मार। (२) धोखा, चालबाजी।

मुहा.—घाइयाँ बताना—झाँसा देना।

संज्ञा स्त्री. [हिं. गाही] पाँच वस्तुओं का समूह।

घाउ—संज्ञा पुं. [हिं. घाव] घाव, क्षत, जखम, चोट, आघात। उ.—(क) धमकि मारयौ घाउ गुमकि हृदय रह्यौ झमकि गहि केस लै चले ऐसे—२६१५। (ख) रिषि दधीचि हाड़ लै दान। ताकौ तू निज वज्र बनाउ। मरि है असुर ताहि कैं घाउ—६-५।

घाऊघप्प—वि. [हिं. खाऊ+गप या घप] (१) गुप्त रूपसे माल उड़ानेवाला। (२) जिसका भेद न खुले।

घाएँ—संज्ञा स्त्री. [देश.] (१) ओर, तरफ। (२) बार, अवसर, दफा।

क्रि. वि.—ओर से, तरफ से।

घाग,घाघ—संज्ञा पुं.—(१) एक अनुभवी व्यक्ति जिसकी कहावतें बहुत प्रसिद्ध हैं। (२) बड़ा चालाक या खुर्राट आदमी। (३) जादूगर।

संज्ञा पुं. [हिं. घुग्घू] उल्लू की जाति का एक पक्षी।

घाघरा—संज्ञा [सं. घर्घर=क्षुद्रघंटिका] स्त्रियों का एक पहनावा, लहँगा।

संज्ञा पुं. [सं. घर्घर=उल्लू] एक कबूतर।

संज्ञा पुं. [देश.] एक पौधा।

संज्ञा स्त्री.—सरजू नदी का एक नाम।

घाघरिया,घाघरी—संज्ञा स्त्री. [हिं. घाघर=लहँगा] घघरिया, लहँगा। उ.—मोहन मुसुकि गही दौरत मैं छूटि तनी छंद रहित घाघरी—२३६६।

घाघस—संज्ञा पुं. [हिं. घाघ=घुग्घू] घाघ पक्षी।

घाट—संज्ञा पुं. [सं. घट्ट] नदी या जलाशय का ऐसा स्थान जहाँ लोग नहाते-धोते हैं।

यौ.—घाट-बाट—सर्वत्र, सभी स्थलों पर। उ.—भरि हियाव, यह सौंज लादि कै, हरि कैं पुर लै जाहि। घाट-बाट कहुँ अटक होइ नहिं, सब कोउ देहि निबाहि—१-३१०।

(२) नदी या जलाशय का वह स्थान जहाँ धोबी कपड़े धोते हैं। (३) नदी या जलाशय का वह स्थान जहाँ लोग नाव पर चढ़कर पार उतरते हैं।

मुहा.—घाट घरना—राह रोकना। घाट धरयौ-जबरदस्ती रास्ता रोक लिया। उ.—घाट धरयौ तुम यहै जानि कै करत ठगन के छंद। घाट मारना—नाव या पुल का किराया (उतराई) न देना। घाट लगना—नाव पर एक बार में चढ़नेवाले यात्रियों का इकट्ठा होना। नाव का घाट लगना—नाव किनारे पहुँचना। (किसी का) किनारे लगना—आश्रय या सहारा पा जाना।

(४) तंग पहाड़ी रास्ता या उतार। (५) पहाड़। (६) ओर, तरफ। (७) दिशा। (८) रंग-ढंग, चाल ढाल। (९) तलवार की धार। (१०) अँगिया का गला। (११) दुलहिन का लहँगा।

संज्ञा स्त्री. [सं. घात या हिं. घट=कम] (१) छल, कपट, धोखा। (२) बुरा कर्म।

वि. [हिं. घट] कम, थोड़ा।

संज्ञा पुं. [सं.] गरदन का पिछला भाग।

घाटवाला—संज्ञा पुं. [हिं. घाट+वाला] घाटिया।

घाटा—संज्ञा पुं. [हिं. घटना] हानि, नुकसान।

मुहा०—घाटा भरना—कमी पूरी करना।

घाटारोह—संज्ञा पुं. [हिं. घाट+सं. रोध) घाट से किसी को उतरने-चढ़ने न देना।

घाटि—वि. [हिं. घटना, घाटा] बाकी (रही), शेष (बची), कम (रही)। उ.—कौन करनी घाटि मोसौं, सो करौं फिरि काँधि। न्याइ कै नहिं खुनस कीजै, चूक पल्लैं बाँधि—१-१९९।

संज्ञा स्त्री. [सं. घात, हिं. घाट=कम] नीच कर्म, पाप, बुरा काम।

घाटिका—संज्ञा स्त्री. [सं.] गरदन का पिछला भाग।

घाटिया—संज्ञा पुं. [सं. घाट+इया (प्रत्य.)] घाट पर दान लेनेवाला ब्राह्मण, गंगापुत्र।

घाटी—संज्ञा स्त्री. [सं.] गले का पिछला भाग।

संज्ञा स्त्री. [हिं. घाट] (१) पर्वतों के बीच की

भूमि। (२) पहाड़ी सँकरा मार्ग, दर्रा। (३) पहाड़ी ढाल या उतार। (४) मार्ग-कर चुकाने का प्राप्तिपत्र।

घाटे—वि. [हिं. घटना] घटकर, कम। उ.—ये कुलटा कलीट वे दोऊ। इक तें एक नहिं घाटे दोऊ।

घाटो—संज्ञा पुं. [हिं. घाटा] कमी, घटी, हानि। संज्ञा पुं. [हिं. घट] घाँटो नामक गीत। वि. [हिं. घटना = कम करना] दरिद्र।

घात—संज्ञा पुं. [सं.] प्रहार, चोट, मार। उ.—(क) सुआ पढ़ावत गनिका तारी, व्याध तर्यौ सर-घात किएँ—१-८६। (ख) घात कर्यौ नख उर कौं—७३८।

मुहा.—घात चलाना—जादू-टोना करना।

(२) वध, हत्या, नाश। उ.—(क) प्रान हमारे घात होत हैं तुमरे भावै हाँसी—३०६३। (ख) सूरदास सिसुपाल पानि गहै पावक जारि करौं तन घात—१०उ. ११। (३) अहित, बुराई।

संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) दाँव, सुयोग। उ.—आप अपनी घात निरखत खेल जम्यौ बनाइ।

मुहा.—घात पर चढ़ना (में आना)—वश में आना, हत्थे चढ़ना। घात में पाना—काम सिद्ध होने की स्थिति में पा जाना। घात लगना—सुयोग मिलना। घात लगाना—उपाय भिड़ाना, तदबीर लगाना, मौका ढूँढ़ना। उ.—सहसबाहु के सुतनि पुनि राखी घात लगाइ। परसुराम जब बन गयौ मार्यौ रिसि कौं धाइ—९-१४।

(२) उपयुक्त अवसर या सुयोग की प्रतीक्षा, ताक।

मुहा.—घात में फिरना—ताक में घूमना। घात में बैठना—छिपकर बैठना या तैयार रहना। घात में रहना (होना)—अनुकूल अवसर की प्रतीक्षा करना। घात लगाना—तदबीर लड़ाना, मौका ताकना।

(३) दाँव-पेंच, छल-कपट। उ.—(क) मैं जानी पिय मन की बात। धरनी पग-नख कहा करोवत अब सीखे ए घात—२०००। (ख) घात मन करत लैं डारिहौं दुहुनि पर दियो गज पेलि आपुन हँकार्यो—२५६२। (ग) भाजि जाहि सघन स्याम महँ जहाँ न कोऊ घात—२७७७।

मुहा.—घात बताना—(१) चालाकी सिखाना। (२) चाल चलना, बहलाना, रास्ता बताना।

(४) रंग ढंग, तौर-तरीका, ढब, धज।

घातक, घातकी—संज्ञा पुं. [सं. घातक] (१) मारनेवाला, हत्यारा। (२) क्रूरकर्मा, हिंसक, बधिक, जल्लाद। उ.—माधौ जू मोतैं और न पापी। घातक, कुटिल, चबाई कपटी, महाक्रूर संतापी—१-१४०। (३) शत्रु।

वि.—[हिं. घात] हानिकारिणी, नाशक। उ.—किंचित स्वाद स्वान बानर ज्यौं, घातक रीति ठटी—१-६८।

घाता—वि. [सं. घात] समाप्त, खत्म। उ.—केसि-कंस दुष्ट मारि, मुष्टिक कियौ घाता—१-१२३।

घातिक—संज्ञा पुं. [हिं. घातक] (१) हत्यारा, बधिक।

घातिनी—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) नाश करनेवाली। उ.—कुच बिष बाँटि लगाइ कपट करि, बाल-घातिनी परम सुहाई—१०-५०। (२) मारनेवाली।

घातिया, घाती—संज्ञा पुं. [सं. घातिन्, हिं. घाती] (१) घातक, हिंसक, संहारक। उ.—घाती कुटिल ढीठ अति क्रोधी कपटी कुमति, जुलाई—१-१८६। (२) वध या नाश करनेवाला। उ.—ज्यौं ए बचन सुअंक सूर सुनि बिरह मदन सर घाती—२६८०।

घातुक—वि. [सं.] (१) बधिक। (२) क्रूर।

घातैं, घातैं—संज्ञा पुं. [सं. घात] (१) दाँव, सुयोग, स्वार्थ सिद्धि का उपयुक्त स्थान और अवसर। उ.—मोंसों कहत स्याम हैं कैसे ऐसी मिलईं घातैं—१२६०। (२) चाल, छल, कपटयुक्ति। उ.—(क) मेरी बाहँ छाँड़ि दै राधा, करत उपरफट बातैं। सूर स्याम नागर, नागरि सौं, करत प्रेम की घातैं—६८१। (ख) हम सब जानत हरि की घातैं—३३३८। (ग) तुम निसि दिन उर अंतर सोचत ब्रज जुवतिन की घातैं—३०२४।

घातुक—वि. [हिं. घात] निष्ठुर, हिंसक।

घान—संज्ञा. पुं. [सं. घन=समूह] उतनी वस्तु जितनी एक बार कोल्हू में पेरने, चक्की में पीसने, कड़ाही में पकाने या भाड़ में भूनने के लिए डाली जाय।

संज्ञा पुं [हिं. घन=बड़ा हथौड़ा] प्रहार, चोट।

घाना—क्रि. स. [सं. घात, प्रा. घाय + ना (प्रत्य.)] **संहार या नाश करना, मारना।**

क्रि. स. [हिं. गहना = पकड़ना] **पकड़ा देना।**

घानी—संज्ञा स्त्री. [हिं घान] (१) घान। (२) ढेर।

घाम—संज्ञा. पुं. [सं. घर्म, प्रा. घम्म] धूप, सूर्यातप। उ.—सीत, घाम, घन, बिपति बहुत बिधि, भार तरैं मर जैहौं—१-३३१।

मुहा.—घाम खाना—धूप में रहना। घाम लगना—लू खा जाना। घाम में घर छाना—घर को कष्ट या संकट में डालना। घर में घाम आना—बड़ी मुसीबत में पड़ जाना।

घामड़—वि. [हिं. घाम] (१) जो (चौपाया) धूप से व्याकुल हो। (२) नासमझ, मूर्ख। (३) आलसी।

घाय—संज्ञा पुं. [हिं. घाव] घाव, जख्म।

घायक—वि. [हिं. घातक] (१) मारनेवाला। (२) घायल करनेवाला।

घायल—वि. [हिं. घाय] आहत, चुटैल, जख्मी। उ.—कहुँ जावक कहूँ बने तँबोल रँग, कहुँ अँग सेंदुर दाग्यौ। मानो रन छूटे घायल कौं जहँ तहँ स्रोनित लाग्यौ—१६७२।

घार—संज्ञा स्त्री. [सं. गर्त्त] **पानी के बहाव से कटकर बननेवाला गड्ढा या मार्ग।**

घाल, घाला—[हिं. घलना] घलुआ, घाता।

मुहा०—घाल न गिनना—बहुत तुच्छ समझना।

घालक—संज्ञा पुं. [हिं. घालना] (१) मारनेवाला। उ.—जौ प्रभु मेष धरैं नहिं बालक। कैसैं होहिं पूतना-घालक—११०४। (२) नाश करनेवाला।

घालकता—संज्ञा स्त्री. [सं. घालक + ता (प्रत्य.)] **मारने या नाश करने की क्रिया या भावना।**

घालत—क्रि. स. [हिं. घालना] (१) बिगाड़ते हैं, नाश करते हैं। उ.—सूर स्याम संगहिं सँग डोलत औरनि के घर घालत—पृ० ३२२। (२) (मारकर) डाल देंगे। उ.—तनक तनक से ग्वाल छोहरन कंस अबहिं बधि घालत—२५७४।

घालति—क्रि. स. स्त्री. [हिं. घालना] मारती है, चलाती है, चुभोती है। उ.—घालति छुरी प्रेम की बानी सूरदास को सकै सँभारि।

घालना—क्रि. स. [सं. घटन, प्रा. घडन या घल्लन] (१) (किसी वस्तु के भीतर या ऊपर) रखना या डालना। (२) फेंकना, चलाना, छोड़ना। (३) (काम) कर डालना। (४) नाश करना, बिगाड़ना। (५) मार डालना।

घालमेल—संज्ञा पुं. [हिं. घालना + मेल] (१) मिलावट, गड़बड़। (२) मेलजोल, घनिष्टता।

घालि—क्रि. स. [हिं. घालना] (१) रखकर, डालकर। उ.—टूक टूक ह्वै सुभट मनोरथ आने झोली घालि—३८२६। (२) (चोंच आदि) मारकर। उ.—रसमय जानि सुआ सेमर कौं चोंच घालि पछितायौ—१-५८। (३) किसी वस्तु के भीतर या ऊपर रखकर। उ.—कहा मन मैं घालि बैठी भेद मैं नहिं लख सकी—२२५६।

घालिका—संज्ञा स्त्री. [हिं. घालक] नाश करनेवाली।

घालिनी—संज्ञा स्त्री. [हिं. घालना] नाश करनेवाली।

घाली—क्रि. स. [हिं. घालना] चलायी, फेंकी।

क्रि. स. [हिं. घायल] घायल किया।

घाले—क्रि. स. [हिं. घालना] दूर किये, मिटाये, नष्ट किये। उ.—तुम पूरे सब भाँति मातु पितु संकट घाले—११३७।

घालौं—क्रि. स. [हिं. घालना] नष्ट कर दूँ, मिटा दूँ। उ.—इनकी बुद्धि इनकौं अब घालौं—१०४२।

घाल्यौ—क्रि. स. [हिं. घालना] (१) बिगाड़ा, बुरा चैता, अनिष्ट किया। उ.—मैं नहिं काहू को कछु घाल्यौ पुन्यनि करवर नाख्यौ—२३७३। (२) किसी चीज के भीतर या ऊपर डाला। उ.—बिन ही भीत चित्र किन कीनो किन नभ हठ करि घाल्यौ झोरी—३०२८।

घाव—संज्ञा पुं. [सं. घात, प्रा. घाअ] (१) क्षत, जख्म। उ.—परत निसासनि घाव तमकि धनु तरपत जिहिं जिहिं बार—२८२६। (२) चोट, आघात।

मुहा०—घाव खाना—घायल होना। घाव (जले) पर नमक (नोन) छिड़कना—दुख के समय और जी दुखाना। घाव देना—जी दुखाना। घाव पूजना (भरना, पूरना)—(१) घाव ठीक होना। (२) शोक या दुख कम होना।

घावरिया—संज्ञा पुं. [हिं. घाव + वरिया (वाला)] घाव का इलाज करनेवाला, जर्राह।

घास—संज्ञा स्त्री. [सं.] तृण, चारा। उ.—हरी घास हू सो नहिं चरै—५-३।

मुहा०—घास काटना (खोदना)— (१) तुच्छ या हीन काम करना (२) व्यर्थ का प्रयत्न करना। (३) लापरवाही से काम करना। काटिबो घास—निरर्थक प्रयत्न करना। उ.—तुम सौं प्रेम-कथा को कहिबो, मनौ काटिबो घास—३३३६। घास खाना—मूर्खता का काम करना। घास छीलना—तुच्छ या निरर्थक काम करना।

घासी—संज्ञा स्त्री. [हिं. घास] चारा, तृण।

घाह—संज्ञा पुं. [सं. गभस्ति = उँगली] उँगलियों के बीच की संधि, गावा, घाई।

घाहु—संज्ञा पुं. [हिं. घाव] जख्म, आघात, चोट। उ.—देखहु जाइ रूप कुबजा को सहि न सकत यहु घाहु—३२२४।

घिअ—संज्ञा पुं. [हिं. घी] घी, घृत।

घिऑंड़ा—संज्ञा पुं. [हिं. घी + हंडा] घी का पात्र।

घिआ—संज्ञा पुं. [हिं. घिया] एक बेल।

घिउ—संज्ञा पुं. [हिं. घी] घी, घृत।

घिग्घी—संज्ञा स्त्री. [अनु.] (१) रोते-रोते पड़नेवाली सुबकी या हिचकी। (२) डर के मारे मुँह से शब्द न निकलना।

घिघियाना—क्रि. अ. [हिं. घिग्घी] (१) करुण स्वर से विनती करना, गिड़गिड़ाना। (२) चिल्लाना।

घिचपिच—संज्ञा स्त्री. [सं. घृष्ट पिष्ट] (१) स्थान की कमी (२) कम जगह में बहुत सी चीजें होना।

घिन—संज्ञा स्त्री. [सं. घृणा] (१) नफरत, घृणा, अरुचि। (२) जी मिचलाना।

घिनाना—क्रि. अ. [हिं. घिन] घृणा करना।

घिनाने—क्रि. अ. [हिं. घिनाना] घृणा करने लगे।

घिनावना—वि. [हिं. घिन + आवना (प्रत्य.)] जिसे देखकर घिन लगे, बुरा, गंदा, घिनौना।

घिनैहैं—क्रि. अ. [हिं. घिनाना] घृणा करेंगे, अरुचि दिखायँगे। उ.—जिन लोगनि सौं नेह करत है, तेई देखि घिनैहैं—१-८६।

घिनौना—वि. [हिं. घिनाना] घिनावना।

घिनौरी—संज्ञा स्त्री. [हिं. घिन] एक कीड़ा।

घिन्नी—संज्ञा स्त्री. [हिं. घिरनी] चरखी। चक्कर।

घिय, घियतौ—संज्ञा पुं. [सं. घृत, हिं. घी] घी। उ.—ठाढ़ो बाँध्यौ बलबीर, नैननि गिरत नीर, हरिजू तैं प्यारौ तोकौं, दूध, दही घियतौ—३७३।

घिया—संज्ञा पुं. [हिं. घी] (१) एक बेल। (२) तुरई।

घियाकश—संज्ञा पुं. [हिं. घिया + फ़ा. कश] कद्दूकश।

घियातरोई, घियातोरई—संज्ञा स्त्री [हिं. घिया + तोरी] तुरई की लता या फली।

घिरत—संज्ञा पुं. [सं. घृत] घी, घृत। उ.—घेवर अति घिरत चभोरे—१०-१८३।

घिरति—क्रि. स. [सं. ग्रहण, हिं. घिरना] घिरती हैं, रुकती हैं। उ.—घेरे घिरति न तुम बिनु माधौ, मिलति न बेगि दई—३१२।

घिरना—क्रि. अ. [सं. ग्रहण] (१) घेरा या छेंका जाना। (२) चारो ओर छा जाना।

घिरनी—संज्ञा स्त्री. [सं. घूर्णन] (१) चरखी, (२) चक्कर।

घिराई—संज्ञा स्त्री. [हिं. घेरना] घेरने की क्रिया।

घिराना—क्रि. स. [अनु. घर्र] रगड़ना, घिसना।

क्रि. स. [हिं. घेरना] चारों ओर से रुकवाना।

घिराव—संज्ञा पुं. [हिं. घेरना] (१) घेरना। (२) घेरा।

घिरावत—क्रि. स. [हिं. घिराना] चारो तरह से रुकवाते हैं, घिरवाते हैं। उ.—मैया हौं न चरैहौं गाइ। सिगरे ग्वाल घिरावत मोसौं, मेरे पाइ पिराइँ—५१०।

घिरावना—क्रि. स. [हिं. घिराना] इकट्ठा कराना।

घिरित—संज्ञा पुं. [सं. घृत] घी।

घिरिनपरेवा—संज्ञा पुं. [हिं. घिरनी + परेवा] (१) गिरह-बाज कबूतर। (२) एक पक्षी जो पानी के ऊपर मँडराता रहता है।

घिरिया—संज्ञा स्त्री. [हिं. घिरना] शिकारियों का घेरा।

घिरौरा—संज्ञा पुं. [देश.] घूस या चूहे का बिल।

घिर्राना—क्रि. स. [अनु. घिरघिर] (१) घसीटना। (२) घिघियाना, गिड़गिड़ाना।

घिर्री—संज्ञा स्त्री. [देश.] (१) एक घास। (२) चरखी, गराड़ी। (३) घेरा, चक्कर।

घिव—संज्ञा पुं. [हिं. घी] घी, घृत।

घिसकना—क्रि. अ. [हिं. खसकना] सरकना, हटना।
घिसघिस—संज्ञा स्त्री. [हिं. घिसना] (१) सुस्ती, शिथिलता। (२) अनिश्चय, गड़बड़ी।
घिसटना—क्रि. अ. [हिं. घसिटना] रगड़ा जाना।
घिसटाना—क्रि. स. [हिं. घसीटना] रगड़ते हुए खीचना।
घिसटायौ—क्रि. स. [हिं. घिसटाना] रगड़ते हुए घसीटा। उ.—केस गहैं पुहुमी घिसिटायौ—२६२१।
घिसन—संज्ञा स्त्री. [हिं. घिसना] (१) रगड़। (२) काम होने से मशीन आदि की क्षीणता।
घिसना—क्रि. स. [सं. घर्षण, प्रा. घसण] (१) रगड़ना। (२) पीसना, मलना।
क्रि. अ.—रगड़ खाकर कम होना, छीजना।
घिसपिस—संज्ञा स्त्री. [अनु.] (१) घिसघिस। (२) मेलजोल।
घिसवाना—क्रि. स. [हिं. घिसाना] रगड़ाना।
घिसाई—संज्ञा स्त्री. [हिं. घिसना] घिसने की क्रिया, भाव या मजदूरी।
घिसाना—क्रि. स. [हिं. घिसना का प्रे.] रगड़ना।
घिसावन—संज्ञा स्त्री. [हिं. घिसना] रगड़, घिसन।
घिसि—क्रि. स. [हिं. घिसना] घिसकर, पीसकर। उ.—कुब्जा घिसि चंदन लै आई—सारा. ५०२।
घिसिआना,घिसियाना—क्रि. स.[हिं. घिसना]घसीटना।
घिसियाइ—क्रि. स. [हिं. घिसिआना] घसीटेगा, रगड़ेगा। उ.—तुमहिं कहत कोउ करै सहाइ। वह देवता कंस मारैगौ, केस धरे धरनी घिसिआइ—५३१।
घिसिरपिसिर—संज्ञा स्त्री. [अनु.] घिसघिस।
घिस्टपिस्ट—संज्ञा पुं. [हिं. घिसघिस] (१) गहरा मेलजोल, घनिष्टता। (२) अनुचित संबंध।
घिस्सम्घिस्सा—संज्ञा पुं. [हिं. घिसना] (१) खूब भीड़-भाड़। (२) हाथ से डोरी लड़ाने का खेल।
घिस्सा—संज्ञा पुं. [हिं. घिसना] (१) रगड़ा। (२) धक्का, ठोकर। (३) हाथ से डोरी लड़ाने का खेल।
घींच—संज्ञा स्त्री. [सं. ग्रीव अथवा हिं. घींचना] गरदन, ग्रीव। उ.—(क) घींच मरोरि, दियौ कागासुर मेरें ढिग फटकारी—१०-६०। (ख) नाथत ब्याल बिलँब न कीन्हौ। पग सौं चाँपि घींच बल तोर्‌यौ, नाक फोरि गहि लीन्हौ—५५७।
घींचना—क्रि. स. [सं. कर्षण, हिं. खींचना] खींचना।
घी—संज्ञा पुं. [सं. घृत, प्रा. घीअ] दूध का सार, घृत।
मुहा०—घी का कुप्पा—बड़ा धनी। घी का कुप्पा लुढ़ना—(१) धनी आदमी का मरना। (२) गहरी हानि होना। घी के कुप्पे से जा लगना—(१) धनी से भेंट और लाभ होना। (२) मोटा होने लगना। घी के दिये जलना—(१) कामना पूरी होना। (२) उत्सव होना। (३) धन धान्य से पूर्ण होना। घी के दिये जलाना—(१) इच्छा-पूर्ति पर उत्सव मनाना। (२) धन-धान्य से पूर्ण होना। घी के दिये भरना—(१) उत्सव मनाना। (२) सुख-संपति भोगना। घी-खिचड़ी—खूब मिला-जुला। घी खिचड़ी होना—बहुत गहरी मित्रता होना। पाँचों उँगलियाँ घी में होना—खूब लाभ का सुख होना।
घीउ, घीऊ—संज्ञा पुं. [हिं. घी] घी, घृत।
घीकुवाँर—संज्ञा पुं. [सं. घृतकुमारी] ग्वार पाठा।
घीया—संज्ञा स्त्री. [हिं. घी] (१) तुरई। (२) कद्दू।
घीव—संज्ञा पुं. [हिं. घी] घी। उ.—रोटी, बाटी, पोरी झोरी। इक कोरी, इक घीव चभोरी—३९६।
घीसा—संज्ञा पुं. [हिं. घिसना] घिसने या रगड़ने की क्रिया, माँजा, रगड़।
घुँगची, घुँघची—संज्ञा स्त्री. [सं. गुंजा, प्रा. गुंचा] (१) गुंजा की लता। (२) इस लता का लाल बीज जिस पर एक छोटा काला छींटा रहता है।
घुँघनी—संज्ञा स्त्री. [अनु.] घी-तेल में तला हुआ अन्न।
मुहा०—घुँघनी मुँह में रखकर बैठना—मौन रहना।
घुँघरारे, घुँघराला, घुँघराले—वि. [हिं. घुँघरना+वाले] छल्ले या लच्छेदार (बाल)। उ.—मृगमद मलय अलक घुँघरारे। उन मोहन मन हरे हमारे।
घुँघरू—संज्ञा पुं. [अनु. घुन घुन + सं. रव या रू] (१) धातु की पोली गुरिया जिसमें कंकड़ आदि भरकर बजाते हैं।
मुहा०—घुँघरू सा लदना—शरीर में बहुत अधिक चेचक के दाने, छाले या फुंसियाँ होना।
(२) छोटी छोटी गुरियों का बना पैर का गहना जो बच्चों को पहनाया जाता है या नाचनेवाले पहनते

हैं। उ.—प्रेम सहित पग बाँधि घूँघरू सक्यौ न अंग नचाइ—१५५।

मुहा०—घुँघरू बाँधना—(१) नाचना सिखाने के लिए चेला बनाना। (२) नाचने को तैयार होना।

(३) मरते समय कफ की अधिकता के कारण निकलनेवाला घुरघुर शब्द।

मुहा०—घुँघरू बोलना—मरते समय कफ के कारण घुरघुर शब्द निकलना, घर्रा या घटका लगना।

(४) बूट का कोष जिसमें चना दाना रहता है। (५) सनई का सूखा फल जिसके बीज बजते हैं।

घुँघरूदार—वि. [हिं. घुँघरू+फ़ा. दार] जिसमें घुँघरू लगे या बँधे हों, घुँघुरुओं से युक्त।

घुँघरारा, घुघरारे—वि. [हिं.घुँघराला] छल्लेदार।

घुंडी—संज्ञा स्त्री. [सं. ग्रंथि] (१) कपड़े की सिली हुई छोटी गोली जो बटन की जगह लगायी जाती है।

मुहा०—जी की घुंडी खोलना—मन से बैर द्वेष निकालना।

(२) कड़े, बाजू, जोशन आदि गहनों की गाँठ। (३) कटने पर घास की जड़ से फूटनेवाला नया अंकुर, दोहला।

घुंडीदार—वि. [हिं. घुंडी+फ़ा. दार] घुंडीवाला।

घुग्घू, घुघुआ—संज्ञा पुं. [सं. घूक, हिं. घुग्घू] उल्लू।

घुघुआना, घुघुवाना—क्रि. अ. [हिं. घुघुआ] (१) उल्लू का, या उल्लू की तरह, बोलना। (२) बिल्ली का, या बिल्ली की तरह, गुर्राना।

घुघरी, घुघुरी—संज्ञा पुं. [हिं. घुँघरू] घुँघरू।

संज्ञा स्त्री. [हिं. घुघुनी] घी-तेल में तला अन्न।

घुटकना—क्रि. स. [हिं. घूँट+करना] (१) पीना। (२) निगलना।

घुटकी—संज्ञा स्त्री. [हिं. घुटकना] घुटकने की नली।

घुटना—संज्ञा पुं. [सं. घुंटक] जाँघ और टाँग के बीच की गाँठ, संधि या जोड़।

मुहा.—घुटना टेकना—(१) घुटनों के बल बैठना। (२) नम्र होना, प्रार्थना करना। घुटनों (के बल) चलना—बच्चों का बैयाँ बैयाँ चलना। घुटनों में सिर देना—(१) सिर नीचा करना, चिंतित या उदास होना। (२) मुँह छिपाना, लज्जित होना। घुटनों से लगकर बैठना—हर समय पास रहना।

क्रि. अ. [हिं. घूँटना या घोटना] (१) साँस का रुकना, फँसना या खुल कर न लिया जाना।

मुहा०—घुटघुट कर मरना—(१) बड़ी कठिनता से प्राण निकलना। (२) बहुत कष्ट सहकर जीवन बिताना। (३) कष्ट सहने को इस प्रकार विवश या अधीन होना कि उसका विरोध करना तो दूर, चर्चा तक न कर सकना।

(२) फँसना, उलझ कर खड़ा हो जाना।

क्रि. अ. [हिं. घोटना] (१) पीसा जाना।

मुहा०—घुटा हुआ— बहुत चालाक, काँइयाँ, छँटा हुआ।

(२) रगड़ से चिकना-चमकीला होना। (३) मेल जोल या घनिष्टता होना। (४) घुसघुस कर बातें होना। (५) (कार्य या अभ्यास) बार बार होना।

क्रि. स. [अनु.] जोर से पकड़ना या कसना।

घुटन्ना—संज्ञा पुं. [हिं. घुटना] पायजामा।

घुटरुनि, घुटरुवनि—क्रि. वि. [हिं. घुटना] घुटनों के बल। उ.—(क) घुटरुनि चलत अजिर महँ बिहरत मुख मंडित नवनीत—१०-६७। (ख) घुटरुन चलत कनक आँगन में—सारा. १६६।

घुटरूँ—संज्ञा पुं. [हिं. घुटना] पैर के बीच की गाँठ या जोड़, घुटना।

घुटवाना—क्रि. स. [हिं. घोटना का प्रे.] (१) घोटने या रगड़ने का काम कराना। (२) बाल मुँड़ाना।

घुटाई—संज्ञा स्त्री. [हिं.घुटना] घोटने, रगड़ने, चिकना या चमकीला बनाने की क्रिया या मजदूरी।

घुटाना—क्रि. स. [हिं. घोटना का प्रे.] (१) घोटने या रगड़ने का काम कराना। (२) बाल मुड़ाना।

घुटुरुनि, घुटुरुअनि, घुटुरुवनि-क्रि. वि. [सं. घुंटक, हिं. घुटना] घुटनों के बल। उ.—(क) कबहिं घुटुरुवनि, चलहिंगे, कहि, विधिहिं मनावै—१०-७४। (ख) कब मेरौ लाल घुटुरुवनि रेंगै, कब धरनी पग द्वैक धरै—१०-७६। (ग) घुटुरुनि चलत रेनु तन मंडित सूरदास बलि जाई—१०-१०८।

घुटुरू, घुटुवा—संज्ञा पुं. [हिं. घुटना] घुटना।

घुट्टा—संज्ञा पुं. [हिं. घोटा] घोटने की वस्तु।

घुट्टी—संज्ञा स्त्री. [हिं. घूँट] बच्चों की एक दवा।

मुहा०—घुट्टी में पड़ना स्वभाव का अंग होना।

घुड़कना—क्रि. स. [सं. घुर] डाँटना, डपटना।

घुड़की—संज्ञा स्त्री. [हिं. घुड़कना] (१) डाँट, डपट, फटकार। (२) घुड़कने की क्रिया।

या—बंदर घुड़की—झूठमूठ डराना, धमकाना।

घुड़चढ़ा—संज्ञा पुं. [हिं. घोड़ा + चढ़ना] घुड़सवार।

घुड़चढ़ी—संज्ञा स्त्री. [हिं. घोड़ा+चढ़ना] विवाह की एक रीति जिसमें दुलहिन के घर जाने के लिए दूल्हा घोड़े पर चढ़ता है।

घुड़दौड़, घुड़दौर—संज्ञा स्त्री. [हिं. घोड़ा + दौड़] (१) घोड़ों की दौड़। (२) जुआ जो घोड़ों के दौड़ने पर खेला जाता है।

क्रि. वि.—बड़ी तेजी या शीघ्रता से।

घुड़नाल—संज्ञा स्त्री. [हिं. घोड़ा + नाल] एक तोप।

घुड़बहल—संज्ञा स्त्री. [हिं. घोड़ा + बहल] वह रथ जिसमें घोड़े जोते जाते हों।

घुड़मुहाँ—वि. [हिं. घोड़ा+मुँह] लंबे मुँहवाला।

घड़ला—संज्ञा पुं. [हिं. घोड़ा + ला (प्रत्य.)] (१) मिट्टी धातु आदि का घोड़ा। (२) छोटा घोड़ा।

घुड़सार, घुड़साल—संज्ञा स्त्री. [हिं. घोड़ा + शाला] घोड़े बाँधने का स्थान, अस्तबल, पैंड़ा।

घुड़िया—संज्ञा स्त्री. [हिं. घोड़ी (अल्प.)] (१) छोटी घोड़ी। (२) दीवाल में लगी खूँटी।

घुण—संज्ञा पुं. [सं.] एक बहुत छोटा कीड़ा।

घुणाक्षरन्याय—संज्ञा पुं. [सं.] ऐसा कार्य या रचना जो अनजान या आकस्मिक रूप से हो जाय।

घुन—संज्ञा पुं. [सं. घुण] एक छोटा कीड़ा।

मुहा०—घुन लगना—(१) इस कीड़े का लकड़ी या अनाज को खाना। (२) धीरे धीरे किसी चीज का छीजना या नष्ट होना।

घुनघुना—संज्ञा पुं. [अनु.] एक खिलौना, झुनझुना।

घुनना—क्रि. स. [हिं. घुन] (१) घुन के द्वारा लकड़ी आदि का खाया जाना। (२) किसी चीज का भीतर ही भीतर छीजना या नष्ट होना।

घुना—वि. [हिं. घुनना] घुना हुआ, छीजा हुआ।

क्रि. स.—घुन गया, नष्ट हो गया।

घुनि—क्रि. स. [हिं. घुनना] घुन लग गया, घुन गया।
उ.—स्याम के बचन सुनि, मनहिं मन रह्यो गुनि, काठ ज्यौं गयौ घुनि, तनु भुलानौ—५६०।

घुनो—वि. [हिं. घुना] घुना हुआ, छीजा हुआ। उ.—घुनो बाँस गत बुन्यौ खटोला काहू को पलँग कनक पाटी को—१० उ.-७१।

घुन्ना—वि. पुं. [अनु. घुनघुनाना] क्रोध, द्वेष आदि को मन ही मन रखने या पालनेवाला, चुप्पा।

घुन्नी—वि. स्त्री. [हिं. घुन्ना] मन का भाव छिपाने में कुशल, चुप्पी, मौन।

घुप—वि. [सं. कूप या अनु.] गहरा या घना (अँधेरा)।

घुमँड़ना—क्रि. अ. [हिं. घुमड़ना] इकट्ठा होना, छाना।

घुमक्कड़—वि. [हिं. घूमना + अक्कड़ (प्रत्य)] (१) बहुत घूमने-फिरनेवाला। (२) आवारा।

घुमची—संज्ञा स्त्री. [हिं. घुँघची] गुंजा, गुंजिका।

घुमटा—संज्ञा पुं. [हिं. घूमना + टा (प्रत्य.)] चक्कर।

घुमड़—संज्ञा स्त्री [हिं. घुमड़ना] बादलों का उमड़ना।

घुमड़ना—क्रि. अ. [हिं. घूर्न + अटना] (१) बादलों का छाना या उमड़ना। (२) इकट्ठा होना, छाना।

घुमड़ाना—क्रि. अ. [हिं. घुमड़ना] छाना, उमड़ना।

वि.—छाया हुआ, उमड़ते हुए।

घुमड़ा—संज्ञा स्त्री [हिं. घूमना] (१) घूमने या चक्कर खाने की क्रिया। (२) सिर का चक्कर। (३) चक्कर आने का रोग। (४) परिक्रमा।

घुमना—वि. [हिं. घूमना] घूमनेवाला, घुमक्कड़।

घुमनी—वि. स्त्री. [हिं. घुमना] घूमने-फिरनेवाली।
संज्ञा स्त्री. [हिं. घूमना] (१) चक्कर। (२) चक्कर आने का रोग। (३) परिक्रमा।

घुमरना—क्रि. अ. [अनु. घमघम] घोर शब्द करना।

क्रि. अ. [हिं. घुमड़ना] बादलों का छाना।

क्रि. अ. [हिं. घूमना] घूमना-फिरना।

घुमरात—क्रि. अ. [हिं. घुमरना] घुमरता हुआ। उ. —गरजि घुमरात मद मार गंडनि स्रवत पवन ते बेग तेहि समय चीन्हो—२५६१।

घुमराना—क्रि. अ. [हिं. घुमरना] शब्द करना, गूँजना।

घुमरि—क्रि. अ. [हिं. घुमरना] घोर शब्द करके, ऊँचे स्वर से बजकर, गूँजकर। उ.—सूर धन्य जदुबंस उजागर धन्य धन्य धुनि घुमरि रह्यौ—२६१६।

घुमरी—संज्ञा स्त्री [हिं. घुमड़ा] (१) चक्कर। (२) (पानी का) भँवर। (३) चक्कर आने की बीमारी।

घुमर्‌यौ—क्रि. अ. [हिं. घुमरना] घुमरने लगा। उ.—पटकि चरन नृप स्रवनन घुमर्‌यौ—२६४३।

घुमाँ—संज्ञा पुं. [हिं. घूमना] जमीन की एक नाप जो दो बीघों के बराबर होती है।

घुमाना—क्रि. स. [हिं. घूमना] (१) चक्कर देना, चारो ओर फिराना। (२) टहलाना, सैर कराना। (३) किसी विषय या काम में लगाना (४) ऐंठना, मरोड़ना।

घुमाव—संज्ञा पुं. [हिं. घुमाना] (१) घुमाने का भाव। (२) फेर, चक्कर।

मुहा०—घुमाव-फिराव की बात—छल कपट, हेर-फेर या दाँव-पेंच की बात या चाल।

घुमावदार—वि. [हिं. घुमाव+फ़ा. दार] जिसमें घुमाव-फिराव या चक्कर हों, चक्करदार।

घुम्मरना—क्रि. अ. [हिं. घुमरना] (१) शब्द करना, बजना। (२) उमड़ना, छाना। (३) घूमना।

घुरकना—क्रि. अ. [हिं. घुड़कना] घुड़की देना।

घुरकी—संज्ञा स्त्री. [हिं. घुड़कन, घुड़की] घुड़की, डाँट-डपट। उ.—लोचन भरि भरि दोऊ माता, कनछेदन देखत जिय मुरकी। रोवत देखि जननि अकुलानी, दियौ तुरत नौवा कौं घुरकी—१०-१८०।

घुरघुर—संज्ञा पुं. [अनु.] (१) कफ रुकने के कारण होनेवाला शब्द। (२) (बिल्ली आदि के) गुर्राने का शब्द।

घुरघुराना—क्रि. अ. [अनु. घुरघुर] घुरघुर करना।

घुरघुराहट—संज्ञा स्त्री. [हिं. घुरघुराना] घुरघुर शब्द निकालने का भाव, घुर्राहट।

घुरत—क्रि. अ. [सं. घुर] बजता है, शब्द करता है। उ.—अवधपुर आए दसरथ राई।·· ·······। घुरत निसान, मृदंग-संख धुनि, भेरि झाँझ सहनाई—९-२६।

घुरना—क्रि. अ. [हिं. घुलना] हिलमिल जाना।

क्रि. अ. [सं. घुर] शब्द करना, गूँजना।

घुरबिनिया—संज्ञा स्त्री. [हिं. घूरा + बीनना] (१) घूरे के दाने बीनना। (२) टूटी-फूटी चीजें बीनना।

वि.—घूरे से दाने बीननेवाला।

घुरमना—क्रि. अ. [हिं. घूमना] फिरना, चकराना।

घुरमित—वि. [सं. घूर्णित] घूमता हुआ।

घुरहुरी—संज्ञा स्त्री. [हिं. घुर + हर (प्रत्य.)] पगडंडी।

घुरि—क्रि. अ. [हिं. घुलना] घुलकर, हिलमिलकर। उ.—फेनी घुरि मिसि मिली दूध संग—२३२१।

क्रि. अ. [हिं. घुरना] शब्द करके, बजकर।

घुरुहुरी—संज्ञा स्त्री. [हिं. घुरहुरी] तंग रास्ता, पगडंडी।

घुरे—संज्ञा पुं. [हिं. घूरा] कूड़े-करकट का ढेर, घूरा। उ.—फलन माँझ ज्यों करुई तोमरि रहत घुरे पर डारी—२६३५।

क्रि. अ. [हिं. घुरना] बजने या शब्द करने लगे।

घुर्मित—क्रि. वि. [सं. घूर्णित] घूमता फिरता हुआ, चक्कर खाता हुआ।

घुर्राना—क्रि. अ. [हिं. गुर्राना] घुरघुर शब्द करना।

घुरुवा—संज्ञा पुं. [देश.] जानवरों का एक रोग।

घुलना—क्रि. अ. [सं. घूर्णन, प्रा. घुलन] (१) किसी द्रव पदार्थ का खूब हिल-मिल जाना।

मुहा.—घुलघुल कर बातें करना—बड़ी लगन या प्रीति से बातें करना। घुलमिलकर—बड़ी लगन या प्रीति से। नजर (आँखें) घुलना—प्रेमपूर्वक देखना। (२) जल, दूध आदि के संयोग से गलना। (३) नरम या पिलपिला होना। (४) रोग आदि से शरीर क्षीण या दुर्बल होना।

मुहा०—घुला हुआ—जिसकी शक्तियाँ क्षीण हो गयी हैं, बुड्ढा। घुलघुल कर काँटा होना—इतना दुर्बल होना कि हड्डियाँ दिखायी दें।

(५) (समय) बीतना या व्यतीत होना।

घुलाना—क्रि. स. [हिं. घुलना] (१) गलाना। (२) शरीर क्षीण करना। (३) धीरे धीरे रस चूसना। (४) पकाकर या दबाकर पिलपिला करना। (५) समय बिताना। (६) घुलने की क्रिया।

घुलावट—संज्ञा स्त्री. [हिं. घुलना] घुलने की क्रिया।

घुसना—क्रि. अ. [सं. कुश = वेला अथवा घर्षण] (१) अंदर जाना, प्रवेश करना। (२) चुभना, गड़ना। (३) किसी काम में दखल देना। (४) किसी विषय में ध्यान लगाना। (५) दूर होना, जाता रहना।

घुसपैठ—संज्ञा स्त्री. [हिं. घुसना + पैठना] पहुँच।
घुसाना—क्रि. स. [हिं. घुसना] (१) भीतर करना, प्रवेश कराना (२) चुभाना, धँसाना।
घुसेड़ना—क्रि. स. [हिं. घुसना] घुसाना, धँसाना।
घूँगची—संज्ञा स्त्री. [हिं. घुँघची] गुंजा।
घूँघट—संज्ञा पुं. [सं. गंठ] साड़ी जैसे वस्त्र का वह भाग जिससे कुलवधू का मुँह ढँका रहता है। उ.—(क) घूँघट पट काट टूटे छुटे दृग तारो—६५०। (ख) घूँघट ओट महल म राखति पलक कपाट दिये—पृ. ३२६।
मुहा०—घूँघट उठाना (उलटना)—(१) घूँघट हटाकर मुँह खोलना। (२) परदा दूर करना। (३) नयी वधू का मुँह खोलना। घूँघट करना-लाज शर्म करना। घूँघट काढ़ना (निकालना, मारना)—घूँघट डाल कर मुँह ढकना। दै घूँघट पट—घूँघट काढ़कर, मुँह ढककर। उ.—दै घूँघट पट ओट नील, हँसि, कुँवरि मुदित मुख हेरे—६३२।
(२) परदे की दीवार, ओट।
घूँट—संज्ञा पुं. [अनु. घुटघुट] पानी आदि द्रवों का उतना अंश जितना एक बार में घूँटा जाय।
घूँटना—क्रि. स. [हिं. घूँट] घूँट भरना, पीना।
घूँटा—संज्ञा पुं. [सं. घुंटक, हिं. घुटना] घुटना।
घूँटी—संज्ञा स्त्री. [हिं. घूँट] बच्चों की एक औषध।
घूँघर—संज्ञा पुं. [हिं. घुमरना] बालों का छल्ला।
घूँघरवारी—वि. स्त्री. [हिं. घूँघर] छल्लेदार, छबीले। उ.—घुघुघु लट सिर घूँघरवारी, लटकन लटकि रह्यो माथे पर—१०-६३।
घूँघरवारे, घूँघरवाले—वि. [हिं. घूँघर] छल्लेदार। (क) भभुआरे सिर केस हैं बर घूँघरवारे—१०-१३४। (ख) अरुझि रहे मुकताहल निरवारत सोहत घूँघरवारे बाल—पृ. ३१५।
घूँघरा—संज्ञा पुं. [देश.] एक तरह का बाजा।
घूँघरी—संज्ञा स्त्री. [अनु. घुन+घुर] नूपुर, घुँघरू।
घूँघरू—संज्ञा पुं. [हिं. घुँघरू] नुपूर, नेउर।
घूँटैं—क्रि. स. [हिं. घूँटना] पीता है। उ.—लाख जतन करि दखौ, तैसे बार बार बिष घूँटै—१-६३।
क्रि. स. सवि. [हिं. घुटना] साँस रोकने से, साँस दबाने से। उ.—कहा पुरान जु पढ़ैं अठारह, ऊर्ध्व धूम के घूँटैं—२-१६।
घूँसा—संज्ञा पु. [हिं. घिस्सा] (१) बँधी हुई मुट्ठी, मुक्का, धमाका। (२) मुक्के का प्रहार।
घूआ—संज्ञा पुं. [देश.] काँस आदि के फूल।
घूघ—संज्ञा स्त्री. [हिं. घोघ या फ़ा. ख़ोद] सिपाहियों की लोहे-पीतल की टोपी।
घूटनो क्रि. स. [हिं. घुटना] साँस रोकना।
घूम—संज्ञा स्त्री. [हिं. घूमना] (१) घुमाव। (२) मोड़।
घूमना—क्रि. स. [सं. घूर्णन] (१) घूमना, चक्कर खाना। (२) टहलना, सैर करना। (३) यात्रा करना। (४) घेरे में मँडराना, कावा काटना। (५) मुड़ जाना। (६) लौटना, वापस आना। (७) मतवाला होना।
घूमनी—संज्ञा स्त्री. [हिं. घूमना] सिर का चक्कर, घुमटा।
घूमि—क्रि. अ. [हिं. घूमना] चक्कर खाकर। उ.—घूमि रहीं जित तित दधि-मथनी, सुनत मेघ-धुनि लाजै री—१०-१३६।
घूमै—क्रि. अ. [हिं. घूमना] चारो ओर फिरती है, चक्कर खाती है। उ.—(एरी) आनँद सौं दधि मथति जसोदा, घमकि मथनियाँ घूमै—१०-१४०।
घूर—संज्ञा पुं. [सं. कूट, हिं. कूरा, कूड़ा, घूरा] (१) कूड़ा फेकने का स्थान। उ.—(क) पग तर जरत न जानै मूरख, घर तजि घूर बुझावै—२-१३। (ख) अपनो घर परिहरै कहौ को घूर बतावै……। (ग) ऊनौ घर लागै अब घूर कहौ मन कहा धावै—३४४३। (२) कूड़े का ढेर। (३) गंदा स्थान।
घूरना—क्रि. अ. [सं. घूर्णन] (१) बुरे भाव या बुरी नियत से ताकना। (२) क्रोध से देखना। (३) घूमना, टहलना।
घूरा—संज्ञा पुं. [हिं. घूर=कूड़ा] (१) कूड़े का ढेर। (२) वह स्थान जहाँ कूड़ा फेका जाय। (३) गंदा स्थान।
घूरावारी—संज्ञा स्त्री. [हिं. घूरना] घूरने की क्रिया।
घूस—संज्ञा स्त्री. [सं. गुहाशय] एक बड़ा चूहा।
संज्ञा स्त्री. [सं गुह्य + आशय] रिश्वत।
घृणा—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) घिन, नफरत। (२) बीभत्स रस का स्थायी भाव।

घृणित—वि. [सं.] (१) घृणा के योग्य। (२) जिसे देख या सुनकर मन में घृणा पैदा हो।

घृत—संज्ञा पुं. [सं.] घी।

घृतकुमारी—संज्ञा स्त्री. [सं.] घीकुवार।

घृतपूर—संज्ञा पुं. [सं.] घेवर नामक पकवान।

घृतसार—संज्ञा पुं. [सं.] सार-रूप घृत। उ.—है हरि नाम कौ आधार। ...... । सकल स्रुति-दधि मथत पायौ, इतोई घृत-सार—२-४।

घृताची—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) एक अप्सरा। (२) यज्ञ में घी डालने की करछुली, स्रुवा।

घेंट—संज्ञा पुं. [हिं. घाँटी] गला, गरदन।

घेघा—संज्ञा पुं. [देश.] गले की नली।

घेपना—क्रि. स. [हिं घोपना] (१) (किसी गाढ़ी चीज को) हाथ या उँगली से मिलाना। (२) खुरचना।

घेर—संज्ञा पुं. [हिं. घेरना] घेरा, परिधि।

संज्ञा पुं. [हिं. घैर] निंदामय चर्चा, बदनामी। उ.—घर घर इहै घेर (घैर) बृथा मोसों करै बैर यह सुनि स्रवननि हृदयँ सहि दहिये—१२७३।

घेरघार—संज्ञा पुं. [हिं. घेरना] (१) घेरने या छाने की क्रिया। (२) चारो ओर का फैलाव, विस्तार। (३) बार-बार प्रार्थना या सिफारिश लेकर जाना।

घेरत—क्रि. स. [हिं. घेरना] चारो ओर से रोकते हैं, इधर-उधर नहीं जाने देते। उ.—मैया री मोहिं दाऊ टेरत। मोकौं बन-फल तोरि देत हैं, आपुन गैयनि घेरत—४२४।

घेरन—संज्ञा स्त्री. [हिं. घेरना] घेरने, रोकने या छाने की क्रिया, युक्ति या रीति। उ.—(क) कहत न बनै काँध कामरि छबि बन गैयन की घेरन—३२७७। (ख) कोउ गए ग्वाल गाइ बन घेरन कोउ गए बछरु लिवाइ—५००।

घेरना—क्रि. स. [सं. ग्रहण] (१) चारो ओर छाना। (२) चारो ओर से रोकना या छेंकना। (३) (पशु) चराना। (४) किसी स्थान पर अधिकार जमाये रखना। (५) आक्रमण के लिए चारो ओर फैलना। (६) किसी के पास प्रार्थना या स्वार्थ से जाना।

घेरनो—संज्ञा स्त्री [हिं. घेरना] चारो ओर से घेरने या रोकने की क्रिया। उ.—गैयाँ गईं बगराइ सघन बृंदाबन बंसीबट जमुना तट घेरनो—२२८०।

घेरहिं—क्रि. स. [हिं. घेरना] आक्रमण करने या अधिकार जमाने के लिए चारो ओर से घेर लें। उ.—सब दल होहु हुसियार चलहु मठ घेरहिं जाई—१० उ.-८।

घेरा—संज्ञा पुं. [हिं. घेरना] (१) चारो ओर की सीमा या फैलाव, परिधि। (२) सीमा या परिधि का जोड़ या मान। (३) दीवार आदि जो किसी स्थान को घेरे हो। (४) घिरा हुआ स्थान, हाता। (५) सेना का आक्रमण।

संज्ञा पुं. [हिं. घैर] निंदामय चर्चा, बदनामी। उ.—(क) सकुचति हौं घर घर घेरा को नेक लाज नहिं तेरे—१०३६। (ख) घेरा यहै चलावत घर घर स्रवन सुनत जिय खुनसौं—१२२१। (ग) सुनि न जात घरघर को घेरा काहू मुख न समाऊँ—१२२२।

घेराई—संज्ञा स्त्री [हिं. घिराई] (१) घेरने की क्रिया या भाव। (२) पशु चराने की क्रिया या मजदूरी।

घेराव—संज्ञा पुं. [हिं. घिराव] (१) घेरने या घिरने की क्रिया या भाव। (२) घेरा, मंडल।

घेरि, घेरी—क्रि. स. [हिं. घेरना] (१) चारो ओर से उमड़ कर, छा कर। उ—(क) अति भयभीत निरखि भवसागर, घन ज्यौं घेरि रह्यौ घट घरहरि—१-३१२। (ख) माधव मेघ घेरि कितौं आए—६५८। (२) चारो ओर से रोक या छेंक कर। उ.—(क) गैयन घेरि सखा सब लाए। (ख) ग्वाल-बाल संग लिए घेरि रहे डगरौ—१०-३३६। (३) रोककर, पकड़ कर। उ.—तुम तें दूरि होत नहिं कतहूँ तुम राखौ मोहिं घेरी—११९३। (४) दुर्ग पर अधिकार करने के लिए आक्रमण करने या चारो ओर से छेंक कर। उ.—(क) लखन दल संग लै लंक घेरी—९-१३६। (ग) भीषम भवन रहत ज्यों लुब्धक असुर सैन्य मिलि घेरी—१० उ.-१२।

घेरे—क्रि. स. [हिं. घेरना] (१) घेरने से, रोकने से। उ.—घेरे घिरतिं न तुम बिनु माधौ, मिलतिं न बेगि दई—६१२ (२) चारो ओर छा जाते हैं। (३)

किसी स्वार्थ या उद्देश्य से सदा साथ रहते हैं। उ.—या संसार विषय विष-सागर, रहत सदा सब घेरे—१-८५।

संज्ञा पुं. सवि. [हिं. घेरा] मंडल में।

घेरै—क्रि. स. [हिं. घेरना] आक्रांत करता, छेंकता या ग्रसता है। उ.—दिन द्वै लेहु गोविंद गाई। मोह-माया-लोभ लागे, काल घेरै आइ—१-३१६।

घेरो, घेरौ—संज्ञा पुं. [हिं. घेरा] स्थान, विस्तार, फैलाव। उ.—कहा भयौ जौ संपति बाढ़ी, कियौ बहुत घर घेरौ—१-२३६।

क्रि. स. [हिं. घेरना] चारो ओर से रोको, छेंको। उ.—माधव सखा स्याम इन कहि-कहि अपने गाइ-ग्वाल सब घेरौ—२५३२।

संज्ञा पुं. [हिं. घैर] निंदामय चर्चा, बदनामी। उ.—कहाँ कान्ह कहाँ मैं सजनी ब्रज घर घर यह चलत है घेरो—१२७१।

घेर्‌यो—क्रि. स. भूत. [हिं. घेरना] चारो ओर से घेरा, ग्रसा, छेंका, आक्रांत किया। उ.—(क) ग्राह जब गजराज घेर्‌यौ, बल गयौ हारी। हारि कै जब टेरि दीन्ही, पहुँचे गिरधारी—१-१७६। (ख) सुरति के दस द्वार रूँधे, जरा घेर्‌यौ आइ। सूर हरि की भक्ति कीन्हैं, जन्म-पातक जाइ—१-३१६।

घेलौना—संज्ञा पुं. [हिं. घाल] घलुवा, घाता।

घेवर—संज्ञा पुं. [हिं. घी + पूर] एक प्रकार की मिठाई जो, मैदे, घी और चीनी से बनती है। उ.—घेवर अति घिरत-चभोरे—१०-१८३।

घैया—संज्ञा पुं. [देश.] (१) ताजे दूध के ऊपर के माखन को काछकर इकट्ठा करने की क्रिया। उ.—(क) कजरी धौरी, सेंदुरि, धूमरि मेरी गैया। दुहि ल्याऊँ मैं तुरत हीं, तू करि दै री घैया—६६६। (ख) दूध दोहनी लै री मैया। दाऊ टेरत सुनि मैं आऊँ तब लौं करि बिधि घैया—७२५। (२) गाय के थन से निकलती हुई दूध की धार जो मुँह लगाकर पी जाय। उ.—गिरि पर चढ़ि गिरवर-धर टेरे। अहो सुबल, श्रीदामा भैया, ल्यावहु गाइ खरिक कैं नेरे। आई छाक अबार भई है, नैंसुक घैया पिएउ सबेरे—४६३। (३) पेड़ काटने या उसमें से रस निकालने के उद्देश्य से किया गया आघात।

संज्ञा स्त्री. [हिं. घाई या घा] ओर, दिशा।

घैर, घैरु, घैरो, घैरौ—संज्ञा पुं. [देश.] (१) निंदामय चर्चा, बदनामी, अपयश। उ.—सूरदास-प्रभु बड़े गारुड़ी, ब्रज-घर-घर यह घैरु चलाइ—७६१। (२) चुगली, शिकायत, उलाहना।

घैला—संज्ञा पुं. [सं. घट] घड़ा, कलसा।

घैहल, घैहा—वि. [हिं. घाव] घायल, जख्मी।

घोंघा—संज्ञा पुं. [देश.] (१) शंख की तरह का पानी का एक कीड़ा। (२) गेहूँ के दाने का कोश।

वि.—(१) व्यर्थ, सारहीन। (२) मूर्ख, जड़।

घोंचा—संज्ञा पुं. [हिं. गुच्छा] गौद, गुच्छा।

घोंटना—क्रि. स. [हिं. घूँट, पू. हिं. घोंट] (१) घूँट घूँट करके या धीरे धीरे पीना। (२) हजम करना।

क्रि. स. [सं. घुट] (गला) दबाना।

घोंपना—क्रि. स. [अनु. घप] चुभाना। गाँठना।

घोंसला, घोंसुआ—संज्ञा पुं. [सं. कुशालय या हिं. घुसना] चिड़ियों का घर, नीड़, खोता।

घोखना—क्रि. स. [सं. घुप] रटना, घोटना।

घोट, घोटक—संज्ञा पुं. [सं. घोटक] घोड़ा, अश्व।

घोटना—क्रि. स. [सं. घुट] (१) एक वस्तु को चमकीली बनाने के लिए दूसरी से रगड़ना। (२) पीसने के लिए रगड़ना। (३) मिलाना। (४) बार बार अभ्यास करना, रटना। (५) डाँटना, फटकारना। (६) गला इस तरह दबाना कि दम घुट जाय।

संज्ञा पुं.—घोटने की वस्तु या औजार।

घोटा—संज्ञा पुं. [हिं. घोटना] (१) वस्तु जिससे घोटने का काम किया जाय। (२) चमकीला कपड़ा। (३) एक औजार। (४) रगड़ा, घुटाई। (५) हजामत।

घोटाई—संज्ञा स्त्री. [हिं. घोटना + आई (प्रत्य.)] घोटने का भाव, क्रिया या मजदूरी।

घोटाला—संज्ञा पुं. [देश.] गड़बड़, घपला।

घोटू—संज्ञा पुं. [हिं. घोटना] (१) घोटनेवाला। (२) रट्टू। (३) घोटने का औजार या वस्तु।

संज्ञा पुं. [हिं. घुटना] पैर की गाँठ, घुटना।

घोड़, घोड़ा—संज्ञा पुं. [सं. घोटक, प्रा. घोड़ा] (१) अश्व, तुरंग।

मुहा०—घोड़ा छोड़ना—(१) किसी के पीछे घोड़ा दौड़ाना। (२) घोड़े को इच्छानुसार चलने देना। घोड़ा डालना—किसी के पीछे घोड़े को जोर से दौड़ाना। घोड़ा निकालना—घोड़े को दूसरे से आगे बढ़ा लेना। घोड़े पर चढ़े आना—लौटने की बहुत जल्दी करना। घोड़ा फेंकना—घोड़ा बहुत तेज दौड़ाना। घोड़ा बेचकर सोना—गहरी नींद लेना।

(२) बंदूक का एक पेंच या खटका। (३) शतरंज का एक मोहरा जो ढाई घर चलता है। (४) खूँटी।

घोड़िया—संज्ञा स्त्री. [हिं. घोड़ी + इया (प्रत्य.)] (१) छोटी घोड़ी। (२) छोटा घोड़ा। (३) छोटी खूँटी।

घोड़ी—संज्ञा स्त्री. [हिं. घोड़ा] (१) घोड़े की मादा। (२) विवाह की एक रीति जिसमें दूलहा घोड़ी पर चढ़कर दुलहिन के घर जाता है। (३) विवाह के गीत जो वर-पक्ष की ओर से गाये जाते हैं।

घोणा—संज्ञा पुं. [देश.] तारदार एक बाजा।

संज्ञा स्त्री. [सं. घ्राण] नाक।

घोर—वि. [सं.] (१) कठिन, कड़ा। उ.—कटक सोर अति घोर दसौं दिसि, दीसति बनचर-भीर—६-११५। (२) सघन, घना। (३) भयानक, डरावना। उ.—ज्यौं पावस रितु घन-प्रथम-घोर। जल जीवक, दादर रटत मोर—६-१६६। (४) क्रोध की मुद्रा के साथ, दृढ़ता से पकड़े हुए। उ.—चित दै चितै तनय मुख ओर। सकुचत सीत भीत जलरुह ज्यौं तुव कर लकुट निरखि सखि घोर—३५७। (५) गहरा, गाढ़ा। (६) बहुत बुरा। (७) बहुत अधिक।

संज्ञा स्त्री. [सं. घुर] शब्द, गर्जन, ध्वनि। उ. —कहि काको मन रहत स्रवन सुनि सरस मधुर मुरली की घोर—१४४७।

संज्ञा पुं. [हिं. घोड़ा] अश्व, तुरंग।

क्रि. वि.—बहुत, अत्यंत।

घोरत—क्रि. अ. [हिं. घोरना] भारी शब्द करता है, गरजता है। उ.—चहुँ दिसि पवन चकोरत घोरत मेघ घट गंभीर—६६४।

घोरना—क्रि. स. [हिं. घोलना] घोलना, मिलाना।

क्रि. अ. [हिं. घोर] भारी शब्द करना, गरजना।

घोरनो—क्रि. अ. [हिं. घोरना] शब्द करना। उ.—तैसोई नन्ही नन्ही बूँदनि बरषै मधुर मधुर ध्वनि घोरनो—२२८०।

घोरा—संज्ञा पुं. [हिं. घोड़ा] (१) घोड़ा। (२) खूँटा।

घोरि—क्रि. स. [हिं. घोलना] घोलकर, पानी आदि में मिलाकर। उ.—(क) जो गिरिपति मसि घोरि उदधि मैं, लै सुरतरु बिधि हाथ। ममकृत दोष लिखै बसुधा भरि, तऊ नहीं मिति नाथ—१-१११। (ख) घोरि हलाहल सुन री सजनी औसर सर तेहि न पियो —२५४५।

घोरिया—संज्ञा स्त्री. [हिं. घोड़िया] छोटा घोड़ा घोड़ी।

घोरिला—संज्ञा पुं. [हिं. घोड़ा] (१) लड़कों के खेलने का मिट्टी का घोड़ा। (२) खूँटा जिसकी बनावट घोड़े के मुँह की तरह हो।

घोरी—संज्ञा स्त्री. [हिं. घोड़ी] घोड़ी।

क्रि. स. [हिं. घोलना] घोलकर, मिलाकर। उ.—कुंकुम चंदन अरगजा घोरी—२४४४।

घोरै—संज्ञा सवि. [हिं. घोड़ा] घोड़े (पर)।

मुहा०—मनु आई चढ़ि घोरै—(१) बहुत जल्दी मचा रही है। (२) बड़ा गर्व कर रही है, किसी घमंड में है। उ.—कहा भयौ तेरे भवन गए जो दियौ तनक लै भोरै। ता ऊपर काहैं गरजति है, मनु आई चढ़ि घोरै—१०-३२१।

संज्ञा स्त्री. [सं. घुर, हिं. घोर] ध्वनि, शब्द। उ.—सुनि मुरली को घोरैं सुर-बधू सीस ढोरैं—२२८७।

क्रि. स. [हिं. घोलना] घोलता है, पानी आदि में मिलाता है। उ.—कागद धरनि करै द्रुम लेखनि जल-सायर मसि घोरै—१-१२५।

घोरौं—क्रि. स. [हिं. घोलना] घोल दूँ, मिला दूँ। उ. —कहौ तौ पैठि सुधा कैं सागर, जल समस्त मैं घोरौं —६-१४८।

घोल—संज्ञा पुं. [हिं. घोलना] वह पानी जिसमें कुछ घुला हो।

घोलना—क्रि. स. [हिं. घुलना] पानी आदि द्रव पदार्थों में हल करना या मिलाना।

घोला—वि. [हिं. घोलना] जो घोलकर बना हो।

मुहा०—घोले में डालना—(१) किसी काम को उलझन में डाल कर देर लगाना। (२) टालटूल करना। घोले में पड़ना—झगड़े में पड़ना देर लगाना।

घोलुवा—वि. [हिं. घोलना + उवा (प्रत्य.)] घोला हुआ।

मुहा०—घोलुवा पीना कड़ुई वस्तु पीना। घोलुवा घोलना—काम में देर लगाना।

घोष—संज्ञा पुं. [सं] (१) अहीरों की बस्ती। उ. (क) बकीजु गई घोष मैं छल करि, जसुदा की गति दीना—१-१२२। (ख) आजु कन्हैया बहुत बच्यौ री। खेलत रह्यौ घोष के बाहर कोउ आयो शिशु रूप रच्यौ री। (२) अहीर। उ.—बिछुरत भेंट देहु ठाढ़े ह्वै निरखो घोष-जन्म को खेरो—२५३२। (३) गोशाला। उ.—नंद बिदा ह्वै घोष सिधारौ—२६५३। (४) तट, किनारा। (५) शब्द, नाद। (३) गरजने का शब्द।

घोषकुमारि, घोषकुमारी—संज्ञा स्त्री. [सं. घोष + हिं. कुमारी] अहीरों या ग्वालों की कुमारियाँ। उ.—बहुत नारि सुहाग सुंदरि और घोषकुमारि—१०-२६।

घोषणा—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) सूचना। (२) राजाज्ञा आदि की सूचना, मुनादी।

घोषणापत्र—संज्ञा पुं. [सं.] राजाज्ञा सूचना पत्र।

घोषपुरी—संज्ञा स्त्री. [सं. घोष + हिं. पुरी] अहीरों की बस्ती या नगरी। उ.—जो सुख ब्रज में एक घरी। सो सुख तीनि लोक मैं नाहीं धनि यह घोष पुरी—१०-६६।

घोषवती—संज्ञा स्त्री. [सं.] वीणा।

घोसी—संज्ञा पुं. [सं. घोष] अहीर, ग्वाला।

घौंर, घौंरा, घौद—संज्ञा पुं. [हिं. गौद] घौद, गौद, फलों का गुच्छा।

घौरी—संज्ञा स्त्री. [हिं. घौद] गौद, फलगुच्छ।

घौहा—संज्ञा पुं. [हिं. घाव + हा (प्रत्य.)] चुटीला फल।

वि.—चुटीला, घायल, चोट खाया हुआ।

घ्राण—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) नाक। (२) सूँघने की शक्ति। (३) गंध, सुगंध।

ङ

ङ—कवर्ग का अंतिम अक्षर, स्पर्श वर्ण जिसका उच्चारण कंठ और नाक से होता है।

ङ—संज्ञा पुं. [सं.] (१) सूँघने की शक्ति। (२) गंध, सुगंध। (३) भैरव।

च

च—हिंदी का छठा व्यंजन और अपने वर्ग का पहला अक्षर जिसका उच्चारण तालु से होता है।

चंक—वि. [सं. चक्र] (१) पूरा-पूरा, सारा। (२) उत्सव जो फसल कटने पर मनाया जाता है।

चंकुर—संज्ञा पुं. [सं.] (१) रथ। (२) पेड़।

चंक्रमण—संज्ञा पुं. [सं.] घूमना, टहलना।

चग—संज्ञा स्त्री. [फ़ा.] (१) एक बाजा। उ.—(क) महुवरि बाँसुरी चंग लाल रँग हो हो होरी—२४१०। (ख) डिमडिमी पटह ढोल डफ बीणा मृदंग उपंग चंग तार—२४८६।

संज्ञा स्त्री. [देश.] (१) जौ। (२) जौ की शराब।

संज्ञा स्त्री. [सं चं=चंद्रमा] पतंग, गुड्डी।

मुहा.—चंग चढ़ना या उमहना—खूब जोर या बढ़ती होना। चंग पर चढ़ना—(१) इधर उधर की बातें करके अपने अनुकूल या पक्ष में करना। (२) मिजाज बढ़ा-चढ़ा देना।

वि.—(१) कुशल। (२) स्वस्थ। (३) सुंदर।

चंगना—क्रि. स. [हिं. चंगा या फ़ा. तंग] (१) खींचना। (२) कसना।

चंगा—वि. [हिं. चग] (१) स्वस्थ, तंदुरुस्त। (२) सुंदर, भला। (३) निर्मल, शुद्ध।

चंगी—वि. स्त्री. [हिं. चंगा] भली लगनेवाली, सुंदर। उ.—भले जू भले नंदलाल वेऊ भली चरन जावक

पाग जिनहिं रंगी। सूर-प्रभु देखि अंग अंग बानिक कुसल मैं रही रीझि वह नारि चंगी।

मुहा०—बनी-चंगी—बनी-चुनी, सजी-सजायी, खूब छँटी हुई, चतुर, भली (व्यंग्य)। उ.—सखी बूझत ताहि हँसत जामुख चाहि स्याम को मिली री बनी चंगी—२१७५।

चंगु—संज्ञा पुं. [हिं. चंगुल] (१) चंगुल, पंजा। (२) पकड़, वश, अधिकार।

चंगुल—संज्ञा पुं. [हिं. चौ=चार+अंगुल] (१) पशु-पक्षियों का टेढ़ा और कड़ा पंजा। (२) किसी चीज को पकड़ते या लेते समय हाथ के पंजों की स्थिति।

मुहा.—चंगुल में फँसना—वश या काबू में होना।

चँगेर, चँगेरी, चँगेली—संज्ञा स्त्री. [सं. चंगोरिक] (१) बाँस की डलिया या टोकरी। (२) फूल रखने की डलिया। (३) चमड़े की मशक। (४) बच्चों का झूला या पालना। (५) चाँदी का जालीदार पात्र।

चंच—संज्ञा पुं. [हिं. चंचु] (१) चेंच नामक साग। (२) मृग।

चँचरी—संज्ञा स्त्री. [देश.] एक चिड़िया।

चंचरी—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) भ्रमरी। (२) होली का एक गीत। (३) एक छंद।

चंचरीक—संज्ञा पुं. [सं.] भ्रमर, भौंरा। उ.—विकसत कमलावली, चले प्रपुंज- चंचरीक, गुंजत कलकोमल धुनि त्यागि कंज न्यारे—१०-२०५।

चंचरीकावली—संज्ञा स्त्री. [सं. चंचरीक+अवली] (१) भौंरों की पंक्ति। (२) एक वर्णवृत्त।

चंचल—वि. पुं. [सं.] (१) अस्थिर, चलायमान। (२) अधीर,एकाग्र न रहनेवाला। (३) घबराया हुआ। (४) नटखट, शैतान।

संज्ञा पुं.—(१) वायु। (२) रसिक, कामुक।

चंचलता, चंचलताई—संज्ञा स्त्री. [सं. चंचलता] (१) अस्थिरता, चपलता। उ.—तब लगि तरुनि तरल-चंचलता, बुधि-बल सकुचि रहै। सूरदास जब लगि वह धुनि सुनि, नाहिंन धीर ढहै—६४६। (२) नटखटी, शरारत।

चंचला—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) लक्ष्मी। (२) बिजली।

चंचलाई—संज्ञा स्त्री. [सं. चंचल + आई (प्रत्य.) चपलता, अस्थिरता। (२) नटखटी।

चंचलास्य—संज्ञा पुं. [सं.] एक सुगंधित द्रव्य।

चंचलाहट—संज्ञा स्त्री [सं. चंचल + आहट] (१) चंचलता, चुलबुलाहट। (२) नटखटी।

चंचा—संज्ञा स्त्री. [सं.] घास-फूस का पुतला जो खेतों में पशु-पक्षियों के डराने के लिए गाड़ते हैं।

चंचु—संज्ञा पुं. [सं.] (१) चेंच का साग। (२) रेंड़ का पेड़। (३) मृग, हिरन।

संज्ञा स्त्री.—चिड़ियों की चोंच।

चंचुका, चंचुपुट—संज्ञा स्त्री. [सं.] चोंच।

चंचुभृत, चंचुमान्—संज्ञा पुं. [सं.] पक्षी।

चंचुर—वि. [सं.] दक्ष, कुशल, निपुण, चतुर।

संज्ञा पुं.—चेंच या चेंचु का साग।

चँचोरना—क्रि. स. [अनु.] दाँत से दबाकर चूसना।

चँचोरि—क्रि. स. [हिं. चँचोरना] चूसकर।

चंट—वि. [सं. चंड] (१) चालाक (२) छटा हुआ।

चंड—वि. [सं.] (१) तेज, उग्र, घोर। (२) बहुत बलवान। (३) विकट, कठोर। (४) क्रोधी।

संज्ञा पुं.—(१) ताप, गरमी। (२) एक यमदूत। (३) एक दैत्य। (४) कार्तिकेय। (५) राम की सेना का एक बंदर। (६) कंस का एक भाई।

चंडकर—संज्ञा पुं. [सं.] तेज किरणोंवाला सूर्य।

चंडकौशिक—संज्ञा पुं. [सं.] एक मुनि।

चंडता, चंडताई—संज्ञा स्त्री. [सं. चंडता] (१) उग्रता, प्रबलता। (२) बल, प्रताप, वीरता।

चंडत्व—संज्ञा पुं. [सं.] (१) उग्रता (२) प्रताप।

चंडांशु—संज्ञा पुं. [सं. चंड + अंशु = किरण] सूर्य।

चंडा—वि. स्त्री. [सं.] उग्र स्वभाववाली।

संज्ञा पुं.—(१) आठ नायिकाओं में एक। (२) चोर नामक गंध-द्रव्य। (३) केवाँच।

चँड़ाइ चँड़ाई—संज्ञा स्त्री. [सं. चंड=तेज] (१) शीघ्रता, जल्दी, उतावली। उ.—(क) जेंवत परखि लियौ नहिं हमकौं, तुम अति करी चँड़ाइ—४४४। (ख) मैं अन्हवाए देति दुहूँनि कौं, तुम अति करौ चँड़ाई—५११। (ग) रोहिनि भोजन करौ चँड़ाई बार-बार

कहि-कहि करि आरति—५१२। (घ) जननि मथत दधि, दुहुत कन्हाई। सखा परस्पर कहत स्याम सौं हमहूँ सौं तुम करत चँड़ाई–६६८। (ङ) गाई गईं सब प्याइ कै, प्रातहिं नहिं आईं। ता कारन मैं जाति हौं, अति करति चँडाई—७१३। (च) सूर नंद सौं कहति जसोदा, दिन आए अब करहु चँडाई—८११। (२) प्रबलता। (३) अन्याय, अत्याचार।

चंडाल—संज्ञा पुं. [सं. चांडाल] (१) डोम। (२) नीच।

चंडालता—संज्ञा स्त्री. [सं.] नीचता, अधमता।

चंडालपक्षी—संज्ञा पुं. [सं.] काक, कौआ।

चंडालिनी—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) चंडाल वर्ण की स्त्री। (२) दुष्ट या कर्कशा स्त्री।

चंडावल—संज्ञा पुं. [सं. चंड + अवलि] (१) सेना के पीछे का भाग, 'हरावल' का विपरीतार्थक। (२) वीर योद्धा। (३) पहरेदार।

चंडिका, चंडी—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) दुर्गा। (२) लड़ाकू स्त्री।

वि. स्त्री.—लड़ाकू, कर्कशा, उग्र स्वभाववाली।

चंडीपति—संज्ञा पुं. [सं.] शिव, महादेव।

चंडू—संज्ञा पुं. [सं. चंड] अफीम का किवाम।

चंडूल—संज्ञा पुं. [देश.] एक चिड़िया।

मुहा.—पुराना चंडूल-बेडौल या मूर्ख आदमी।

चंडोल—संज्ञा पुं. [सं. चंद्र+दोल] (१) एक तरह की पालकी। (२) मिट्टी का एक खानेदार खिलौना।

चंद—संज्ञा पुं. [सं. चंद्र] (१) चंद्रमा। (२) चंद्रमा के समान सुख-शांति देनेवाला व्यक्ति। उ.—सूरदास पर कृपा करौ प्रभु श्रीवृंदावन-चंद—१-१६३। (३) पृथ्वीराज-रासो का रचयिता हिंदी का एक कवि।

वि. [फ़ा.] (१) थोड़े से। (२) गिने-चुने।

चंदक—संज्ञा पुं. [सं. चंद्र] (१) चंद्रमा। (२) चाँदनी। (३) एक मछली। (४) माथे का एक गहना।

चंदचूर—संज्ञा पुं. [सं. चंद्रचूड़] शिव जी।

चंदक पुष्प—संज्ञा पुं. [सं.] (१) लौंग। (२) चंद्रकला।

चंदन—संज्ञा पुं. [सं.] (१) एक सुगंधित लकड़ी जिसको पीसकर हिंदू माथे पर तिलक लगाते हैं, पूजा करते हैं और स्थान आदि लिपाते हैं। उ.—कंचन-कलस, होम द्विज-पूजा, चंदन भवन लिपाऔ—१०-४। (२) राम की सेना का एक बानर।

चंदनगिरि—संज्ञा पुं. [सं.] मलय पर्वत।

चंदनहार—संज्ञा पुं. [सं. चंद्रहार] गले का एक गहना।

चंदना—संज्ञा पुं. [सं. चंद्रमा] चंद्रमा।

चंदनी—संज्ञा स्त्री. [हिं. चाँदनी] चाँदनी।

चँदनौता—संज्ञा पुं. [देश.] एक तरह का लहँगा।

चंदबाण, चंदबान—संज्ञा पुं. [सं. चंद्रबाण] एक बाण।

चँदराना—क्रि. स. [सं. चंद्र (दिखलाना)] (१) बहलाना। (२) जान-बूझ कर अनजान बनना।

चंदला—वि. [हिं. चाँद = खोपड़ी] गंजा।

चँदवा—संज्ञा पुं. [सं. चंद्र] सिंहासन का चँदोवा।

संज्ञा पुं. [सं. चंद्रक] (१) गोल चकती। (२) तालाब में गहरा गड्ढा। (३) मोर की पूँछ का अर्द्धचंद्रक चिह्न। उ.—मोरन के चँदवा माथे बने राजत रुचिर सुदेस री। (४) मछली।

चंदा—संज्ञा पुं. [सं. चंद्र] चंद्रमा। उ.—(क) अपने कर गहि गगन बतावै खेलन को माँगै चंदा—१०-१९२। (ख) ज्यौं चकोर चंदा को इकटक भृंगी-ध्यान लगावै—१८१८।

संज्ञा स्त्री.—राधा की एक सखी। उ.—कमला तारा बिमला चंदा चंद्रावलि सुकुमारि—१५८०।

संज्ञा पुं. [फ़ा. चंद्र = कुछ] (१) वह धन जो दान या सहायता-रूप में लिया जाय। (२) पत्र-पत्रिका या सभा-समिति का मासिक, छमाही या वार्षिक शुल्क।

चंदिका—संज्ञा स्त्री. [सं. चंद्रिका] चाँदनी।

चंदिनि, चंदिनी—संज्ञा स्त्री. [सं. चंदू] चाँदनी।

वि.—उजेली, चाँदनी से युक्त।

चँदिया—संज्ञा स्त्री. [हिं. चाँद] (१) खोपड़ी।

मुहा०—चँदिया पर बाल न छोड़ना—(१) सब कुछ हर लेना। (२) खूब जूते मारना। चँदिया मूड़ना—धन-संपत्ति हर लेना। चँदिया खाना—(१) बकवाद से सिर खाना। (२) सब कुछ हरकर दरिद्र बनाना। चँदिया खुजलाना—मार खाने को जी चाहना।

(२) पिछली छोटी रोटी। (३) ताल का सबसे गहरा तल या स्थान। (४) चाँदी की टिकिया।

चंदिर—संज्ञा पुं. [सं.] (१) चंद्रमा। (२) हाथी।

चँदेरी—संज्ञा स्त्री. [सं. चेदि या हिं. चंदेल] एक प्राचीन नगर जो ग्वालियर राज्य में था। उ.—(क) रुक्म चँदेरी विप्र पठायौ—१० उ. ७। (ख) राव चँदेरी को भूपाल।

चँदेरीपति—संज्ञा पुं. [सं.] शिशुपाल।

चंदेल—संज्ञा पुं. [स.] क्षत्रियों की एक शाखा।

चँदोत्रा चँदोया, चँदोवा—संज्ञा पुं. [हिं. चँदवा] सिंहासन पर सोने-चाँदी के चोबों पर तना वितान।

चंद्र—संज्ञा पुं. [सं.] (१) चंद्रमा। (२) एक की संख्या। (३) मोर की पूँछ की चंद्रिका। (४) कपूर। (५) जल। (६) सोना। (७) वह बिंदी जो सानुनासिक वर्ण पर लगायी जाती है। (८) लाल रंग का मोती। (६) हीरा। (१०) सुखदायी वस्तु या पात्र।

वि.—(१) आनंददायक। (२) सुंदर।

चंद्रक—संज्ञा पुं. [सं.] (१) चंद्रमा। उ.—काम की केलि कमनीय चंद्रक चकोर, स्वाति की बूँद चातक परी री—६६१। (२) चंद्रमा-सा मंडल या घेरा। (३) चाँदनी। (४) मोर-पूँछ की चंद्रिका। (५) नाखून। (६) एक मछली। (७) कपूर।

चंद्रकला—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) चंद्रमंडल का सोलहवाँ भाग। (२) चंद्रकिरण या ज्योति। उ.—चंद्रकला जनु राहु गही री—१० उ. ३०। (३) एक वर्णवृत्त। (४) माथे का एक गहना। (५) छोटा ढाल।

चंद्रकलाधर—संज्ञा पुं. [सं.] महादेव, शिव।

चंद्रकांत—संज्ञा पुं. [सं.] (१) एक रत्न जो चंद्रमा के सामने पसीजता है। (२) एक राग। (३) चंदन। (४) कुमुद।

चंद्रकांता—संज्ञा स्त्री [सं.] (१) चंद्रमा की पत्नी। (२) रात। (३) एक वर्णवृत्त।

चंद्रकांति—संज्ञा स्त्री. [सं.] चाँदी।

चंद्रकी—संज्ञा स्त्री. [सं. चंद्रकिन्] मोरपंखी।

चंद्रकुमार—संज्ञा पुं. [सं.] चंद्रमा का पुत्र बुध।

चंद्रकेतु—संज्ञा पुं [सं.] लक्ष्मण का एक पुत्र।

चंद्रक्षय—संज्ञा स्त्री. [सं.] अमावास्या।

चंद्रगुप्त—संज्ञा पुं. [सं.] (१) चित्रगुप्त। (२) एक मौर्यवंशी राजा। (३) एक गुप्तवंशी राजा।

चंद्रगोलिका—संज्ञा स्त्री. [सं.] चाँदनी, चंद्रिका।

चंद्रग्रहण—संज्ञा पुं. [सं.] चंद्रमा का ग्रहण।

चंद्रचूड़—संज्ञा पुं. [सं.] मस्तक पर चंद्रमा धारण करनेवाले शिव, महादेव।

चंद्रज—संज्ञा पु. [स.] चंद्रमा का पुत्र बुध।

चंद्रजोत, चंद्रजोती, चंद्रज्योति—संज्ञा स्त्री [सं. चंद्र + ज्योति] (१) चंद्रमा का प्रकाश। (२) एक आतशबाजी।

चंद्रदारा—संज्ञा स्त्री. [सं.] सत्ताईस नक्षत्र जो चंद्रमा की पत्नियाँ मानी जाती हैं।

चंद्रद्युति—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) चंद्रकिरण या चंद्र प्रकाश। (२) चंदन।

चंद्रधनु—संज्ञा पुं. [सं.] चंद्रमा के प्रकाश से रात को दिखायी देनेवाला इंद्रधनुष।

चंद्रधर—संज्ञा पुं. [सं.] महादेव, शिव।

चंद्रप्रभ—वि. [सं.] चंद्रमा-सी कांतिवाला।

चंद्रप्रभा—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) चंद्रमा की ज्योति। (२) बकुची नामक औषध।

चंद्रबंधु—संज्ञा पुं. [सं.] (१) शंख। (२) कुमुद।

चंद्रबधूटी—संज्ञा स्त्री. [सं. इंद्रवधू] बीरबहूटी।

चंद्रबाण, चंद्रबान—संज्ञा पुं. [सं.] बाण जिसका फल अर्द्धचंद्राकार होता है। उ.—नख मानों चंद्रबान साजि कै भभकारत उर आगौ—१६७२।

चंद्रबिंदु—संज्ञा पुं. [सं.] अर्द्ध अनुस्वार का चिह्न।

चंद्रबिंब—संज्ञा पुं. [सं.] चंद्रमा का मंडल।

चंद्रभस्म—संज्ञा पुं [सं.] कपूर।

चंद्रभा—संज्ञा स्त्री. [सं.] चंद्रमा का प्रकाश।

चंद्रभाग—संज्ञा पुं. [सं.] (१) चंद्रमा की कला। (२) सोलह की संख्या। (३) एक पर्वत।

चंद्रभागा—संज्ञा पुं. [सं.] पंजाब की एक नदी। उ.—सुभ कुरुखेत अयोध्या मिथिला, प्राग त्रिबेनी न्हाए। पुनि सतद्रु औ हु चंद्रभागा, गंग ब्यास अन्हवाए—सा. ८२८।

चंद्रभाट—संज्ञा पुं. [सं. चंद्र + हिं. भाट] एक साधु।

चंद्रभानु—संज्ञा पु. [सं.] श्रीकृष्ण का एक पुत्र जो सत्यभामा के गर्भ से पैदा हुआ था।

चंद्रभाल—संज्ञा पुं. [सं.] शिव, महादेव।

चंद्रभूति—संज्ञा स्त्री. [सं.] चाँदी ।
चंद्रभूषण—संज्ञा पुं. [सं.] शिव, महादेव ।
चंद्रमणि, चंद्रमनि—संज्ञा पुं. [सं.] चंद्रकांत मणि । उ.—चौकी हेम चंद्रमनि लागी हीरा रतन जराय खची ।
चंद्रमा—संज्ञा पुं. [सं.] चाँद, इंदु, सुधांशु ।
चंद्रमाललाट—संज्ञा पुं. [सं.] शिव, महादेव ।
चंद्रमाललाम—संज्ञा पुं. [सं. चंद्रमा + ललाम = मस्तक पर तिलक का चिन्ह] महादेव, शिव, शंकर ।
चंद्रमाला—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) एक छंद । (२) चंद्रहार ।
चंद्रमास—संज्ञा पुं. [सं. चंद्र+मास] वह मास जिसमें चंद्रमा पृथ्वी की एक परिक्रमा कर लेता है ।
चंद्रमौलि—संज्ञा पुं. [सं.] मस्तक पर चंद्रमा धारण करनेवाले शिव, महादेव ।
चंद्ररेखा, चद्रलेखा—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) चंद्रमा की कला । (२) चंद्रमा की किरण । (३) द्वितीया का चंद्रमा जो एक रेखा के रूप में होता है ।
चंद्रलोक—संज्ञा पुं. [सं.] चंद्रमा का लोक । उ.—चंद्रलोक दीन्हो ससि को तब फगुआ में हरि आय । सब नछत्र को राजा कीन्हो ससि मंडल में छाय ।
चंद्रवंश—संज्ञा पुं. [सं.] क्षत्रियों का एक कुल ।
चंद्रवंशी—वि. [सं. चंद्रवंशिन्] चंद्रवंश का ।
चंद्रवधू, चंद्रवधूटी—संज्ञा स्त्री. [सं. इंद्रवधू] बीर-बहूटी नामक एक छोटा लाल कीड़ा ।
चंद्रवल्लरी, चंद्रवल्ली—संज्ञा स्त्री. [सं.] एक लता ।
चंद्रवार—संज्ञा पुं. [सं.] सोमवार ।
चंद्रविंदु—संज्ञा पुं. [सं.] अर्द्धअनुस्वार का चिन्ह ।
चंद्रवेश—संज्ञा पुं. [सं.] शिव, महादेव ।
चंद्रव्रत—संज्ञा पुं. [सं. चांद्रायण] एक व्रत ।
चंद्रशाला, चंद्रसाला—संज्ञा स्त्री. [सं. चंद्रशाला] (१) चाँदनी । (२) मकान की सबसे ऊपरी अटारी ।
चंद्रश्रृंग—संज्ञा पुं. [सं.] द्वितीया के चंद्रमा के दोनों नुकीले ओर या किनारे ।
चंद्रशेखर, चंद्रसेखर—संज्ञा पुं. [सं. चंद्र + शेखर] शिव जी जिनके मस्तक पर चंद्रमा है ।
चंद्रसरोवर—संज्ञा पुं. [सं.] व्रज का एक तीर्थ स्थान जो गोवर्द्धन के समीप स्थित है ।
चंद्रहार—संज्ञा पुं [सं.] गले में पहनने की सोने की माला जिसके बीच में सोने का चंद्राकार पान रहता है ।
चंद्रहास—संज्ञा पुं. [सं.] (१) तलवार । (२) रावण की तलवार (३) चाँदी ।
चंद्रा—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) चँदोवा । (२) गुर्च । संज्ञा स्त्री. [सं चंद्र] मरने की अवस्था जब टकटकी बँध जाती है और गला रुँध जाता है ।
चंद्रातप—संज्ञा पुं. [सं.] (१) चाँदनी । (२) चँदोवा ।
चंद्रापीड़—संज्ञा पुं. [सं] शिव, महादेव ।
चंद्रायण, चंद्रायन—संज्ञा पुं. [सं. चांद्रायण] महीने भर का एक व्रत जिसमें चंद्रमा के घटने-बढ़ने के अनुसार आहार घटाना-बढ़ाना होता है । उ.—सहस बार जौ बेनी परसै, चंद्रायन कीजै सौ बार—२-३ ।
चंद्रालोक—संज्ञा पुं. [सं.] चंद्रमा का प्रकाश ।
चंद्रावलि, चंद्रावली—संज्ञा स्त्री. [सं. चंद्रावली] श्री कृष्ण की प्रेमिका और राधा की एक सखी जो चंद्रभानु की पुत्री थी । उ.—(क) ललिता अरु चंद्रावली सखिन मध्य सुकुमारि—११०२ । (ख) तारा कमला विमला चंद्रा चंद्रावलि सुकुमारि—१५८० ।
चंद्रिका—संज्ञा पुं. [सं] (१) चंद्रमा का प्रकाश, चाँदनी । (२) मोर की पूँछ का अर्द्ध चंद्राकार चिन्ह । उ.—सोभित सुमन मयूर चंद्रिका नील नलिन तनु स्याम । (३) इलायची । (४) चाँदा मछली । (५) चंद्रभागा नदी । (६) जूही, चमेली । (७) एक देवी । (८) एक वर्णवृत्त । (९) माथे का वेंदी नामक गहना । (१०) रानियों का एक शिरोभूषण, चंद्रकला ।
चंद्रिकोत्सव—संज्ञा पुं. [सं.] शरदपूनों का उत्सव ।
चंद्रिल—संज्ञा पुं. [सं.] शिव, महादेव ।
चंद्रोदय—संज्ञा पुं. [सं. चंद्र + उदय] (१) चंद्रमा का उदय । (२) चँदवा, चँदोवा ।
चंद्रोपल—संज्ञा पुं. [सं. चंद्र+उपल] चंद्रकांतमणि ।
चंप—संज्ञा पुं. [सं. चंपक] (१) चंपा । (२) कचनार ।
चंपई—वि. [हिं. चंपा] चंपे के पीले रंग का ।
चंपक—संज्ञा पुं. [सं.] चंपा जिसका फूल हलका पीले रंग का होता है । सुंदर नारियों के रंग की उपमा इससे दी जाती है । उ.—(क) चंपक-बरन, चरन-

कमलनि, दाड़िम दसन लरी—६-६३। (ख) चंपक जाइ गुलाब बकुल फूले तरु प्रति बूझति कहुँ देखे नँदनंदन—१८१०।

चंपकली—संज्ञा स्त्री. (१) चंपे की कली। उ.—(क) रंगभरी सिर सुरंग पाग लटकि रही बाम भाग चंपकली कुटिल अलक बीच-बीच रखी री—२३६२। (ख) चंपकली सी नासिका रंग स्यामहिं लीन्हे—पृ-३२६। (२) गले में पहनने का एक आभूषण।

चंपत—वि. [देश.] गायब, लुप्त, अंतर्द्धान।

क्रि. अ. [हिं. चँपन] दबता है।

चँपना—क्रि. अ. [सं. चप्] (१) बोझ से दबना। (२) लज्जित होना। (३) उपकार मानना।

चंपा—संज्ञा पुं. [सं. चंपक] (१) एक पौधा जिसमें हल्के पीले रंग के फूल लगते हैं, जिन पर, प्रसिद्धि है कि भौंरे नहीं बैठते। (२) अंगदेश के राजा कर्ण की राजधानी। (३) एक केला। (४) एक घोड़ा। (५) रेशम का एक कीड़ा। (६) एक पेड़।

संज्ञा स्त्री—राधा की एक सखी। उ.-सुमना, बहुला चंपा जुहिला ज्ञाना भाना भाउ—१५८०।

चंपाकली—संज्ञा स्त्री [हिं चंपा + कली] गले का एक गहना जिसमें चंपे की कली की तरह के दाने होते हैं।

चंपू—संज्ञा पुं. [सं] गद्य-पद्य-मय काव्य।

चँपै—क्रि. स. [हिं. चँपना] दबाते हैं। उ.—घर बैठेहि दसन अधरन धरि चँपै स्वाँस भरैं।

चंबल—संज्ञा स्त्री. [सं. चर्मण्वती] एक नदी।

संज्ञा पुं.— पानी की बाढ़।

संज्ञा पुं. [फ़ा. चुंबल] भिखारी का कटोरा।

चँवर—संज्ञा पुं. [सं चामर] (१) सुरागाय की पूँछ के बालों का गुच्छा जो काठ, सोने या चाँदी की डाँड़ी में लगाकर राजाओं या देवी-देवताओं पर डुलाया जाता है। उ.—बैठति कर-पीठ ढीठि, अधर-छत्र-छाँहि। राजति अति चँवर चिकुर, सरद सभा माँहि—६५३। (२) घोड़े या हाथी के सिर पर लगाने की कलगी।

चँवरढार—संज्ञा पुं. [हिं. चँवर + ढारना] वह सेवक जो चँवर डुलाता हो, चँवरधारी सेवक।

चँवरी—संज्ञा स्त्री. [हिं. चँवर] लकड़ी की डाँडी जिसमें घोड़े की पूँछ के बाल लगाकर चँवर बनाते हैं।

च—संज्ञा पुं. [सं.] (१) कछुआ, कच्छप। (२) चंद्रमा। (३) चोर। (४) दुर्जन।

चइत—संज्ञा पुं.—[हिं. चैत] चैत नामक महीना।

चइन—संज्ञा पुं. [हिं. चैन] आराम, सुख, आनंद।

चउँहान—संज्ञा पुं. [हिं. चौहान] क्षत्रियों की एक शाखा।

चउक—संज्ञा पुं. [हिं. चौक] (१) आँगन। (२) बाजार।

चउकी—संज्ञा स्त्री. [हिं. चौकी] (१) छोटा तखत। (२) पड़ाव, टिकान। (३) स्थान जहाँ सिपाही रहें।

चउतरा—संज्ञा पुं. [हिं. चौतरा] चबूतरा।

चउथा—वि. [हिं. चौथा] तीसरे के बाद का।

चउदस—संज्ञा स्त्री. [हिं. चौदस] पक्ष का चौदहवाँ दिन।

चउदह—वि. [हिं. चौदह] तेरह के बाद का।

चउपाई—संज्ञा स्त्री. [हिं. चौपाई] एक छंद। खाट।

चउपार, चउपारि चउपाल, चउपालि—संज्ञा स्त्री. [हिं. चौपाल] (१) बैठक। (२) दालान।

चउर—संज्ञा पुं. [हिं. चँवर] चँवर, मोरछल।

संज्ञा पुं. [हिं. चावल] धान, चावल।

चउरा—संज्ञा पुं. [हिं. चौरा] (१) चौतरा। (२) किसी देवी-देवता, महात्मा, साधु आदि का स्थान।

चउहट्ट—संज्ञा पुं. [हिं. चौ + हाट] चौहट्ट, चौराहा।

चऊतरा—संज्ञा पुं. [हिं. चौतरा] चबूतरा।

चक—संज्ञा पुं. [सं. चक्र.] (१) चकई नाम का खिलौना। उ.—(क) दै मैया भौरा चक डोरी—६७६। (ख) ब्रज लरिकन सँग खेलत, हाथ लिए चक डोरि—६७०। (२) चकवा पक्षी, चक्रवाक। (३) चक्र नामक अस्त्र। (४) चक्का, पहिया। (५) छोटा गाँव। (६) किसी बात का सिलसिला या क्रम। (७) अधिकार, दखल। (८) एक गहना।

वि.—भरपूर, अधिक, ज्यादा।

वि.—चकपकाया हुआ, भौचक्का, चकित।

संज्ञा पुं. [सं. [साधु।

चकई—संज्ञा स्त्री. [हिं. चकवा] मादा चकवा कवि-प्रसिद्धि के अनुसार जो अपने नर से रात्रि में बिछुड़ जाती है। उ.—चकई री, चलि चरन-सरोवर, जहाँ न प्रेम-बियोग—१-३३७।

संज्ञा स्त्री. [सं. चक्र] घिरनी के आकार का छोटा खिलौना जिसे डोरी के सहारे लड़के नचाते हैं। उ.—भौंरा चकई लाल पाट को लेडुआ माँग खिलौना।

वि.—गोल बनावट का।

चकचकाना—क्रि. अ. [अनु.] (१) पानी, खून आदि का छन छन कर ऊपर आना। (२) भीग जाना।

चकचकी—संज्ञा स्त्री. [अनु.] करताल नामक बाजा।

चकचाना—क्रि. अ. [अनु.] चकाचौंध लगना।

चकचाल—संज्ञा पुं. [सं. चक + हिं. चाल] चक्कर।

चकचाव—संज्ञा पुं. [अनु.] चकाचौंध।

चकचून—वि. [सं. चक्र+चूर्ण] पिसा हुआ।

चकचोही—वि. [हिं. चिकना] चिकनी-चुपड़ी।

चकचौंध—संज्ञा स्त्री. [हिं. चकाचौंध] कड़ी चमक या अधिक प्रकाश के सामने आँखों की झपक।

चकचौंधति—क्रि. स. [हिं. चकचौंधना] आँख में चमक या चकचौंध उत्पन्न करती है। उ.—चमकि चमकि चपला चकचौंधति स्याम कहत मन धीर।

चकचौंधना—क्रि. अ. [सं. चक्षुष् + अंध] अधिक प्रकाश में आँख झपकना, चकाचौंध होना।

क्रि. स.—आँखों में चकाचौंध उत्पन्न करना।

चकचौंधी—क्रि. अ. [हिं. चकचौंधना] चमक से आँख तिलमिला गयी, प्रकाश के सामने न ठहर सकी। उ.—कोउ चकित भई दसन-चमक पर चकचौंधी अकुलानी—६४४।

संज्ञा स्त्री. [हिं. चकाचौंध] अत्यधिक प्रकाश के कारण आँखों की झपक या तिलमिलाहट।

चकचौंह—संज्ञा स्त्री. [हिं. चकाचौंध] आँखों की झपक।

चकचौंहना—क्रि. अ. [देश.] आशा से ताकना।

चकचौंहाँ—वि. [देश.] देखने योग्य, सुंदर।

चकडोर, चकडोरि, चकडोरी—संज्ञा स्त्री. [हिं. चकई + डोर] (१) चकई में लपेटने की डोरी। उ.—अरुझि परयो मेरौ मन तब तैं, कर झटकत चकडोरि इलत—६७१। (ख) दै मैया भँवरा चकडोरी। (ग) हाथ लिए भौंरा चकडोरी। (२) चकई नामक खिलौना, चक्कर खानेवाली वस्तु, चक्कर, फेरी। उ.—उत ते वै पठवत इतते नहिं मानत हौं तौं दुहुनि बिच चकडोरी कीनी—२२३८। (३) चकई की डोरी

चकत—संज्ञा पुं. [हिं. चकत्ता] दाँत की काट या पकड़।

चकताई—संज्ञा पुं. [हिं. चकत्ता] दाग, धब्बा, चकत्ता।

चकती—संज्ञा स्त्री. [सं. चक्रवत्] कपड़े, चमड़े आदि का टुकड़ा, चकत्ता, थिगली।

मुहा.—बादल में चकती लगाना—असंभव बात करने को तैयार होना, बहुत बढ़ी-चढ़ी बातें करना।

चकत्ता—संज्ञा पुं. [सं. चक्र + वत्] (१) शरीर पर लाल-नीले उभरे हुए दाग। (२) काटने का चिह्न।

मुहा०—चकत्ता भरना (मारना)—काटना।

संज्ञा पुं. [तु. चग़ताई] (१) तातारवंशी चगताई के वंशज मुगल बादशाह। (२) चगताई वंशज पुरुष।

चकदार—संज्ञा पुं. [हिं. चक + फ़ा. दार (प्रत्य.)] दूसरे की जमीन पर कुँआ बनवाने, उसे काम में लाने और उसका लगान देनेवाला।

चकना—क्रि. अ. [सं. चक = भ्रांति] (१) चकपकाना, भौचक्का होना। (२) चौंकना, आशंकित होना।

चकनाचूर—वि. [हिं. चक = भरपूर] (१) चूर चूर, खंड खंड। (२) बहुत हारा-थका, शिथिल।

चकपक—वि. [सं. चक = भ्रांत] चकित, भौचक्का।

चकपकाना—क्रि. अ. [हिं. चकपक] (१) आश्चर्य से ताकना, भौचक्का होना। (२) शंकित होकर चौंकना।

चकफेरी—संज्ञा स्त्री. [हिं. चक + फेरी] चक्कर, परिक्रमा।

चकबंदी—संज्ञा स्त्री. [हिं. चक+फ़ा. बंदी] हद बाँधना।

चकबस्त—संज्ञा पुं. [फ़ा.] जमीन की चकबंदी।

संज्ञा पुं.—काश्मीरी ब्राह्मणों का एक भेद।

चकमक, चकमाक़—संज्ञा पुं. [तु. चक़मक़] एक पत्थर जिस पर चोट करने से जल्दी आग निकलती है।

चकमा—संज्ञा पुं. [सं. चक = भ्रांत] (१) भुलावा, धोखा। (२) हानि, नुकसान। (३) एक खेल।

चकमाकी—वि. [हिं. चकमक] जिसमें चकमक लगा हो।

चकर—संज्ञा पुं. [सं. चक्र] (१) चकवा या चक्रवाक पत्ती। (२) चक्कर, फेरा, परिक्रमा।

चकरबा—संज्ञा पुं. [सं. चक्रव्यूह] (१) असमंजस, ऐसी स्थिति जब उचित-अनुचित न सूझे। (२) झगड़ा।

चकरा—संज्ञा पुं. [सं. चक्र] पानी का भँवर।

वि. [हिं. चौड़ा] चौड़ा, विस्तृत।

चकराना—क्रि. अ. [सं. चक्र] (१) सिर का घूमना या चक्कर खाना। (२) चकित होना, चकपकाना।
क्रि. स.—चकित करना, आश्चर्य में डालना।

चकरानी—संज्ञा स्त्री. [फ़ा. चाकर] दासी, सेविका।

चकरिया, चकरिहा—संज्ञा पुं. [फ़ा. चाकरी + हा (प्रत्य.)] चाकरी या नौकरी करनेवाला, सेवक।

चकरी—वि. स्त्री. [सं. चक्री] चौड़ी, विस्तृत। उ.—सौ जोजनविस्तारकनकपुरी, चकरीजोजन बीस—९-७५।
संज्ञा स्त्री.—(१) चक्की, चक्की का पाट। (२) लड़कों का चकई नामक खिलौना।
वि.—भ्रमित, घूमनेवाला, अस्थिर, चंचल। उ.—सु तौ ब्याधि हमकौ लै आए देखी-सुनी न करी। यह तौ सूर तिन्हैं लै सौंपौ जिनके मन चकरी—३३६०।

चकरीन—संज्ञा स्त्री. [हिं. चकरी + न (प्रत्य.)] चकई नामक खिलौना। उ.—तैसेइ हरि तैसेइ सब बालक कर भौंरा चकरीन की जोरी।

चकल—संज्ञा पुं. [हिं. चका] (१) पौधे को उखाड़ने और दूसरे स्थान में लगाने की क्रिया। (२) मिट्टी की पीढ़ी जो ऐसे पौधे में लगी रहती है।

चकलई—संज्ञा स्त्री. [हिं. चकला] चौड़ाई।

चकला—संज्ञा पुं. [हिं. चक + ला (प्रत्य.)] (१) पत्थर या लकड़ी का रोटी बेलने का गोल पाटा। (२) चक्की। (३) इलाका, जिला।
वि.—चौड़ा, विस्तृत।

चकलाना—क्रि. स. [हिं. चकल] पौधे को एक स्थान से उखाड़कर दूसरे स्थान पर लगाना।
क्रि. स. [हिं. चकला] चौड़ा करना।

चकली—संज्ञा स्त्री [सं. चक्र, हिं. चक] (१) घिरनी, गड़ारी। (२) चंदन आदि घिसने का छोटा चकला।
वि. स्त्री.—[हिं. चकला] चौड़ी, विस्तृत।

चकवा, चकवाहा—संज्ञा पुं. [सं. चक्रवाक] एक पक्षी जिसके संबंध में प्रसिद्ध है कि रात में यह अपनी मादा से अलग रहता है।

चकवाना—क्रि. अ. [देश.] हैरान या चकित होना।

चकवारि—संज्ञा. पुं.—कछुवा।

चकवी—संज्ञा स्त्री [हिं. चकवा] चकवे की मादा।

चकहा, चका—संज्ञा पुं. [सं. चक्र] पहिया, चक्का।
संज्ञा पुं. [हिं. चकवा] चकवा, चक्रवाक।

चकाचक—संज्ञा स्त्री. [अनु.] शरीर पर तलवार आदि के प्रहार का शब्द।
वि.—तर, डूबा हुआ, निमग्न।
क्रि. वि. [सं. चक=तृप्त होना] भरपेट।

चकाचौंध, चकाचौंधी—संज्ञा स्त्री. [सं. चक=चमकना +चौ=चारो ओर + अंध] बहुत चमक या प्रकाश से आँखों की झपक या तिलमिलाहट। उ.—चमकि गए बीर सब चकाचौंधी लगी चितै डरपे असुर घटा घोटा—२५९१।

चकाना—क्रि. अ. [सं. चक=भ्रांत] अचंभे से ठिठकना, चकराना, हैरान होना, चकपकाना।

चकाने—क्रि. अ. [हिं. चकाना] चकराये, घबराये।

चकाबू, चकाबूह—संज्ञा पुं. [सं. चक्रव्यूह] चक्रव्यूह।

चकार—संज्ञा पुं. [सं.] (१) चवर्ग का पहला वर्ण। (२) सहानुभूति सूचक शब्द।

चक्रबंधु, चक्रबांधव—संज्ञा पुं. [सं. चक्र=चकवा] सूर्य (जिसके प्रकाश में चकवा-चकवी साथ रहते हैं)।

चक्रभेदिनी—संज्ञा स्त्री [सं. चक्र=चकवा] रात (जो चकवा-चकवी को अलग कर देती है)।

चक्रमुद्रा—संज्ञा स्त्री. [सं.] विष्णु के आयुधों के चिन्ह जो वैष्णव बाहु आदि पर गुदाते हैं। उ.—मूड़ें मूड़ कंठ बनमाला मुद्राचक्र दिये। सब कोउ कहत गुलाम स्याम कौ सुनत सिरात हिए।

चक्रवर्ती—वि. [सं. चक्रवर्तिन] सार्वभौम।
संज्ञा पुं.—(१) सार्वभौम राजा, समुद्रांत पृथ्वी का राजा। (२) किसी दल का समूह।

चकासना—क्रि. अ. [हिं. चमकना] चमकाना।

चकित—वि. [सं.] (१) विस्मित, आश्चर्यान्वित। उ.—सूरदास-प्रभु-रूप चकित भए पंथ चलत नर बाम—९-४४। (२) हैरान, घबराया हुआ। उ.—अजित रूप ह्वै शैल धरो हरि जलनिधि मथिबे काज। सुर अरु असुर चकित भए देखे किये भक्त के काज—(३) चौकन्ना, डरा हुआ। (४) कायर।
संज्ञा पुं. (१) विस्मय। (२) भय। (३) कायरता।

चकितवंत—वि. [सं. चकित+वत् (प्रत्य.)] (१) विस्मित, चकित, चकपकाया हुआ। उ.—अब अति चकितवंत मन मेरो। हौं आयौ निर्गुन उपदेसन भयौ सगुन कौ चेरौ —३४३११।

चकिताई—संज्ञा स्त्री. [हिं. चकित+आई (प्रत्य.)] विस्मय, अचरज, आश्चर्य।

चकी—वि. [सं. चकित] चकित, विस्मित।

चकुला—संज्ञा पुं. [देश.] चिड़िया का बच्चा।

चकृत—वि. [सं. चकित] (१) विस्मित, चकपकायी हुई। उ.—अंबू षंडन शब्द सुनत ही चित चकृत उठि धावत—सा. उ. ३३। (२) हैरान, घबराई हुई। उ.—कौसिल्या सुनि परम दीन ह्वै, नैन नीर ढरकाए। बिह्वल तन-मन, चकृत भई सो यह प्रतच्छ सुपनाए—६-३१।

चकैया—संज्ञा स्त्री [हिं. चकई] चकई।

चकोटना—क्रि. स. [हिं. चिकोटी] चुटकी काटना।

चकोतरा—संज्ञा पुं. [सं. चक्र = गोला] एक बड़ा नीबू।

चकोर—संज्ञा पुं [सं.] (१) एक तीतर जिसके काले काले रँग पर सफेद चित्तियाँ होती हैं। चोंच और आँखें इसकी लाल होती हैं। भारतीय कवियों में यह चंद्रमा का बड़ा प्रेमी प्रसिद्ध है और उन्होंने इसके प्रेम का बराबर उल्लेख किया है।

चकोरी—संज्ञा स्त्री. [सं.] मादा चकोर।

चकोरै—संज्ञा पुं. [हिं. चकोर] नर चकोर। उ.—तुव मुख दरस आस के प्यासे हरि के नयन चकोरै —२२७५।

चकोह—संज्ञा पुं. [सं. चक्रवाह] पानी का भँवर।

चकौंध—संज्ञा स्त्री. [हिं. चकाचौंध] चमक या प्रकाश की अधिकता से आँख की झपक।

चक्क—संज्ञा पुं. [सं.] पीड़ा, दर्द।

संज्ञा पुं. [सं. चक्र] (१) चकवा पची। (२) कुम्हार का चाक। (३) दिशा, प्रांत।

चक्कर—संज्ञा पुं. [सं. चक्र] (१) पहिए की तरह गोल वस्तु। (२) गोल घेरा। (३) घुमाव का रास्ता। (४) फेरा, परिक्रमा। (५) पहिए की तरह घूमना।

मुहा.—चक्कर काटना—मँडराना, बार बार आना-जाना। चक्कर खाना—(१) टेढ़े-मेढ़े या घुमावदार मार्ग से जाना। (२) धोखा खाना। (३) भटकना, मारे मारे फिरना। चक्कर पड़ना—ज्यादा घुमाव या फेर पड़ना। चक्कर आना—हैरान होना, दंग रह जाना। चक्कर में डालना—(१) हैरान करना। (२) कठिन स्थिति में डालना। चक्कर में पड़ना—(१) हैरान होना। (२) दुबिधा में पड़ना। चक्कर लगाना—(१) मँडराना। (२) घूमना-फिरना।

(६) घुमाव, पेंच, जटिलता, धोखा, भुलावा।

मुहा.—चक्कर में आना (पड़ना)—धोखा खाना।

(७) सिर घूमना, मूर्च्छा। (८) पानी का भँवरा।

(९) चक्र नामक अस्त्र।

चक्कवइ—वि. [सं. चक्रवर्ती, प्रा.चक्कवत्ती] चक्रवर्ती (राजा)।

चक्कवत्तै—संज्ञा पुं. [सं. चक्रवर्ती] चक्रवर्ती राजा।

चक्कवा—संज्ञा पुं. [सं. चक्रवाक] चकवा पची।

चक्कवै—वि. [हिं. चक्कवइ] चक्रवर्ती राजा।

चक्का—संज्ञा पुं. [सं. चक्र, प्रा. चक्क] (१) पहिया। (२) पहिये की तरह गोल चीज। (३) बड़ा टुकड़ा। (४) जमा हुआ भाग, थक्का। (५) ईंटों का ढेर।

चक्काब्यूह—संज्ञा पुं. [सं. चक्रव्यूह] चक्रव्यूह।

चक्की—संज्ञा स्त्री. [सं. चक्री, प्रा. चक्की] आटा-दाल आदि पीसने का यंत्र, जाँता।

मुहा.—चक्की की मानी—(१) चक्की के निचले पाट की वह खूँटी जिस पर ऊपरी पाट घूमता है। (२) ध्रुव तारा। चक्की छूना—(१) चक्की चलाना शुरू करना। (२) अपनी कथा छेड़ना। चक्की पीसना—(१) चक्की चलाना। (२) कड़ा परिश्रम करना।

संज्ञा स्त्री [सं. चक्रिक] (१) पैर के घुटने की गोल हड्डी। (२) बिजली, बज्र।

चक्कू—संज्ञा पुं. [हिं. चाकू] चाकू।

चक्खै—क्रि. स. [हिं. चखना] स्वाद लेकर खाय।

चक्र—संज्ञा पुं. [सं.] (१) पहिया। उ.—थकित होत रथ चक्र हीन ज्यौं—१-२०१। (२) कुम्हार का चाक। (३) चक्की, जाँता। (४) कोल्हू। (५) पहिए की तरह गोल वस्तु। (६) एक गोल अस्त्र। (७) विष्णु भगवान का विशेष अस्त्र। उ.—ग्राह गहे गज-पति मुकरायौ, हाथ चक्र लै धायौ—१-१०।

मुहा.—चक्र गिरना (पड़ना)—विपत्ति आना।

(८) पानी का भँवर। (९) हवा का चक्कर, बवंडर। उ.—अति विपरीत तृनावर्त आयौ। बात-चक्र मिस ब्रज ऊपर परि नंद-पौरि कैं भीतर धायौ—१०-७७। (१०) समूह, मंडली। (११) दल, झुंड। (१२) सेना का एक व्यूह। (१३) मंडल, प्रदेश। (१४) चकवा पक्षी। (१५) शरीर के ६ कमल। (१६) मंडल, घेरा। (१७) रेखाओं से घिरे हुए खाने। (१८) घुमाव, चक्कर। (१९) दिशा। (२०) धोखा।

चक्रतीर्थ—संज्ञा पुं. [सं.] (१) दक्षिण भारत का एक तीर्थ। (२) नैमिषारण्य का एक कुंड।

चक्रधर, चक्रधारी—वि. [सं.] जो चक्र धारण करे।

संज्ञा पुं.—(१) चक्र धारण करनेवाला। (२) विष्णु। (३) श्रीकृष्ण। (४) जादूगर। (५) साँप।

चक्रपाणि, चक्रपाणी, चक्रपानि, चक्रपानी—संज्ञा पुं. [सं. चक्र + पाणि = हाथ] चक्रधारी विष्णु।

चक्रवाक—संज्ञा पुं. [सं.] चकवा पक्षी।

चक्रवाकि—संज्ञा स्त्री. [सं. चक्रवाक] चकवी, चकई। उ.—रवि-छबि कैधौं निहारि, पंकज बिगसाने। किधौं चक्रवाकि निरखि, पतिहीं रति मानैं—६४२।

चक्रवात—संज्ञा पुं. [सं.] वेग से चक्कर खाती हुई हवा, बवंडर, वातचक्र। उ.—तृनावर्त बिपरीत महाखल सो नृप राय पठायौ। चक्रवात ह्वै सकल घोष मैं रज धुंधर ह्वै धायौ—सारा. ४२८।

चक्रवाल—संज्ञा पुं. [सं.] अंतरिक्ष।

चक्रव्यूह—संज्ञा पुं. [सं.] सेना की एक स्थिति।

चक्रांक—संज्ञा पुं. [सं. चक्र + अंक] चक्र आदि का चिह्न जो वैष्णव शरीर पर गुदाते हैं।

चक्रांकित—वि. [सं.] जिसके चक्र आदि का चिह्न शरीर पर गुदा या अंकित हो।

संज्ञा पुं.—वैष्णवों का एक वर्ग जो विष्णु के चक्र आदि आयुधों के चिह्न शरीर पर गुदाता है।

चक्राकार—वि. [सं. चक्र + आकार] गोल।

चक्राकी—संज्ञा स्त्री. [सं.] मादा हंस।

चक्राट—संज्ञा पुं. [सं.] (१) साँप पकड़नेवाला। (२) साँप का विष झाड़नेवाला। (३) धूर्त।

चक्रायुध—संज्ञा पुं. [सं.] विष्णु।

चक्रिक—संज्ञा पुं. [सं.] चक्र धारण करनेवाला।

चक्रित—वि. [सं. चकित] (१) हैरान, घबराया हुआ। उ.—(क) नंदहिं कहति जसोदा रानी। माटी कैं मिस मुख दिखरायौ, तिहूँ लोक रजधानी। नदी सुमेर देखि चक्रित भई, याकी अकथ कहानी—१०-२५६। (२) चौकन्ना, सशंकित। उ.—(क) गोपाल दुरे हैं माखन खात।.........। उठि अवलोकि ओट ठाढ़े ह्वै, जिहिं बिधि हैं लखि लेत। चक्रित नैन चहूँ दिसि चितवत, और सखनि कौ देत—१०-२८३। (ख) तरु दोउ धरनि गिरे भहराइ। जर सहित अरराइ कै, आघात सब्द सुनाइ। भए चक्रित लोग ब्रज के सकुचि रहे डराइ—३८७। (३) चकित, विस्मित, भौचक्का, भ्रांत। उ.—(क) सुनत नंद जसुमति चक्रित चित, चक्रित गोकुल के नर-नारि—४३०। (ख) देखि बदन चक्रित भई सौंतुष की सपनैं—४३६।

चक्री—संज्ञा पुं. [सं. चक्रिन्] (१) चक्र धारण करनेवाला। (२) विष्णु। (३) चकवा पक्षी। (४) कुम्हार। (५) साँप। (६) जासूस, दूत। (७) तेली। (८) चक्रवर्ती। (९) कौआ। (१०) गदहा। (११) रथी।

चक्षुःश्रवा—संज्ञा पुं. [सं. चक्षुःश्रवस्] साँप जो आँख से सुनता भी है।

चक्षु—संज्ञा पुं. [सं. चक्षुस्] आँख।

चक्षुरिंद्रिय—संज्ञा स्त्री. [सं.] देखने की इंद्रिय, आँख।

चक्षुश्रवा—संज्ञा पुं. [हिं. चक्षुःश्रवा] साँप। उ.—चक्षुश्रवा डर हर ग्रसी ज्यौं छिन द्वितिया बपु रेख—२७५१।

चक्षुष्पति—संज्ञा पुं. [सं.] सूर्य।

चक्षुष्य—वि. [सं.] (१) जो (औषध आदि) नेत्रों को हितकर हो। (२) जो नेत्रों को प्रिय लगे, सुंदर। (३) नेत्र-संबंधी।

संज्ञा पुं.—(१) केतकी, केवड़ा। (२) अंजन।

चख—संज्ञा पुं. [सं. चक्षुस्] आँख। उ.—लटकति बेसरि जननि की, इकटक चख लावै—१०-७२।

संज्ञा पुं. [अनु.] झगड़ा, तकरार, टंटा।

चखचख—संज्ञा स्त्री. [अनु.] बकबक, कहासुनी।

चखचौंध—संज्ञा स्त्री. [हिं. चकचौंध] अधिक प्रकाश के कारण आँखों की झपक या तिलमिलाहट।

चखना—क्रि. स. [सं. चष] स्वाद लेना।

चखपूतरि, चखपुतरी—संज्ञा स्त्री. [हिं. चक्षु + पुतली] (१) आँख की पुतली। (२) अत्यंत प्रिय पात्र।

चखा—वि. [हिं. चखना] (१) चखनेवाला। (२) रस या स्वाद लेनेवाला, रसिक।

चखाचखी—संज्ञा स्त्री. [हिं. चखचख] कहा-सुनी।

चखाना—क्रि. स. [हिं. चखना का प्रे.] स्वाद दिलाना।

चखावहु—क्रि. स. [हिं. चखाना] स्वाद दो, खिलाओ। उ.—कनक कलस रस मोहिं चखावहु—१०५०।

चक्षु—संज्ञा पुं. [सं. चक्षु] आँख।

चखैहौं—क्रि. स. [हिं. चखना] चखाऊँगा, खिलाऊँगा, स्वाद दिलाऊँगा। उ.—यह हित मनै कहत सूरज प्रभु, इहिं कृत कौ फल तुरत चखैहौं—७-५।

चखोड़ा, चखौड़ा—संज्ञा पुं. [हिं. चख + ओड़ा] काजल की लंबी रेखा जो बच्चों को नजर से बचाने के लिए उनके माथे पर लगाई जाती है। उ.—(क) लट लटकनि सिर चारु चखौड़ा, सुठि सोभा सिसु भाल—१०-११४। (ख) भाल तिलक पख स्याम चखौड़ा जननी लेति बलाइ—१०-१३३। (ग) चारु चखौड़ा पर कुंचित कच, छबि मुक्ता ताहू मैं—१०-१४७। (घ) अंजन दोउ दृग भरि दीन्हौ। भ्रुव चारु चखौड़ा कीन्हौ—१०-१८३।

चखौती—संज्ञा स्त्री. [हिं. चखना] चटपटा भोजन।

चगड़—वि. [देश.] चालाक, चतुर, काइयाँ।

चचींडा, चचेंडा—संज्ञा पुं. [सं. चिचिंड] एक तरकारी।

चचेरा—वि. [हिं. चाचा] चाचा से उत्पन्न।

चचोड़ना, चचोरना—क्रि. स. [अनु. या देश.] दाँत से दबा-दबाकर या खींच खींचकर रस चूसना।

चचोरत—क्रि. स. [हिं. चचोड़ना] चूसता है। उ.—सूरदास प्रभु ऊख छाँड़ि कै चतुर चकोरत आग-३०६५।

चचोरैं—क्रि. स. [हिं. चचोड़ना] चूसते हैं। उ.—आपु गयौ तहाँ जहँ प्रभु परे पालनैं, कर गहे चरन अँगुठा चचोरैं—१०-६२।

चच्छवादिक—संज्ञा पुं. [सं. चक्षु + आदिक] चक्षु इत्यादि। उ.—तामैं सक्ति आपनी धरी। चच्छावादिक इंद्री बिस्तरी—३-१३।

चच्छु—संज्ञा पुं. सवि. [सं. चक्षु] नेत्र। उ.—सो अंजन कर ले सुत-चच्छुहिं आँजति जसुमति माइ—४८७।

चट—क्रि. वि. [सं. चटुल = चंचल] झटपट, तुरंत।

संज्ञा पुं. [सं. चित्र, हिं. चित्ती] (१) दाग, धब्बा। (२) घाव का चकत्ता। (३) दोष, ऐब।

संज्ञा [अनु.] (१) किसी कड़ी चीज के टूटने का शब्द। (२) उँगली आदि चटकाने का शब्द।

वि. [हिं. चाटना] चाट पोंछकर खाया हुआ।

मुहा०—चटकर जाना—(१) झटपट खा लेना। (२) दूसरे की चीज हड़प लेना या हजम कर जाना।

चटक—संज्ञा पुं. [सं.] गौरैया पक्षी, चिड़ा।

संज्ञा स्त्री. [सं. चटुल = सुंदर] चमकदमक, कांति। उ.—मुकुट लटकि भ्रकुटी मटक देखौ कुंडल की चटक सौं अटकि परी दृगनि लपट—३०३६।

यौ.—चटक-मटक—बनाव सिंगार, चमकदमक।

वि—चटकीला, चमकीला, मनोहर, आकर्षक। उ.—(क) नटवर बेष बनाँये चटक सौं ठाढ़ो रहै जमुना के तीर नित नव मृग निकट बोलावै—८४०। (ख) ऐसो माई एक कोद को हेत। जैसे बसन कुसुंभ रँग मिलिकै नेकु चटक पुनि स्वेत—३३४६।

संज्ञा स्त्री. [सं. चटुल = चंचल] तेजी, फुर्ती।

क्रि. वि.— तेजी या फुर्ती से, चटपट।

वि. —फुर्तीला, तेज।

वि.—चटपटे या तीक्ष्ण स्वाद का।

संज्ञा पुं.— छपे कपड़ों को धोने की रीति।

चटकई—संज्ञा स्त्री. [हिं. चटक] तेजी, फुर्ती।

चटकत—क्रि. अ. [हिं. चटकना (अनु.)] 'चट' ध्वनि करके टूटता या फूटता है, तड़कता है। उ.—दसहूँ दिसा दुसह दवागिनि, उपजी है इहिं काल। पटकत बाँस, काँस कुस चटकत, लटकत ताल तमाल—६१५।

चटकदार—वि. [हिं. चटक + फ़ा. दार (प्रत्य.)] चटकीला, भड़कीला, चमकीला।

चटकन—संज्ञा पुं. [हिं. चटकना] चटकना, तड़कना।

संज्ञा पुं. [हिं. चटक] चमकदमक, कांति।

चटकना—क्रि. अ. [अनु. चट] (१) 'चट' शब्द करके

टूटना या तड़कना। (२) (कोयले आदि का) चटचट करना। (३) चिड़चिड़ाना, झल्लाना। (४) (उँगली का) चटचट करना। (५) कलियों का फूटना। (६) अनबन या खटपट होना।

संज्ञा पुं. [अनु. चट] तमाचा, थप्पड़।

चटक-मटक—संज्ञा स्त्री. [हिं. चटकना + मटकना] (१) बनाव-सिंगार। (२) नाज-नखरा।

चटका—संज्ञा पुं. [हिं. चट] फुर्ती, जल्दी। उ.—जुग जुग यहै बिरद चलि आयो टेरि कहत हौ याते। मरियत लाज पाँच पतितन में होब कहा चटका ते।

संज्ञा पुं. [सं. चित्र, हिं. चित्ती] चकत्ता।

संज्ञा पुं. [हिं. चाट]। (१) चटपटा या तीक्ष्ण स्वाद। (२) चस्का।

चटकाई—संज्ञा स्त्री. [हिं. चटक] चटकीलापन।

चटकाना—क्रि. स. [अनु. चट] (१) तड़काना, तोड़ना। (२) उँगलियाँ दबाकर चटचट शब्द करना। (३) किसी वस्तु से चटचट शब्द निकालना।

मुहा०—जूतियाँ चटकाना—मारे-मारे फिरना।

(४) अलग या दूर करना। (५) चिढ़ाना।

चटकारा, चटकारे—वि. [सं. चटुल] चमकीला, चटकीला। (२) चंचल, चपल, तेज। उ.—अटपटात अलसात पलक पट मूँदत कबहूँ करत उघारे। मनहुँ मुदित मरकत मनि आँगन खेलत खंजरीट चटकारे—२१३२।

वि. [अनु. चट] स्वाद या रस लेते हुए जीभ चटकाने का शब्द।

मुहा०—चटकारे का—चरपरे या मजेदार स्वाद का। चटकारे भरना—स्वाद लेकर चाटना।

चटकाली—संज्ञा स्त्री. [सं. चटक + आलि] (१) चिड़ियों का समूह। (२) गौरैया का झुंड।

चटकाहट—संज्ञा स्त्री. [हिं. चटकना] (१) चटकने का शब्द या भाव। (२) कलियाँ खिलने का शब्द।

चटकि—क्रि. अ. [हिं. चटकना] बिगड़कर, झगड़कर, अनबन करके। उ.—एक ही संग हम तुम सदा रहति हीं आजु ही चटकि तू भई न्यारी—२२६६।

चटकीला, चटकीलो—वि. [हिं. चटक + ईला (प्रत्य.)] (१) चटक रंग का, भड़कीला। उ.—चटकीला पट लपटानो कटि बंसीबट जमुना के तट नागर नट—८३६। (२) चमकदार। (३) चटपटे स्वाद का।

चटकीलापन—संज्ञा पुं. [हिं. चटकीला + पन (प्रत्य.)] (१) चमकदमक, कांति। (२) चटपटापन।

चटकोरा—संज्ञा पुं. [देश.] एक खिलौना।

चटखना—क्रि. स. [हिं. चटकना] तड़कना, खिलना।

संज्ञा पुं.—तमाचा, थप्पड़।

चटचट—संज्ञा स्त्री. [अनु.] (१) चटकने या टूटने का शब्द। (२) उँगलियाँ चटकाने का शब्द।

चटचटकि—क्रि. अ. [हिं. चटचटाना] चटचटाकर (टूटना, फूटना) या जलना। उ.—झपटि झपटत लपट, फूल-फल चटचटकि, फटत लटलटकि द्रुम द्रुमनवारौ—५९६।

चटचटात—क्रि. अ. [हिं. चटचटाना] चटचट ध्वनि करके (टूटता या फूटता)। उ.—सरन-सरन अब मरत हौं, मैं नहिं जान्यौ तोहिं। चटचटात अँग फटत हैं, राखु राखु प्रभु मोहिं—५८६।

चटचटाना—क्रि. अ. [सं. चट = भेदन] (१) चटचट शब्द करके टूटना या फूटना। (२) लकड़ी-कोयले का चटचट करके जलना।

चटचेटक—संज्ञा पुं. [सं. चेटक] इंद्रजाल।

चटनी—संज्ञा स्त्री. [हिं. चाटना] (१) चाटने की पतली चीज। (२) धनिया-पुदीना आदि की पिसी हुई चरपरी चीज।

मुहा०—चटनी करना (बनाना)—चूर चूर करना।

चटपट—क्रि. वि. [अनु.] झटपट, तुरंत।

मुहा०—चटपट होना—चटपट मर जाना।

चटपटा—वि. [हिं. चाट] चरपरे स्वाद का।

चटपटाइ—क्रि. अ. [हिं. चटपट, चटपटाना] हड़बड़ा कर, जल्दी करके। उ.—कर सौं हाँकि सुतहिं दुलरावति, चटपटाइ बैठे अतुराने—१०-१६७।

चटपटाना—क्रि. अ. [हिं. चटपट] जल्दी करना।

चटपटी—संज्ञा स्त्री. [हिं. चटपट] (१) उतावली, शीघ्रता, हड़बड़ी। (२) घबराहट, आकुलता। (३) उत्सुकता, छटपटाहट। उ.—(क) देखे बिना चटपटी लागति कछू मूड़ पढ़ि पर ज्यौं। (ख) नैनन चटपटी मेरे

तब ते लगी रहति कहौ प्रान प्यारे निर्धन कौ धन —१८१०।

वि. स्त्री. [हिं. चटपटा] चटपटे स्वाद की।

संज्ञा स्त्री.—चटपटे स्वादवाली चीज।

चटर—संज्ञा पुं. [अनु.] चटचट शब्द।

चटवाना—क्रि. स. [हिं. चाटना का प्रे.] (१) चाटने का काम कराना। (२) तलवार पर सान रखाना।

चटशाला, चटसार, चटसाल—संज्ञा स्त्री. [सं. चेतक या हिं. चट्ट=चेला+सार, साल या शाला] (१) बच्चों की पाठशाला, शिक्षालय। उ.—(क) तिनकैं सँग चटसार पठायौ। राम-नाम सौं तिन चित लायौ —७-२। (ख) अब समझीं हम बात तुम्हारी पढ़े एक चटसार—१४८३। (ग) चातक मोर चकोर बदत पिक मनहु मदन चटसार पढ़ावत—१०उ.-५। (२) शाला, समाज, समूह। उ.—भँवर कुरंग काग अरु कोकिल कपटिन की चटसार—२६८७।

चटाइ—क्रि. स. [हिं. चटाना] चटाकर। उ.—गउ चटाइ मम त्वचा उपारौ—६-५।

चटाई—संज्ञा स्त्री. [सं. कट] सींक, ताड़ के पत्तों आदि से बननेवाला बिछावन, साथरी।

संज्ञा स्त्री. [हिं. चाटना] चटाने की क्रिया।

चटाक, चटाख—संज्ञा [अनु.] टूटने या चटकने का शब्द।

संज्ञा पुं. [हिं. चट्टा] चकत्ता, दाग।

चटाका—संज्ञा पुं. [अनु.] टूटने या चटकने का शब्द।

मुहा.—चटाके का—बहुत तेज या कड़ा।

चटाना—क्रि. स. [हिं. चाटना का प्रे.] (१) चटाने-खिलाने का काम करना। (२) चटाना, खिलाना। (३) घूस देना। (४) छुरी आदि पर सान रखाना।

चटापटी—संज्ञा स्त्री. [हिं. चटपट] (१) शीघ्रता। (२) शीघ्र या चटपट मृत्यु।

चटावन—संज्ञा पुं. [हिं. चटाना] बच्चे को पहली बार अन्न चटाने का संस्कार, अन्नप्राशन।

चटावै—क्रि. स. [हिं. चटाना] चटाती है, खिलाती है। उ.—दधिहिं बिलोइ सदमाखन राख्यौ, मिस्री सानि चटावै नँदलाल—१०-८४।

चटिक—क्रि. वि. [हिं. चट] चटपट, तुरंत।

चटियल—वि. [देश.] जिसमें पेड़-पौधे न हों।

चटिया—संज्ञा. पुं. बहु [सं. चेटक] दास, नौकर। उ.—अजामील, गनिकाऽब्याध, नृग, ये सब मेरे चटिया। उनहूँ जाइ सौंह दै पूछौ, मैं करि पठयौ सटिया—१-१९२।

चटिहाट—वि. [देश.] जड़, मूर्ख।

चटी—संज्ञा स्त्री. [हिं. चट्ट=चेला] पाठशाला।

चटु—संज्ञा पुं. [सं.] (१) खुशामद। (२) पेट, उदर।

चटुल—वि. [सं.] (१) चंचल, चपल। (२) चालाक, काँइयाँ। (३) जिसे देखकर सुख मिले, प्रियदर्शन। सुंदर। उ.—चटुल चारु रतिनाथ के हरि होरी है —२४५५ (८)।

चटुला—संज्ञा स्त्री. [संज्ञा] बिजली, चपला।

चटोरा—वि. [हिं. चाट + ओरा (प्रत्य.)] (१) अच्छी चीजें खाने का लालची, स्वादू। (२) लोभी।

चटोरापन—संज्ञा पुं. [हिं. चटोरा + पन (प्रत्य.)] अच्छी चीजें खाने का लोभ या व्यसन।

चट्ट—वि. [हिं. चाटना] (१) चाट-पोंछ कर खाया हुआ। (२) समाप्त, नष्ट।

चट्टा—संज्ञा पुं. [सं. चेटक=दास] चेला, शिष्य।

संज्ञा पुं. [सं. कट] बाँस की चटाई।

संज्ञा पुं. [देश.] सफाचट मैदान।

संज्ञा पुं. [हिं. चकत्ता] शरीर के चकत्ते, दाग।

चट्टान—संज्ञा स्त्री. [हिं. चट्टा] पत्थर का बड़ा टुकड़ा।

चट्टाबट्टा—संज्ञा पुं. [हिं. चट्टू=चाटने का खिलौना + बट्टा=गोला] (१) काठ के छोटे-छोटे खिलौनों का समूह। (२) बाजीगर के छोटे-बड़े गोले।

मुहा.—एक ही थैली के चट्टे-बट्टे—एक ही रुचि, स्वभाव और ढंग के आदमी। चट्टे-बट्टे लड़ाना—कुछ कहकर आपस में झगड़ा कराना।

चट्टी—संज्ञा स्त्री. [देश.] (१) ठिकान, पड़ाव, मंजिल। (२) पैर का एक गहना।

संज्ञा स्त्री. [हिं. चाँटा] (१) हानि। (२) दंड।

चट्टू—वि. [हिं. चाट] चटोरा, स्वादू, लोभी।

संज्ञा पुं. [हिं. चट्टान] पत्थर का खरल।

संज्ञा पुं. [हिं. चाटना] चाटने का खिलौना।

चड़बड़—संज्ञा पुं. [अनु.] बकबक, झकझक।

चड्डा—संज्ञा पुं. [देश.] जाँघ का ऊपरी भाग।

वि.—गावदी, मूर्ख, उजड्ड।

चढ़त—क्रि. अ. [हिं. चढ़ना] (१) चढ़ता है, लगाया या पोता जाता है।

मुहा.—रंग चढ़त—रंग खिलता (है)। उ.—(क) सूरदास कारी कामरि पै, चढ़त न दूजौ रंग—१-३३२। (ख) जो पै चढ़त रंग तौ ऊपर त्यौं पै होब स्यामता सेतु—३३१०।

(२) ऊपर उठता है, उड़ता है। उ.—परनि परेवा प्रेम की (रे) चित लै चढ़त अकास—१-३२५।

संज्ञा स्त्री. [हिं. चढ़ना] किसी देवता पर चढ़ाई वस्तु या भेंट।

चढ़ता—वि. [हिं. चढ़ना] (१) द्वार की ओर उठाया जाता हुआ। (२) आरंभ होता और बढ़ता हुआ।

चढ़न—संज्ञा स्त्री. [हिं. चढ़ना] (१) चढ़ने की क्रिया या भाव। (२) देवता पर चढ़ायी हुई वस्तु।

चढ़ना—क्रि. अ. [सं. उच्चलन, प्रा. उच्चडन, चड्ढन] (१) ऊँचाई की ओर जाना। (२) ऊपर उठना, उड़ना। (३) ऊपर की ओर खिसकना या समिटना। (४) एक वस्तु के ऊपर दूसरी का मढ़ा जाना। (५) उन्नति करना, बढ़ना।

मुहा०—चढ़ (बढ़) कर होना—अधिक श्रेष्ठ या महत्त्व का होना। चढ़ा बढ़ा—श्रेष्ठ। चढ़ बनना—लाभ का अवसर हाथ आना। चढ़ बजना—बात बनना, पौ बारह होना।

(६) (नदी या पानी का) बढ़ना। (७) धावा या चढ़ाई करना। (८) धूमधाम या साज-बाज के साथ कहीं जाना। (९) महँगा हो जाना। (१०) सुर या स्वर तेज होना। (११) नदी के प्रवाह के विरुद्ध चलना। (१२) (नस, डोरी या तार) कस जाना। (१३) देवता या महात्मा को अर्पित करना। (१४) सवारी करना। (१५) वर्ष, मास आदि का आरंभ होना। (१६) ऋण या कर्ज होना। (१७) बही आदि में लिखा जाना। (१८) बुरा असर या प्रभाव होना। (१९) चूल्हे या अँगीठी पर रखा जाना। (२०) पोतना।

मुहा०—रंग चढ़ना—(१) रंग का खिलना या आना। (२) किसी प्रकार का प्रभाव पड़ना।

(२१) किसी झगड़े को अदालत तक ले जाना।

चढ़वाना—क्रि. स. [हिं. चढ़ाना] चढ़ाना।

चढ़ाइ—क्रि. स. [हिं. चढ़ाना] (१) सितार, धनुष आदि में तार या डोरी चढ़ाकर या कसकर। उ.—कुबुधि-कमान चढ़ाइ कोप करि, बुधि-तरकस रितयौ—१-६४। (२) मलकर, लगाकर। उ.—घषि कै गरल चढ़ाइ उरोजनि लै रुचि सौं पय प्याऊँ—१०-४६।

चढ़ाई—क्रि. स. [हिं. चढ़ाना] (१) (सितार, धनुष आदि में) डोरी कसी या कसकर।

मुहा.—लियो धनुप चढ़ाइ—धनुष की डोरी कसी उ.—तुम तौ द्विज, कुल-पूज्य हमारे, हम-तुम कौन लराई? क्रोधवंत कछु सुन्यौ नहीं, लियौ सायक-धनुष चढ़ाई—९-२८।

(२) भेंट की, अर्पित की। उ.—मेरी बलि पर्वतहिं चढ़ाई—१०४१।

संज्ञा स्त्री. [हिं. चढ़ना] (१) चढ़ने की क्रिया या भाव। (२) ऊँचाई की ओर जानेवाली भूमि। (३) लड़ने के लिए प्रस्थान, धावा, आक्रमण। (४) किसी देवी-देवता की पूजा की तैयारी। (५) किसी देवी देवता को पूजा या भेंट चढ़ाने की क्रिया या सामग्री, चढ़ावा, कढ़ाई। उ.—सूर नंद सों कहत जसोदा दिन आये अब करहु चढ़ाई।

चढ़ाउ—संज्ञा पुं. [हिं. चढ़ाव] चढ़ने का भाव।

चढ़ाउतरी—संज्ञा स्त्री. [हिं. चढ़ना+उतरना] (१) बार बार चढ़ने-उतरने की क्रिया। (२) कूद-फाँद।

चढ़ाऊँ—क्रि. स. [हिं चढ़ाना] लगाऊँ, मलूँ, पोतूँ। उ.—तन मन जारौं, भस्म चढ़ाऊँ बिरहिन गुरु उपदेस—२७५४।

चढ़ा-ऊपरी—संज्ञा स्त्री. [हिं. चढ़ना+ऊपर] (१) अधिक ऊँचे चढ़ने का भाव। (२) आगे बढ़ जाने का भाव या प्रयत्न, लागडाँट।

चढ़ाए—क्रि. स. [हिं. चढ़ाना] (१) मढ़वाए, आवरण-रूप में लगाए। उ.—ऊँचे मंदिर कौन काम के कनक-कलस जो चढ़ाए। भक्त भवन मैं हौं जू बसति हौं जद्यपि तृन करि छाए—१-२४३। (२) सवार कराये। उ.—कंचन को रथ आगे कीन्हों हरिहिं चढ़ाए वर कै—२५२६। (३) लगाये हुए, मले हुए। उ.—भुजा बिसाल स्याम सुंदर की चंदन खौरि चढ़ाए री—१३४३। (४) कसे, खींचे।

मुहा.—नैन चढ़ाए—क्रोध से भृकुटी ताने हुए। उ.—नैन चढ़ाए कापर डोलति ब्रज मैं तिनुका तोरि—१०-३१०।

चढ़ाचढ़ी—संज्ञा स्त्री. [हिं. चढ़ना] होड़, लागडाँट।

चढ़ाना—क्रि. स. [हिं. चढ़ना का प्रे.] (१) ऊँचाई पर पहुँचाना। (२) चढ़ने का काम कराना। (३) ऊपर की ओर सिकोड़ना या समेटना। (४) धावा या चढ़ाई करना। (५) भाव बढ़ाना, मँहगा करना। (६) स्वर ऊँचा करना। (७) सितार, धनुष आदि की डोरी कसना या चढ़ाना। (८) देवता या महात्मा को भेंट देना। (९) सवारी कराना। (१०) चटपट पी जाना। (११) ऋण या कर्ज बढ़ाना। (१२) बही आदि में लिखना या टाँकना। (१३) चूल्हे-अँगीठी पर रखना। (१४) लगाना, पोतना। (१५) एक वस्तु को दूसरी पर मढ़ना।

चढ़ानी- संज्ञा स्त्री. [हिं. चढ़ना] चढ़ाई।

चढ़ायो, चढ़ायौ—क्रि. स. [हिं. चढ़ाना] (१) लेप किया, लगाया, मला, पोता। उ.—चोवा चंदन अगर कुमकुमा परिमल अंग चढ़ायौ—१०उ. ६५। (२) किसी देवी-देवता को अर्पित किया। उ.—अब गोकुल भूतल नहिं राखौं मेरी बलि मोको न चढ़ायौ—९४२। (३) लिखा, दर्ज किया, टाँका। उ.—ब्याध, गीध, गनिका जिहिं कागर, हौं तिहिं चिठि न चढ़ायौ—१-१९३। (४) पान किया, पी लिया। उ.—प्रथम जोबन रस चढ़ायौ अतिहिं भई खुमारि—११९६। (५) ऊँचे पर पहुँचाया, ऊपर उठाया।

मुहा०—मूड़ चढ़ायौ—सरपर चढ़ा लिया है, ढीठ कर दिया है। उ—(क) बारे ही तैं मूढ़ चढ़ायौ—३९१। (ख) तैंही उनको मूढ़ चढ़ायौ—१६५८। सीस चढ़ायौ—माथे से लगाया, प्रणाम किया, बंदना की। उ.—तब बसुदेव लियौ कर पलना अपने सीस चढ़ायौ—सारा. ३७४।

(६) किसी के ऊपर चढ़ाकर ऊँचा किया। उ.—ऊखल ऊपर आनि पीठि दै तापर सखा चढ़ायौ—१०-२९२। (७) सवार कराया, सवारी पर बैठाया। उ.—चले बिमान संग गुरु-पुरजन तापर नृप पौढ़ायौ। भस्म अंत तिल अंजलि दीन्हीं, देव विमान चढ़ायौ—९-५०।

चढ़ाव—संज्ञा पुं. [हिं. चढ़ना] (१) चढ़ने का भाव।

यौ.—चढ़ाव-उतार—ऊँचा-नीचा स्थान।

(२) बढ़ने का भाव, वृद्धि, बाढ़, बढ़ती।

यौ०—चढ़ाव-उतार—क्रमशः मोटाई कम होना।

(३) विवाह में दुलहिन को चढ़ाये गये गहने आदि, चढ़ावा। (४) विवाह में दुलहिन को दिये गये गहने आदि पहनने की रीति। (५) वह दिशा जिधर से नदी बहकर आ रही हो।

चढ़ावत—क्रि. स. [हिं. चढ़ाना] (१) सवार कराते हैं। उ.—गैवर मेति चढ़ावत रासभ प्रभुता मेटि करत हिनती—१२२८। (२) मलते हैं, लगाते हैं। उ.—जो पै जोग लिखि पठयौ हमकौ तुमहु न भस्म चढ़ावत—३२१८।

चढ़ावन—संज्ञा स्त्री [हिं. चढ़ाना] (१) देवार्पित करना, चढ़ाने की क्रिया। उ.—दस मुख छेदि सुपक नव फल ज्यौं, संकर-उर दससीस चढ़ावन—९-१३१।

चढ़ावहु—क्रि. स. [हिं. चढ़ाना] अर्पित करो। उ.—जरासंध सिसुपाल नृपति ते जीते हैं उठि अर्घ्य चढ़ावहु—१० उ.-२३१

चढ़ावा—संज्ञा पुं. [हिं. चढ़ना] वे गहने जो दुलहिन को चढ़ाये जाते हैं। (२) वह सामग्री जो देवी-देवता पर चढ़ायी जाती है, पुजापा। (३) टोने-टुटके की चीज। (४) उत्साह, प्रोत्साहन।

चढ़ावैं—क्रि. स. [हिं. चढ़ाना] देवता के अर्पण करें। उ.—कमल-पत्र मालूर चढ़ावैं—७९९।

चढ़ावै—क्रि. स. [हिं. चढ़ाना] पुस्तक, बही, कागज आदि पर लिखे। उ.—अब तुम नाम गहौ मन नागर।·········। मारि न सकै, बिघन नहिं ग्रासै, जम न चढ़ावै कागर—१-६१।

चढ़ाहु—क्रि. स. [हिं. चढ़ाना] चढ़ाओ, सवार कराओ। उ.–कहै भामिनि कंत सौं मोहि कंध चढ़ाहु–१८८६।

चढ़ि—क्रि. अ. [हिं. चढ़ना] (१) चढ़कर, सवार होकर। उ.—बिप्रनि पै चढ़ि कै जौ आवहु। तौ तुम मेरौ दरसन पावहु—६-७। (२) उन्नति करके, बढ़कर।

मुहा.—चढ़ि बाजी—बात बन गयी, पौ बारह हो गयी। उ.—अधर रस मुरली लूटि करावति। आपुन बार बार लै अँचवति जहाँ तहाँ ढरकावति। आजु यहाँ चढ़िबाजी वाकी जोइ कोइ करै बिराजै।

(३) धावा या आक्रमण करके, चढ़ाई करके। उ.—बार सत्रह जरासंध मथुरा चढ़ि आयो—१० उ.३। (४) लगाकर, मलकर, पोतकर।

मुहा.—रंग चढ़ि रह्यौ—रंग आ चुका है, रंग चढ़कर खिल चुका है। उ.—पहले ही चढ़ि रह्यौ स्याम रंग छूटत नहिं देख्यो धोई—३१४५।

चढ़ी—क्रि. स. [हिं. चढ़ना] (नदी आदि) बाढ़ पर आयी, बढ़ गयी। उ.—तुम्हरे बिरह ब्रजनाथ राधिका नैनन नदी बढ़ी। लीने जाति निमेष कूल दोउ एते मान चढ़ी—३४५४।

वि.—ऊपर गयी हुई, ऊँचे स्थान पर पहुँची हुई। उ.—नँदनंदन को रूप निहारत अहनिसि अटा चढ़ी—२७६४।

चढ़े—क्रि. अ. [हिं. चढ़ना] (सवारी पर) बैठकर, सवार होकर। उ.—(क) आनँदमगन सब अमर गगन छाए, पुहुप बिमान चढ़े पहर पहर के—१०-३०। (ख) कहुँ गजराज बाजि सुंगारे तापर चढ़े जु आप—सारा. ६७७।

चढ़ेउ—क्रि. अ. [हिं. चढ़ना] आक्रमण या धावा किया, चढ़ाई की। उ.—सब मिलि करहु कछू उपाव। मार मारन चढ़ेउ बिरहिनि करहु लीनो चाव—२७१५।

चढ़ै—क्रि. अ. [हिं. चढ़ना] (१) नीचे से ऊपर जाती है, चढ़ती है। उ.—एकनि लै मन्दिर चढ़ै, एकनि बिरचि बिगोवै (हो)—१-४४। (२) लेप होता है, पोता या लगाया जाता है।

मुहा.—रंग चढ़ै—किसी वस्तु पर रंग आवे या खिले। उ.—सूरदास स्याम रंग राँचे, फिर न चढ़े रँग रातै—३०२४। (३) (चूल्हे, अँगीठी आदि पर) चढ़ाकर। उ.—एक जेंवन करत त्याग्यौ चढ़ै चूल्है दारि—पृ० ३३६ (८४)

चढ़ैए—क्रि. स. [हिं. चढ़ाना] पोतिए, मलिए, लगाइए। उ.—जिहि सिर केस कुसुम भरि गूँदै तेहि कैसे भसम चढ़ैए—३१२४।

चढ़ैत—संज्ञा पुं. [हिं. चढ़ना + ऐत (प्रत्य.)] चढ़नेवाला।

चढ़ैया—वि. [हिं. चढ़ना + ऐया (प्रत्य.)] चढ़ने या चढ़ानेवाला।

चढ़ैहैं—क्रि. स. [हिं. चढ़ाना] भेंट देंगे, (देवता पर) चढ़ावेंगे। उ.—जा दिन राम रावनहिं मारैं, ईसहिं लै दससीस चढ़ैहैं। ता दिन सूर राम पै सीता सरबस बारि बधाई देहैं—६-८१।

चढ़ैहौं—क्रि. स. [हिं. चढ़ाना] भेंट करूँगा, देवार्पित करूँगा। उ.—दैत्य प्रहारि पाप-फल-प्रेरित, सिर-माला सिव सीस चढ़ैहौं—६-१५७।

चढ़ौ—क्रि. अ. [हिं. चढ़ना] सवार हो। उ.—सूरज दास चढ़ौ प्रभु पाछैं, रेनु पखारन दीजै—६-४१।

चढ़्यौ—क्रि. अ. [हिं. चढ़ना] (१) ऊपर उठा, ऊँचे स्थान को गया।

मुहा०—रवि चढ़्यौ—सूर्य उदय होकर क्षितिज पर आ गया। उ.—रवि बहु चढ़्यौ, रैनि सब निघटी, उचटे सकल किवार—४०८।

(२) सवार हुआ, सवार होना। उ.—दई न जाति खेवट उतराई, चाहत चढ़्यौ जहाज—१-१०८। (३) आक्रमण किया, धावा किया। उ.—(क) गज अहंकार चढ़्यौ दिग बिजयी, लोभ-छत्र-करि सीस—१-१४४। (ख) इंद्रजित चढ़्यौ निज सैन सब साजि कै रावरी सैनहूँ साज कीजै—६-१३६।

चणक—संज्ञा पुं. [सं.] (१) चना। (२) एक ऋषि।

चतुरंग—संज्ञा पुं. [सं.] (१) एक गाना। (२) चतुरंगिणी सेना का प्रधान अधिकारी।

संज्ञा स्त्री.—(१) सेना के चार अंग—हाथी, घोड़ा, रथ और पैदल। (२) चार अंगों से युक्त सेना।

वि.—चार अंगों से युक्त। उ.—मनहुँ चढ़त चतुरंग चमू नभ बाढ़ी है खुर खेह—२८२०।

संज्ञा पुं. [सं.] शतरंज का खेल।

चतुरंगिणी, चतुरंगिनी—वि० स्त्री. [सं. चतुरंगिणी] चार अंगों से युक्त (सेना)।

संज्ञा स्त्री.—सेना जिसमें चारो अंग हों—हाथी, घोड़े, रथ और पैदल।

चतुर—वि. पुं. [सं.] (१) प्रवीण, कुशल, निपुण। (२) फुरतीला, तेज। (३) धूर्त, काँइयाँ।

संज्ञा पुं.—नायक का एक भेद।

चतुरई—संज्ञा स्त्री. [हिं. चतुराई] (१) चतुराई, चतुरता। उ.—(क) मोहन काहैं न उगिलै माटी।......। महतारी सौं मानत नाहीं कपट-चतुरई ठाटी—१०-२५४। (ख) चोर अधिक चतुरई सीखी जाइ न कथा कही—१०-२६१। (२) धूर्तता, काँइयाँपन। उ.—जैसे हरि तैसे तुम सेवक कपट चतुरई साने हो—३००५।

मुहा०—चतुरई छोलत हौ—चालाकी दिखाते हो, धोखा देते हो। उ.—जाहु चले गुन प्रगट सूर-प्रभु कहा चतुरई छोलत हौ। चतुरई तौलत हौ—चालाकी करते हो। उ.—बहुनावकी आजु मैं जानी कहा चतुरई तौलत हौ।

चतुरक—संज्ञा पुं. [सं.] चतुर प्राणी।

चतुरगुन—वि. [सं. चतुर्गुण] चौगुना। उ.—लियौ तँबोल माथ धरि हनुमत, कियौ चतुरगुन गात—६-७४।

चतुरता—संज्ञा स्त्री. [चतुर + ता (प्रत्य.)] (१) चतुर होने का भाव, चतुराई। (२) कुशलता, निपुणता।

चतुरदस—वि. [सं. चतुर्दश] चौदह।

चतुरनमनि—वि. [सं. चतुर + मणि] चतुरों में श्रेष्ठ। उ.—ग्याननमनि, विद्यामनि, गुनमनि, चतुरनमनि, चतुराई—२१७०।

चतुरनीक—संज्ञा पुं. [सं.] चतुरानन, ब्रह्मा।

चतुरभुज—वि. [सं. चतुर्भुज] चार भुजाओंवाला। उ.—बहुरौ धरै हृदय महँ ध्यान। रूप चतुरभुज स्याम सुजान—३-१३।

चतुरमास—संज्ञा पुं. [सं. चातुर्मास, हिं. चतुर्मास] बरसात के चार महीने, चौमासा। उ.—चतुरमास सूरज प्रभु तिहिं ठौर बितायौ—६-७१।

चतुरमुख—संज्ञा पुं. [सं. चतुर्मुख] (१) ब्रह्मा। (२) विष्णु।

वि.—चार मुखवाला।

चतुरसम—संज्ञा पुं. [सं.] एक गंध द्रव्य।

चतुरा—वि. [हिं. चतुर] (१) चतुर। (२) काँइयाँ।

संज्ञा स्त्री.—राधा की एक सखी का नाम। उ.—स्यामा, कामा चतुरा नवला प्रमुदा सुमदा नारि—१५८०।

चतुराइ, चतुराई—संज्ञा स्त्री. [सं. चतुर + हिं. आई (प्रत्य.)] (१) निपुणता, दक्षता। (२) धूर्तता, चालाकी। उ.—(क) मन तोसौं किती कही समुझाइ। नंद नँदन के चरन-कमल भजि, तजि पाखँड चतुराइ—१-३१७। (ख) स्याम फाँसि मन करष्यो हमरो अब समुझी चतुराई—१३४३। (३) काट-कपट। उ.—वृद्ध बयस पूरे पुन्यनि तैं तैं बहुतै निधि पाई। ताहू के खैबे-पीबे कौ कहा करति चतुराई—१०-३२५।

चतुरात्मा—संज्ञा पुं. [सं.] (१) ईश्वर। (२) विष्णु।

चतुरानन—संज्ञा पुं. [सं.] चार मुखवाले, ब्रह्मा। उ.—माया कला ईस चतुरानन चतुर्व्यूह घर रूप—सारा, ३५५।

चतुरापन—संज्ञा पुं. [हिं. चतुरा + पन (प्रत्य.)] (१) चतुराई, होशियारी। (२) धूर्तता।

चतुराय—संज्ञा स्त्री. [हिं. चतुराई] चतुरता, चालाकी। उ.—गह्यौ हरषि भुज ललिता धाय। गयी स्याम की सब चतुराय—२४५४ (८)।

चतुर्—वि. [सं.] चार।

संज्ञा पुं.—चार की संख्या।

चतुर्गति—संज्ञा पुं. [सं.] (१) ईश्वर। (२) विष्णु।

चतुर्गुण, चतुर्गुन—वि. [सं. चतुर्गुण] (१) चारगुना, चौगुना। (२) चार गुणवाला।

चतुर्थ—वि. [सं.] चौथा।

चतुर्थांश—संज्ञा पुं. [सं.] चौथाई भाग।

चतुर्थी—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) चौथी तिथि, चौथ। (२) मृत्यु के चौथे दिन की रस्म, चौथा।

चतुर्दश, चतुर्दस—संज्ञा पुं. [सं. चतुर्दश] चौदह।

चतुर्दशी, चतुर्दसि, चतुर्दसी—संज्ञा स्त्री. [सं.] चौदहवीं तिथि, चौदस।

चतुर्दिक, चतुर्दिश—संज्ञा पुं. [सं. चतुर + दिक्, दिशा] चारो दिशाएँ।

क्रि. वि.—चारो ओर।

चतुर्बाहु—संज्ञा पुं. [सं.] (१) शिव। (२) विष्णु।

चतुर्भुज—वि. पुं. [सं.] चार भुजाओंवाला।

संज्ञा पुं.—विष्णु।

चतुर्भुजा—संज्ञा स्त्री. [सं.] एक देवी।

चतुर्भुजी—संज्ञा पुं. [सं. चतुर्भुज + ई (प्रत्य.)] (१) एक वैष्णव संप्रदाय। (२) इस संप्रदाय का अनुयायी।

वि.—चार भुजावाला।

चतुर्मास—संज्ञा पुं. [सं. चातुर्मास] वर्षा के चार महीने—आषाढ़, सावन, भादों और कुआर, चौमासा।

चतुर्मुख—वि. पुं. [सं.] चार मुखवाला। उ.—चारौं बेद चतुर्मुख ब्रह्मा जस गावत हैं ताको—१-११३।

संज्ञा पुं. [सं.] (१) ब्रह्मा। (२) विष्णु।

क्रि. वि.—चारो ओर।

चतुर्मूर्ति—संज्ञा पुं. [सं.] ईश्वर।

चतुर्युगी—संज्ञा स्त्री. [सं.] उतना समय (४३२०००० वर्ष) जिसमें एक बार चारो युग बीत जायँ।

चतुर्वर्ग—संज्ञा पुं. [सं.] अर्थ, धर्म, काम और मोक्ष।

चतुर्वर्ण—संज्ञा पुं. [सं.] ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र।

चतुर्विद्या—संज्ञा स्त्री. [सं.] चारो वेदों की विद्या।

चातुर्वेद—संज्ञा पुं. [सं.] (१) ईश्वर। (२) चार वेद।

चतुर्वेदी—संज्ञा पुं. [सं. चतुर्वेदिन्] (१) चारो वेद जाननेवाला व्यक्ति। (२) ब्राह्मणों की एक जाति।

चतुर्व्यूह—संज्ञा पुं. [सं.] (१) चार मनुष्यों या पदार्थों का वर्ग अथवा समूह जैसे राम, भरत, लक्ष्मण और शत्रुघ्न या कृष्ण, बलदेव, प्रद्युम्न और अनिरुद्ध। उ.—(क) प्रगट भए दसरथ गृह पूरन चतुर्व्यूह अवतार—सारा. १६०। (ख) माया कला ईस चतुरानन चतुर्व्यूह धरि रूप—सारा. ३५५। (२) विष्णु। (३) योग शास्त्र। (४) चिकित्सा शास्त्र।

चतुष्कोण—वि. [सं.] चौकोर, चौकोना।

चतुष्पद—संज्ञा पुं. [सं.] चार पैरवाला पशु।

वि.—चार पद या चरणवाला।

चतुष्पदी—संज्ञा स्त्री. [सं.] चार पदों का गीत।

चतुस्सम—संज्ञा पुं. [सं.] एक गंध द्रव्य।

चत्वर—संज्ञा पुं. [सं.] (१) चौराहा। (२) चबूतरा, वेदी। (३) घिरा हुआ कोई चौकोर स्थान।

चदरा—संज्ञा पुं. [फ़ा. चादर] दुपट्टा, ओढ़ना।

चदिर—संज्ञा पुं. [सं.] (१) कपूर। (२) चंद्रमा।

चद्दर—संज्ञा स्त्री. [फ़ा. चादर] (१) चदरा, दुपट्टा। (२) किसी धातु का लंबा चौड़ा पत्तर। (३) नदी आदि के बहते हुए पानी का वह अंश, जिसका ऊपरी भाग चादर के समान समतल हो जाता है, जिसमें लहरें नहीं उठतीं और जिसमें फँस जानेवाली नाव या प्राणी कठिनता से बचता है।

चनक—संज्ञा पुं. [सं. चणक] चना। उ.—बेसन दारि चनक करि बान्यो—१००६।

चनकना—क्रि. अ. [हिं. चटकना] फूटना, खिलना।

चनखना—क्रि. अ. [हिं. अनखना] चिढ़ना।

चनदारी—संज्ञा स्त्री. [हिं. चना + दाल] चने की दाल। उ.—मूँग, मसूर, उरद, चनदारी। कनक-फटक धरि फटकि पछारी—३९६।

चनन—संज्ञा पुं. [सं. चंदन] संदल, चंदन।

चनवर—संज्ञा पुं.—ग्रास, कौर।

चनसित—संज्ञा पुं. [सं.] श्रेष्ठ, महान।

चना—संज्ञा पुं. [सं. चणक] एक प्रधान अन्न। उ.—साग चना सँग सब चौराई—२३२१।

मुहा.—चने का मारा मरना—इतना दुबला कि जरा सी चोट से मर जाय। नाकों चने चबवाना—बहुत हैरान करना। लोहे का चना—बहुत कठिन काम। लोहे के चने चबाना—कठिन काम करना।

चपकन—संज्ञा स्त्री. [हिं. चपकना] अंगा, अँगरखा।

चपकना—क्रि. अ. [हिं. चिपकना] जुड़ना, चिपकना।

चपकाना—क्रि. स. [हिं. चिपकाना] जोड़ना।

चपट—संज्ञा पुं. [सं.] चपत, तमाचा, चोट।

चपटना—क्रि. अ. [चिपटना] भिड़ना, जुटना।

चपटा—वि. [हिं. चिपटा] बैठा या धँसा हुआ।

चपटाना—क्रि. स. [हिं. चिपटाना] (१) चिपकाना, सटाना । (२) लिपटाना, आलिंगन करना ।

चपटी—वि. स्त्री. [हिं. चिपटी] धँसी या बैठी हुई ।

चपड़ चपड़—संज्ञा स्त्री. [अनु.] वह शब्द जो खाते-पीते समय कुत्ते के मुँह से निकलता है ।

चपड़ा—संज्ञा पुं. [हिं. चपटा] (१) साफ की हुई लाख का पत्तर । (२) चिपटी वस्तु, पत्तर ।

चपत—संज्ञा पुं. [सं. चपट] (१) हलका तमाचा या थप्पड़ । (२) धक्का, हानि, नुकसान ।

क्रि. अ. [हिं. चपना] कुचल जाता है ।

चपना—क्रि. अ. [सं. चपन=कूटना, कुचलना] (१) कुचल जाना । (२) लज्जित होना । (३) नष्ट होना ।

चपनी—संज्ञा स्त्री. [हिं. चपना] (१) कटोरी । (२) एक कमंडल । (३) हाँडी का ढक्कन । (४) घुटने की हड्डी ।

चपरगट्टू—वि. [हिं. चौपट + गटपट] (१) नाश करने वाला । (२) अभागा । (३) उलझा हुआ ।

चपरना—क्रि. स. [अनु. चपचप] (१) गीली या चिपचिपी वस्तु चुपड़ना या लगाना । (२) मिलाना, सानना, ओतप्रोत करना । (३) भाग जाना, खिसकना ।

क्रि. अ. [सं. चपल] तेजी करना ।

चपरा—संज्ञा पुं. [हिं. चपड़ा] लाख का पत्तर ।

वि.—कहकर मुकर जानेवाला, झूठा ।

अव्य. [हिं. चपरना] हठात्, जैसे हो वैसे ।

चपराना—क्रि. स. [हिं. चपरा] झूठा बनाना ।

चपरास—संज्ञा स्त्री [हिं. चपरासी] (१) चपरासी की पट्टी या पेटी । (२) मुलम्मा करने की कलम ।

चपरासी—संज्ञा पुं. [फ़ा. चप=बायाँ+रास्ता=दाहिनः] चपरास पहननेवाला अरदली या नौकर ।

चपरि—क्रि. स. [हिं. चपरना] (१) किसी गीली या चिपचिपी वस्तु को चुपड़कर । उ.—ऊधौ जाके माथे भागु । अबलन जोग सिखावन आए चेरिहिं चपरि सोहाग—३०९५ (२) मिलाकर, सानकर, ओतप्रोत करके । उ.—विषय चिंता दोऊ हैं माया । दोउ चपरि ज्यों तरुवर छाया—११-६ ।

क्रि. वि. [सं. चपल] फुर्ती से, तेजी से, जोर से । उ.—मवरजु एक चकृत चपरि कर भरि बंदूष पग डारिहै—सा. उ. ४ ।

चपल—वि. पुं. [सं.] (१) चंचल, अस्थिर, तेज, गतिवान । उ.—(क) रथ तें उतरि अवनि आतुर ह्वै, चले चरन अति धाए । मनु संचित भू-भार उतारन चपल भए अकुलाए—१-२७३ । (क) चपल समीर भयो तेहि रजनी भीजे चारों यामा—१० उ. ६६ । (२) क्षणिक । (३) हड़बड़ी मचानेवाला । (४) अवसर पर न चूकनेवाला, बहुत चालाक ।

संज्ञा पुं.—(१) पारा । (२) मछली । (३) चातक । (४) एक पत्थर । (५) चौर नामक सुगंधित द्रव्य । (६) एक चूहा । (७) राई ।

चपलता—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) चंचलता, तेजी, जल्दी । (२) चालाकी, ढिठाई, धृष्टता ।

चपला—वि. स्त्री. [सं.] फुरतीली, तेज ।

संज्ञा स्त्री.—(१) लक्ष्मी । (२) बिजली । (३) चरित्रहीन स्त्री । (४) पीपल । (५) जीभ । (६) भाँग । (७) मदिरा ।

चपलाई—संज्ञा स्त्री. [सं. चपल] चपलता, चंचलता । उ.—(क) मंजुल तारनि की चपलाई, चित चतुराई करषै री—१०-१३७ । (ख) कुंडल किरनि निकट भूलोचन आरति मीन दृग सम चपलाई—१३३८ । (ग) खंजन मीन मृगज चपलाई नहिं पटतर एक सैन—१३४६ ।

चपलाना—क्रि. अ. [सं. चपल] हिलना-डोलना ।

क्रि. स.—हिलाना-डोलाना, चलाना ।

चपाक—क्रि. वि. [हिं. चटपट] चटपट । अचानक ।

चपाना—क्रि. स. [हिं. चपना] (१) जोड़ना, फँसाना । (२) दबवाना । (३) लज्जित करना, छिपाना ।

चपेट—संज्ञा स्त्री. [हिं. चपाना = दबाना] (१) धक्का, आघात । (२) थप्पड़, तमाचा । (३) संकट, दबाव ।

चपेटना—क्रि. स. [हिं. चपेट] (१) दबाना, दबोचना । (२) मारते-पीटते हुए पीछे खदेड़ना । (३) फटकारना, डाँटना ।

चपेरना—क्रि. स. [हिं. चापना] दबाना ।

चपै—क्रि. अ. [हिं. चपना] दबे, प्रभावित हो। उ.—करनि सिंह तुम्हरी घरी, कैसे चपै सृगाल—१० उ.—८।

चप्पा—संज्ञा पुं. [सं. चतुष्पाद, प्रा. चउप्पाव] (१) चौथाई भाग। (२) थोड़ा भाग। (३) चार अंगुल या एक बालिस्त जगह। (४) थोड़ी जगह।

चप्पी—संज्ञा स्त्री. [हिं. चपना = दबना] धीरे धीरे पैर दाबने की क्रिया।

चप्यौ—क्रि. अ. [हिं. चपना] दब गया, कुचल गया। उ.—बृच्छ दोउ धर परे देखे, महरि कीन्ह पुकार। अबहिं आँगन छाँड़ि आई, चप्यौ तरु की डार—३८७।

चबक—संज्ञा स्त्री. [देश.] टीस, चिलक।

वि. [हिं. चपना] दब्बू, कायर, डरपोक।

चबकना—क्रि. अ. [हिं. चबक] टीसना, चिलकना।

चबकी—संज्ञा स्त्री. [देश.] परांदा, चँवरी।

चबाइ—वि. पुं. [हिं. चबाव] चुगलखोर। उ.—चंचल, चपल, चबाइ, चौपटा, लिए मोह की फाँसी—१-१८६।

चबाइन—संज्ञा स्त्री. [हिं चबाव] बदनामी की चर्चा, निंदा। उ.—दासी तृष्ना भ्रमत टहल-हित, लहत न छिन बिश्राम। अनाचार-सेवक सौं मिलिकै, करत चबाइनि काम—१-१४१।

चबाई—वि. पुं. [हिं. चबाव] इधर की उधर लगानेवाला, चुगलखोर। उ.—(क) माधौ जू, मोतैं और न पापी। घातक, कुटिल, चबाई, कपटी, महाक्रूर, संतापी—१-१४०। (ख) सुनहु कान्ह बलभद्र चबाई जनमत ही कौ धूत—१०-२१५। (ग) सूरदास बल बड़ौ चबाई तैसेहिं मिले सखाऊ—४८१।

चबाउ—संज्ञा पुं. [हिं. चौबाई, चबाव] (१) चारो ओर फैलनेवाली चर्चा, प्रवाद। (२) बुराई या निंदा की चर्चा। उ.—नैनन तैं यह भई बड़ाई। घर घर यहै चबाउ चलावत हम सौं भेंट न माई। (३) पीठ पीछे की निंदा।

चबात—क्रि. स. [हिं. चबाना] चबाते हुए।

मुहा०—दाँत चबात—क्रोध प्रदर्शित करते हुए। उ.—दाँत चबात चले जमपुर तैं धाम हमारे कौं—१-१५१।

चबाना—क्रि. स. [सं. चर्वण] (१) दाँत से कुचलना।

मुहा.—चबा चबाकर बात करना—स्वर बनाकर बोलना। चबे को चबाना—किया हुआ काम फिर से करना।

(२) दाँत से काटना, दरदराना।

चबारा—संज्ञा पुं. [हिं. चौबारा] ऊपरी बैठक।

चबाव, चबावन—संज्ञा पुं. [हिं. चबाव] (१) चर्चा, प्रवाद। (२) निंदा या बुराई की चर्चा। (३) चुगलखोरी।

चबूतरा—संज्ञा पुं. [हिं. चौतरा] चौतरा।

चबेना—संज्ञा पुं. [हिं. चबाना] भुना हुआ सूखा अनाज, भूँजा, चर्वण। उ.—एक दूध, फल, एक भ्रगरि चबेना लेत, निज निज कामरी के आसननि कीने—४६७।

चबेनी—संज्ञा स्त्री. [हिं. चबाना] (१) बरातियों को दिया जानेवाला जलपान। (२) जलपान का मूल्य।

चब्भू, चब्बू—वि. [हिं. चबाना] बहुत खानेवाला।

चभो—संज्ञा पुं [हिं. चभकना] दूसरे का दिया हुआ गोता, डुब्बी, डुबकी।

चभक—संज्ञा [अनु.] पानी में डूबने का शब्द।

संज्ञा स्त्री. [देश.] डंक मारने की क्रिया।

चभड़चभड़—संज्ञा स्त्री. [अनु.] (१) खाते-पीते समय मुँह का शब्द। (२) कुत्ते-बिल्ली का पानी पीने का शब्द।

चभना—क्रि. अ. [हिं चाभना] कुचला जाना।

चभाना—क्रि. स. [हिं. चाभना] खिलाना।

चभोक—वि. [देश.] मूर्ख, गावदी, बेवकूफ।

चभोकना, चभोरना—क्रि. स. [हिं. चुभकी] (१) गोता देना, डुबोना। (२) भिगोना, तर करना।

चभोरी—वि. [हिं. चभोरना] भीगी हुई, तर। उ.—रोटी, बाटी, पोरी, झोरी। इक कोरी इक घीव चभोरी—३९६।

चभोरे—वि. [हिं. चभोरना] भीगे हुए, तर, रस में डूबे हुए। उ.—(क) मीठे अति कोमल हैं नीके।

ताते, तुरत चभोरे घी के—३६६ । (ख) वेवर अति घिरत चभोरे। लै खाँड उपर तर बोरे—१०-१८३ ।

चमंक—संज्ञा पुं. [हिं. चमक] (१) प्रकाश । (२) कांति ।

चमंकना—क्रि. अ. [हिं. चमकना] जगमगाना ।

चमक—संज्ञा स्त्री. [सं. चमत्कृत] (१) प्रकाश, ज्योति, रोशनी । (२) कांति, आभा, दमक ।

मुहा०—चमक देना (मारना)—चमकना । चमक लाना—चमकाना ।

(३) कमर आदि की चिक या झटका ।

चमकत—क्रि. अ. [हिं. चमकना] चमकते हुए, ज्योतियुक्त । उ.—रिषि-हग चमकत देखत भई—९-३ ।

चमकताई—संज्ञा स्त्री. [हिं. चमक] कांति, आभा, दमक । उ.—हँसति दसननि चमकताई बज्रकन रुचि पाँति—१३५५ ।

चमक दमक—संज्ञा स्त्री. [हिं. चमक + दमक (अनु.)] आभा, कांति, तड़क-भड़क । उ.—मिटि गई चमक दमक अँग-अँग की,मति अरु दृष्टि हिरानी-१-३०५।

चमकदार—वि. [हिं. चमक + फ़ा. दार] चमकीला ।

चमकना—क्रि. अ. [हिं. चमक] (१) जगमगाना, प्रकाशपूर्ण होना । (२) झलकना, दमकना । (३) प्रसिद्ध होना, उन्नति करना । (४) बढ़ना, बढ़ती पर होना । (५) चौंकना, भड़कना । (६) झटपट खिसक जाना । (७) एक बारगी दर्द होने लगना । (८) मटकना, उँगलियाँ मटकाकर भाव बताना । (९) क्रोध प्रकट करना (१०) लड़ाई-झगड़ा होना । (११) कमर में चिक आना या झटका लगना ।

चमकनी—वि. स्त्री [हिं. चमकना] (१) जल्दी चिढ़ने या भड़कनेवाली । (२) हाव-भाव बतानेवाली ।

चमकाति—क्रि. स. [हिं. चमकाना] चमकाती है, कांति लाती है । उ.—तनक कटि पर कनक - करधनि, छीन छवि चमकाति—१०-१८४ ।

चमकाना—क्रि. स. [हिं. चमकना] (१) चमकीला करना, झलकाना । (२) साफ या उजला करना । (३) भड़काना, चौंकाना । (४) चिढ़ाना, खिझाना । (५) उँगली मटका कर भाव बताना ।

चमकारा—संज्ञा पुं. [सं. चमत्कार] चमक, प्रकाश ।

चमकारी—संज्ञा स्त्री. [हिं. चमकारा] चमक, प्रकाश । उ.—अधर बिंब दसननि की सोभा दुति दामिनि चमकारी ।

वि.—चमकीली, प्रकाशयुक्त, आभावाली ।

चमकावै—क्रि. स. [हिं. चमकाना] चमकता है । उ.—तरपि तरपि चपला चमकावै—१०४६ ।

चमकि—क्रि. अ. [हिं. चमक] (१) चमक कर, जगमगाकर, प्रकाशयुक्त होकर । उ.—तृष्ना-तड़ित चमकि छनहीं छन, अह-निसि यह तन जारौ—१-२०६ । (२) फुरती से खिसक कर, झटपट भाग कर । उ.—सखा साथ के चमकि गये सब गह्यौ स्याम कर धाइ । औरनि जानि जान मैं दीन्हौं, तुम कहँ जहु पराइ—१०-३१४ । (३) चौंके कर, भड़क कर । उ.—चमकि गये बीर सब चकाचौंधी लगीं चितै डरपै असुर घटा घेटा—२५६१ ।

चमकी—संज्ञा स्त्री. [हिं. चमक] रुपहले-सुनहले तारों के गोल-चौकोर तारे या सितारे ।

चमकीला—वि. [हिं. चमक + ईला (प्रत्य.)] (१) जिसमें चमक हो, चमकदार । (२) भड़कीला ।

चमकै—क्रि. अ. [हिं. चमकना] चमकती है, जगमगाती है, आलोकित होती है । उ.—निसि अँधेरी, बीजु चमकै, सघन बरसै मेह—१०-५ ।

चमक्यौ—क्रि. अ. [हिं. चमकना] मटकने लगा । उ.—एक सखा हरि त्रिया रूप करि पठै दियौ तिन पास ।········। पीतांबर जिनि देहु स्याम को यह कहि चमक्यौ ग्वाल—२४१६ ।

चमगादड़—संज्ञा पुं. [सं. चर्मचटका, पं. चमचिचड़ी, हिं. चमगिदड़ी] एक पक्षी जो दिन में नहीं निकलता, रात में उड़ता है ।

चमचम—संज्ञा स्त्री. [देश.] एक बंगाली मिठाई ।

क्रि. वि.—झलक या कांतिसहित ।

चमचमाति—क्रि. अ. [हिं. चमचमाना] चमकती है, झलकती है । उ.—(क) चपला चमचमाति चमकि नभ झहरात राखिले क्यों न ब्रज नंद तात—९६० । (ख) चपला अति चमचमाति ब्रज जन सब डर डरात टेरत सिसु पिता-मात ब्रज गलबल ।

चमचमाना—क्रि. अ. [हिं. चमक] चमकना, प्रकाशित होना, झलकना, दमकना।

क्रि. स.—चमक-दमक लाना, झलकाना।

चमचा—संज्ञा पुं. [फ़ा.] (१) चम्मच। (२) चिमटा।

चमची—संज्ञा स्त्री, [हिं. चमचा] (१) छोटा चम्मच। (२) आचमनी। (३) चिमटी।

चमजुई, चमजोई—संज्ञा स्त्री. [सं. चर्मपूका] (१) एक कीडा। (२) पीछा न छोड़नेवाली वस्तु या पात्र।

चमटना—क्रि. स. [हिं. चिमटना] चिपटना, लिपटना।

चमड़ा—संज्ञा पुं. [सं. चर्म] (१) चर्म, त्वचा। (२) खाल, चरसा। (३) छाल, छिलका।

चमड़ी—संज्ञा स्त्री. [हिं. चमड़ा] (१) चर्म। (२)खाल।

चमत्करण—संज्ञा पुं. [सं.] चमत्कार लाने की क्रिया।

चमत्कार—संज्ञा पुं. [सं.] (१) आश्चर्य, विस्मय। (२) अद्भुत व्यापार। (३) अनूठापन, विलक्षणता।

चमत्कारक—वि. [सं.] अनूठा, विलक्षण।

चमत्कारी—वि. [सं.] (१) अद्भुत, विलक्षण। (२) विलक्षण काम करनेवाला, करामाती।

चमत्कृत—वि. [सं.] विस्मित, चकित।

चमत्कृति—संज्ञा स्त्री. [सं.] विस्मय, आश्चर्य।

चमन—संज्ञा पुं. [फ़ा.] (१) हरी-भरी क्यारी। (२) फुलवारी। (३) गुलजार या रौनकदार बस्ती।

चमर—संज्ञा पुं. [सं.] (१) सुरा गाय। (२) सुरा गाय की पूँछ का बना चँवर या चामर। उ.—चारु चक्र-मनि खचित मनोहर चंचल चमर पताका—२५६६। (३) एक दैत्य।

चमरख—संज्ञा स्त्री. [हिं. चाम + रखा] चरखे की गुडियों में लगाने की चकती।

संज्ञा स्त्री.—बहुत दुबली-पतली, सूखी-साखी।

चमरशिखा, चमरसिखा—संज्ञा स्त्री. [सं. चामर + शिखा] घोड़ों की कलगी।

चमरी—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) सुरा गाय। (२) चँवरी, चामर। (३) मंजरी।

चमरौधा—संज्ञा पुं. [हिं. चाम] एक भद्दा जूता।

चमला—संज्ञा पुं. [देश.] भीख माँगने का पात्र।

चमस—संज्ञा पुं. [सं.] एक यज्ञपात्र, चम्मच।

चमाऊ—संज्ञा पुं. [सं. चामर] चमर, चँवर।

चमाक—संज्ञा स्त्री. [हिं. चमक] कांति, प्रकाश।

चमाकना—क्रि. अ. [हिं. चमकना] चमकना।

चमाचम—वि. [हिं. चमक] चमकता हुआ।

चमार—संज्ञा पुं. [सं. चर्मकार] एक जाति जो चमड़े का काम बनाती है।

चमारनी, चमारिन, चमारी—संज्ञा स्त्री. [हिं. चमार] (१) चमार की स्त्री। (२) चमार का काम।

चमू—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) सेना, फौज। उ.—(क) सत्रह बार फेर फिरि आयौ हरि सब चमू सँहारी—सारा. ५६८। (ख) सखा री पावस सैन पलान्यो। ...... । दसहु दिसा तें धूम देखियत कंपति है अति देह। मनहु चलत चतुरंग चमू नभ बाढ़ी है खुर खेह—२८२०। (२) सेना जिसमें ७२६ हाथी, इतने ही रथ, तिगुने सवार और पँचगुने पैदल हों।

चमूर—संज्ञा पुं. [सं.] (१) सिपाही। (२) सेनापति।

चमेलिया—वि. [हिं. चमेली (१) पीले रंग का। (२) चमेली की गंध से युक्त।

चमेली—संज्ञा स्त्री. [सं. चंपकवेलि] एक झाड़ी या लता जिसके फूल सफेद या पीले होते हैं।

चमोटी—संज्ञा स्त्री. [हिं. चाम + औटा (प्रत्य.)] (१) चाबुक, कोड़ा। उ.—माखन-चोर री मैं पायौ।...। बारबार हौं ढूँका लागी मेरी घात न आयौ। नोईं नेत की करौं चमोटी घूँघट में डरवायौ ६०६। (२) पतली छड़ी, बेंत।

चम्मच—संज्ञा पुं. [फ़ा. सं. चमस] हल्का चमचा।

चय—संज्ञा पुं. [सं.] (१) समूह, ढेर, राशि। (२) टीला। (३) गढ़, किला। (४) चहारदीवारी। (५) नींव। (६) चबूतरा। (७) चौकी, ऊँचा आसन।

चयन—संज्ञा पुं. [सं.] (१) इकट्ठा करने का कार्य, संग्रह, संचय। (२) चुनने का काम, चुनाई। (३) क्रम से लगाने की क्रिया।

संज्ञा पुं. [हिं. चैन] चैन, आराम, सुख। उ.—त्रिविध पवन मन हरष दयन। सदा बहत न विहरत चयन—२३८७।

चयनशील—वि. [सं. चयन + शील (प्रत्य.)] संग्रही।

चयना--क्रि. स. [सं. चयन] संचय या इकट्ठा करना।

चयनिका—संज्ञा स्त्री. [सं.] चुनी हुई वस्तुओं, बातों या रचनाओं का संग्रह।

चर—संज्ञा पुं. [सं.] (१) गुप्त रूप से कार्य करने को नियुक्त व्यक्ति। (२) कौड़ी। (३) दलदल।

वि. [सं.] (१) आप चलनेवाला, जंगम। उ.—जब हरि मुरली अधर धरत। थिर चर, चर थिर, पवन थकित रहैं, जमुना जल न बहत—६२०। (२) अस्थिर, एक स्थान पर न रहनेवाला। (३) भोजन करनेवाला।

संज्ञा पुं. [अनु.] कागज-कपड़ा फटने का शब्द।

चरई—संज्ञा स्त्री. [हिं. चारा] पशुओं को पानी पिलाने का पक्का गहरा गड़ा या छोटा हौज।

चरक—संज्ञा पुं. [सं.] (१) दूत, चर। (२) जासूस। (३) पथिक, मुसाफिर। (४) भिखारी।

संज्ञा स्त्री.—एक प्रकार की मछली।

चरकटा—संज्ञा पुं. [हिं. चारा+काटना] (१) पशु का चारा काटनेवाला आदमी। (२) तुच्छ मनुष्य।

चरकना—क्रि. अ.—टूटना, फूटना, दरकना।

चरका—संज्ञा पुं. [फ़ा. चरक] (१) हलका घाव, जख्म। (२) दागने का चिन्ह। (३) हानि, नुकसान।

चरख—संज्ञा पुं. [फ़ा. चर्ख] (१) पहिया, चाक। (२) खराद (३) रेशम आदि लपेटने का ढाँचा। (४) चरखा। (५) तोप लादने की गाड़ी। (६) एक शिकारी चिड़िया।

चरखा—संज्ञा पुं. [फ़ा. चर्ख] (१) गोल चक्कर, चरख। (२) सूत कातने का यंत्र। (३) कुएँ से पानी निकालने का रहट। (४) सूत लपेटने की चरखी। (५) गराड़ी। (६) बुढ़ापे या कमजोरी के कारण बहुत शिथिल शरीर। (७) झगड़े या झंझट का काम।

चरखी—संज्ञा स्त्री. [हिं. चरखा] (१) घूमनेवाली वस्तु। (२) छोटा चरखा। (३) कपास की ओटनी। (४) कुएँ से पानी खींचने की गराड़ी। (५) कुम्हार का चाक। (६) एक आतशबाजी।

चरग—संज्ञा पुं. [फ़ा.] एक शिकारी चिड़िया।

चरचना—क्रि. स. [सं. चर्चन] (१) देह में चंदन आदि लगाना। (२) लेपना, पोतना। (३) अनुमान करना। (४) पहचानना।

क्रि. स. [सं. अर्चन] पूजा करना, पूजना।

चरचरा—संज्ञा पुं. [अनु.] एक चिड़िया।

वि. [हिं. चिड़चिड़ा] चिड़चिड़े स्वभाव का।

चरचराना—क्रि. अ. [अनु. चरचर] (१) चरचर शब्द करके जलना, टूटना या फटना। (२) घाव आदि का दर्द करना या चर्राना।

चरचराहट—संज्ञा स्त्री. [हिं. चरचराना+हट (प्रत्य.)] (१) दर्द करने या चर्राने का भाव। (२) चरचर करके फटने या टूटने का शब्द।

चरचा - संज्ञा स्त्री. [सं. चर्चा] जिक्र, वर्णन। उ.—हरि-जन हरि-चरचा जो करैं। दासी-सुत सो हिरदै धरै—७-८।

चरचारी—संज्ञा पुं. [हिं. चरचा] (१) चर्चा या वर्णन करनेवाला। (२) निंदा या शिकायत करनेवाला।

चरचि—क्रि. स. [हिं. चरचना] (१) देह में चंदन, अरगजा आदि सुगंधित पदार्थ लगाकर। उ.—बाजत ताल-मृदंग जंत्र-गति, चरचि अरगजा अंग चढ़ाई—१०-१६। (२) पूजकर। उ.—सूरदास मुनि चरन चरचि करि सुर लोकनि रुचि मान।

चरचित—वि. [सं. चर्चित] लगाया या पोता हुआ, लेपा हुआ। उ.—चरचित चंदन नील कलेवर, बरसत बूँदन सावन—८-१३।

चरच्यौ—क्रि. स. [हिं. चरचना] चंदन आदि लगाया। उ.—चंदन अंग सखिन कैं चरच्यौ—३६६।

चरज—संज्ञा पुं. [फ़ा. चरग़] चरख नामक पक्षी।

चरजना—क्रि. अ. [सं. चर्चन] (१) बहकाना, भुलावा देना। (२) अनुमान करना, अंदाज लगाना।

चरट—संज्ञा पुं. [सं.] खंजन पक्षी।

चरण—संज्ञा पु. [सं.] (१) पैर, पग।

मुहा०—चरण देना—पैर रखना। चरण पड़ना—आगमन होना, कदम जाना।

(२) बड़ों का संग, बड़ों की समीपता। उ.—जहाँ जहाँ तुम देह धरत हौ तहाँ तहाँ जनि चरण (चरन) छुड़ायहु। (३) छंद या श्लोक का एक पद। (४) चौथाई भाग। (५) मूल, जड़। (६) गोत्र।

(७) क्रम। (८) घूमने का स्थान। (९) सूर्य आदि की किरण। (१०) गमन, जाना। (११) चरना।

चरणचिह्न—संज्ञा पुं. [सं.] (१) धूल आदि पर पड़ा पैर का निशान। (२) चरण के आकार का चिह्न जिसका पूजन होता है।

चरणतल—संज्ञा पुं० [सं.] पैर का तलुवा।

चरणदासी—संज्ञा स्त्री. [सं. चरण+दासी] (१) स्त्री, पत्नी। (२) जूता, पनही।

चरणपादुका—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) खड़ाऊँ, पाँवड़ी। (२) चरणचिह्न जिसका पूजन होता है।

चरणपीठ—संज्ञा पुं. [सं.] खड़ाऊँ, पाँवड़ी।

चरणामृत—संज्ञा पुं. [सं.] (१) वह जल जिसमें किसी महात्मा आदि के चरण धोये गये हों। (२) दूध, दही, घी, शकर और शहद का घोल जिसमें किसी देवमूर्ति को स्नान कराया गया हो।

चरणायुध—संज्ञा पुं. [सं.] मुरगा।

चरणोदक—संज्ञा पुं. [सं.] चरणामृत।

चरत—क्रि. स. [सं. चर=चरना] (पशु आदि) चरते हैं। उ.—अजानायक मगन क्रीड़त, चरत बारंबार —१-३२१।

संज्ञा पुं. [देश.] एक बड़ा पक्षी।

चरता—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) चलने का भाव। (२) पृथ्वी।

चरतिं—क्रि. स. [हिं. चरना] चरती हैं, (चारा आदि) खाती हैं। उ.—जहँ जहँ गाइ चरतिं ग्वालनि संग, तहँ तहँ आपुन धायो—४११।

चरती—संज्ञा पुं. [हिं. चरना] व्रत न करनेवाला।

चरन—संज्ञा पुं. [सं. चरण] (१) चरण, पैर। (२) बड़ों का संग-साथ या सामीप्य। उ.—जहाँ जहाँ तुम देह धरत हौ तहाँ तहाँ जनि चरन छुड़ायहु। (३) छंद का एक पद।

चरनदासी—संज्ञा स्त्री. [सं. चरणदासी] जूता।

चरना—क्रि. स. [सं. चर] पशु का घास खाना।

क्रि. अ.—घूमना-फिरना, विचरना।

संज्ञा पुं. [सं. चरण] काछा।

चरनायुध—संज्ञा पुं. [सं. चरणायुध] मुरगा।

चरनारबिंद—संज्ञा पुं. [सं. चरण+अरविंद] चरण-कमलों को। उ.—सूर भज चरनारबिंदनि, मिटै जीवन-मरन—१-३०६।

चरनि—संज्ञा स्त्री. [सं. चर=गमन] चाल, गति।

चरनी—संज्ञा स्त्री. [हिं. चरना] (१) चरने का स्थान, चरी, चरागाह। (२) चारा देने की नाँद। (३) पशुओं का चारा या आहार। उ.—कमल बदन कुँभिलात सबन के गौवन छाँड़ी चरनी—३३३०। (४) चरने की क्रिया। उ.—गौवन छाँड़ी तृन की चरनी।

चरनोदक—संज्ञा पुं. [सं. चरण+उदक=जल] चरणामृत। उ. (क) जाको चरनोदक सिव सिर धरि तीनि लोक हितकारी—१-१५। (ख) चरन धोइ चरनोदक लीन्हौं—१-२३६।

चरपट—संज्ञा पुं. [सं. चर्पट] (१) चपत, तमाचा। (२) चोर, उचक्का। (३) एक छंद।

चरपर, चरपरा—वि. [अनु.] स्वाद में तीक्ष्ण या तीता। उ.—मीठे चरपर उज्ज्वल कौरा। हौंस होइ तौ ल्याऊँ औरा—३९६।

वि. [सं. चपल] चुस्त, तेज, फुर्तीला।

चरपराना—क्रि. अ. [हिं. चरचर] घाव या जख्म का चर्राना या पीड़ा देना।

चरपराहट—संज्ञा स्त्री. [हिं. चरपरा] (१) स्वाद की तीक्ष्णता। (२) घाव की जलन। (३) ईर्ष्या।

चरफरा—वि. [हिं. चरपरा] तीक्ष्ण स्वाद का।

चरफराना—क्रि. अ. [अनु.] तड़पना।

चरब—वि. [फ़ा. चर्ब] तेज, तीखा।

यौ.—चरब जवानी—खुशामद करना।

चरबन—संज्ञा पुं. [सं. चर्वण] भुना अन्न, चबेना।

चरबाँक, चरबाक—वि. [हिं. चरब] (१) चतुर, चालाक, होशियार। (२) निर्भय, निडर, शोख।

मुहा०—चरबाँक दीदा—(१) चंचल दृष्टिवाला। (२) ढीठ, निडर, शोख।

चरबा—संज्ञा पुं. [फ़ा. चरबः] नकल, खाका।

मुहा०—चरबा उतारना—नकल करना।

चरबी—संज्ञा स्त्री. [फ़ा.] शरीर का चिकना गाढ़ा पदार्थ जो मांस से बनता है, मेद।

मुहा०—चरबी चढ़ना—मोटा होना। चरबी छाना– (१) मोटा होना। (२) गर्व से अंधा होना।

चरम—वि. [सं.] सबसे बढ़ा-चढ़ा, चोटी का।
संज्ञा पुं०—(१) पश्चिम। (२) अंत।
संज्ञा पुं. [सं. चर्म] चमड़ा।

चरमगिरि—संज्ञा पुं. [सं.] अस्ताचल।

चरमर—संज्ञा पुं. [अनु.] चीमड़ वस्तु के दबने या मुड़ने पर होनेवाला शब्द।

चरमराना—क्रि. अ. [अनु.] चरमर शब्द होना।

चरवाँक—वि. [हिं. चरवाँक] (१) चतुर। (२) निडर।

चरवा—संज्ञा पुं. [देश.] मुलायम चारा।

चरवाई—संज्ञा स्त्री. [हिं. चराना] (१) चराने का काम। (२) चराने की मजदूरी।

चरवाना—क्रि. स. [हिं. चराना] चराने का काम कराना।

चरवारे—संज्ञा पुं. [हिं. चरवाहा] चरवाहा, चौपायों का रक्षक। उ.—राजनीति जानौ नहीं, गो-सुत चरवारे—२-२३८।

चरवाहा—संज्ञा पुं. [हिं. चरना+वाहा=वाहक] पशुओं को चरानेवाला, चौपायों का रक्षक।

चरवाही—संज्ञा स्त्री. [हिं. चरवाहा] (१) पशुओं को चराने का काम। (२) चराने की मजदूरी।

चरवैया—संज्ञा पुं. [हिं. चरना] चरनेवाला पशु आदि। (२) चरानेवाला, चरवाहा।

चरबो—संज्ञा स्त्री. [हिं. चरना] खाने, पीने आदि की क्रिया। उ.—इन गैयन चरबो छाँड़ौ है जो नहिं लाल चरैहैं—३४३६।

चरस, चरसा—संज्ञा पुं. [सं. चर्म] (१) चमड़े का थैला। (२) चमड़े का पुर या मोट। (३) गाँजे के पेड़ का गोंद जो मादक होता है।
संज्ञा पुं. [फ़ा. चर्ज] बनमोर नामक पक्षी।

चरसिया, चरसी—संज्ञा पुं. [हिं. चरस + इया ई,(प्रत्य.)] (१) चरस से पानी खींचनेवाला। (२) चरस नामक मद पीनेवाला।

चरहिं—क्रि. स. [हिं. चरना] चरती हैं। उ.—तहँ गैयाँ गनी न जाहिं, तरुनी बच्छ बढ़ीं। जो चरहिं जमुन कैं तीर, दूनैं दूध चढ़ीं—१०-२४।

चरही—संज्ञा स्त्री. [हिं. चरनी] पशुओं के चरने या पानी पीने का स्थान।

चराइ—क्रि. स. [हिं. चरना] पशुओं को चारा खिलाने के लिए मैदान में ले जाना। उ.—माधौ जू, यह मेरी इक गाइ। अब आज तैं आप-आगैं दई, लै आइयै चराइ—१-५१।

चराई—क्रि. स. [हिं. चरना] मैदान में ले जाकर पशुओं को चारा खिलाया। उ.—प्रथम कह्यौ जो बचन दया रत, तिहिं बस गोकुल गाइ चराई—१-६।
संज्ञा स्त्री. [हिं. चरना] (१) चरने का काम। (२) चराने का काम। (३) चराने की मजदूरी।

चराऊ—संज्ञा स्त्री. [हिं. चरना] चारागाह, चरनी।

चरागाह—संज्ञा पुं. [फ़ा.] चरने का स्थान, चरी।

चराचर—वि. [सं.] (१) चर और अचर, जड़ और चेतन, स्थावर और जंगम। उ.—त्रिभुवन-हार सिंगार भगवती, सलिल चराचर जाके ऐन। सूरजदास विधात कैं तप प्रगट भई संतनि सुख दैन—९-१२। (२) जगत, संसार। (३) कौड़ी।

चरान—संज्ञा पुं. [हिं. चरना] (१) चरने की भूमि। (२) समुद्र के किनारे का दलदल।

चराना—क्रि. स. [हिं. चरना] (१) पशु को चराने ले जाना। (२) धोखा देना, मूर्ख बनाना।

चरायौ—क्रि. स. [हिं. चराना] (गाय, भैंस आदि को) चराया। उ.—धनि गो-सुत, धनि गाइ ये, कृष्ण चरायौ आपु—४६२।

चराव—संज्ञा पुं. [हिं. चरना] चरने का स्थान।

चरावन—संज्ञा स्त्री. सवि. [हिं. चराना] चराने के लिए। उ.—(क) गाय चरावन को सो गयौ—३-७१। (ख) आजु मैं गाय चरावन जैहौं—४११।

चरावना—क्रि. स. [हिं. चराना] चारा खिलाना।

चरावर—संज्ञा स्त्री. [देश.] व्यर्थ की बात।

चरावै—क्रि. स. [हिं. चराना] (गाय, भैंस आदि) चराता है। उ.—सोइ गोप की गाइ चरावै—१०-३।

चरिंदा—संज्ञा पुं. [फ़ा.] चरनेवाला पशु।

चरि—क्रि. स. [सं. चर=चलना] चारा खाकर, चरकर। उ.—(क) ब्योम, थर, नद, सैल, कानन इते चरि न

अघाइ—१-५६। (ख) जगत-जननी करी बारी मृगा चरि चरि जाइ—६-६०।

संज्ञा पुं. [सं.] पशु।

चरित—संज्ञा पुं. [सं.] (१) रहन-सहन, आचरण। (२) करनी, करतूत (व्यंग्य)। उ.—अपनो भेद तुम्हैं नहिं कैहैं। देखहु जाइ चरित तुम वाके जैसे गाल बजैहै—१२६३। (३) कृत्य, लीला। उ.—चरननि चित्त निरंतर अनुरत, रसना-चरित-रसाल—१-१८६। (४) जीवनचरित, जीवनी।

चरितनायक—संज्ञा पुं. [सं.] वह व्यक्ति या नायक जिसके चरित्र के आधार पर पुस्तक लिखी जाय।

चरितवान—वि. [सं. चरित्रवान] सदाचारी।

चरितव्य—वि. [सं.] आचरण करने योग्य।

चरितार्थ—वि. [सं.] (१) जिसका उद्देश्य पूरा हो चुका हो, कृतार्थ। (२) जो ठीक ठीक घटे या पूरा उतरे।

चरित्तर—संज्ञा पुं. [सं. चरित्र] धूर्तता, चालबाजी।

चरित्र—संज्ञा पुं. [सं.] (१) कार्य, लीला। उ.—भूषन-विविध विसद अंबर जुत सुंदर स्याम सरीर। देखत मुदित चरित्र सबै सुर व्योम-विमाननि भीर—६-२६। (२) स्वभाव। (३) करनी, करतूत (व्यंग्य)। (४) आचरण, चरित।

चरित्रनायक—संज्ञा पुं. [सं.] वह व्यक्ति जिसके चरित्र के आधार पर कोई ग्रंथ लिखा जाय।

चरित्रवती—वि.स्त्री. [हिं. चरित्रवान] अच्छे चरित्रवाली।

चरित्रवान—वि. [सं.] अच्छे आचरणवाला।

चरी—संज्ञा स्त्री. [हिं. चारा] (१) चराई का स्थान। (२) छोटी ज्वारका हरा पेड़ जो चारेके काम आता है।

संज्ञा स्त्री. [चर=दूत] (१) दूती। (२) दासी।

चरु—संज्ञा पुं. [सं.] (१) हवन या आहुति का अन्न। (२) हवन का अन्न पकाने का पात्र। (३) भाँड़ के साथ पकाया हुआ चावल। (४) चराई का स्थान। (५) यज्ञ। (६) बादल।

चरुआ—संज्ञा पुं. [सं. चरु] मिट्टी का पात्र जिसमें प्रसूता स्त्री के लिए जल पकाया जाता है।

चरुखला—संज्ञा पुं. [हिं. चरखा] चरखा।

चरू—संज्ञा पुं. [हिं. चरु] हवन का अन्न।

संज्ञा स्त्री. [हिं. चरी] चराई का स्थान।

चरेर, चरेरा—वि. [अनु.] (१) कड़ा और खुरदुरा। (२) कर्कश और रूखा।

चरेरू—संज्ञा पुं. [हिं. चरना] चिड़िया, पक्षी।

चरै—क्रि. स. [हिं. चरना] चरता है, खाता है। उ.—संग मृगनिहू कौ नहिं करै। हरी घासहू सो नहिं चरै—५-३।

चरैऐ—क्रि. स. [हिं. चराना] चराइए। उ.—जमुना-तट तृन बहुत, सुरभि-गन तहाँ चरैऐ—४३१।

चरैया—संज्ञा पुं. [हिं. चराना] (१) चरानेवाला। उ.—(क) ये दोऊ मेरे गाइ चरैया—५१३। (ख) मार मार कहि गारि दै धृग गाइ चरैया—५७५। (२) चरनेवाला पशु।

चरैहैं—क्रि. स. [हिं. चराना] चरायेंगे। उ.—इन गैयन चरबो छाँड़ो है जो नहिं लाल चरैहैं—३४३६।

चरैहौं—क्रि. स. [हिं. चराना] चराऊँगा। उ.—मैया हौं न चरैहौं गाइ—५१०।

चरोखर—संज्ञा स्त्री. [हिं. चारा+खर] चरी।

चरौवा—संज्ञा पुं. [हिं. चराना] चरने का स्थान।

चर्खा—संज्ञा स्त्री. [सं.] सूत कातने का चरखा।

चर्खी—संज्ञा स्त्री. [हिं. चरखी] चरखी, गराड़ी।

चर्चक—संज्ञा पुं. [सं.] चर्चा करनेवाला व्यक्ति।

चर्चन—संज्ञा पुं. [सं.] (१) चर्चा। (२) लेपन।

चर्चरिका—संज्ञा स्त्री. [सं.] एक नाटकीय गान।

चर्चरी—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) बसंत या फाग का गीत, चाँचर। (२) होली की धूमधाम। (३) ताली बजाने का शब्द। (४) आमोद-प्रमोद। (५) गाना-बजाना। (६) नाटक का एक गान।

चर्चरीक—संज्ञा पुं. [सं.] बाल सँवारने की क्रिया।

चर्चा—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) जिक्र, वर्णन। उ.—हरि-जन हरि-चर्चा जो करें। (२) बातचीत। (३) किंवदंती, अफवाह। (४) ऐसी बातचीत का प्रसंग जो जगह-जगह किसी की निंदा के उद्देश्य से छिड़ा रहे। उ.—चर्चा परी बहुत द्वारावति कृष्नचंद्र की बात। तब हरि गये सैल कंदर मैं अति कोमल मृदु गात—सारा, ६४६। (५) लेपना, पोतना।

चर्चिका—संज्ञा स्त्री. [सं.] चर्चा, जिक्र।

चर्चित—वि. [सं.] (१) लगाया या पोता हुआ। (२) जिसकी चर्चा, वर्णन या जिक्र हो।
संज्ञा पुं.—लेपन।

चर्चट—संज्ञा पुं. [सं.] (१) थप्पड़। (२) हथेली।
वि.—विपुल, अधिक।

चर्भटी—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) चर्चरी गीत। (२) चर्चा। (३) आनंद, क्रीड़ा। (४) आनंद ध्वनि।

चर्म—संज्ञा पुं. [सं.] (१) चमड़ा। (२) वृक्षादि की) ऊपरी छाल। उ.—ह्वै बिरक्त, सिर जटा धरैं द्रुम-चर्म, भस्म सब गात—६-३८। (३) ढाल।

चर्मकार—संज्ञा पुं. [सं.] चमार।

चर्मचक्षु—संज्ञा पुं [सं.] साधारण नेत्र।

चर्मजा—संज्ञा पुं. [सं.] (१) रोआँ। (२) खून।

चर्मदृष्टि—संज्ञा स्त्री. [सं.] साधारण दृष्टि, आँख।

चर्या—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) वह जो किया जाय। (२) चालचलन। (३) काम-काज। (४) जीविका। (५) सेवा। (६) गमन।

चर्य्य—वि. [हिं. चर्चा] करने या आचरने योग्य।

चरयौ—क्रि. अ. [हिं. चरना] घूमा-फिरा, विचरण करता रहा। उ.—मन बस होत नाहिंनैं मेरैं।···
···। कहा करौं, यह चरयौ बहुत दिन, अंकुस बिना मुकेरैं। अब करि सूरदास प्रभु आपुन, द्वार परयौ है तेरैं—१-२०६।

चर्राना—क्रि. अ. [अनु.] (१) चरचर शब्द करना। (२) घाव में पीड़ा होना। (३) तीव्र इच्छा होना।

चर्री—संज्ञा स्त्री. [हिं. चर्राना] चुभती हुई बात।

चर्वण—संज्ञा पुं. [सं.] (१) चबाना। (२) वह वस्तु जो चबायी जाय। (३) भुना अन्न, चबेना।

चर्वित—वि. [सं.] दाँतों से चबाया हुआ।

चर्वित चर्वण—संज्ञा पुं. [सं.] किसी की हुई क्रिया या बात को बार-बार करना या कहना, पिष्टपेषण।

चर्व्य—वि. [सं.] चबाकर खाने योग्य।

चलंता—वि. [हिं. चलना] चलनेवाला।

चल—वि. [सं.] चंचल, चलायमान।
संज्ञा पुं. [सं.] (१) पारा। (२) दोहे का एक भेद। (३) शिव। (४) विष्णु। (५) काँपना। (६) दोष। (७) भूल-चूक। (८) छल-कपट।

चलकना—क्रि. अ. [अनु.] (१) चमकना। (२) रह-रह कर दर्द उठना। (३) दर्द का एकबारगी बंद हो जाना।

चलचलाव—संज्ञा पुं. [हिं. चलना] (१) यात्रा। (२) मृत्यु।

चलैचा—संज्ञा पुं. [देश.] ढाक, पलाश।

चलचाल—वि. [सं.] चंचल, अस्थिर।

चलचूक—संज्ञा स्त्री. [सं. चल+हिं. चूक] धोखा।

चलत—क्रि. अ. [हिं. चलना] चलते या गमन करते (समय)। उ.—चिंति चरन-मृदु-चारु-चंद-नख, चलत चिन्ह चहुँ दिसि सोभा—१-६९।

चलता—वि. [हिं. चलना] (१) चलता या जाता हुआ।
मुहा०—चलता करना—(१) हटाना, टालना। (२) झगड़ा निपटाना। चलता पुरजा बहुत काइयाँ। चलता बनना (होना)—झटपट चल देना।
(२) जिसका क्रम या सिलसिला न टूटा हो।
मुहा०—चलता लेखा (खाता)—चालू हिसाब।
(३) जिसका चलन या प्रचार खूब हो।
मुहा०—चलता गाना-जो गाना खूब लोकप्रिय हो।
(४) जो काम करने योग्य हो। (५) चतुर।
संज्ञा पुं. [देश.] (१) एक पेड़। (२) कवच।
संज्ञा स्त्री. [सं.] चंचल होने का भाव।

चलति—क्रि. अ. [हिं. चलना] चलती है, प्रचलित है। उ—केसी सकट अरु बृषभ पूतना तृनावर्त की चलति कहानी—२३७९।

चलती—संज्ञा स्त्री. [हिं. चलना] प्रभाव, अधिकार।

चलतू—वि. [हिं. चलना] (१) चलता हुआ। (२) चालू। (३) जो (भूमि) जोती-बोई जाती हो।

चलदल—संज्ञा पुं. [सं.] पीपल का पेड़।

चलन—संज्ञा पुं. [हिं. चलना] (१) चलना, गति, चाल, चलने का भाव, ढंग या क्रिया। उ.—(क) ज्यों कोउ दूरि चलन कौं करै। क्रम-क्रम करि डग-डग पग धरै—३-१३। (ख) कबहुँ हरि कौं लाइ अँगुरी, चलन सिखावति ग्वारि—१०-११६। (ग)

तीनि पैंड़ जाके धरनि न आवै। ताहि जसोदा चलन सिखावै—१०-१२६ । (२) रीति-रिवाज, रस्म-व्यवहार।

मुहा.—चलन से चलना—हैसियत से रहना।

(३) किसी चीज का व्यवहार या प्रचार।

संज्ञा पुं. [सं.] (१) गति, भ्रमण। (२) काँपना, कंपन। (३) हिरन। (४) पैर, चरण।

क्रि. अ. [हिं. चलना] चलना, चलते रहना।

प्रयो०—लागी चलन—चलनेलगी। प्रवाहित हुई, बह चली। उ.—कियौ जुद्ध अति ही बिकरार। लागी चलन रुधिर की धार—१-२७६ ।

चलनसार—वि. [हिं. चलन + सार (प्रत्य.)] (१) जिसका खूब व्यवहार या प्रचार हो। (२) जो काफी समय तक चल या टिक सके।

चलना—क्रि. अ. [सं. चलन] (१) गमन या प्रस्थान करना, जाना। (२) हिलना-डोलना।

मुहा०—पेट चलना—निर्वाह होना। मन (दिल) चलना—प्राप्ति की इच्छा होना। मुँह चलना—(१) खाते रहना। (२) मुँह से बराबर अनुचित शब्द निकलना। हाथ चलना— मारने को हाथ उठाना। चल बसना—मर जाना। अपने चलते—भरसक, यथाशक्ति, शक्ति भरे।

(३) कोई काम करने में समर्थ होना, निभना।

मुहा.—चल निकलना — उन्नति करना।

(४) बहना, प्रवाहित होना। (५) वृद्धि या बढ़ती पर होना। (६) किसी उपाय का काम में आना। (७) आरंभ होना। (८) क्रम या परंपरा का निर्वाह होना। (९) खाने के लिए रखा जाना। (१०) टिकना ठहरना, काम में आना। (११) लेन-देन या व्यवहार में आना। (१२) जारी होना, प्रचार बढ़ना। (१३) उपयोग या काम में लाया जाना। (१४) अच्छी तरह या ठीक काम देना। (१५) तीर-गोली छूटना। (१६) लड़ाई-झगड़ा होना। (१७) काम चमकना। (१८) पढ़ जाना। (१९) सफल होना, प्रभाव डालना।

मुहा.—किसी की चलना—प्रयत्न सफल होना, दूसरे का वश या अधिकार होना।

(२०) आचरण या काम करना। (२१) खाया जाना। (२२) सड़ जाना।

क्रि. स.—शतरंज, ताश आदि के मोहरे या पत्ते बढ़ाना या डालना।

संज्ञा पुं. [हिं. चलनी] (१) बड़ी चलनी। (२) छन्ना।

चलनि—संज्ञा पुं. [हिं. चलना] चलने की क्रिया, गति, चाल। उ.—रथ तैं उतरि चलनि आतुर ह्वै, कच रज की लपटानि—१-२७६।

चलनिका—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) लहँगा। (२) झालर।

चलनी—संज्ञा स्त्री. [हिं. छलनी] आटा-आदि छानने की छलनी।

चलनौस, चलनौसन—संज्ञा पुं. [हिं. चलना + औस (प्रत्य.)] चोकर, चालन।

चलपत्र—संज्ञा पुं. [सं.] पीपल का वृक्ष।

चलबाँक—वि. [हिं. चलना + बाँका] तेज चालवाला।

चलवंत—संज्ञा पुं. [सं. चल + वंत]। पैदल सिपाही।

चलवाना—क्रि. स. [हिं. चलाना] (१) चलाने का काम दूसरे से कराना। (२) छानने का काम कराना।

चलविचल—वि. [सं. चल + विचल] (१) अंडबंड, बेठिकाने, अस्तव्यस्त। (२) अक्रम, अव्यवस्थित।

संज्ञा स्त्री.—नियम का उल्लंघन, व्यतिक्रम।

चलवैया—संज्ञा पुं. [हिं. चलना] चलनेवाला।

चलहिंगे—क्रि. अ. [हिं. चलना] चलेंगे, (एक स्थान से दूसरे को जायँगे। उ.—कबहि घुटरुवनि चलहिंगे, कहि बिधिहिं मनावै—१०-७४।

चला—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) बिजली। (२) पृथ्वी। (३) लक्ष्मी। (४) पीपल। (५) एक गंधद्रव्य।

संज्ञा पुं. [हिं. चाल या चलना] (१) व्यवहार, प्रचार, रीति, रस्म। (२) अधिकार, प्रभुत्व।

चलाइ—क्रि. स. [हिं. चलना] (१) हिला-डुलाकर, भाव बताकर। उ.—चलत अंग त्रिभंग कटिकै भौंह भाव चलाइ—१३५६। (२) आरंभ की, वर्णन की, बतायी। उ.—वचन परगट करन कारन प्रेमकथा चलाइ—२६१६। (३) लक्ष्य पर फेंक कर, (तीर आदि) छोड़कर।

प्रयो.—दियौ चलाइ— चला दिया, लक्ष्य करके छोड़ दिया। उ.—अस्वत्थामा बहुरि खिस्याइ। ब्रह्म अस्त्र कौं दियौ चलाइ—१-२८६। दए चलाइ—भगा दिये। उ.—छिरक लरिकन मही सौं भरि, ग्वाल दए चलाइ—१० २८६।

चलाई—क्रि. स. [हिं. चलाना] (१) आरंभ की, प्रचलित की। उ.—नई रीति इन अबहिं चलाई—१०४१। (२) कृतकार्य या सफल हुए।

मुहा०—कछु न चलाई—कुछ वश न चला, कोई उपाय काम न आया, प्रयत्न सफल न हुआ। उ.—(क) रहेउ दुष्ट पचि हार दुसासन कछू न कला चलाई—सारा. ७६६। (ख) दुर्वासा सापन को आये तिनकी कछु न चलाई—सारा. ७७२। (३) प्रसंग छेड़ा, बात शुरू की। उ.—(क) सूरदास वे सखी सयानो और कहूँ की बात चलाई—१२६६। (ख) समय पाय ब्रज बात चलाई सुख ही माफ सुहाती—३४१८। (४) चोट की, प्रहार किया। उ.—मनु सुक सुरँग बिलोकि बिंब-फल चाखन कारन चोंच चलाई—६१६।

चलाऊँ—क्रि. स. [हिं. चलाना] (१) प्रचलित करूँ। उ.—(क) यह मारग चौगुनो चलाऊँ, तौ पूरौ ब्यापारी—१-१४६। (ख) यकटक रहैं पलक नहिं लागैं पद्धति नई चलाऊँ—१४२५। (२) प्रहार या आघात करूँ। उ.-सूरजदास भक्त दोऊ दिसि कापर चक्र चलाऊँ—१-२७४।

चलाऊ—वि. [हिं. चलना] (१) बहुत दिन चलनेवाला, टिकाऊ। (२) बहुत घूमने-फिरनेवाला।

चलाँक, चलाक—वि. [हिं. चालाक] होशियार।

चलाँकी, चलाकी—संज्ञा स्त्री. [हिं. चालाकी] होशियारी।

चलाका—संज्ञा स्त्री. [सं. चला] बिजली, विद्युत।

चलाचल—संज्ञा स्त्री. [हिं. चलना] (१) चलने की धूमधाम या तैयारी। (२) गति, चाल।

वि. [सं.] चपल, चंचल, अस्थिर।

चलाचली—संज्ञा स्त्री. [हिं. चलना] (१) चलने की धूम या तैयारी। (२) बहुतों का साथ चलना। (३) चलने का समय।

वि.—जो चलने को तैयार हो।

चलान—संज्ञा स्त्री. [हिं. चलना] (१) चलने की क्रिया। (२) चलाने की क्रिया। (३) अपराधी का न्यायालय भेजा जाना। (४) एक स्थान से दूसरे को भेजा जानेवाला माल। (५) ऐसे माल की सूची, रवन्ना।

चलाना—क्रि. स. [हिं. चलना] (१) चलने को प्रेरित करना, चलने में लगाना। (२) हिलाना-डुलाना।

मुहा०—किसी की चलाना—किसी की चर्चा करना। पेट चलाना—निर्वाह करना। मन (दिल) चलाना—पाने की इच्छा होना, मन विचलित होना। मुँह चलाना—(१) खाते रहना। (२) बहुत बातें करना या बनाना। हाथ चलाना—मारना-पीटना। (३) निभाना, निर्वाह करना। (४) बहा देना। (५) उन्नति करना। (६) काम को जारी रखना या पूरा करना। (७) आरंभ करना, छेड़ना। (८) क्रम बनाये रखना (९) खाने की चीज परसना। (१०) बराबर उपयोग में लाना। (११) लेन-देन या व्यवहार में लाना। (१२) प्रचलित करना, प्रचार करना। (१३) लाठी (आदि) का उपयोग करना। (१४) (तीर गोली) छोड़ना। (१५) प्रहार करना। (१६) काम चमकाना। (१७) आचरण करना।

चलायमान—वि. [सं.] (१) जो चलनेवाला हो। (२) चंचल, अस्थिर। (२) विचलित, डिगा हुआ।

चलायौ—क्रि. स. [हिं. चलना] चलाया, चलने के लिए प्रेरित किया। उ.—जित-जित मन अर्जुन कौ तितहिं रथ चलायौ—१-२३।

चलाव—संज्ञा पुं. [हिं. चलना] (१) यात्रा (२) रस्म।

चलावत—क्रि. स. [हिं. चलाना] (१) हिलाते-डुलाते हैं, गति देते हैं। उ.—मनहूँ तें अति बेग अधिक करि, हरिजू चरन चलावत—८-४। (२) आरंभ करते हैं, छेड़ते हैं। उ.—(क) फिरि फिरि नृपति चलावत बात। कहु री सुमति कहा तोहि पलटी, प्रान-जिवन कैसै बन जात—९-३८। (ख) निकट नगर जिय जानि धँसे घर, जन्मभूमि की कथा चलावत—९-१६७। (ग) कहुँ पांडव की कथा चलावत चिंता करत अपार—सारा.६७५। (३) (तीर

गोली आदि) छोड़ते हैं। उ.—तीर चलावत सिष्य सिखावत धर निसान देखरावत—सारा. १६०। (४) (धार, पानी आदि) चलाते या फेंकते हैं। उ.—इत चितवत उत धार चलावत यहै सिखायौ मैया—७३४।

चलावन—संज्ञा पुं. [हिं. चलाना] चलाने के लिए, प्रचलित करने को, प्रचार करने को। उ.—दैहौं राज बिभीषन जन कौं, लंकापुर रघु-आन चलावन—६-१३१।

चलावना—क्रि. स. [हिं. चलाना] गति देना, चलाना।

चलावा—संज्ञा पु. [हिं. चलना] (१) रीति-रस्म। (२) गौना, मुकलावा, द्विरागमन। (३) एक उतारा।

चलावै—क्रि. स. [हिं. चलाना] (१) हिलावे-डुलावे, गति दे। (२) (खाने के लिए) मुँह हिलाये, खाने का प्रयत्न करे। उ.—हौं यहि जानति बानि स्याम की अँखियाँ मींचे बदन चलावै—१०-२३१। (३) आँखें या भौंहें) मटकावे, चमकावे या भाव बतावे। उ.—(क) सखियन बीच भरयो घट सिर पर तापर नैन चलावै—८७५। (ख) ठठकति चलै मटकि मुँह मोरे बंकट भौंह चलावै—८७६। (४) (प्रसंग) छेड़े, (चर्चा) करे। उ.-(क) रे मन, निपट निलज अनीति। जियत की कहि को चलावै, मरत विषयनि प्रीति—१-३२१। (ख) इंद्रादिक की कौन चलावै संकर करत खवासी—३०८६। (५) निर्वाह करे, वंश-परिवार का क्रम या परंपरा बनाये रखे। उ.—सो सपूत परिवार चलावै एतौ लोभी धूत इनही—पृ. ३२२।

चलि—क्रि. अ. [हिं. चलना] चलकर, प्रस्थान करके।

मुहा.—चलि आयो—प्रसिद्ध है, प्रचलित है। उ—(क) जुग जुग बिरद यहै चलि आयौ, भक्तनि-हाथ बिकानै—१-११। (ख) जुग जुग बिरद यहै चलि आयौ, टेरि कहत हौं यातैं—१-१३७। (ग) जुग जुग यह चलि आयौ—६-५०।

चलित—वि. [सं.] (१) अस्थिर, हिलता-डोलता हुआ। उ.—चलित कुंडल गंड-मंडल, मनहुँ निर्तत मैन—१-३०७। (२) चलता हुआ।

चलिबे—संज्ञा पुं. [हिं. चलना] चलना, प्रस्थान। उ—धर्मपुत्र कौं दै हरि राजं। निज पुर चलिबे कौं कियौ साज—१-२८१।

चलिये—क्रि. अ. [हिं. चलना] प्रस्थान कीजिए।

चलिहौं—क्रि. अ. [हिं. चलना] चलूँगा, प्रस्थान करूँगा। उ.—सूर सकल सुख छाँड़ि आपनौ, बन-बिपदा-सँग चलिहौं—६-३५।

चली—क्रि. अ. स्त्री. [हिं. चलना] आरंभ हुई, छिड़ी। उ.—भारतादि कुरुपति की जथा, चली पांडवनि की जब कथा—१-२८४।

चले—क्रि. अ. [हिं. चलना] (१) प्रस्थान या गमन किया, जाने लगे। (२) प्रस्तुत हुए, कटिबद्ध हुए, तैयार हुए। उ.—कौरव-काज चले रिषि-सापन, साक पत्र सु अघाए—१-१३।

चलै—क्रि. अ. [हिं. चलना] (१) चलता है। उ.—रंक चलै सिर छत्र धराइ—१-२। (२) प्रसिद्ध है, प्रचलित है। उ.—जाकी जग मैं चलै कहानी—१-२२६। (३) सफल हो।

मुहा.—(एक की) कहा चलै— (एक का) क्या वश चल सकता है, क्या सफलता मिल सकती है। उ.—अंग निरखि अनंग लज्जित सकै नहिं ठहराय। एक की कहा चलै शत कोटि रहत लजाय।

चलैगी—क्रि. अ. स्त्री. [हिं. चलना] प्रचलित होगी, प्रसिद्ध रहेगी। उ.—यह तौ कथा चलैगी आगैं, सब पतितनि मैं हाँसी—१-१६२।

चलैगौ—क्रि. अ. [हिं. चलना] (१) प्रचलित होगा, प्रचार बढ़ेगा। उ.—सूर सुमारग फेरि चलैगौ, बेद-बचन उर धारौ—१-१६२। (२) जायगा, चलेगा। उ.—(क) सिर पर धरि न चलैगौ कोऊ, जो जतननि करि माया जोरी—१-३०३। (ख) धोखैं ही धोखैं बहुत बह्यौ। मैं जान्यौ सब संग चलैगौ, जहँ को तहाँ रहैगौ—१-१३७।

चलैया—संज्ञा पुं. [हिं. चलना] चलनेवाला।

क्रि. अ.—चले गये। उ.—सूर स्याम सनमुख जे आये ते सब स्वर्ग चलैया—२३७४।

चलौं—क्रि. अ. [हिं. चलना] चलूँ, गमन करूँ।

उ.—बचन बाह लै चलौं गाँठि दै, पाऊँ सुख अति भारी—१-१४६।

चलौ—क्रि. अ. [हिं. चलना] (१) चलो, प्रस्थान करो। उ.—सूरदास प्रभु इहिं औसर भजि उतरि चलौ भवसागर—१-६१। (२) व्यवहार या आचरण करो, ढंग रखो। उ.—हम अहीर ब्रजवासी लोग। ऐसे चलौ हँसै नहिं कोऊ घर में बैठि करौ सुख भोग—१४६७।

चलौखा—संज्ञा पुं. [हिं. चलावा] एक उतारा।

चल्यौ—क्रि. अ. [हिं. चलना] चला, प्रस्थान किया। उ.—रोर कै जोर तैं सोर घरनी कियौं, चल्यौ द्विज द्वारिका द्वार ठाढ़ौ—१-५।

चल्ली—संज्ञा स्त्री. [देश.] सूत की तकली, कुकड़ी।

चवकी—संज्ञा स्त्री. [हिं. चौकी] छोटा तखत, चौकी।

चवना—क्रि. अ. [हिं. चुअना] चू पड़ना, टपकना।

चवन्नी—संज्ञा स्त्री. [हिं. चौ+आना] चार आने का सिक्का।

चवपैया—संज्ञा स्त्री. [हिं. चौपैया] (१) एक छंद। (२) खाट।

चवर—संज्ञा पुं. [हिं. चौंवर] मोरछल, चँवर।

चवरा, चवल—संज्ञा पुं. [सं. चवल] लोबिया।

चवर्ग—संज्ञा पुं. [सं.] च से ञ तक पाँच अक्षरों का समूह जिसका उच्चारण तालु से होता है।

चवा—संज्ञा स्त्री. [हिं. चौवाई] सब दिशाओं से एक साथ चलनेवाली हवा।

चवाई—संज्ञा पुं. [हिं. चवाव] (१) बदनामी की चर्चा फैलानेवाला, निंदा करनेवाला। उ.—घातक कुटिल चवाई कपटी महाक्रूर संतापी। (२) झूठी बात कहनेवाला, चुगली खानेवाला। उ.—सुनहु स्याम बलभद्र चवाई (चबाई) जनमत हो कौ धूत—१०-२१५।

चवाउ, चवाव—संज्ञा पुं. [हिं. चवाव] (१) निंदा या बुराई की चर्चा। उ.—(क) गोरी इहै करति चवाउ। देखौं धौं चतुराई वाकी हमहिं कियौं दुराउ—१२८३। (ख) नैनन तैं यह भई बड़ाई। घर घर यहै चवाव चलावत हम सौं भेंट न माई—२८८१। (२) प्रवाद, अफवाह। (३) चुगलखोरी।

चवैया—संज्ञा पुं. [हिं. चवाई] (१) बदनामी की चर्चा। (२) झूठी बात कहनेवाला, चुगलखोर।

चश्म—संज्ञा स्त्री. [फ़ा. चश्मा] नेत्र, आँख।

चश्मा—संज्ञा पुं. [फ़ा.] (१) ऐनक। (२) पानी का सोता। (३) छोटी नदी। (४) जलाशय।

चष—संज्ञा पुं. [सं. चक्षु] नेत्र, आँख। उ—उनै उनै घन बरषत चष उर सरिता सलिल भरी—२८१४।

चषक—संज्ञा पुं. [सं.] (१) शराब पीने का पात्र। उ.—प्रान ये मन रसिक ललित घी लोचन चषक पिवति मकरंद सुख राशि अंतर सची। (२) मधु, शहद। (३) एक मदिरा।

चषचोल—संज्ञा पुं. [हिं. चष=आँख+चोल=वस्त्र] आँख का परदा या पलक।

चषण—संज्ञा पुं. [सं.] (१) भोजन। (२) वध। (३) क्षय।

चसक—संज्ञा स्त्री. [देश.] हलका दर्द, कसक।

संज्ञा पुं. [सं. चषक] शराब पीने का पात्र।

चसकना—क्रि. अ. [हिं. चसक] मीठा दर्द होना।

चसका—संज्ञा पुं. [सं. चषण] शौक, आदत।

चसना—क्रि. अ. [सं. चषण] प्राण त्यागना।

क्रि. अ. [हिं. चाशनी] चिपकना, जुड़ना।

चसम—संज्ञा स्त्री. [फ़ा. चश्म] आँख।

चसमा—संज्ञा पुं. [फ़ा. चश्मा] (१) ऐनक। (२) पानी का सोता।

चसी—क्रि. अ. [हिं. चसना] सट गयी, लगी, जुड़ी, चिपकी। उ.—ज्यों नामी सर एक नाल नव कनक बिख रहे चसी री।

चस्का—संज्ञा पुं. [हिं. चसका] शौक, लत।

चस्पाँ—वि. [फ़ा.] चिपकाया या सटाया हुआ।

चह—संज्ञा पुं. [सं. चय] नाव पर चढ़ने का पाट।

संज्ञा स्त्री. [फ़ा. चाह] गड्ढा, गर्त।

चहक—संज्ञा स्त्री. [हिं. चहकना] चहचह शब्द।

संज्ञा पुं. [हिं. चहला] पंक, कीचड़!

चहकना—क्रि. अ. [अनु.] (१) पक्षियों का चहचहाना। (२) उमंग या प्रसन्नता से बोलना।

चहका—संज्ञा पुं. [देश.] जलती हुई लकड़ी।

संज्ञा पुं. [हिं. चहला] कीचड़, पंक।

चहकार—संज्ञा स्त्री. [हिं. चहक] चहचह शब्द।

चहकारना—क्रि. अ. [हिं. चहकना] चहचहाना।

चहकारा—वि. [हिं. चहकार] कलरव करनेवाला।

चहचहा—संज्ञा पुं. [हिं. चहचहाना] (१) चहकने का भाव, चहक। (२) हँसी-दिल्लगी, ठट्ठा, चुहलबाजी।

वि.—(१) मनोहर, आनंददायी। (२) ताजा, नया।

चहचहाना—क्रि. अ. [अनु.] पक्षियों का चहकना।

चहटा—संज्ञा पुं. [अनु.] कीचड़, पंक।

चहत—क्रि. स. [हिं. चाह] चाहता है, इच्छा करता है। उ.—अजहुँ सँग रहत, प्रथम लाज गुहेउ संतत सुभ चहत, प्रिय जन जानि—१-७७।

चहता—संज्ञा पुं. [हिं. चहेता] प्रिय पात्र।

चहतिं—क्रि. स. [हिं. चाह, चाहना] चाहती हैं, अभिलाषती हैं। उ.—उमँगी ब्रजनारि सुभग, कान्ह बरष-गाँठि उमँग, चहतिं बरष बरषनि—१०-६६।

चहनना—क्रि. स. [हिं. चहलना] दबाना, रौंदना।

मुहा०—चहनकर खाना— डटकर खाना।

चहना—क्रि. स. [हिं. चाहना] इच्छा या प्रेम करना।

चहनि—संज्ञा स्त्री. [हिं. चाह] इच्छा, प्रीति।

चहबच्चा—संज्ञा पुं. [फ़ा. चाह=कुआँ+बच्चा] (१) गंदे पानी का गड्ढा। (२) छोटा तहखाना।

चहर—संज्ञा स्त्री. [हिं. चहल] (१) आनंद की धूम। उ.—पंच सब्द ध्वनि बाजत नाचत गावत मंगलचार चहर की—१०-३०। (२) शोरगुल, हल्ला। (३) उपद्रव, उत्पात।

वि.—(१) बढ़िया, उत्तम। (२) चुलबुला, तेज।

चहरना—क्रि. अ. [हिं. चहर] प्रसन्न होना।

चहर पहर—संज्ञा स्त्री. [हिं. चहलपहल] चहलपहल।

चहराना—क्रि. अ. [हिं. चहर] प्रसन्न होना।

क्रि. अ. [हिं. चर्राना] हलकी पीड़ा होना।

क्रि. अ. [देश.] फटना, चटकना।

चहरि—संज्ञा स्त्री. [सं. चहर] (१) शोर-गुल, हो-हल्ला। उ.—(क) मथति दधि जसुमति मथानी, धुनि रही घर घहरि। स्रवन सुनति न महर-बातैं, जहाँ-तहँ गइ चहरि—१०-६७। उ.—(ख) तनु बिष रह्यौ है छहरि।..........गए अवसान, भीर नहिं भावै, भावै नहीं चहरि। ल्यावौ गुनी जाइ गोबिंद कौं बाढ़ी अतिहिं लहरि-७५०। (ग) नेकहूँ नहिं सुनति स्रवननि करति हैं हम चहरि—८६०। (२) आनंद की धूम, रौनक। (३) उपद्रव, उत्पात। उ.—सुत को बरजि राखौ महरि।..........। सूर स्यामहिं नेक बरजौ करत हैं अति चहरि—२०३६।

चहल—संज्ञा स्त्री. [अनु.] कीचड़, कीच, कर्दम।

संज्ञा स्त्री. [हिं. चहचहाना] आनंद की धूम।

चहलपहल—संज्ञा स्त्री. [अनु.] (१) आनंद की धूम, रौनक। (२) बहुत से लोगों का आना-जाना।

चहला—संज्ञा पुं. [सं. चिक्किल] कीचड़, पंक।

चहली—संज्ञा स्त्री. [देश.] कुएँ की गराड़ी।

चहारदीवारी—संज्ञा स्त्री. [फ़ा.] प्राचीर, कोट, परिखा।

चहिबो—क्रि. स. [हिं. चाहना] चाहना, इच्छा करना। उ.—तब न कियो प्रहार प्राननि को फिरि फिरि क्यों चहिबो—३३१४।

चहियत—क्रि. स. [हिं. चाहना] चाहता है, इच्छा करता है। उ.—एक जु हरि दरसन की आसा ता लगि यह दुख सहियत। मन क्रम बचन सपथ सुन सूरज और नहीं कछु चहियत—३३००।

चहिये—अव्य. [हिं. चाहिए] उचित है, उपयुक्त है। उ.—(क) कहत नारि सब जनक नगर की बिधि सौं गोद पसारि। सीता जू को बर यह चहिये है जोरी सुकुमार—सारा. २११। (ख) सूरदास प्रभु रसिक सिरोमनि रसिकहिं सब गुन चहिये जू—२०१५।

चही—क्रि. स. [हिं. चाहना] चाही थी, इच्छा की थी। उ.—रिषि कह्यौ, रानी पुत्री चही। मेरे मन मैं सोई रही—६४२।

चहुं—वि. [हिं. चार] चार, चारों।

चहुँक—संज्ञा स्त्री. [हिं. चिहुँक] चौंकना।

चहुँघा—क्रि. वि. [हिं. चहुँ=चार+घा=ओर, तरफ] चारो तरफ, चारो ओर। उ.—(क) दावानल ब्रजजन पर धायौ। गोकुल ब्रज बृंदाबन तृन द्रुम, चहुँघा चहत जरायौ—५९२। (ख) बारि बाँधे बीर चहुँघा देखत ही बज्र सम थाप गल कुंभ दीन्हो—२५६०।

चहुटना—क्रि. स.—चोट-चपेट लगना।

चहुँधार—वि. [हिं. चार (चहुँ=चार)]+धार=ओर, दिशा] चारो तरफ। उ.—विविध खिलौना भाँति के (बहु) गजमुक्ता चहुँधार—१०-४२।

चहुआन, चहुवान—[हिं. चौहान] एक क्षत्रिय जाति।

चहूँ—वि. [हिं. चार] चार, चारो। उ.—सूरदास भगवंत भजत जे, तिनकी लीक चहूँ जुग खाँची—१-१

क्रि. स. [हिं. चाहना] चाहती हूँ।

चहूँघा—क्रि. वि. [हिं. चहूँ+घा=ओर] चारो तरफ। उ—उपवन बन्यौ चहूँघा पुर के अति ही मोकों भावत—२५५६।

चहूँटना—क्रि. अ. [हिं. चिमटना] सटना, मिलना।

चहेटना—क्रि. स. [हिं. चपेटना] (१) निचोड़ना, गारना। (२) दबाना, दबोचना, चपेटना।

चहेता—वि. [हिं. चाहना+एता (प्रत्य.)] प्यारा।

चहेती—वि. स्त्री. [हिं. चहेता] जिसे चाहा जाय।

चहेल—संज्ञा स्त्री. [हिं. चहला] (१) कीचड़, कीच, कर्दम। (२) दलदली भूमि।

चहैं—क्रि. स. बहु. [हिं. चाहना] चाहते हैं, इच्छा है। उ.—कह्यौ, यहै हम तुम सौं चहैं। पाँच बरस के नितहीं रहैं—३-६।

चहै—क्रि. स. [हिं. चाहना] (१) चाहता या इच्छा करता है, अभिलाषा रखता है। उ.—पारथ तिय कुरुराज सभा मैं बोलि करन चहै नंगी—१-२१। (२) प्रीति करता है। उ.—जों चहै मोहिं मैं ताहि नाहीं चहौं—८-८।

चहोड़ना, चहोरना—क्रि. अ. [देश.] (१) पौधा रोपना या बैठाना। (२) सहेजना, सँभालना।

चहौं—क्रि. स. [हिं. चाहना] (१) चाहता हूँ, इच्छा है। उ.—आयसु दियौ, जाउ बदरीबन, कहैं, सो कियौ चहौं—३-२। (२) प्रीतिक रती हूँ। उ.—जो चहै मोहिं मैं ताहिं नाहीं चहौं—८-८।

चह्यौ—क्रि. स. भूत. [हिं. चाहना] चाहा, अभिलाषा की। उ.—(क) उरझयौ बिबस कर्म-निरअंतर, स्रमि सुख-सरनि चह्यौ—१-१६२। (ख) एकै चीर हुतौ मेरे पर, सो इन हरन चह्यौ—१-२४७।

चाँइयाँ, चाँईं—वि. [देश.] (१) ठग। (२) छली, कपटी।

चाँक, चाँका—संज्ञा पुं. [हिं. चौ+अंक] (१) अन्न की राशि पर ठप्पा लगाने की थापी। (२) अन्न-राशि पर लगाया हुआ ठप्पा या चिह्न। (३) टोटके के लिए शरीर पर खींचा गया घेरा।

चाँकना—क्रि. स. [हिं. चाकना] (१) अन्न की राशि पर ठप्पा लगाना। (२) सीमा की हद बाँधना। (३) पहचान का चिन्ह लगाना।

चाँगला—वि. [हिं. चंगा] (१) स्वस्थ। (२) चतुर।

चाँचर, चाँचरि, चाँचरी—संज्ञा स्त्री. [हिं. चाचर] होली, फाग या बसंत का राग या गीत।

चांचल्य—संज्ञा पुं. [सं.] चंचलता, चपलता।

चाँचु—संज्ञा पुं. [सं. चंचु] चोंच। उ.—बकासुर रचि रूप माया रह्यौ छल करि आइ। चाँचु पकरि पुहुमी लगाई इक अकास समाइ।

चाँट—संज्ञा पुं. [हिं. छींटा] उड़ते हुए जलकण।

चाँटा—संज्ञा पुं. [हिं. चिमटना] चींटा, च्युँटा।

संज्ञा पुं. [अनु. चट] थप्पड़, तमाचा।

चाँटी—संज्ञा स्त्री. [हिं. चाँटा] चींटी।

चाँड़—वि. [सं. चंड] (१) प्रबल, बलवान। (२) उद्दंड, शोख, उग्र। (३) बढ़ा-चढ़ा, उत्तम। (४) संतुष्ट।

संज्ञा स्त्री.—(१) खंभा, टेक, थूनी। (२) बहुत आवश्यकता, गहरी चाह, भारी लालसा।

मुहा०—चाँड़ सरना—इच्छा या लालसा पूरी होना। चाँड़ सराना—इच्छा या लालसा पूरी करना। चाँड़ सरायौ— इच्छा पूरी की। उ.—पुहुप भँवर दिन चारि आपने अपनो चाँड़ सरायौ।

(३) दबाव, संकट। (४) प्रबलता, अधिकता।

चाँड़ना—क्रि. स. [हिं. उजाड़ना] खोदना, उजाड़ना।

चांडाल—संज्ञा पुं. [सं.] (१) डोम, श्वपच। (२) कुकर्मी।

चांडाली—संज्ञा स्त्री. [सं.] चांडाल जाति की स्त्री।

चाँड़िला—वि. [चाँड़] (१) प्रबल, उग्र। (२) अधिक।

चाँड़िले—वि. [हिं. चाँड़िला] प्रचंड, उग्र, उद्धत, नटखट। उ.—नंद सुत लाड़िले प्रेम के चाँड़िले सौंहु दै कहत है नारि आगे।

चाँड़े— वि. [सं. चंड, हिं. चाँड़] (१) प्रबल, बलवान,

बेगवान। उ.—हरि बिन अपनौ को संसार। माया-लोभ-मोह हैं चाँड़े काल-नदी की धार—१-८४। (२) उग्र, उद्धत, शोख। उ.—धीर धरहु फल पावहुगे। अपने ही प्रिय के सुख चाँड़े कबहूँ तो बस आवहुगे।

चाँडू—संज्ञा पुं. [सं. चंड] अफीम का किवाम, चंडू।

चाँद—संज्ञा पुं. [सं. चंद्र] (१) चंद्रमा।

मुहा०—चाँद का कुंडल (मंडल) बैठना—हलकी बदली में चंद्रमा के चारो ओर घेरा बन जाना। चाँद का टुकड़ा—बहुत सुंदर व्यक्ति। चाँद चढ़ना—चाँद का ऊपर उठना। चाँद दीखे—शुक्लपक्ष की द्वितीया के बाद। चाँद पर थूकना—महात्मा पर कलंक लगाना जिससे स्वयं अपमानित होना पड़े। चाँद पर धूल डालना—निर्दोष या साधु को दोष लगाना। चाँद सा—बहुत सुंदर। किधर चाँद निकला है—कैसे दिखायी दिये, बहुत दिन बाद दिखायी दिये।

(२) चाँदमास, महीना। (२) द्वितीया के चंद्रमा के आकार का एक आभूषण।

संज्ञा स्त्री.—(१) खोपड़ी। (२) खोपड़ी का निचला भाग।

मुहा०—चाँद पर बाल न छोड़ना—बहुत मारना-पीटना। (२) सब कुछ हर लेना, खूब मूड़ना।

चाँदना—संज्ञा पुं. [हिं. चाँद] (१) प्रकाश। (२) चाँदनी।

चाँदनी—संज्ञा स्त्री. [हिं. चाँद] (१) चंद्रमा का प्रकाश या उजाला, चंद्रिका।

मुहा०—चार दिन की चाँदनी—थोड़े दिन का सुख। (२) बिछाने की सफेद चादर। (३) एक पौधा।

चाँदला—वि. [हिं. चाँद] टेढ़ा, कुटिल, वक्र।

चाँदी—संज्ञा स्त्री [हिं. चाँद] (१) एक धातु, रजत।

मुहा०—चाँदी का जूता—घूस में दिया जाने वाला धन। चाँदी काटना—खूब माल मारना। चाँदी का पहरा—सुख-समृद्धि का समय। चाँदी होना—खूब लाभ होना।

(२) धन का लाभ। (३) चाँद, चँदिया।

चांद्र—वि. [सं.] चंद्रमा-संबंधी।

संज्ञा पुं.-(१) चाँद्रायण व्रत। (२) चंद्रकांतमणि।

चांद्रमास—संज्ञा पुं. [सं.] वह काल (या महीना) जो चंद्रमा पृथ्वी की परिक्रमा करने में लगाता है।

चाँद्रवत्सर—संज्ञा पुं [सं.] वह वर्ष जो चंद्रमा की गति के अनुसार निश्चित किया जाता है।

चांद्रायण—संज्ञा पुं. [सं.] (१) महीनेभर का एक व्रत जिसमें चंद्रमा के घटने-बढ़ने के अनुसार आहार घटाया-बढ़ाया जाता है। (२) एक छंद।

चांद्री—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) चंद्रमा की स्त्री। (२) चाँदनी।

वि.—चंद्रमा संबंधी, चंद्रमा का।

चाँप—संज्ञा पुं. [हिं. चाप] धनुष।

संज्ञा स्त्री. [हिं. चँपना] (१) चँपने का भाव, दबाव। (२) पैर की आहट, चाप।

संज्ञा पुं. [हिं. चंपा] चंपे का फूल।

संज्ञा स्त्री. [हिं. चपना] (१) दबाव। (२) रेलपेल।

चाँपति—क्रि. स. [हिं. चाँपना] दबाकर, मीड़कर। उ.—चाँपति कर भुज दंड रेष गुन अंतर बीच कसी—सा. उ. २५।

चाँपना—क्रि. स. [सं. चपन] दबाना, मीड़ना।

चाँपि—क्रि. स. [हिं. चाँपना] दबाकर, मीड़कर। उ.—कहौ तौ परबत चाँपि चरन तर, नीर-खार मैं गारौं—६-१०७।

चाँयचाँय, चाँवचाँव—संज्ञा स्त्री. [अनु.] बकवाद।

चाँवर, चाँवरी—संज्ञा पुं. [हिं. चावल] चावल। उ.—(क) नीलावती चाँवर दिवि-दुर्लभ। भात परौस्यौ माता सुरलभ—३९६। (ख) तिल चाँवरी, बतासे, मेवा, दियौ कुँवरि की गोद। सूर स्याम-राधा-तनु चितवत, जसुमति मन-मन मोद—७०४।

चाइ, चाई—संज्ञा पुं. [हिं. चाह, चाव] (१) प्रबल इच्छा, अभिलाषा। उ.—(क) अबकी बार मनुष्य-देह धरि, कियौ न कछू उपाइ। भटकत फिरयौ स्वान की नाईं, नैंकु जूठ कैं चाइ—१-१५५। (ख) कहा करौं चित चरन अटक्यौ सुधा-रस कैं चाइ—३-३। (ग) विष्णु-भक्ति कौ ता मन चाई—१०

उ. ७। (२) चाव, उमंग, उत्साह। उ.—गए ग्रीषम पावस रितु आई सब काहू चित चाइ—२८४४।

चाउ, चाऊ—संज्ञा पुं. [सं. चाव] इच्छा, अभिलाषा। उ.—(क) चित्रकेतु पृथ्वीपति राउ। सुत्न हित भयौ तासु चित चाउ—६-५। (ख) मन-बच-कर्म और नहिं दूजौ, बिन रघुनंदन राउ। उनकैं क्रोध भस्म ह्वै जैहौं, करौ न सीता चाउ—९-७८।

मुहा.—चाउ सरना—इच्छा पूरी होना। चाउ सरै—इच्छा पूरी होने पर। उ—चाउ सरै पहिचानत नाहिंन प्रीतम करत नये—२९९३।

चाउर—संज्ञा पुं. [हिं. चावल] चावल।

चाक—संज्ञा पुं. [सं. चक्र, प्रा. चक्क] (१) कुम्हार का एक गोल पत्थर। (२) गाड़ी का एक पहिया। (३) कुएँ की गराड़ी। (४) अन्न-राशि पर छापा लगाने का थापा। (५) गोल चिन्ह की रेखा, गोंडला।

संज्ञा पुं. [फ़ा.] दरार, चीड़।

मुहा०—चाक करना (देना)—चीरना, फाड़ना। चाक होना— चिरना, फटना।

वि. [तु.] (१) दृढ़। (२) स्वस्थ।

चाकचक—वि. [तु. चाक (?)] दृढ़, मजबूत।

चाकचक्य—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) चमक। (२) सुंदरता।

चाकना—क्रि. स. [हिं. चाक] (१) सीमा बाँधना। (२) अन्न-राशि पर छापा लगाना। (३) चिन्ह बनाना।

चाकरनी, चाकरानी—संज्ञा स्त्री. [हिं. चाकर] दासी।

चाकर—संज्ञा पुं. [फ़ा.] दास, सेवक।

चाकरी—संज्ञा स्त्री. [हिं. चाकर] सेवा, नौकरी।

चाकल—वि. [हिं. चकला] चौड़ा, विस्तृत।

चाका—संज्ञा पुं. [हिं. चाक] गाड़ी का पहिया।

चाकी—संज्ञा स्त्री. [हिं. चाक] पीसने की चक्की।

संज्ञा स्त्री [सं. चक्र] बिजली, बज्र।

चाकू—संज्ञा पुं. [तु.] फल या तरकारी आदि काटने का छुरीनुमा औजार।

चाक्रि—संज्ञा पुं. [सं.] (१) चारण, भाट। (२) तेली। (३) गाड़ीवान। (४) कुम्हार। (५) सेवक।

वि०—मंडल या चक्र से संबंधित।

चाक्षुष—वि. [सं.] (१) चक्षु संबंधी। (२) जिसका ज्ञान या बोध नेत्रों से हो, देखने का।

चाख—संज्ञा पुं. [सं. चाष] (१) चाहा पक्षी। (२) नीलकंठ पक्षी।

संज्ञा पुं. [सं. चक्षु] आँख, नेत्र।

चाखत—क्रि. स. [हिं. चखना] चखकर, स्वाद लेकर। उ.—यह जग-प्रीति सुवा-सेमर ज्यौं, चाखत ही उड़ि जात—१-३१३।

चाखन—क्रि. स. [हिं. चखना] चखना, स्वाद लेना। उ.—यह संसार सुवा-सेमर ज्यों, सुंदर देखि लुभायो। चाखन लाग्यौ रुई गई उड़ि, हाथ कछू नहिं आयौ—१-३३५।

संज्ञा पुं.—चखना, खाना। उ.—मनु सुक सुरँग बिलोकि बिंब फल चाखन कारन चोंच चलाई—६१६।

चाखनहारौ—क्रि. स. [हिं. चखना + हार (प्रत्य.)] चखनेवाला, स्वाद लेनेवाला। उ.—इनहिं स्वाद जो लुब्ध सूर सोइ जानत चाखनहारौ री—१०-१३५।

चाखना—क्रि. स. [हिं. चखना] खाना, स्वाद लेना।

चाखि—क्रि. स. [हिं. चखना] चखकर, स्वाद लेकर। उ.—सबरी कटुक बेर तजि, मीठे चाखि गोद भरि ल्याई—१-१३।

चाखे—क्रि. स. [हिं. चखना] (१) चखता है, स्वाद लेता है। उ.—ब्यंजन सकल मँगाइ सखनि के आगैं राखे। खाटे-मीठे स्वाद, सबै रस लै-लै चाखे—४६१। (२) खाये। उ.—औंव आदि दै सबै सँधाने। सब चाखे गोबर्धन-राने—३९६।

चाख्यौ—क्रि. स. [हिं. चखना] स्वाद लिया, खाया। उ.—(क) जिहिं मधुकर अंबुज-रस चाख्यौ, क्यों करील-फल भावैं—१-१६८। (ख) सद माखन अति हित मैं राख्यौ। आज नहीं नैंकहुँ तुम चाख्यौ—५४७।

चाचर, चाचरि—संज्ञा स्त्री. [सं. चर्चरी] (१) होली या फाग के गीत। (२) होली का स्वाँग और हुल्लड़। (३) हल्ला-गुल्ला, उपद्रव।

चाचरी—संज्ञा स्त्री. [सं. चर्चरी] योग की एक मुद्रा।

चाचा—संज्ञा पुं. [सं. तात] बाप का छोटा भाई।

चाची—संज्ञा स्त्री. [हिं. चाचा] चाचा की स्त्री।

चाट—संज्ञा स्त्री. [हिं. चाटना] (१) स्वाद लेने की

प्रबल इच्छा (२) शौक, चसका। (३) प्रबल इच्छा, लोलुपता। (४) लत, आदत।(५) चटपटी चीज।

संज्ञा पुं. [सं.] (१) ठग। (२) उचक्का, चाँई।

चाटत—क्रि. स. [हिं. चाटना] (जीभ लगाकर) चाटता है। उ.—(क) मनौ भुजंग अमी-रस-लालच, फिरि फिरि चाटत सुभग सुवंदहिं—१०-१०७। (ख) जैसे धेनु बच्छ कौ चाटत तैसे मैं अनुरागूँ—सारा.१३३।

चाटति—क्रि. स. [हिं. चाटना] (प्यार से किसी वस्तु पर) जीभ चलाती है। उ.—ब्यानी गाइ बछरुवा चाटति, हौं पय पियत पतूखिनि लैया—१०-३३५।

चाटना—क्रि. स. [अनु. चटचट=जीभ चलाने का शब्द] (१) जीभ लगाकर खाना या स्वाद लेना। (२) पोंछ-पाँछ कर खा जाना। (३) प्यार से जीभ फेरना। (४) कीड़ों का किसी वस्तु को खा जाना।

चाटु—संज्ञा पुं. [सं.] (१) मीठी या प्रिय लगनेवाली बात। (२) झूठी प्रशंसा, खुशामद, चापलूसी।

चाटुकार—संज्ञा पुं. [सं.] चापलूस, खुशामदी।

चाटुकारी—संज्ञा स्त्री. [सं. चाटुकार+ई (प्रत्य.)] झूठी प्रशंसा या खुशामद, चापलूसी।

चाटुपट—संज्ञा पुं. [सं.] (१) झूठी प्रशंसा या चापलूसी करने में बहुत कुशल। (२) भाँड़, भंड।

चाटे—क्रि. स. [हिं. चाटना] पोंछ-पाँछ कर चट कर गये। उ.—दूध-दही के भोजन चाटे नेकहुँ लाज न आई—सारा. ७४६।

चाड़—संज्ञा स्त्री. [हिं चाँड़] (१) चाह, चाव, प्रेम। उ.—हौं अपने गोपाल लड़ैहौं, भौन-चाँड़ सब रहौ धरी। पाऊँ कहाँ खिलावन कौ सुख, मैं दुखिया, दुख कोखि जरी—१० ८०।

चाड़िला—वि. [हिं. चाँड़िला] नटखट।

चाड़ी—संज्ञा स्त्री. [सं. चाटु] निंदा, चुगली।

चाढ़—संज्ञा स्त्री. [हिं. चाड़] इच्छा, कामना। उ.—जज्ञ-पुरुष तजि करत जज्ञ-बिधि, तातैं कहि कह चाढ़ सरी—८०६।

चाढ़ा—संज्ञा पुं [हिं. चाड़] (१) प्रिय पात्र। (२)प्रेमी।

चाढ़ी—वि. [हिं., चाढ़ा] चाहनेवाला, प्रेमी, आसक्त। उ.—देखी हरि मथति ग्वालि दधि ठाढ़ी। जोबन मदमाती इतराती, बेनि ढुरति कटि लौं, छबि बाढ़ी। दिन थोरी, भोरी, अति गोरी, देखत ही जु स्याम भए चाढ़ी।—१०-३००।

चाढ़े—संज्ञा पुं. [हिं. चाढ़ा] (१) प्रिय पात्र। उ.—धन्य धन्य भक्तत के चाढ़े—१०३५। (२) प्रेमी, चाहनेवाला। उ.—(क) तुम हम पर रिस करति हौ हम हैं तुव चाढ़े। निठुर भई हौ लाड़िली कब के हम ठाढ़े। (ख) दिन थोरी भोरी अति कोरी देखत ही जु स्याम भए चाढ़े (चाढ़ी)—१०-३००।

चाणक्य—संज्ञा पुं. [सं.] चंद्रगुप्त मौर्य का मंत्री।

चाणाक्ष—वि. – धूर्त, चालाक, काँइयाँ।

चाणूर—संज्ञा पुं. [सं.] कंस का एक पहलवान जिसे श्रीकृष्ण ने मारा था।

चातक—संज्ञा पुं. [सं.] वर्षाकाल में बोलनेवाला एक पक्षी जिसके संबंध में कवियों का विश्वास है कि यह नदी-सरोवर का संचित जल न पीकर केवल स्वाती नक्षत्र की बूँदों से अपनी प्यास बुझाता है।

चातकनी—संज्ञा स्त्री [हिं. चातक] मादा चातक।

चातर—संज्ञा पुं. [हिं. चादर] (१) जाल। (२) षड्यंत्र।

वि. [हिं. चातुर] चालाक, काँइयाँ।

चातुर—वि. [सं.] (१) दिखायी देनेवाला। (२) चतुर, चालाक। (३) खुशामदी, चापलूस, चाटुकार।

संज्ञा स्त्री. [हिं. चातुर] चतुरता। उ.—रोचन भरि लै देत सींक सौं, स्रवन निकट अतिहीं चातुर की—१०-१८०।

संज्ञा पुं.— (१) गोल तकिया। (२) चौपहिया गाड़ी।

चातुरई, चातुरता, चतुरताई—संज्ञा स्त्री. [हिं. चतुरता] (१) चालाकी। (२) बुद्धि। उ.—जे जे प्रेम छके मैं देखे तिनहिं न चातुरताई—२२७५।

चातुरिक—संज्ञा पुं. [सं.] सारथी, रथवान।

चातुरी—वि. [सं.] चतुर। उ.—नारि गईं फिरि भवन आतुरी। नंद-घरनि अब भई चातुरी—३९१।

चातुर्थक, चातुर्थिक—वि. [सं.] चौथे दिन होनेवाला।

चातुर्मास्य, चातुर्मासिक—वि. [सं.] चार महीनों में होनेवाला, चार महीने का।

चातुर्य—संज्ञा पुं. [सं.] चतुराई, निपुणता।

चातुर्वर्ण्य—संज्ञा पुं. [सं.] (१) चार वर्ण—ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र। (२) इनका धर्म।

चात्रिक—संज्ञा पुं. [हिं. चातक] चातक पक्षी।

चादर—संज्ञा स्त्री. [फ़ा.] (१) ओढ़ना, दुपट्टा।

मुहा.—चादर उतारना-स्त्री का अपमान करना। चादर रहना—इज्जत बनी रहना। चादर से बाहर पैर फैलाना—हैसियत से ज्यादा खर्च करना।

(२) धातु का पत्तर। (३) पानी की ऊपर से गिरने वाली धार। (४) पानी का फैलाव जिसमें लहरें या भँवर न हों। (५) देवता या पूज्य स्थान पर चढ़ाई जानेवाली फूलों की राशि।

चादरा—संज्ञा पुं. [हिं. चादर] मरदानी चादर।

चान—संज्ञा पुं. [हिं. चाँद] चंद्रमा।

चानक—क्रि. वि. [हिं. अचानक] सहसा, एकाएक।

चानन—संज्ञा पुं. [हिं. चंदन] चंदन।

चानना—क्रि. अ. [हिं. चान + ना (प्रत्य.)] उमंग में होना।

चानूर—संज्ञा पुं. [सं. चाणूर] कंस का एक मल्ल जिसे धनुष-यज्ञ के समक्ष श्रीकृष्ण ने मारा था।

चाप—संज्ञा पुं. [सं.] धनुष, कमान।

संज्ञा स्त्री—(१) दबाव। (२) पैर की आहट।

चापट, चापड़, चापर—संज्ञा स्त्री. [हिं. चपटा] भूसी, चोकर।

वि.—(१) चपटा। (२) समतल। (३) उजाड़।

चापति—क्रि. स. [हिं. चापना] (स्नेह से) दबाती है। उ.—भुज चापति चूमति बलि जाई—१०-७१।

चापना—क्रि. स. [सं. चाप] दबाना, मीड़ना।

चापल—संज्ञा पुं. [सं.] चंचल होने का भाव।

वि. [हिं. चपल] चंचल, अस्थिर।

चापलता, चापलताई—संज्ञा स्त्री. [हिं. चापल + ता, ताई] (१) चंचलता, अस्थिरता। (२) ढिठाई।

चापलूस—वि. [फ़ा.] खुशामदी, चाटुकार।

चापलूसी—संज्ञा स्त्री. [हिं. चापलूस] खुशामद।

चापल्य—संज्ञा पुं. [हिं. चपल] चपलता।

चापि—क्रि. स. [हिं. चापना] दबाकर, मसलकर, मीड़ कर। उ.—चापि ग्रीव हरि प्रान हरे, दग-रकत-प्रवाह चल्यौ अधिकानी—१०-७८।

चापी—संज्ञा पुं. [सं. चापिन्] (१) धनुष धारण करनेवाला। (२) शिव।

चाब—संज्ञा स्त्री. [हिं. चाबना] (१) डाढ़, जबड़ा। उ.—जब मुख गए समाइ, असुर तब चाब सकोरयौ—४३१। (२) चौखूँटे दाँत। (३) बच्चे के जन्मोत्सव की एक रीति।

संज्ञा पुं. [सं. चप] एक बाँस।

संज्ञा स्त्री. [सं. चव्य] (१) एक पौधा या उसका फल। (२) चार की संख्या। (३) कपड़ा।

चाबना—क्रि. स. [सं. चर्वण, प्रा. चब्बण] (१) दाँतों से कुचलना। (२) खूब भोजन करना।

चाबी, चाभी—संज्ञा स्त्री. [हिं. चाप] कुंजी, ताली।

चाबुक—संज्ञा. पुं. [फ़ा.] (१) कोड़ा, हंटर, सोंटा। (२)बात जिससे काम करने की उत्तेजना मिले।

चाभ—संज्ञा स्त्री. [हिं. चाब]। (१) पौधा। (२) डाढ़।

चाभना—क्रि. स. [हिं. चाबना] खाना, भक्षण करना।

चाम—संज्ञा पुं. [सं. चर्म] चमड़ा, खाल, चमड़ी। उ.—आमिष-रुधिर अस्थि अँग जौ लौं, तौ लौं कोमल चाम—१-७६।

मुहा.—चाम के दाम—चमड़े का सिक्का। चाम के दाम चलाना—अन्याय या अंधेर करना। चाम के दाम चलावै—अन्याय या अंधेर करता है। उ.—ऊधौ अब कछु कहत न आवै। सिर पै सौति हमारै कुबिजा चाम के दाम चलावै—४२५७।

चामड़ी—संज्ञा स्त्री. [हिं. चमड़ी]चमड़ी, खाल।

चामर—संज्ञा पुं. [हिं. चँवर] (१) चाँर, चँवर, चौरी। (२) मोरछल। (३) एक छंद।

चामरिक—संज्ञा पुं. [सं.] चँवर डुलानेवाला।

चामरी—संज्ञा स्त्री. [सं.] सुरा गाय।

चामिल—संज्ञा स्त्री. [हिं. चंबल] भिक्षापात्र।

चामीकर—संज्ञा पुं. [सं.] (१) स्वर्ण। (२) धतूरा।

वि.—स्वर्णमय, सुनहरा।

चामुंडा—संज्ञा स्त्री. [सं.] एक देवी।

चाय—संज्ञा स्त्री. [चीनी चा] एक पौधा जिसकी पत्तियाँ उबाल कर पी जाती हैं।

संज्ञा पुं. [हिं. चाव] (१) उमंग, उत्साह, चाव।

उ.—भरि भरि सकट चले गिरि सनमुख अपने अपने चाय—६१८। (२) इच्छा, कामना। उ.—चित में यह अनुरक्त बिचारत हरि दरसन की चाय—सारा. ८४८। (३) प्रेम।

चायक—संज्ञा पुं. [हिं. चाय] चाहनेवाला, प्रेमी।
संज्ञा पुं. [सं. चयन] चुननेवाला।

चार—वि. [सं. चतुर] दो और दो का योग।
मुहा.—चार आँखें करना—सामने आना। चार आँखें होना— देखा देखी होना। चार चाँद लगना—मान, प्रतिष्ठा या सौंदर्य बढ़ना। चार कंधे चढ़ना (चलना)—मरना। चार-पाँच करना—(१) हीला-हवाला करना। (२) झगड़ा करना। चारों फूटना—न देख सकना और न विचार कर सकना। चारों खाने चित्त होना—(१) बिलकुल हार जाना। (२) सकपका जाना।
(२) कई एक, बहुत से। (३) थोड़े, कुछ।
मुहा.—चार दिन— थोड़े दिन। चार पैसे—थोड़ा धन।
संज्ञा पुं.—चार की संख्या।
संज्ञा पुं. [सं.] (१) गति, चाल। (२) बंधन। (३) दूत, चर। (४) दास, सेवक। (५) चिरौंजी का पेड़। (६) बनावटी विष। (७) रीति-रस्म।

चारक—संज्ञा पुं. [सं.] (१) चरवाहा। (२) संचालक, (३) गति, चाल। (४) कारागार। (५) गुप्तचर। (६) साथी। (७) सवार। (८) मनुष्य।

चारण—संज्ञा पुं. [सं.] (१) भाट, बंदीजन। उ.—बिद्याधर गंधर्व अपसरा गान करत सब ठाढ़े। चारण (चारन) सिद्ध पढ़त बिरुदावलि लै फगुवा सुख बाढ़े—सारा. २८। (२) राजपूताने की एक जाति। (३) भ्रमणकारी।
संज्ञा पुं. [हिं. चराना] चराना। उ.—गोपी ग्वाल गाइ बन चारण (चारन) अति दुख पायौ त्यागत—२९१५।

चारत—क्रि. स. [हिं. चारना] चराते हुए। उ.—बन-बन फिरत चारत धेनु—४२७।

चारदा—संज्ञा पुं. [हिं. चार + दा (प्रत्य.)] चौपाया।

चारदीवारी—संज्ञा स्त्री. [फ़ा.] घेरा, हाता, प्राचीर।

चारन—संज्ञा पुं. [सं. चारण] वंश की कीर्ति गाने वाला, बंदीजन। उ.—(क) बिप्र-सुजन-चारन-बंदीजन सकल नंद-गृह आए—१०-८७। (ख) चारन सिद्ध पढ़त बिरुदावलि लै फगुवा सब ठाढ़े-सारा. २८।
संज्ञा पुं. [हिं. चराना] चराने की क्रिया या भाव। उ.—(क) धन्य गाइ, धनि द्रुम-बन चारन। धनि जमुना हरि करत बिहारन—३९१। (ख) प्रात जात गैया लै चारन घर आवत है साँझ—४११।
क्रि. स. [हिं. चारना] (गाय आदि) चराने।
उ.—बछुरा चारन चले गोपाल—४१०।

चारना—क्रि. स. [सं. चारण] चराना।

चारपाई—संज्ञा स्त्री. [हिं चार+पाया] खाट, खटिया।
मुहा.—चारपाई पर पड़ना — बीमार होना। चारपाई धरना (पकड़ना, लेना) —(१) बहुत बीमार होना। (२) लेट जाना। चारपाई से पीठ लगना —बीमारी से बहुत दुबले हो जाना।

चारा—संज्ञा पुं. [हिं. चरना] (१) पशुओं के चुगने की चीजें। उ.—लोचन भए पखेरू माइ। लुब्धे स्याम रूप चारा को अकल फंद परे जाइ—पृ. ३२५। (२) मछलियों को फँसाने का आटा या अन्य वस्तु जो कँटिया पर लगायी जाती है।
संज्ञा पुं. [फ़ा.] उपाय, इलाज, तदबीर।

चारि— वि. [हिं. चार] (१) चार, तीन और एक का योग। उ.—चौपरि जगत मड़े जुग बीते। गुन पाँसे, क्रम अंक, चारि गति सारि, न कबहूँ जीते—१-६०। (२) थोड़ा-बहुत, कुछ।
मुहा.—चारि दिवस—थोड़े दिन, कुछ दिन। उ.—सब वे दिवस चारि मन रंजन, अंत काल बिगरैगो—१-७५।

चारिणी—वि. स्त्री [सं.] आचरण करनेवाली।

चारित, चारितु—वि. [सं.] जो चलाया गया हो।
संज्ञा पुं. [हिं. चारा] पशुओं का चारा।
संज्ञा पुं. [सं.] (चलाया जाने वाला) आरा।
संज्ञा पुं. [हिं. चरित्र] चरित्र।

चारित्र—संज्ञा पुं. [सं.] (१) कुल-आचार। (२) स्वभाव, प्रकृति।

चारित्र्य—संज्ञा पुं. [सं.] चरित्र, चालचलन।

चारी—वि. [सं. चारिन्] (१) चलनेवाला। (२) व्यवहार या आचरण करनेवाला।

संज्ञा पुं. (१) पैदल सिपाही। (२) संचारीभाव।

संज्ञा स्त्री. [सं.] नृत्य का एक अंग।

वि. [हिं. चार] चार। उ.—महामुक्ति कोऊ नहिं बाँछै जदपि पदारथ चारी—३३१६।

क्रि. स. [हिं. चराना] चरायीं। उ.—सूरदास प्रभु नाँगे पाँयन दिन प्रति गैयाँ चारी—३४१२।

चारु—वि. [सं.] (१) सुंदर, मनोहर। उ.—चारु मोहिनी आइ आँध कियौ, तब नख-सिख तैं रोयौ—१-४३। (२) रुचिकर, सरस। उ.—सूरप्रभु कर गहत ग्वालिनी, चारु चुंबन हेत—१०-१८४।

संज्ञा पुं. [सं.] (१) बृहस्पति। (२) रुक्मिणी से उत्पन्न श्रीकृष्ण का एक पुत्र। (३) केसर।

चारुगर्भ—संज्ञा पुं [सं.] श्रीकृष्ण का एक पुत्र।

चरुगुप्त—संज्ञा पुं. [सं.] श्रीकृष्ण का एक पुत्र।

चारुचित—संज्ञा पुं. [सं.] धृतराष्ट्र का एक पुत्र।

चारुता, चारुताई—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) सुंदरता, मनोहरता, सुहावनापन। (२) सरसता।

चारुदेष्ण—संज्ञा पुं. [सं.] श्रीकृष्ण का एक पुत्र।

चारुधारा—संज्ञा स्त्री. [सं.] इंद्र की पत्नी शची।

चारुनेत्र—वि. [सं.] सुंदर नेत्रवाला।

संज्ञा पुं.—हिरन, मृग।

चारुबाहु—संज्ञा पुं. [सं.] श्रीकृष्ण का एक पुत्र।

चारुभद्र—संज्ञा पुं. [सं.] श्रीकृष्ण का एक पुत्र।

चारुमती—संज्ञा स्त्री. [सं.] श्रीकृष्ण की एक पुत्री।

चारुयश—संज्ञा पुं. [सं.] श्रीकृष्ण की एक पुत्री।

चारुविंद—संज्ञा पुं. [सं.] श्रीकृष्ण का एक पुत्र।

चारुश्रवा—वि. [सं. चारुश्रवस्] सुंदर कानवाला।

संज्ञा पुं.—श्रीकृष्ण का एक पुत्र।

चारुहासी—वि. [सं.] सुंदर हँसीवाला।

चारुहासिनी—वि. [सं.] सुंदर मुस्कानवाली।

चारे—क्रि. अ. [हिं. चारना] चरने (के लिए)। उ.—टेरि उठे बलराम स्याम कौं आवहु जाहिं धेनु बन चारे—४२३।

चारै—वि. [हिं. चार] चार। उ.—दुखित देखि बसुदेव-देवकी, प्रगट भए धारि कै भुज चारै—१०-१०।

चारौं—वि. [हिं चार] चारों। उ.—चारों बेद चतुर्मुख ब्रह्मा जस गावत हैं ताको—१-११३।

चारौ—संज्ञा पुं. [हिं. चरना, चारा] भोजन, भोज्य पदार्थ।

मुहा०—कियो गीध कौ चारौ—मार डाला। उ.—नवग्रह परे रहैं पाटीतर, कूपहिं काल उसारौ। सो रावन रघुनाथ छिनक मैं कियौ गीध कौ चारौ—६-१५७।

वि. [हिं. चार] चारों। उ.—दीनदयाल, पतित-पावन, जस बेद बखानत चारौ—१-१५७।

क्रि.स.[हिं.चराना] चराता है। उ.—ब्रह्म, सनक, सिव, ध्यान न आवत, सो ब्रज गैयनि चारौ—१०-३७८।

चारयौ—वि. [हिं. चार] चारों।

मुहा०—चारयो (चारों) फूटना—चर्मचक्षु और ज्ञानचक्षु नष्ट होना, दृष्टि और बुद्धि का नाश होना। उ.—निसि दिन बिषय-बिलासनि बिलसत, फूटि गईं तव चारयौ—१-१०१।

चार्वाक—संज्ञा पुं. [सं.] एक नास्तिक।

चार्वी—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) बुद्धि। (२) चाँदनी। (३) कांति। (४) सुंदर स्त्री। (५) कुबेर की पत्नी।

चाल—संज्ञा स्त्री. [सं. चार, हिं.चलन] (१) गति, गमन, चलने की क्रिया। उ.—(क) इंद्री अजित, बुद्धि बिषयारत, मन की दिन दिन उलटी चाल—१-१२७। (ख) टेढ़ी चाल, पाग सिर टेढ़ी, टेढ़ैं टेढ़ैं धायो—१-३१०। (२) आचरण, चलन, बर्ताव। उ.—(क) महामोह के नूपुर बाजत, निंदा-सब्द रसाल। भ्रम-भोयौ मन भयौ पखावज, चलत असंगत चाल—१-१५३। (ख) अब कछु औरहिं चाल चाली—२७३४। (ग) अब समीर पावक सम लागत सब ब्रज उलटी चाल—३१५५। (घ) कहा वह प्रीति रीति राधा सौं कहाँ यह करनी उलटी चाल—३४५। (३) चलन, रीति-रिवाज, प्रथा, परिपाटी। उ.—सूर स्याम कौ कहा निहोरौ, चलत बेद की चाल—१-१५६। (ङ) अपने सुत की चाल न देखत उलटी तू हमपैं रिस

ठानति। (४) चलने का ढंग, ढब या प्रकार। उ.—(क) हौं वारी नान्हें पाइनि की दौरि दिखावहु चाल—१०-२२३। (ख) धूरि धौत तन अंजन नैननि, चलत लटपटी चाल—१०-११४। (ग) सूरदास गोरी अति राजत ब्रज कौं आवत सुंदर चाल—४७३। (घ) वह चितवन वह चाल मनोहर वह मुसुक्यानि जो मंद धुनि गावन—३३०७। (५) आकार, प्रकार, बनावट, गढ़न। (६) गमन-मुहूर्त, चलने की सायत, चाला। (७) कार्य करने की युक्ति, उपाय या ढंग। (८) धोखा देने की युक्ति, छल-कपट, धूर्तता।

मुहा०—चाल चलना (अक.)—धोखा देने की युक्ति या कार्य सफल होना। चाल चलना (सक.)—धोखा देना, चालाकी करना। चाल में आना—धोखे में पड़ना।

(९) ढंग, प्रकार, विधि, तरह। (१०) शतरंज-ताश में मोहरा या पत्ता चलना। (११) हलचल, धूम। (१२) आहट, खटका।

संज्ञा पुं. [सं.] (१) छाजन। (२) स्वर्णचूड़ पक्षी।

चालक—संज्ञा पुं. [सं.] (१) चलानेवाला, संचालक। (२) नटखट हाथी। (३) हाथ चलाने की क्रिया।

संज्ञा पुं. [हिं. चाल=धूर्तता] छली-कपटी।

चालचलन—संज्ञा पुं. [हिं. चाल+चलन] आचरण।

चालढाल—संज्ञा पुं. [हिं. चाल+ढाल] तौर तरीका, ढंग।

चालन—संज्ञा पुं. [सं.] (१) चलाने की क्रिया। (२) चलने की क्रिया, गति। (३) चलनी, छलनी। (४) छानने की क्रिया।

संज्ञा पुं. [हिं. चालना] चोकर, चलनौस।

चालनहार—संज्ञा पुं. [हिं. चालन+हार (प्रत्य.)] चलानेवाला, ले जानेवाला।

संज्ञा पुं. [हिं. चलना.] चलनेवाला।

चालना—क्रि. स. [सं. चालन] (१) चलाना, संचालित करना। (२) एक स्थान से दूसरे को ले जाना। (३) बिदा कराके ले जाना। (४) हिलाना-डुलाना। (५) काम निपटाना या भुगताना। (६) बात या प्रसंग छेड़ना। (७) छानना।

क्रि. अ. [सं. चालन] (१) गति में होना, चलना। (२) विदा होकर आना, चाला होना।

चालनी—संज्ञा स्त्री. [सं.] चलनी, छलनी।

चालबाज—वि. [हिं. चाल+फ़ा. बाज़] धूर्त, छली।

चालबाजी—वि. [हिं. चालबाज] छल-कपट।

चालहिं—संज्ञा स्त्री. [हिं. चाल+हिं.(प्रत्य.)] चाल से, गति से। उ.—कनक-कामिनी सौं मन बाँध्यौ, ह्वै गज चल्यौ स्वान की चालहिं—१-७४।

क्रि. अ. [हिं. चलना] चलते हैं। उ.—सूरदास प्रभु पथिक न चालहिं कासौं कहौं सँदेसनि।

चाला—संज्ञा पुं. [हिं. चाल] (१) प्रस्थान, कूच। (२) नयी बधू का पहले पहल ससुराल या मायके जाना। (३) यात्रा का मुहूर्त या शुभ सायत।

चालाक—वि. [फ़ा.] (१) चतुर। (२) चालबाज।

चालाकी—संज्ञा स्त्री. [फ़ा.] (१) चतुराई, दक्षता। (२) धूर्तता, चालबाजी। (३) युक्ति, कौशल।

चालान—संज्ञा पुं. [हिं. चलना] (१) भेजे हुए माल का बीजक या हिसाब। (२) माल लाने या लेजाने का आज्ञापत्र। (३) अपराधियोंका अदालतमें भेजा जाना।

चालिया—वि. [हिं. चाल+इया (प्रत्य.)] धूर्त, छली।

चालीं—क्रि. अ. [हिं. चलना] चल दीं, प्रस्थान कर दिया। उ.—बेनु स्रवन सुनि, गोबर्धन तैं तृन दंतनि धरि चालीं—६१३।

चाली—वि. [हिं. चाल] (१) धूर्त, चालबाज, चालिया। (२) चंचल, नटखट, शैतान।

क्रि. स. [हिं. चालना] (१) प्रसंग चलाया, बात शुरू की। उ.—(क) ऊधौ कत ए बातैं चालीं—३२२८। (ख) बहुरयो ब्रज बात न चाली। १० उ.-७६। (२) आयोजन किया।

मुहा०—चाल चाली—धोखा देने का आयोजन किया, चालाकी की। उ.—अब कछु औरहिं चाल चाली—२७३४।

चालीस—संज्ञा पुं. [सं. चत्वारिंशत्, प्रा. चत्तालीस] बीस की दुगनी संख्या।

चालीसवाँ—संज्ञा पुं. [हिं. चालीस] जो क्रम में उनतालीस के आगे पड़ता है।

चालू—वि. [हिं. चलना] (१) जो चल रहा हो। (२) जिसका चलन रोका न गया हो, चलता हुआ।

चालै—क्रि. अ. [हिं. चलना] चलता है, जाता है। उ.–साधु-संग, भक्ति बिना, तन अकार्थ जाई। जुआरी ज्यौं हाथ झारि चालै छुटकाई—१-३३०।

क्रि. स. [चलाना] चलावे, बखान करे, प्रशंसा करे। उ.—अपनी को चालै सुनि सूरज पिता जननि बिसराई।

चाल्ह, चाल्हा—संज्ञा स्त्री. [देश.] एक मछली।

चाँवचाँव—संज्ञा पुं. [हिं. चाँयँ चाँयँ] व्यर्थ की बकवाद।

चाव—संज्ञा पुं. [हिं. चाह] (१) प्रबल इच्छा, लालसा। उ.—चित्रकेतु पृथ्वीपति राव। सुतहित भयो तासु हिय चाव।

मुहा० —चाव निकलना —लालसा पूरी होना।

(२) प्रेम, चाह। (३) शौक, उत्कंठा। (४) लाड़-प्यार, दुलार (५) उमंग, उत्साह।

चावड़ी—संज्ञा स्त्री. [देश.] ठहरने का स्थान, चट्टी।

चावण—संज्ञा पुं. [देश.] एक गुजराती राजवंश।

चावना—क्रि. स. [हिं. चाव] चाहना।

चावर, चावल—संज्ञा पुं. [सं. तंडुल] (१) एक अन्न, तंदुल। (२) पकाया चावल, भात। (३) छोटे-छोटे बीज के दाने जो खाये जायँ। (४) एक रत्ती का आठवाँ भाग।

मुहा० —चावल भर–रत्तीकेआठवें भाग के बराबर।

चाशनी—संज्ञा स्त्री. [फ़ा.] (१) चीनी या गुड़ का रस जो आँच पर चढ़ाकर गाढ़ा किया गया हो। (२) किसी पदार्थमें मीठेकी मिलावट। (३) चसका, मजा।

चाष—संज्ञा पुं. [सं.] नीलकंठ पक्षी। चाहा पक्षी।

संज्ञा पुं. [सं. चक्षु] आँख, नेत्र।

चास—संज्ञा स्त्री. [हिं. चास] जोत, बाँह।

चासना—क्रि. स. [हिं. चास] जोतना।

चासनी—संज्ञा स्त्री. [फ़ा. चाशनी] चाशनी।

चासा—संज्ञा पुं. [देश.] (१) हलवाहा। (२) किसान।

चाह—संज्ञा स्त्री. [सं. इच्छा, पु. हिं. चाहि अथवा सं. उत्साह, प्रा. उच्छाह] (१) इच्छा, अभिलाषा। उ. —(क) भक्ति भाव की जो तोहिं चाह। तो सौं नहिं ह्वै है निर्बाह—४-६। (ख) तुम कह्यौ मरिबे की तोहिं चाह। सब काहू कौं है यह राह—५-३। (२) प्रेम, प्रीति। (३) आदर, कदर। (४) माँग, आवश्यकता।

संज्ञा स्त्री. [हिं. चाल = आहट] खबर, सूचना, समाचार, भेद की बात। उ.—(क) हौं सखि नई चाह इक पाई। ऐसे दिननि नंद कैं सुनियत उपज्यौ पूत कन्हाई—१०-२२। (ख) चकित भयौ ब्रज चाह सुनाई—१५६१।

संज्ञा स्त्री. [हिं. चाव] उमंग, रुचि।

चाहक—संज्ञा पु. [हिं. चाहना] प्रेम करनेवाला।

चाहत—संज्ञा स्त्री. [हिं. चाह] प्रीति, लगन।

क्रि. स. [हिं. चाह] इच्छा करता है, चाहता है, अभिलाषा करता है। उ.—(क) बोवत बबुर, दाख फल चाहत, जोवत है फल लागे—१-६१। (ख) सुरतरु सदन सुभाव छाँड़ि कह चाहत है द्रुम भूम भँडारौ—सा. १११।

चाहति—क्रि. स. [हिं. चाह, चाहना] इच्छा करती है, अभिलाषती है। उ.—(क) चरन-कमल नित रमा पलोवै। चाहति नैंकु नैन भरि जोवै—१०-३। (ख) कासौं कहौं सखी कोउ नाहिंन, चाहति गर्भ दुरायौ—१०-४।

चाहना—क्रि. स. [हिं. चाह] (१) इच्छा करना, कामना रखना। (२) प्रेम करना, प्रीति रखना। (३) पाने की इच्छा जताना, माँगना। (४) प्रयत्न या कोशिश करना। (५) चाह से ताकना। (६) खोजना, ढूँढ़ना।

संज्ञा स्त्री.— चाह, जरूरत, आवश्यकता।

चाहा—संज्ञा पुं. [सं. चाष] बगले-सा एक जलपक्षी।

क्रि. स. [हिं. चाहना] (१) इच्छा की, कामना की। (२) प्रीति की, लगन लगायी।

चाहि—क्रि. स. [हिं. चाहना] (१) प्रेम करके। (२) देखकर।

प्रो.—चाहि रही—देखती, ताकती या निहारती रही। उ.–रही ग्वालि हरि कौ मुख चाहि-१०-३१६।

अव्य. [सं. चैव = और भी] अपेक्षाकृत (अधिक), से बढ़कर, बनिस्बत।

चाहिए—अव्य. [हिं. चाहना] उचित या उपयुक्त है।

चाही—वि. स्त्री. [हिं. चाह] इच्छित, चहेती।
वि. [फ़ा. चाह = कुआँ] (वह भूमि) जो कुएँ के जल से सींची जाय।

चाहे—क्रि. स. [हिं. चाहना] देखे, निहारे। उ.—सूर नृप नारि हरि बचन मान्यौ सत्य हरष ह्वै स्याम मुख सबनि चाहे—१६१८।
अव्य.—(१) जी चाहे, इच्छा हो। (२) जैसा जी चाहे, या तो। (३) होनेवाला हो।

चाहैं—क्रि. स. [हिं. चाहना] चाहते हैं, इच्छा करते हैं। उ.—लियैं दियौ चाहैं सब कोऊ, सुनि समरथ जदुराई—१-१६५।

चाहै—क्रि. स. [हिं. चाहना] इच्छा करते ही, इच्छा होते ही। उ.—रीतै भरै, भरैं पुनि ढारै, चाहै फेरि भरै—१-१०५।
प्रो.—मिल्यौ न चाहै—मिल नहीं पाती, प्राप्त नहीं होती। उ.—घर मैं गथ नहिं भजन तिहारौ, जौन दिऐ मैं छूटौं। धर्म-जमानत मिल्यौ न चाहै, तातैं ठाकुर लूटौ—१-१८५।

चाहो, चाहौ—क्रि. स. [हिं. चाहना] (१) इच्छा करो, चाह हो। उ.—(क) हरि की भक्ति करो सुख नीके जो चाहो सुख पायौ—सारा. ७३। (ख) करो उपाव बचो जो चाहो मेरो बचन प्रमानो—सारा. ४८७। (२) देखो, निहारो। उ.—कोउ नयनन सों नयन जोरि कै कहति न मो तनचाहो—२४२७।

चाहौं—क्रि. स. [हिं. चाहना] चाहता हूँ, इच्छा करता हूँ। उ.—कछू चाहौं कहौं, सकुचि मन मैं रहौं, आपने कर्म लखि त्रास आवै—१-११०।

चाह्यौ—क्रि. स. [हिं. चाहना] चाह की, इच्छा की। उ.—(क) नाग-नर-पसु सबनि चाह्यौ सुरसरी कौ छंद—६-~~१०~~। (ख) जल तें बिछुरि तुरत तनु त्याग्यौ तउ कुल जल को चाह्यौ—३१४६।

चिआँ, चियाँ—संज्ञा पुं. [सं. चिंचा = इमली] इमली का बीज। मुहा.—चिआँ सी—बहुत छोटी।

चिउँटा—संज्ञा पुं. [सं. चिमटा] चींटा नामक कीड़ा।
मुहा.—गुड़ चींटा होना—परस्पर चिमट जाना। चिउँटे के पर निकलना— मरने को होना, इतराकर ऐसा काम करना जिससे हानि की संभावना हो।

चिउँटिया रेंगान—संज्ञा स्त्री. [हिं. चिउँटी + रेंगना] बहुत धीमी या सुस्त चाल या क्रिया।

चिउँटी—संज्ञा स्त्री. [हिं. चिमटना] चींटी, पिपीलिका।
मुहा.—चिउँटीकी चाल—सुस्त चाल, मंदगति।

चिंगट—संज्ञा पुं. [सं.] झिंगवा या झिंगा मछली।

चिंघाड़—संज्ञा स्त्री. [सं. चीत्कार] (१) चीखने-चिल्लाने का घोर शब्द। (२) हाथी की बोली।

चिंघाड़ना—क्रि. अ. [सं. चीत्कार] (१) चीखना, चिल्लाना। (२) हाथी का बोलना।

चिंचा—संज्ञा स्त्री. [सं.] इमली।

चिंचिनी—संज्ञा स्त्री. [सं. तिंतिड़ी] इमली।

चिंची—संज्ञा स्त्री. [सं.] गुंजा, घुँघची।

चिंज, चिंजा—संज्ञा पुं. [सं. चिरंजीव] पुत्र, बेटा।

चिंजी—संज्ञा स्त्री. [हिं. चिंजी] लड़की, बेटी।

चिंत—संज्ञा स्त्री. [सं. चिंता] चिंता, चिंतन, ध्यान, याद, फिक्र। उ.—राघौ जू, कितिक बात, तजि चिंत—६-१०७।

चिंतक—वि. [सं.] (१) चिंतन या ध्यान करनेवाला। (२) ख्याल या ध्यान करनेवाला।

चिंतत—क्रि. स. [हिं. चिंतना] ध्यान लगाते हैं, स्मरण करते हैं। उ.—सनक-संकर ध्यान धारत, निगम-आगम बरन। सेस, सारद, रिषय नारद, संत चिंतत सरन—१-३०८।

चिंतन—संज्ञा पुं. [सं.] (१) स्मरण, ध्यान। उ.—चित्त चिंतन करत जग-अघ हरत, तारन-तरन—१-३०८। (२) विचार, गौर।

चिंतना—क्रि. स. [सं. चिंतन] (१) ध्यान या स्मरण करना। (२) सोचना, गौर करना।
संज्ञा स्त्री.—(१) ध्यान, स्मरण। (२) चिंता।

चिंतनीय—वि. [सं.] (१) ध्यान करने योग्य। (२) चिंता या फिक्र करने लायक। (३) विचार करने योग्य।

चिंतवन—संज्ञा पुं. [सं. चिंतन] स्मरण, ध्यान।

चिंता—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) ध्यान, भावना। (२) सोच, फिक्र, खटका। उ.—चिंता मानि, चितै अंतर-गति, नाग-लोक कौं ध्याए—१-२६।

मुहा.—चिंता लगना—बराबर फिक्र रहना। कुछ चिंता नहीं—कोई परवाह या फिक्र की बात नहीं।

चिंताकुल—वि. [सं. चिंता+आकुल] चिंता से आतुर।

चिंतातुर—वि. [सं. चिंता+आतुर] चिंता से आतुर।

चिंतापल—वि.—चिंतित, चिंता से व्यग्र।

चिंतामणि, चिंतामनि—संज्ञा पुं. [सं. चिंतामणि] (१) परमेश्वर उ.—परम उदार चतुर चिंतामनि कोटि कुबेर निधन कौं—१-६। (२) एक कल्पित रत्न जो सभी तरह की इच्छा पूरी करता है। (३) ब्रह्मा। (४) सरस्वती देवी का एक मंत्र।

चिंति—क्रि. स. [हिं. चिंतना] ध्यान करो, स्मरण करो। उ.—चिंति चरन मृदु-चंद-नख, चलत चिन्ह चहुँ दिशि सोभा—१-६६।

संज्ञा पुं. [सं.] एक देश या उसका निवासी।

चिंतित—वि.[सं.] जिसे बहुत चिंता हो।

चिंत्य—वि. [सं.] विचार या चिंता के योग्य।

चिंदी—संज्ञा स्त्री. [देश.] टुकड़ा।

मुहा.—हिंदी की चिंदी निकालना—बहुत छोटी छोटी भूलें दिखाना।

चिउड़ा, चिउरा—संज्ञा पुं. [सं. चिपिट, प्रा. चिविड, चिउड़ा] चिउड़ा, चूरा। उ.—श्रीफल मधुर, चिरौंजी आनी। सफरी चिउरा, अरुन खुबानी—१०-२११।

चिउली—संज्ञा स्त्री. [देश.] (१) महुए की जाति का एक जंगली पेड़। (२) एक रेशमी कपड़ा।

संज्ञा स्त्री. [सं. चिपिट, प्रा. चिविड, चिविल] चिकनी सुपारी।

चिक—संज्ञा स्त्री. [तु. चिक] (१) बाँस आदि की तीलियों का परदा। (२) कसाई।

संज्ञा स्त्री. [देश.] कमर की चिलक या झटका।

चिकट, चिकटा—वि. [सं. चिक्लिद] (१) मैला कुचैला, गंदा। (२) लसीला या चिपचिपा।

संज्ञा स्त्री. [देश.] एक रेशमी कपड़ा।

चिकटना—क्रि. अ. [हिं. चिकट] मैल से चिपकना।

चिकन—संज्ञा पुं. [फ़ा.] एक महीन कपड़ा।

चिकना—वि. [सं. चिक्कण] (१) जो खुरदुरा या ऊबड़ खाबड़ न हो। (२) जिस पर हाथ-पैर फिसलें।

मुहा.—चिकना देखकर फिसल पड़ना—ऊपरी धन रूप की चमक-दमक पर लुभा जाना।

(३) जो रूखा-सूखा न हो, स्निग्ध।

मुहा.-चिकना घड़ा—निर्लज्ज या बेहया। चिकने घड़े पर पानी पड़ना (न ठहरना)—अच्छी बात या उपदेश का कुछ असर न होना।

(४) साफ सुथरा, सजा सजाया।

मुहा.—चिकना चुपड़ा—बना-ठना, छैला। चुपड़ी (बातें)-बनावटी स्नेह की मीठी मीठी बातें जो फुसलाने या धोखा देने के लिए की जायँ। चिकना मुँह—(१) सजा-सजाया। (२) धन या पदवाला। चिकने मुँह का ठग—वह धूर्त जो देखने में भला जान पड़े। चिकने मुँह को चूमना—धनी-मानी का आदर करना।

(५) चिकनी चुपड़ी या मीठी-मीठी बातें कहने वाला। (६) स्नेही, प्रेमी।

संज्ञा पुं०—तेल घी आदि चिकने पदार्थ।

चिकनाई—संज्ञा स्त्री. [हिं. चिकना+ई (प्रत्य.)] (१) चिकनाहट। उ.—चित महिं और कपट अंतरगति ज्यौं फल, नीर खीर चिकनाई—३३१०। (२) सरसता। (३) घी तेल जैसे चिकने पदार्थ।

चिकनाना—क्रि. स. [हिं. चिकना+ना (प्रत्य.)] (१) चिकना करना। (२) तेल आदि लगाना। (३) साफ-सुथरा करना, सँवारना।

क्रि. अ.—(१) चिकना होना। (२) तेल आदि लगा होना। (३) मोटा-ताजा होना। (४) स्नेह-पूर्ण या प्रेमयुक्त होना।

चिकनापन—संज्ञा पुं. [हिं चिकना+पन (प्रत्य.)] चिकनाई, चिकनाहट।

चिकनावट, चिकनाहट—संज्ञा स्त्री. [हिं. चिकना+वट, हट (प्रत्य.)] चिकनाई, चिकनापन।

चिकनियाँ, चिकनिया—वि. [हिं. चिकना] बना-ठना, छैल-छबीला, शौकीन। उ.—(क) सब हीं ब्रज के लोग चिकनियाँ मेरे भाएँ घास। (ख) बहुरि

गोकु काहे को आवत भावत नवजोबनियाँ। सूरदास प्रभु वाके बस परि अब हरि भये चिकनियाँ—३८७।

चिकनी—वि. स्त्री. [हिं चिकना] (१) साफ सुथरी। (२) बनी-ठनी। (३) जिस पर हाथ-पैर फिसले। (४) जिसमें तेल लगा हो।

चिकरना—क्रि. अ. [सं. चीत्कार प्रा. चीक्कार, चिक्कार] जोर से चीखना, चिल्लाना।

चिकवा—संज्ञा पुं. [देश.] एक रेशमी, कपड़ा।

चिकार—संज्ञा पुं. [सं. चीत्कार, प्रा. चिक्कार] चीत्कार, चिल्लाहट। उ.—(क) भरत असुर चिकार पारयौ मारयौ नंदकुमार। (ख) गर्जनि पणव निसान संख हय गय हींस चिकार—१० उ. २।

चिकारना—क्रि. अ. [हिं. चिकार] चिल्लाना।

चिकारा—संज्ञा पुं. [हिं. चिकार] (१) सारंगी की तरह का एक बाजा। (२) एक जंगली जानवर।

चिकित्सक—संज्ञा पुं. [सं] रोग दूर करने का उपाय करनेवाला, वैद्य।

चिकित्सा—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) रोग दूर करने की युक्ति या क्रिया। (२) वैद्य का व्यवसाय या कार्य।

चिकित्सालय—संज्ञा पुं. [सं. चिकित्सा + आलय] वैद्य के बैठने का स्थान, दवाखाना, अस्पताल।

चिक्लि—संज्ञा पुं. [सं.] कीचड़, पंक।

चिकुटी—संज्ञा स्त्री. [हिं. चिकोटी] चुटकी।

चिकुर, चिकूर—संज्ञा पुं. [सं.] (१) सिर के बाल, केश। (२) पर्वत। (३) रेंगने वाले जंतु, सरीसृप। वि.—चंचल, चपल।

चिकोटी—संज्ञा स्त्री. [हिं. चुटकी] चुटकी।

चिक्कट—संज्ञा पुं. [हिं. चिकना + काट] मैल, कीट।

चिक्कण, चिक्कन—वि [सं.] चिकना। संज्ञा पुं.—(१) सुपारी। (२) हड़, हर्रे।

चिक्करना—क्रि. अ. [सं. चीत्कार] चिल्लाना।

चिक्कार—संज्ञा पुं. [हिं. चिकार] चीत्कार।

चिखना—संज्ञा पुं. [हिं. चखना] चटपटी चाट।

चिखुरन—संज्ञा-स्त्री. खेत जोतने पर निकाली हुई घास।

चिखुरना—क्रि. स.-खेत जोतते समय घास निकालना।

चिखुराई—संज्ञा स्त्री.—चिखुरने की क्रिया या मजदूरी।

चिखुरी—संज्ञा स्त्री—गिलहरी नामक जंतु।

चिखौनी—संज्ञा स्त्री. [हिं. चीखना] (१) चखने की क्रिया। (२) स्वाद लेने की वस्तु।

चिचान—संज्ञा पुं. [सं. सचान] बाज पक्षी।

चिचाना, चिचावना—क्रि. अ. [अनु. चीचीं] चिल्लाना।

चिचिंगा, चिचिंड, चिचिंडा, चिचिंत्री, चिचेंडा—संज्ञा पुं. [सं. चिचिंड] एक बेल जिसके फलों की तरकारी होती है। उ.—बनकौरा पिंडीक चिचिंडी। सीप पिंडारू कोमल भिंडी—३६६।

चिचियाना—क्रि. अ. [अनु. चींची] चिल्लाना।

चिचियाहट—संज्ञा स्त्री, [हिं. चिचियाना] चिल्लाहट।

चिचोड़ना, चिचोरना—क्रि. स. [हिं. चिचोड़ना] खूब दबाकर चूसना।

चिजारा—संज्ञा पुं.—राज, कारीगर, मेमार।

चिट—संज्ञा स्त्री. [हिं. चीड़ना या सं. चीर] (१) कपड़े-कागज आदि का छोटा टुकड़ा। (२) पुरजा, रुक्का।

चिटकना—क्रि. अ. [अनु.] (१) सूखने पर जगह जगह फटना या दरकना। (२) चिढ़ना, चिड़चिड़ाना।

चिटका—संज्ञा पुं. [हिं. चिता] चिता।

चिट्टा—वि. [सं. सित, प्रा. चित्त] सफेद, धवल। संज्ञा पुं.—(चमचमाता हुआ) रुपया। संज्ञा पुं.—झूठा बढ़ावा देना।

चिट्ठा—संज्ञा पुं. [हिं. चिट] (१) जमा-खर्च या लेनदेन की बही, खाता या लेखा। (२) लाभ-हानि का लेखा। (३) सूची। (४) प्रति सप्ताह या मास की मजदूरी में बटनेवाला धन। (५) ब्योरा।

मुहा.—कच्चा चिट्ठा—पूरा पूरा और ठीक ठीक भेद। कच्चा चिट्ठा खोलना—भेद को ब्योरे के साथ प्रकट करना।

चिट्ठी—संज्ञा स्त्री. [हिं. चिट] (१) पत्र, खत। (२) लिखा हुआ छोटा पुरजा। (३) आज्ञा पत्र (४) निमंत्रण पत्र।

चिट्ठीपत्री—संज्ञा स्त्री. [हिं. चिट्ठी+पत्री] (१) पत्र, खत। (२) पत्र-व्यवहार, खत-किताबत।

चिठि—संज्ञा स्त्री. [हिं. चिट, चिठा] (१) चिट्ठा। (२) हिसाब का कागज। (३) नाम की सूची।

चिड़चिड़ाहट—संज्ञा स्त्री. [हिं. चिड़चिड़ाना + हट] चिढ़ने या चिड़चिड़ाने का भाव।

चिड़वा—संज्ञा पुं. [सं. चिपिट] चिउड़ा, चूरा।

चिड़ा—संज्ञा पुं. [सं. चटक] नर गौरैया।

चिड़िया—संज्ञा स्त्री. [सं. चटक, हिं. चिड़ा] पक्षी।

मुहा.—चिड़िया का दूध—अप्राप्य वस्तु। चिड़िया चोथन (नोचन)—चारो तरफ का तकाजा या झंझट। चिड़िया फँसना—किसी मालदार को अपने पक्ष में करना। सोने की चिड़िया—(१) धनी असामी। (२) सुंदर या प्रिय पात्र।

चिड़िहार, चिड़िमार—संज्ञा पुं. [हिं. चिड़िया + हार (प्रत्य.)=मारना] चिड़ियाँ पकड़नेवाला, बहेलिया।

चिढ़—संज्ञा स्त्री. [हिं. चिड़चिड़ाना] कुढ़न, खीझ।

मुहा.—चिढ़ निकालना (पकड़ना)—कुढ़ाना, खिझाना, चिढ़ाने की बात पकड़ना।

चिढ़ना—क्रि. अ. [हिं. चिड़चिड़ाना] (१) कुढ़ना, खीझना, झल्लाना। (२) बुरा मानना।

चिढ़ाना—क्रि. स. [हिं. चिढ़ना] (१) खिझाना, कुढ़ाना। (२) खिझाने के लिए भद्दी नकल बनाना। (३) लज्जित करने के लिए हँसी उड़ाना।

चित्—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) चेतना। (२) चित्तवृत्ति।

निश्चयवाचक—संज्ञा पुं—(१) बीननेवाला। (२) अग्नि

प्रत्य.—एक निश्चयवाचक प्रत्यय।

चित—वि. [सं.] (१) एकत्र। (२) ढका हुआ।

संज्ञा पुं. [सं. चित्त] मन, जी, अंतःकरण।

मुहा.—चित उचटना—जी न लगना। चित करना—इच्छा होना। चित कीन्हो—इच्छा हुई। उ—द्वादस बन अवलोक मधुपुरी तीरथ कौं चित कीन्हो—सारा. ८२७। चित चढ़ना—ध्यान रहना, याद आना। चित चुराना—मन हरना। चित चोरै—मन हरता या मोहित करता है। उ.—रमकत झमकत जनकसुता सँग हाव-भाव चित चोरै—सारा. ३१०। चितहिं चुरावति — मन हरती है। उ.—नैन सैन दै चितहिं चुरावति यहै मंत्र टोना सिर डारि। चित देना—ध्यान देना, मन लगाना। चित दै—ध्यान देकर। उ.—(क) चित दै सुनौ हमारी बात। (ख) बिनती सुनौ दीन की चित दै कैसै तुव गुन गावै—१-४२। चित धरना—(१) मन लगाना। (२) मन में लाना। चित धार (सुनौ)—ध्यान से (सुनो)। उ.—कहौं सो कथा सुनौ चित धार। चित न धरौ—ध्यान मत दो, मन में न लाओ। उ.—हमारे प्रभु औगुन चित न धरौ—१-२२०। चित धरि राखे—स्मरण रखे, ध्यान में रखे। उ—जब वह विप्र पढ़ावै कुछ कुछ सुन कै चित धरि राखै—सारा. ११०। चित पर चढ़ना—(१) बार बार ध्यान में आना। (२) याद होना। चित बँटना—ध्यान इधर-उधर होना। चित बँटाना—ध्यान एक ओर न रहने देना। चित में बैठना—जी में पैठ जाना, मन में दृढ़ होना। चित बैठ्यौ—हृदय में (यह विचार) दृढ़ हो गया है। उ.—अब हमरे चित बैठ्यौ यह पद होनी होउ सो होउ। चित में आना (होना, में होना)—इच्छा होना, जी चाहना। चित में आई—इच्छा हुई, जी चाहा। उ.—खेलत खेलत चित में आई सृष्टि करन विस्तार—सारा. ५। चित होत—इच्छा होती है। उ.—यह चित होत जाउँ मैं अबही यहाँ नहीं मन लागत। चित न रहना—जी उचाट होना। चित न रहै—जी घबराता है, मन नहीं लगता। उ.—तब ही तैं व्याकुल भइ डोलति चित न रहै कितनौं समझाऊँ—१६५४। चित लगना—(१) जी न घबराना। (२) ध्यान बना रहना। चित लाग्यौ—ध्यान बना रहता है। उ.—(क) गुरु दच्छिना देन जब लागे गुरुपत्नी यह माँग्यौ। बालक बहेउ सिंधु में हमरो सो नित प्रति चित लाग्यौ—सारा. ५३६। (ख) उफनत तक चहूँ दिसि चितवति चित लाग्यौ नँदलालहिं—११८१। चित लेना—जी चाहना। चित से उतरना—(१) भूल जाना। (२) प्रेम या आदर का पात्र न रहना। चित से नहिं उतरत—ध्यान नहीं भूलता, याद बनी रहती है। उ.—सूर स्याम चित तैं नहिं उतरत वह बन कुंज थली। चित से न टलना—न भूलना। चित तैं टरत नहिं—ध्यान से नहीं हटती, कभी भूलती

नहीं, बराबर याद आती है। उ.—सूर चित तैं टरत नाहीं राधिका की प्रीति।

संज्ञा पुं. [हिं. चितवन] दृष्टि, नजर।

वि. [सं. चित = ढेर किया हुआ] पीठ के बल गिरा या पड़ा हुआ।

मुहा.—चित करना—कुश्ती में हराना। चारो खाने चित—(१) हाथ पैर फैलाये पीठ के बल गिरा हुआ। (२) हक्का-बक्का। चित होना—बेहोश होना।

क्रि. वि.—पीठ के बल।

चितई—क्रि. स. [सं. चेतना, हिं. चितवना] देखा, ताका, निहारा। उ.—देखी जाइ मथति दधि ठाढ़ी, आपु लगे खेलन द्वारे पर। फिरि चितई, हरि दृष्टि गए परि, बोलि लए हरुएँ सूनैं घर—१०-३०१।

चितउन—संज्ञा पुं. [सं. चितवन] दृष्टि।

चितउर—संज्ञा पुं. [हिं. चित्तौर] चित्तौर नगर।

चितए—क्रि स. [हिं. चितवना] देखे, देखने लगे। उ.—(क) सूर रघुराइ चितै हनुमान दिसि, आइ तिन तुरत ही सीस नार्यौ—९-१०६। (ख) देखत नारि चित्र सी ठाढ़ी चितए कुँअर कन्हाइ—२५३३।

चितकबरा—वि. [सं. चित्र+कर्बुर] दाग-धब्बीला।

चितकूट—संज्ञा पु. [सं. चित्रकूट] एक प्रसिद्ध पर्वत।

चितगुपति—संज्ञा पुं. [सं. चित्रगुप्त] एक यमराज जो पाप-पुण्य का लेखा रखते हैं।

चितचिता, चितचेता—वि. [हिं. चित्त + चीता] मनचाहा, इच्छित, अभिलषित।

चितचोर—संज्ञा पुं. [हिं. चित + चोर] मन-भावना, प्रिय पात्र। उ.—सूरदास चातक भईं गोपी कहाँ गए चितचोर—३०८४।

चितभंग—संज्ञा पुं. [सं. चित + भंग] (१) ध्यान न लगना, उदासी। उ.—(क) कमल खंजन मीन मधुकर होत है चितभंग। (ख) मेरौ मन हरि चितवन अरुझानौ।.... । सूरदास चितभंग होत क्यों जो जिहिं रूप समानौ—२२८५। (२) होश ठिकाने न रहना, भौचक्कापन, मतिभ्रम।

चितयौ—क्रि. स. [चेतना] देखा, दृष्टि डाली।

चितरन—संज्ञा पुं. [हिं. चितरना] चित्रित करना।

चितरनहार—संज्ञा पुं. [हिं. चितरना + हार (प्रत्य.)] चित्रण करनेवाला।

चितरना—क्रि. स. [सं. चित्र] चित्रित करना।

चितला—वि. [सं. चित्रल] चितकबरा, रंग-बिरंगा।

चितवत—क्रि. स. [हिं. चेतना] देखता (है), अवलोक कर, देखते देखते। उ.—(क) सिर पर मीच, नीच नहिं चितवत, आयु घटति ज्यौं अंजुलि पानी—१-१४६। (ख) ज्यों चितवत ससि ओर चकोरी, देखत ही सुख मान—१-१६६।

चितवति—क्रि. स. [हिं. चितवना] देखती है, ताकती है। उ.—कंधनि बाँह धरे चितवति—२५३१।

चितवन—संज्ञा स्त्री. [हिं. चेतना] ताकने का भाव या ढंग, दृष्टि, कटाक्ष। उ.—(क) चितवन रोके हूँ न रही—१२७०। (ख) मेरौ मन हरि चितवन अरुझानौ—२२८५।

मुहा.—चितवन चढ़ाना—क्रोध से घूरना।

क्रि. स.—देखना, निहारना।

प्र.—चितवन देत—देखने देना, निगाह डालने देना। उ.—नाहिं चितवन देत सुत-तिय नाम नौका ओर—१-९९।

चितवना—क्रि. स. [हिं. चेतना] देखना, ताकना।

चितवनि, चितवनियाँ—संज्ञा स्त्री. [हिं. चितवन] देखने का ढग, दृष्टि, कटाक्ष। उ.—(क) अंजन रंजित नैन चितवनि चित चोरे, मुख सोभा पर वारौं अमित असम-सर—१०-१५१। (ख) बाल बुभाव बिलोल बिलोचन, चोरति चितहिं चारु चितवनियाँ—१०-१०६।

चितवाना—क्रि. स. [हिं. चितवना का प्रे.] दिखाना।

चितवै—क्रि. स. [हिं. चितवना] देखता है, दृष्टि डालता है। उ.—चितवै कहा पानि-पल्लव पुट, प्रान प्रहारौं तेरो—९-१३२।

चितवौं—क्रि. स. [हिं. चेतना, चितवना] देखता हूँ, ताकता हूँ, अवलोकता हूँ। उ.—हौं पतित अपराध पूरन, भर्यौ कर्म-बिकार। काम-क्रोध अरु लोभ चितवौं, नाथ तुमहिं बिसार—१-१२६।

चिता—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) शव-दाह के लिए बिछायी गयी लकड़ियों का ढेर। (२) श्मशान, मरघट।

चिताना—क्रि. स. [हिं. चेतना] (१) सचेत या सावधान करना, होशियार करना। (२) याद या सुध दिलाना। (३) ज्ञानोपदेश करना। (४) (आग) सुलगाना या जलाना।

चिताभूमि—संज्ञा स्त्री [सं.] श्मशान।

चितारी—संज्ञा पुं. [हिं. चितेरा] चित्र बनानेवाला।

चितावनी—संज्ञा स्त्री. [हिं. चिताना] सतर्क, सावधान, या होशियार करने की क्रिया।

चिति—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) चिता। (२) समूह। (३) चुनने की क्रिया चुनाई। (४) ईंटों की जुड़ाई।

चितिका—संज्ञा स्त्री. [सं.] करधनी, मेखला।

चिती—संज्ञा स्त्री [हिं. चित्ती या चित = पीठ के बल पड़ा हुआ] वह कौड़ी जिसकी पीठ चिपटी होती है और जो फेकने पर चित अधिक पड़ती है। उ.—अंतर्यामी बहौ न जानत जो मो उरहिं बिती। ज्यों जुआरि रस बींधि हारि गथ सोवत पटकि चिती—१० उ.-२०३।

चितु—संज्ञा पुं. [सं. चित्त] मन, जी, दिल।

चितेरा—संज्ञा पुं. [सं. चित्रकार] चित्र बनानेवाला।

चितेरिन, चितेरी—संज्ञा स्त्री. [हिं. चितेरा] (१) चित्र बनानेवाली। (२) चित्रकार की स्त्री।

चितेरे, चितरैं, चितेला—संज्ञा पुं. [हिं. चितेरा] चित्रकार। उ.—(क) राधा ये ढंग हैं री तेरे। वैसे हाल मथत दधि कीन्हे, हरि मनु लिखे चितेरे—७१८। (ख) चकित भईं देखैं ढिग ठाढ़ी। मनौ चितेरैं लिखि लिखि काढ़ी—३६१।

चितै—क्रि. स. [हिं. चेतना, चितवना] (१) देखकर, दृष्टि डाल कर। उ.—(क) नैंकु चितै, मुसुक्याइ कै, सबकौ मन हरि लीन्हौ (हो)—१-४४। (ख) चितै रघुनाथ बदन की ओर—६-२३। (ग) अति कोमल तन चितै स्याम कौ बार-बार पछितात—१०-८१। (२) सोच-समझकर, विचार करके। उ.—चिंता मानि, चितै अंतरगति, नाग-लोक कौं धाए—१-२६। (३) ध्यान या स्मरण करके। उ.—तब संकर तप कौ निकसे चितै कमलदल नैन—सारा. ६६।

चितैबो—संज्ञा स्त्री. [हिं. चितवना] देखना, ताकना, निहारना, दृष्टि मिलाना। उ.—चितैबौ छाँड़ि दै री राधा। हिल-मिल खेलि स्यामसुंदर सौं, करति काम कौ बाधा—८२०।

चितौन—संज्ञा स्त्री. [हिं. चितवन] दृष्टि, कटाक्ष।

चितौना—क्रि. स. [हिं. चितवना] देखना, ताकना।

चितौनि—संज्ञा स्त्री. [हिं. चितवन] दृष्टि, कटाक्ष।

चितौनी—संज्ञा स्त्री. [हिं. चेतावनी] सावधान करने या चिताने की क्रिया।

चित्कार—संज्ञा पुं. [हिं. चीत्कार] चिल्लाहट।

चित्त—संज्ञा पुं. [सं.] (१) अंतःकरण का एक भेद या वृत्ति। (२) वह मानसिक शक्ति जिससे धारणा, भावना आदि की जाती है; जी, मन।

मुहा.—चित्त उचटना—जी न लगना। चित्त करना—जी चाहना। चित्त चढ़ना (पर चढ़ना)—(१) मन में बसना। (२) याद पड़ना। चित्त चुराना—मन मोहना। चित्त चुराइ—मुग्ध करके, मोहित करके, आकर्षित करके। उ.—हरैं खल-बल दनुज-मानव सुरनि सीस चढ़ाइ। रवि-बिरंचि मुख-भौंह-छबि, लै चलति चित्त चुराइ—१-५६। चित्त चोराए-मन हर लिया। उ.--सूर नगर नर नारि के मन चित्त चोराए—२५६५। चित्त देना—गौर करना, ध्यान देना। चित्त धरना—(१) ध्यान देना। (२) मन में लाना। चित्त बँटना—ध्यान इधर-उधर होना। चित्त बँटाना—ध्यान इधर-उधर करना। चित्त में धँसना (जमना, बैठना)—मन में दृढ़ होना। चित्त होना (में होना)—जी चाहना। चित्त लगना—(१) जी न ऊबना। (२) प्रेम होना। चित्त से उतरना—(१) भूल जाना। (२) प्रेम या आदर का पात्र न रहना। चित्त से न टलना—बराबर ध्यान बना रहना।

चित्तज, चित्तभू—संज्ञा पुं. [सं.] कामदेव।

चित्तरसारी—संज्ञा स्त्री. [हिं. चित्रशाला] चित्रसाला।

चित्तवान—वि. [सं.] उदार चित्तवाला।

• **चित्त विक्षेप**—संज्ञा पुं. [सं.] चित्त की चंचलता।

चित्तविद्—संज्ञा पुं. [सं.] चित्त की बात जाननेवाला।

चित्तवृत्ति—संज्ञा स्त्री. [सं.] चित्त की गति या अवस्था।

चित्ति—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) ख्याति। (२) कर्म।

चित्ती—संज्ञा स्त्री. [सं. चित्र, प्रा. चित्त] (१) छोटा दाग या धब्बा। (२) लाल की मादा। (३) चित्तीदार साँप, चीतल।

संज्ञा स्त्री. [हिं. चित=पीठ के बल पड़ा हुआ] कौड़ी जिसकी पीठ चिपटी हो, टैयाँ।

चित्तौर—संज्ञा पुं. [सं. चित्रकूट, प्रा. चित्तऊड़, चितउड़] एक प्राचीन नगर जो उदयपुरी महाराणाओं की राजधानी थी।

चित्य—वि. [सं.] (१) चुनने लायक। (२) चिता संबंधी।

संज्ञा पुं.—(१) चिता। (२) अग्नि।

चित्र—संज्ञा पुं. [सं.] (१) चंदन अथवा अन्य किसी सुगंधित पदार्थ या भस्म से माथे, छाती या बाहु आदि अंगों पर बनाये हुए चिह्न। उ.—गुहि गुंजा घसि बनमुद्रा, अंगनि चित्र ठए—१०-२४। (२) विविध रंगों के मेल से बनायी हुई आकृतियाँ, तसवीर। (३) काव्य का एक अंग जिसमें व्यंग्य की प्रधानता रहती है। (४) एक अलंकार जिसमें पदों के अक्षर इस क्रम से लिखे जाते हैं कि रथ, कमल आदि के आकार बन जायँ। (५) एक वर्णवृत्त। (६) आकाश। (७) चित्रगुप्त।

वि.—(१) अद्भुत, विचित्र। (२) चितकबरा, रंगबिरंगा। (३) अनेक प्रकार का।

वि. [सं.] चित्र के समान ठीक, दुरुस्त।

चित्रकंठ—संज्ञा पुं. [सं.] कबूतर, परेवा, कपोत।

चित्रक—संज्ञा पुं. [सं.] (१) तिलक। (२) चीते का पेड़। (३) चीता, बाघ। (४) बलवान। (५) चित्रकार।

चित्रकर—संज्ञा पुं. [सं.] चित्र बनानेवाला।

चित्रकर्मी—संज्ञा पुं. [सं. चित्रकर्मिन्] (१) चित्र बनानेवाला। (२) विचित्र या अद्भुत कार्य करनेवाला।

चित्रकला—संज्ञा स्त्री. [सं.] चित्र बनाने की विद्या।

चित्रकाय—संज्ञा पुं. [सं.] चीता।

चित्रकार—संज्ञा पुं. [सं.] चित्र बनानेवाला, चितेरा।

चित्रकारि, चित्रकारी—संज्ञा स्त्री. [हिं. चित्रकार+ई (प्रत्य.)] (१) चित्र, चित्र बनाने की कला। उ.—ऐसे कहुँ नर नारि बिना भीति चित्रकारि काहे को देखें मैं कान्ह कहा कहौ सहिए—१२७३। (२) चित्र बनाने का व्यवसाय।

चित्रकाव्य—संज्ञा पुं. [सं.] काव्य का एक ढंग जिसमें अक्षरों को ऐसे क्रम से रखते हैं कि कमल, रथ आदि के चित्र बन जायँ।

चित्रकूट—संज्ञा पुं. [सं.] (१) बाँदा जिले का एक पर्वत जहाँ वनवास-काल में राम-सीता ने बहुत समय तक वास किया था। (२) हिमालय का एक शृंग।

चित्रकेतु—संज्ञा पुं. [सं.] (१) एक राजा जिसके पुत्र को उसकी छोटी रानियों ने जहर देकर मार डाला और पुत्रशोक से जिसे दुखी देख नारद ने मंत्रोपदेश दिया था। (२) वह जो चित्रित पताका लिये हो। (३) लक्ष्मण का एक पुत्र।

चित्रगुप्त—संज्ञा पुं. [सं.] चौदह यमराजों में एक जो प्राणियों के पाप-पुण्य का लेखा रखते हैं।

चित्रण—संज्ञा पुं. [सं.] चित्र या दृश्य अंकित करना, चित्रित करने की क्रिया।

चित्रना—क्रि. स. [सं. चित्र+ना (प्रत्य.)] (१) चित्रित करना, चित्र बनाना। (२) रंग भरना।

चित्रपट—संज्ञा पुं. [सं.] (१) चित्र बनाने का कपड़ा, कागज आदि आधार। (२) वह वस्त्र जिस पर चित्र बने हों।

चित्रपटी—संज्ञा स्त्री. [सं. चित्रपट] छोटा चित्रपट।

चित्रपत्र—संज्ञा पुं. [सं.] आँख की पुतली का पिछला भाग जिसपर प्रकाश की किरणें पड़ने पर पदार्थों के रूप दिखायी देते हैं।

वि.—रंग-बिरंगे या विचित्र पंखवाला।

चित्रपदा—संज्ञा पुं. [सं.] (१) एक छंद। (२) मैना, सारिका। (३) छुईमुई की लता।

चित्रपिच्छक—संज्ञा पुं. [सं.] मयूर, मोर।

चित्रपुंख—संज्ञा पुं. [सं.] बाण, तीर।

चित्रमति—वि. [सं. चित्र+मति] अद्भुत बुद्धिवाला।

चित्ररथ—संज्ञा पुं. [सं.] (१) सूर्य। (२) एक गंधर्व।

चित्ररेखा—संज्ञा स्त्री. [सं.] बाणासुर की कन्या ऊषा की सहेली जो चित्रकला में बहुत निपुण थी। उ.—कुँअर तन स्याम मानो काम है दूसरो सपन में देखि ऊषा लोभाई। चित्ररेखा सकल जगत के नृपन की छिन में मुरति तब लिखि देखाई—१०-उ. ३४।

चित्रल—वि. [सं.] चितकबरा, रंगबिरंगा।

चित्रलिखन—संज्ञा पुं. [सं.] (१) सुंदर लिखावट। (२) चित्र बनाने का कार्य।

चित्रलेखनी—संज्ञा स्त्री. [सं.] चित्र बनाने की कूची।

चित्रलेखा—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) एक वर्णवृत्त। (२) बाणासुर की कन्या ऊषा की सखी। (३) एक अप्सरा। (४) चित्र बनाने की कूँची।

चित्रविचित्र—वि. [सं.] (१) रंगबिरंगा। (२) बेल-बूटे या नक्काशीदार।

चित्रविद्या—संज्ञा स्त्री. [सं.] चित्र बनाने की कला।

चित्रशाला, चित्रसाला—संज्ञा स्त्री. [सं. चित्र+शाला] (१) चित्र बनने बिकने का स्थान। (२) चित्रों के संग्रह का स्थान। (३) चित्रकला सिखाने का स्थान।

चित्रसारी—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) वह स्थान जहाँ चित्रों का संग्रह हो अथवा दीवालों पर चित्र बने हों। (२) सजा हुआ भवन, विलास भवन, रंगमहल। उ.—कबहुँक रत्न महल चित्रसारी सरद निसा उजियारी। बैठे जनकसुता सँग विलसत मधुर केलि मनुहारी—सारा. ३१२।

चित्रसेन—संज्ञा पुं. [सं.] (१) धृतराष्ट्र का एक पुत्र। (२) एक गंधर्व। (३) परीक्षित का एक पुत्र।

चित्रस्थ—वि. [सं.] (१) चित्र में अंकित किया हुआ। (२) चित्र में अंकित व्यक्ति या पात्र के समान।

चित्रांग—संज्ञा पुं. [सं.] जिसके अंग पर चित्तियाँ हों।

चित्रांगद—संज्ञा पुं. [सं.] (१) सत्यवती और शांतनु का एक पुत्र। (२) एक गंधर्व।

चित्रांगदा—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) चित्रवाहन की कन्या जो अर्जुन को ब्याही थी। (२) रावण की एक पत्नी।

चित्रा—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) नक्षत्र। (२) खीरा-ककड़ी। (३) एक नदी। (४) एक अप्सरा। (५) एक रागिनी। (६) एक वर्णवृत्ति। (७) एक बाजा।

चित्राक्ष—वि. [सं.] विचित्र या सुंदर नेत्रवाला।

चित्राधार—संज्ञा पुं. [सं.] चित्र-संग्रह। चित्रपट।

चित्रित—वि. [सं. चित्र] (१) चित्रयुक्त, जिस पर चित्र बने हों। उ.—चित्रित बाँह, पहुँचिया पहुँचै, साथ मुरलिया बाजै—४५१। (२) चित्र द्वारा दिखाया हुआ। (३) सांगोपांग वर्णन से युक्त। (४) जिसपर चित्तियाँ पड़ी हों।

चित्रे—क्रि. स. [सं. चित्र] चित्र बनाये, चित्रित किये। उ.—बेनी लसति क्यौं छबि ऐसी महलन चित्रे उर्ग—२५६२।

चित्रेश—संज्ञा पुं. [सं.] चित्रा नक्षत्र का पति चंद्र।

चित्रोक्ति—संज्ञा स्त्री. [सं. चित्र + उक्ति] वह बात जो अलंकृत भाषा में कही जाय।

चित्रोत्तर—संज्ञा पुं. [सं.] एक अलंकार जिसमें प्रश्न में ही उत्तर हो अथवा कई प्रश्नों का एक ही उत्तर हो।

चिथड़ा—संज्ञा पुं. [सं. चीर्ण] फटा-पुराना कपड़ा।

चिथाड़ना—क्रि. स. [हिं. चिथड़ा] (१) चीरना-फाड़ना। (२) लज्जित करना, नीचा दिखाना।

चिदात्मा—संज्ञा पुं. [सं.] चैतन्यस्वरूप ब्रह्म।

चिदानंद—संज्ञा पुं. [सं.] चैतन्य आनंदमय ब्रह्म।

चिदाभास—संज्ञा पुं. [सं.] हृदय पर ब्रह्म का आभास।

चिद्रूप—संज्ञा पुं. [स.] चैतन्य-स्वरूप ब्रह्म।

चिद्विलास—संज्ञा पुं. [सं.] (१) चैतन्यस्वरूप ब्रह्म की माया। (२) शंकराचार्य का एक शिष्य।

चिनक, चिनग—संज्ञा पुं. [हिं. चिनगी] जलन, पीड़ा।

चिनगारी, चिनगी—संज्ञा स्त्री. [सं. चूर्ण हिं. चुन + अंगार] (१) दहकते कोयले का टुकड़ा। (२) दहकती आग से उड़नेवाले कण।

मुहा०—आँख से चिनगारी छूटना—क्रोध से आँख लाल होना। चिनगारी छोड़ना (डालना)—झगड़ेवाली बात करना।

चिनना—क्रि. अ. [हिं. चुनना] दीवार खड़ी करना।

चिनाना—क्रि. स. [हिं. चुनाना] (१) चिनवाना। (२) ईंट आदि की जोड़ाई करना।

चिनाब—संज्ञा पुं. [सं. चंद्रभाग] पंजाब की एक नदी

जिसका प्राचीन नाम चन्द्रभागा था।

चिनार—संज्ञा स्त्री. [हिं. चिन्हार] जान-पहचान।

चिन्मय—वि. [सं.] ज्ञानमय।
संज्ञा पुं.— परब्रह्म, परमेश्वर।

चिन्ह—संज्ञा पुं. [सं. चिह्न] निशान, संकेत, लक्षण। उ.—मेचक अधर निमेष पिक रुचि सों चिह्न देखि तुम्हारे—२०८८।

चिन्हवाना, चिन्हाना—क्रि. स. [हिं. चीन्हना का प्रे.] पहचान करा देना, पहचनवाना।

चिन्हानी—संज्ञा स्त्री. [सं. चिन्ह] (१) चीन्हने की वस्तु, पहचान, लक्षण। (२) स्मारक, यादगार। (३) रेखा, धारी।

चिन्हार—वि. [हिं. चिन्ह] जान पहचान का, जिससे जान-पहचान हो, परिचित।

चिन्हारा—संज्ञा पुं. [सं. चिन्ह] जान-पहचान, भेट-मुलाकात। उ.—सोच लाग्यौ करन, यहै धौं जानकी, कै कोऊ और, मोहिं नहिं चिन्हारा—९-७६।

चिन्हारी—संज्ञा स्त्री. [हिं. चिन्ह] जान-पहचान।

चिन्हित—वि. [सं. चिन्हित] चिह्न लगाया हुआ।

चिन्हौरी—संज्ञा स्त्री. [सं. चिन्ह, हिं. चिन्हारी] पहचानने का लक्षण, पहचान, संकेत का नाम। उ.—अपनी गाइ ग्वाल सब आनि करौ इकठौरी। धौरी, धूमरि, राती, रौंछी, बोल बुलाइ चिन्हौरी—४४५।

चिपकना—क्रि. अ. [अनु. चिपचिप] लसीली वस्तु से जुड़ना या सटना। (२) लिपटना। (३) किसी व्यवसाय या काम में लगना। (४) प्रेम में फँसना।

चिपकाना—क्रि. स. [हिं. चिपकना] (१) लसीली वस्तु से जोड़ना। (२) लिपटाना। (३) काम-धंधे या व्यापार में लगाना।

चिपचिप—संज्ञा पुं. [अनु.] लसीली वस्तु छूने से होनेवाला शब्द या अनुभव।

चिपचिपा—वि. [अनु. चिपचिपा] लसदार।

चिपचिपाना क्रि. अ. [हिं. चिपचिप] लसदार या चिपचिपा मालूम होना।

चिपचिपाहट—संज्ञा स्त्री. [हिं. चिपचिपा] चिपचिपाने का भाव, लसीलापन, लस।

चिपटना—क्रि. अ. [सं. चिपिट = चिपटा] (१) सटना, चिपकना। (२) लिपटना, चिमटना।

चिपटा—वि. [सं. चिपिट] दबा या धँसा हुआ।

चिपटाना—क्रि. स. [हिं. चिपटना] (१) सटाना, जोड़ना। (२) लिपटाना, आलिंगन करना।

चिपड़ी, चिपरी—संज्ञा स्त्री. [हिं. चिप्पड़] उपली।

चिपिट—वि. [सं.] चिपटा, चपटा।
संज्ञा पुं.—(१) चिउड़ा, चिड़वा। (२) वह मनुष्य जिसकी नाक चपटी हो। (३) दृष्टि की चकपकाहट।

चिप्पड़—संज्ञा पुं. [सं. चिपिट] (१) छोटा टुकड़ा। लकड़ी की सूखी पपड़ी। (३) ऊपरी छाल।

चिप्पिका—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) एक रात्रि जंतु। (२) एक चिड़िया। उ.—बाँधा, बटेर, लव और सिचान। धूतो चिप्पिका चटक भान।

चिप्पी—संज्ञा स्त्री. [हिं. चिप्पड़] (१) छोटा टुकड़ा। (२) उपली। (३) तौलने का एक बाँट।

चिबिल्ला—वि. [हिं. चिलबिला] चंचल, चपल, शोख।

चिबु, चिबुक—संज्ञा पुं. [सं. चिबुक] ठुड्डी, ठोढ़ी।

चिमटना—क्रि. अ. [हिं. चिपटना] (१) सट जाना। (२) लिपटना। (३) गुथना। (४) पीछा न छोड़ना।

चिमटा—संज्ञा पुं. [हिं. चिमटना] लोहे पीतल की संसी।

चिमटाना—क्रि. स. [हिं. चिमटना] (१) चिपकाना, सटाना, लसाना। (२) लिपटाना।

चिमटी—संज्ञा स्त्री. [हिं. चिमटा] छोटा चिमटा।

चिमड़ा—वि. [हिं. चमड़ा] चीमड़।

चिरंजीव—वि. [हिं. चिर + जीना] बहुत दिनों तक जीवित रहनेवाला चिरजीवी। उ.—(क) जब लगि जिय घट-अंतर मेरैं, को सरवरि करि पावै? चिरंजीव तौलौं दुरजोधन, जियत न पकरयौ आवै—१-२७५। (ख) चिरंजीव रहो सूर नंदसुत जीजत मुख चितए—३१४१।

चिरंजीवी—वि. [हिं. चिरजीवी] (१) बहुत दिन तक जीनेवाला। (२) अमर।

चिरंटी—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) सयानी लड़की जो पिता के घर रहे। (२) युवती।

चिरंतन—वि. [सं.] बहुत पुराना, पुरातन।

चिर—वि. [सं.] बहुत दिनों का।

क्रि. वि.—अधिक समय तक। उ.—सूरदास चिर जीवहु जुग जुग दुष्ट दले दोउ नंददुलारे—२५६६। (ख) कबहुँक कुल-देवता मनावति, चिर जीवहु मेरौ कुँवर कन्हैया—१०-११५। (ग) चिर जीवहु जसुदा कौ नंदन, सूरदास कौं तरनौ—१०-१२३। (घ) देत असीस सूर, चिरजीवौ रामचंद्र रनधीर—६-२८। (च) चिरजीवौ सुकुमार पवन-सुत, गहति दीन ह्वै पाइ—६-८३।

चिरई—संज्ञा स्त्री. [सं. चटक] चिड़िया, पक्षी।

चिरकाल—संज्ञा पुं. [सं.] बहुत समय।

चिरकालिक, चिरकालीन—वि. [सं.] पुराना।

चिरकूट—संज्ञा पुं. [सं. चिर+कुट्ट] चिथड़ा।

चिरचना—क्रि. अ.—चिड़चिड़ाना, क्रुद्ध होना।

चिरजीवी—वि. [सं.] (१) बहुत दिनों तक जीवित रहनेवाला। (२) सदा जीवित रहनेवाला।

संज्ञा पुं.—(१) विष्णु। (२) कौआ। (३) मार्कंडेय ऋषि। (४) अश्वत्थामा, बलि, व्यास, हनुमान, विभीषण, कृपाचार्य और परशुराम जो चिरजीवी माने जाते हैं।

चिरता—संज्ञा स्त्री. [सं. चिर + हिं. ता] अमरता।

चिरना—क्रि. अ. [हिं. चीरना] (१) फटना, कटना। (२) लकीर के रूप में घाव होना।

संज्ञा पुं.—चीरने का औजार।

चिरविदा—संज्ञा स्त्री. [सं.] मृत्यु, मौत।

चिरम—संज्ञा स्त्री. [देश.] गुंजा, घुँघची।

चिरवाई—संज्ञा स्त्री. [हिं.] चीरना, चिरने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

चिरवाना—क्रि. स. [हिं. चीरना] चीरने का काम कराना।

चिरस्थायी—वि. [सं.] बहुत समय तक रहनेवाला।

चिरस्मरणीय—वि. [सं.] (१) बहुत समय तक स्मरण रखने योग्य। (२) पूजनीय।

चिरहँटा—संज्ञा पुं. [हिं. चिड़ी+हंता] चिड़ीमार।

चिराई—संज्ञा स्त्री. [हिं. चीरना] चिरने का भाव, क्रिया या मजदूरी।

चिराक, चिराग—संज्ञा पुं. [फ़ा. चिराग] दीपक।

मुहा.—चिराग गुल होना—(१) दीपक बुझना। (२) रौनक न रहना। (३) वंश का नाश होना। चिराग जले—संध्या समय। चिराग ठंडा करना—दीपक बुझाना। चिराग तले अँधेरा—(१) ऐसे स्थान पर बुराई होना जहाँ उसे रोकने का प्रबंध हो। (२) ऐसे व्यक्ति द्वारा बुराई होना जो उसे रोकने पर नियुक्त हो।

चिरातन—वि. [सं. चिरंतन] (१) पुराना, पुरातन। (२) जीर्ण। उ.—हम तौ तबही तैं जोग लियौ। पहिरि मेखला चीर चिरातन पुनि पुनि फेरि सिश्राए—३१२५।

चिराना—क्रि. स. [हिं. चीरना] फड़वाना।

वि. [हिं. चिरातन] (१) पुराना। (२) जीर्ण।

चिरायँध—संज्ञा स्त्री. [सं. चर्म+गंध] (१) मांस आदि के जलने की दुर्गंध। (२) बदनामी।

चिरायता—संज्ञा पुं. [सं. चिरात्] एक पौधा।

चिरायु—वि. [सं. चिर+आयु] बड़ी उम्र वाला।

संज्ञा पुं.—देवता।

चिरारी—संज्ञा स्त्री.—चिरौंजी। उ.—खरिक, दाख अरु गरी चिरारी। पिंड बदाम लेहु बनवारी—३९६।

चिराव—संज्ञा पुं. [हिं. चिरना] (१) चीरने का भाव या क्रिया। (२) चीरने से होनेवाला घाव।

चिरिया, चिरैया, चिरी—संज्ञा स्त्री. [हिं. चिड़िया] पक्षी, पखेरू, पंछी। उ.—(क) चिरिया कहा समुद्र उलीचे—१-२३४ (ख) सूरस्याम कौं जसुमति बोधत गगन चिरैया उड़त दिखावत—१०-१८८।

चिरिहार—संज्ञा पुं. [हिं. चिड़िया + हार = वाला (प्रत्य)] चिड़ियाँ फँसानेवाला, बहेलिया।

चिरीखाना—संज्ञा पुं. [हिं. चिड़िया + खाना] चिड़िया घर।

चिरौंजी—संज्ञा स्त्री. [सं. चार+बीज] पियाल वृक्ष के फलों के बीज की गिरी जो मेवों में समझी जाती है। उ.—श्रीफल मधुर चिरौंजी आनी—१०-२११।

चिरौरी—संज्ञा स्त्री. [अनु०] विनीत, प्रार्थना।

चिलक—संज्ञा स्त्री. [हिं. चमक] (१) आभा, कांति, झलक। (२) दर्द, टीस।

चिलकना—क्रि. अ. [हिं. चिल्ली] (१) रह रह कर चमकना। (२) दर्द का उठना और बंद होना।
चिलका—संज्ञा पुं. [हिं. चिलक] चाँदी का रुपया।
चिलकाई—संज्ञा स्त्री. [हिं. चिलक + आई] चमक।
चिलकाना—क्रि. स. [हिं. चिलकना] (१) चमकाना, झलकाना। (२) माँज कर उजला करना।
चिलगोजा—संज्ञा पुं. [फ़ा.] एक मेवा।
चिलचिल—संज्ञा पुं. [हिं. चिलकना] अबरक।
चिलचिलाना—क्रि. अ. [हिं. चिलकना] रह रह कर चमकना।
क्रि. स. [अनु.] चमकाना।
चिलबिल—संज्ञा पुं. [सं. चिलबिल्ल] एक पेड़।
चिलबिला, चिलबिल्ला—वि. [सं. चल + बल] चंचल, चपल, शोख, नटखट।
चिलम—संज्ञा स्त्री. [फ़ा.] मिट्टी की कटोरी जिसका निचला भाग नली की तरह होता है। इस पर आग रखकर तंबाकू पी जाती है।
चिलमन—संज्ञा स्त्री. [फ़ा.] बाँस की तीलियों से बना परदा, चिक।
चिल्ला—संज्ञा पुं. [फ़ा] चालीस दिन का समय।
मुहा.—चिल्ले का जाड़ा— चालीस दिन का बहुत अधिक जाड़े का समय।
संज्ञा पुं. [देश.] (१) एक जंगली पेड़। (२) मोटी रोटी। (३) धनुष की डोरी।
चिल्लाना—क्रि. अ. [हिं. चीत्कार] जोर से बोलना।
चिल्लाहट—संज्ञा स्त्री. [हिं. चिल्लाना] (१) चिल्लाने का भाव। (२) शोर, गुल, हल्ला।
चिल्लिका—संज्ञा स्त्री. [सं.] भौंहों के बीच का स्थान।
चिल्ली—संज्ञा स्त्री. [सं.] झिल्ली नामक कीड़ा।
संज्ञा स्त्री. [सं चिरिका = एक अस्त्र] बिजली।
चिल्ही—संज्ञा स्त्री. [सं.] चिल्ल, चील।
चिवि—संज्ञा स्त्री. [सं.] चिबुक, ठोढ़ी।
चिहुँकना—क्रि. अ. [सं. चमत्कृ, प्रा. चवँकि] चौंकना।
चिहुँटना—क्रि. स. [सं. चिपिट, हिं. चिमटना] (१) चुटकी काटना, चिकोटी लेना।
मुहा.—चित्त चिहुँटना—चित्त में चुभना, मर्म स्पर्श करना।
(२) चिपटना, लिपटना।
चिहुँटिनी—संज्ञा स्त्री [देश.] गुंजा, घुँघची।
चिहुँटी—संज्ञा स्त्री. [हिं. चुटकी] चिकोटी।
चिहुर—संज्ञा पुं. [सं. चिकुर] सिर के बाल, केश। उ.—(क) तरुवर मूल अकेली ठाढ़ी, दुखित राम की घरनी। बसन कुचील, चिहुर लपटाने, बिपति जाति नहिं बरनी—९-७३। (ख) छूटे चिहुर बदन कुम्हिलाने ज्यौं नलिनी हिमकर की मारी—३४२५।
चिह्न—संज्ञा पुं. [सं.] (१) निशान, संकेत, लक्षण। (२) पताका, झंडी। (३) दाग।
चिह्नित—वि. [सं.] जिस पर चिह्न हो।
चीं, चींची, चीं चपड़—संज्ञा स्त्री. [अनु.] किसी के विरोध में किया हुआ शब्द या कार्य।
चींटवा, चींटा—संज्ञा पुं. [हिं. चिउटा] चिहुँटा नामक कीड़ा।
चींटी—संज्ञा स्त्री. [हिं. चिउँटी] चिउँटी, पिपिलिका।
चींतना—क्रि. स. [हिं. चितना] चित्रित करना।
चींथना—क्रि. स. [हिं.चीथना] नोचना-फाड़ना।
चीक, चीख—संज्ञा स्त्री. [सं. चीत्कार] चिल्लाहट।
चीकट—संज्ञा पुं. [हिं. कीचड़] मैल, तलछट।
संज्ञा पुं. [देश.] (१) एक रेशमी कपड़ा। (२) गहने कपड़े जो भाई द्वारा बहन को इसकी संतान के विवाह में दिये जायँ।
वि.—बहुत मैला या गंदा।
चीकना, चीखना—क्रि. अ. [सं. चीत्कार] (१) जोर से चिल्लाना। (२) ऊँचे स्वर से बात करना।
चीखना—क्रि. स. [सं. चषण, हिं. चखना] चखना, स्वाद लेना।
चीखर, चीखल—संज्ञा पुं. [हिं. चीकड़ (कीचड़)] (१) कीच, कीचड़। (२) गारा।
चीज—संज्ञा स्त्री. [फ़ा. चीज़] (१) वस्तु, पदार्थ, द्रव्य। (२) आभूषण, गहना। (३) राग, गीत। (४) विलक्षण वस्तु। (५) महत्व की वस्तु।

चीठ—संज्ञा स्त्री. [हिं. चीकड़ (कीचड़)] **मैल।**
चीठा—संज्ञा पुं. [हिं. चिट्ठा] (१) **बही-खाता** (२) **सूची।** (३) **मजदूरी का धन।** (४) **ब्योरा।**
चीठी—संज्ञा स्त्री. [हिं. चिट्ठी] **चिट्ठी-पत्री।**
चीड़, चीढ़—संज्ञा पुं. [सं. चीड़ा] **एक पेड़।**
चीत—संज्ञा पुं. [सं. चित्त] **चित्त, मन।**
मुहा.—हरत चीत—**चित्त हरता है, मन मोहता है।** उ.—संग रहत सिर मेलि ठगौरी, हरत अचानक चीत—२७३०।
संज्ञा पुं. [सं. चित्रा] **चित्रा नक्षत्र।**
संज्ञा पुं. [सं.] **सीसा नामक धातु।**
चीतकार—संज्ञा पुं. [सं. चीत्कार] **चिल्लाना।**
संज्ञा पुं. [सं. चित्रकार] **चित्र खींचनेवाला।**
चीतहिं—क्रि. स. [सं. चित्र, हिं. चीतना] **चित्रित करती है, (चित्र या बेल-बूटे आदि) खीचती है।** उ.—द्वार बुहारति फिरति अष्टसिधि। कौरनि सथिया चीतति नवनिधि—१०-३२।
चीतना—क्रि. स [सं. चेत] (१) **सोचना, विचारना।** (२) **होश में आना।** (३) **याद आना।**
क्रि. स. [सं. चित्र] **चित्रित करना, तसवीर या बेल-बूटे बनाना।**
चीतर, चीतल—संज्ञा पुं. [हिं. चित्ती] **एक हिरन।**
चीता—संज्ञा पुं. [सं. चित्रक] (१) **एक हिंसक पशु।** (२) **एक बड़ा क्षुप।**
संज्ञा पुं. [सं. चित्त] **हृदय, दिल।**
संज्ञा पुं. [सं. चेत] **संज्ञा, होश-हवास।** उ.—तिनको कहा परेखो कीजै कुबजा के मीता को। चढ़ि-चढ़ि सेज सातहूँ सिंधू बिसरी जो चीता को—३३७३।
वि. [हिं. चेतना] **सोचा-विचारा हुआ।**
चीते—वि. [हिं. चेतना] **सोचा हुआ, विचारा हुआ, अनुमानित।** उ.—डोलत ग्वाल मनौ रन जीते। भए सबनि के मन के चीते १०-३२।
क्रि. स. [सं. चेत, हिं. चीतना] **सचेत हुए, सोचा, विचारा, (मन में) भावना हुई।** उ.—ऐसैहिँ करत बहुत दिन बीते। प्रभु अंतरजामी मन चीते। एक दिवस आपुन आए तहँ। नव तरुनी असनान करत जहँ—७६६।
चीत्कार—संज्ञा पुं. [सं.] **शोरगुल, चिल्लाहट।**
चीत्यौ—वि. [हिं. चेतना, चीता] **सोचा हुआ, विचारा हुआ।** उ.—(क) मेरौ चीत्यौ भयौ नँदरानी, नंद-सुवन सुखदाई—१०-१६। (ख) अपने-अपने मन कौ चीत्यौ, नैननि देख्यौ आइ—१०-२०। (ग) हमरौ चीत्यौ भयौ तुम्हारैँ, जो माँगौँ सो पाऊँ—१०-३७।
चीथड़ा—संज्ञा पुं. [हिं. चीथना] **फटा-पुराना कपड़ा।**
चीथना—क्रि. स. [सं. चीर्ण] **चीरना-फाड़ना।**
चीन—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **पताका।** (२) **सीसा धातु।** (३) **तागा।** (४) **एक रेशमी कपड़ा।** (५) **एक हिरन।** (६) **एक प्रकार की ईख।**
संज्ञा पुं. [सं. चिह्न] **चिह्न, लक्षण, संकेत।**
चीनना—क्रि. स. [हिं. चीन्हना] **पहिचानना।**
चीना—संज्ञा पुं. [हिं. चीन] **एक तरह का सावाँ।**
संज्ञा पुं. [सं. चिह्न] **एक चित्तीदार कबूतर।**
चीनी—संज्ञा स्त्री. [सं. चीन = देश + ई (प्रत्य.)] **शकर।**
चीनो, चीनौ—संज्ञा पुं. [सं. चिह्न] **पहचान, पता, लक्षण, संकेत।** उ.—छिन में बरषि प्रलय जल पारौ खोजु रहै नहिं चीनौ—६४५।
क्रि. स. [हिं. चीन्हना] **पहचाना जाना।** उ.—श्री भागवत सुनी नहिँ स्रवननि, गुरु-गोबिँद नहिँ चीनौ—१-६५
चीन्ह, चीन्हा—संज्ञा पुं. [सं. चिह्न] **चिह्न, पहचान।**
यौ.—चीन्ह लीन्हौ—क्रि. स.—**पहचान लिया।** उ.—बहुरि जब बढ़ि गयौ, सिंधु तब लै गयौ, तहाँ हरि-रूप नृप चीन्ह लीन्हौ—८-१६।
चीन्हना—क्रि. स. [सं. चिह्न] **जानना, पहचानना,**
चीन्हि—क्रि. स. [हिं. चीन्हना] **पहचानकर।**
चीन्ही—क्रि. स. [हिं. चीन्हना] **पहचान गयी, जान गयी।** उ.—(क) अब तौ घात परे हौ लालन, तुम्हैं भलैँ मैँ चीन्ही—१०-२६७ (ख) ओछी बुद्धि जसोदा कीन्ही। याकी जाति अबै हम चीन्ही—

१०-३६१ । (ग) जाहु धरहिँ तुमकौँ मैँ चीन्हीं । तुम्हरी जाति जान मैं लीन्हीं १०-७६६ ।

चीन्हे—क्रि. स. [हिं. चीन्हना] **पहचाने** । उ.—(क) अँधियारी आइ तहँ भारी । दनुज-सुता तिहिँ तैँ न निहारी । बसन सुक्र-तनया के लीन्हें । करत उतावलि परे न चीन्हे—६-१७४ । (ख) निसि चिन्ह चीन्हे सूर स्याम रति भीने ताही के सिधारो पिय जाके रंग राचे—१६०३ ।

चीन्हैं—क्रि. स. [हिं. चीन्हना] **पहचानता है** । उ.—जब भगत भगवंत चीन्हैं, भरम मन तैँ जाइ—१-७० ।

चीन्हौ—संज्ञा पुं. [सं. चिह्न] **लक्षण, चिह्न, संकेत** । उ.—(क) नेकु न राख्यौ ताको चीन्हौ—१०४३ । (ख) कैसे सूर अगोचर लहिए निगम न पावत चीन्हौ—३०३४ ।

क्रि. स. [हिं. चीन्हना] **जानो-पहचानो** । उ.—बड़े देव सब दिन को चीन्हौ—१००६ ।

चीन्ह्यौ—क्रि. स. [हिं. चीन्हना] **पहचाना** । उ.—बहुत जन्म इहिँ बहु श्रम कीन्ह्यौ । पै इन मोकौं कबहुँ न चीन्ह्यौ—४-१२ ।

चीमड़, चीमर—वि. [हिं. चमड़ा] (१) **चिमड़ा, जो तोड़ने फोड़ने पर टूटे नहीं** । (२) **कंजूस, खसीस, जो किसी तरह गाँठ से पैसा न निकाले** ।

चीर—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **वस्त्र** । उ.—(क) लाज के साज मैं हुती ज्यौं द्रौपदी, बढ्यौ तन-चीर नहिं अंत पायौ—१-५ । (ख) प्रातकाल असनान करन को जमुना गोपि सिधारी । लै कै चीर कदंब चढ़े हरि बिनवत हैं ब्रजनारी । (२) **वृक्ष की छाल** । (३) **चिथड़ा, लत्ता** । (४) **गाय का थन** । (५) **एक पक्षी** । (६) **धूप का पेड़** । (७) **छप्पर का मँगरा** । (८) **सीसा नामक धातु** ।

संज्ञा स्त्री. [हिं. चीरना] **चीरने की क्रिया** ।

चीरचरम—संज्ञा पुं. [सं. चीरचर्म] **मृगचर्म** ।

चीरना—क्रि. स. [सं. चीर्ण=चीरा हुआ] **किसी पदार्थ को धारदार औजार से फाड़ना** ।

चीरा—संज्ञा पुं. [हिं. चीरना] (१) **एक रंगीन कपड़ा** । (२) **चीर कर बनाया हुआ घाव** ।

चीरिका—संज्ञा स्त्री. [सं.] **झींगुर, झिल्ली** ।

चीरी—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **झींगुर** । (२) **एक मछली** ।

संज्ञा स्त्री. [हिं. चिड़िया] **पक्षी, चिड़िया** ।

चीरु—संज्ञा पुं. [सं. चीर] (१) **वस्त्र** । (२) **लत्ता** ।

चीरू—संज्ञा. पुं. [सं. चीर] **लाल रंगीन सूत** ।

चीरे—संज्ञा पुं. [हिं. चीरना, चीरा] **एक प्रकार का रंगीन कपड़ा जो पगड़ी बनाने के काम में आता है, पगड़ी** । उ.—मेरे कहैं बिप्रनि बुलाइ, एक सुभ घरी धराइ, बागे चीरे बनाइ, भूषन पहिरावौ—१०-९५ ।

चीरौँ—क्रि. स. [हिं. चीरना] **चीर डालूँ, फाड़ दूँ** । उ.—गहि तन हिरनकसिप कौं चीरौं, फारि उदर तिहिँ रुधिर नहैहौं—७-५ ।

चीर्ण—वि. [सं.] **चीरा-फाड़ा हुआ** ।

चीर्‌यौ—क्रि. स. [हिं. चीरना] **फाड़ा, चीरा** । उ.—चीर्‌यौ उदर पुत्र तब निकस्यौ—सारा. ६९४ ।

चील—संज्ञा स्त्री. [सं. चिल्ल] **एक बड़ी चिड़िया** ।

चीलड़, चीलर—संज्ञा पुं. [देश.] **एक छोटा कीड़ा** ।

चीलिका, चील्लक—संज्ञा स्त्री. [सं.] **झिल्ली, झींगुर** ।

चील्ही—संज्ञा स्त्री. [देश.] **टोटके द्वारा उपचार** ।

चीवर—संज्ञा पुं. [सं.] **साधुओं का वस्त्र** ।

चीवरी—संज्ञा पुं. [सं.] **बौद्ध साधु । भिक्षुक** ।

चीह—संज्ञा स्त्री. [फ़ा. चीख़] **चिल्लाहट** ।

चुंगल—संज्ञा पुं. [हिं. चंगुल] (१) **चिड़ियों का पंजा, चंगुल** । (२) **मनुष्य के हाथ का पंजा** ।

मुहा.—चंगुल में फँसना—हाथ या वश में होना ।

चुंगली—संज्ञा स्त्री. [देश.] **एक तरह की नथ** ।

चुंगी—संज्ञा स्त्री. [हिं. चुंगल] (१) **चुंगल भर वस्तु** । (२) **बाहरी माल पर लगनेवाला महसूल** ।

चुँघाना—क्रि. स. [हिं. चुसाना] **चुसा कर पिलाना** ।

चुंच—संज्ञा स्त्री. [हिं. चोंच] **चोंच, चंचु** ।

चुंडा—संज्ञा पुं. [सं.] **कूआँ, कूप** ।

चुंडित—वि. [हिं. चुंडी] **चुटिया या चोटीवाला** ।

चुंडी, चुंदी—संज्ञा स्त्री. [सं. चुंदी] **कुटनी, दूती** ।

संज्ञा स्त्री. [सं. चूड़ा] **चोटी, चुटैया** ।

चुँदरी—संज्ञा स्त्री. [हिं. चूनरी] **ओढ़नी** ।

चुँदी—संज्ञा स्त्री. [सं. चूड़ा] **स्त्रियों की चोटी** ।

चुँधलाना, चुँधियाना—क्रि. अ. [हिं चौ = चार + अंध = अंधा] आँखों का चौंधियाना या तिलमिलाना।

चुंधा—वि. [हिं. चौ = चार + अंध] (१) जिसे सुझाई न दे। (२) जिसकी आँखें छोटी-छोटी हों।

चुंबक—संज्ञा पुं. [सं.] (१) वह जो चुंबन ले। (२) कामी पुरुष। (३) धूर्त्त मनुष्य। (४) उलटपलट कर ग्रंथ का अध्ययन करनेवाला (५) फंदा, फाँस। (६) एक पत्थर जिसमें आकर्षण-शक्ति होती है। (७) आकर्षण-केंद्र, सुंदर पुरुष जिसके रूप में आकर्षण हो। उ.—हरि चुंबक जहँ मिलहिं सूर प्रभु मो लै जाउ तहीं—२५४२।

चुंबकत्व—संज्ञा पुं. [सं.] (१) चुंबक का गुण, भाव या कार्य। (२) आकर्षण-शक्ति।

चुंबत—क्रि. स. [सं. चुंबन, हिं. चुंबना] (१) चूमता है, प्यार करता है। उ.—कबहुँक माखन रोटी लै कै खेल करत पुनि माँगत। मुख चुंबत जननी समुझावत आप कंठ पुनि लागत—सारा. १६७ (२) स्पर्श करता है, छूता है।

चुंबति—क्रि. स. [हिं. चुंबना] (१) चूमती है, चुंबन करती है। (२) मुँह, उर और आँखों से लगाती है। उ.—इतनी सुनत कुंति उठि धाई, बरषत लोचन नीर। पुत्र-कबंध अंक भरि लीन्हौ, धरति न इक छिन धीर। लै लै स्रौन हृदय लपटावति, चुंबति भुजा गँभीर—१-२९।

चुंबन—संज्ञा पुं. [सं.] प्रेमावेश में होंठों से दूसरे के हाथ, गाल आदि को स्पर्श करने की क्रिया, चुम्मा। उ.—(क) सूर प्रभु कर गहति ग्वालिनि चारु चुंबन हेतु—१०-१८४। (ख) कबहुँक मुख मोरि चुंबन देत—१५६३। (ग) दै चुंबन हरि सुख लियौ—१८२७।

चुंबनकर—वि. [सं. चुंबन + कर] चूमनेवाला।

चुंबना—क्रि. स. [सं. चुंबन] (१) चूमना, चूम्मा लेना। (२) छूना, स्पर्श करना।

चुंबित—वि. [सं.] (१) चूमा हुआ। (२) स्पर्श किया हुआ। (३) चखा हुआ।

चुंबिनी—वि. स्त्री [हिं. चुंबन] चूमनेवाली।

चुंबी—वि. [सं. चुम्बिन्] (१) चूमनेवाला, जो चूमे। (२) छूने या स्पर्श करनेवाला।

चुँभना—क्रि. अ. [हिं. चुभना] गड़ना, चुभना।

चुअत—क्रि. अ. [हिं. चूना] चूता या टपकता है। उ.—देखिअत चहुँ दिसि तैं घर घोरे। स्याम सुभग तनु चुअत गंड मद बरबस थोरे थोरे—२८१८।

चुअना—क्रि. अ. [हिं चूना] चूना, टपकना।

चुआई—संज्ञा स्त्री. [हिं. चुआना] टपकाने का काम, भाव या मजदूरी।

चुआक—संज्ञा पुं. [हिं. चुआना] पानी आने का छेद।

चुआन—संज्ञा स्त्री. [हिं. चूना] नहर, खाई, सोता।

चुआना—क्रि. स. [हिं. चूना] (१) टपकाना। (२) रसीला करना। (३) अर्क उतारना।

चुआव—संज्ञा स्त्री. [हिं. चुआना] चुआने की क्रिया।

चुई—क्रि. अ. [हिं. चूना] चू पड़ी, टपकी। उ.—कछु वै कहती कछू कहि आवत प्रेम पुलकि स्रम स्वेद चुई—१४३३,

चुक—संज्ञा पुं. [हिं. चूक] भूल-चूक।

चुकचुकाना—क्रि. अ. [हिं. चूना] पसीजना।

चुकट, चुकटा—संज्ञा पुं. [हिं. चुटकी] चुटकी।

चुकता, चुकती—वि. [हिं. चुकाना] बेबाक, अदा।

चुकना—क्रि. अ. [सं. च्युत्कृत, प्रा. चुक्कि] (१) समाप्त होना, बाकी न रहना (२) अदा होना, बेबाक होना। (३) तै होना, निबटना। (४) भूल या त्रुटि करना। (५) व्यर्थ होना, लक्ष्य पर न पहुँचना।

क्रि. अ. [हिं. चूकना] समाप्ति सूचक संयोज्य क्रिया।

चुकरैंड़—संज्ञा पुं. [देश.] दोमुहाँ साँप, गूँगी।

चुकवाना—क्रि. स. [हिं. चुकाना का प्रे.] अदा कराना।

चुकाई—संज्ञा स्त्री. [हिं. चुकता] अदा होने का भाव।

चुकाना—क्रि. स. [हिं. चुकना] (१) अदा या बेबाक करना। (२) तै करना, निबटाना।

चुकिया—संज्ञा स्त्री. [हिं. चुक्कड़] कुल्हिया।

चुकौता—संज्ञा पुं. [हिं. चुकाना+औता (प्रत्य.)] ऋण का अदा होना, कर्ज की सफाई।

चुक्कड़—संज्ञा पुं. [सं. चषक] कुल्हड़, पुरवा।

चुक्का—संज्ञा पुं. [ह. चूक] **भूल, कसर, कमी।**

चुक्कार—संज्ञा पुं. [सं.] **गरज, गर्जन।**

चुक्की—संज्ञा स्त्री. [हिं. चूक] **धोखा, छल, कपट।**

चुखाए—क्रि. स. [हिं. चुखाना] **चखाये।** उ.—भरि अपने कर कनक कचोरा पिवति प्रियहिं चुखाए—१० उ. ३८।

चुखाना—क्रि. स. [सं. चूष] **(१) गाय के थन से दूध उतारने के लिए बछड़े को पिलाना। (२) चखाना।**

चुगना—क्रि. स. [सं. चयन] **चिड़ियों का चोंच से दाना बीनना और खाना।**

चुगल, चुगलखोर—संज्ञा पुं. [फ़ा.] **पीठ पीछे निंदा करने या इधर की उधर लगानेवाला।**

चुगलखोरी—संज्ञा स्त्री. [फ़ा.] **चुगली खाने की क्रिया।**

चुगली—संज्ञा स्त्री. [फ़ा.] **पीठ पीछे निंदा या शिकायत करनेवाली।** उ—ब्रजनारी बटपारिनि हैं सब चुगली आपुहिं जाइ लगायौ—११६१।

संज्ञा स्त्री—**पीछे पीछे की निंदा या शिकायत।**

चुगा—संज्ञा पुं. [हिं. चुगना] **चिड़ियों का चारा।**

चुगाइ—क्रि. स. [हिं. चुगाना] **चुगाकर**, उ.—जैसैं बधिक चुगाइ कपट कन पीछे करत बुरी—२७१७।

चुगाई—संज्ञा स्त्री. [हिं. चुगाना+आई (प्रत्य.)] **चुगने या चुगाने का भाव, क्रिया या मजदूरी।**

चुगाऐँ—क्रि. स. [हिं. चुगना] **(चिड़ियों को) दाना खिलाने से।** उ.—कहा होत पय-पान कराऐँ, बिष नहिं तजत भुजंग। कागहिं कहा कपूर चुगाऐँ, स्वान न्हवाऐँ गंग—१-३३२।

चुगाना—क्रि. स. [हिं. चुगना] **चिड़ियों को खिलाना।**

चुगुल—संज्ञा पुं. [हिं. चुगल] **चुगलखोर, पर-निंदक।** उ.—चुगुल, ज्वारि, निर्दय, अपराधी, झूठौ, खोटौ-खूटा—१-१८६।

चुगुली—संज्ञा स्त्री. [हिं. चुगुली] **पीठ पीछे की निंदा।** उ.—ऐसे डरति रहति हैं वाकौ चुगुली जाइ करैगौ—१६६५।

चुग्घी—संज्ञा स्त्री. [देश.] **चखने की थोड़ी चीज।**

चुचकारना—क्रि. स. [अनु.] **पुचकारना, दुलारना।**

चुचकारि—क्रि. स. [हिं. चुचकारना (अनु.)] **पुचकारकर, दुलार-प्यार दिखाकर।** उ.—मैया बहुत बुरौ बलदाऊ। कहन लग्यौ बन बड़ौ तमासौ, सब मौड़ा मिलि आऊ। मोहूँ कौं चुचकारि गयौ लै, जहाँ सघन बन झाऊ। भागि चलौ, कहि, गयौ उहाँ तैं, काटि खाइ रे हाऊ—४८१।

चुचकारी—संज्ञा स्त्री. [अनु.] **पुचकारने की क्रिया।**

चुचकारै—क्रि. स. [हिं. चुचकारना] **पुचकारती हैं, चुमकारती है, दुलराती है।** उ.—तब गिरत-परत उठि भागै। कहुँ नैंकु निकट नहिं लागै। तब नंद घरनि चुचकारै। आवहु बलि जाउँ तुम्हारै—१०-१८३।

चुचात—क्रि. अ. [हिं. चुचाना] **चूता है, टपकता है।** उ.—अरुन अधर सु स्तमित मुख बोलत ईषद कछु मुसुकात री। मानहु सुपक बिंब ते प्रगटत, रस अनुराग चुचात री—२३१३।

चुचाना—क्रि. अ. [हिं. चूना] **बूँद बूँद चूना, टपकना।**

चुचाय—क्रि. अ. [हिं. चुचाना] **बूँद बूँद टपकने, चूने या निचुड़ने (लगे)।** उ.—जसुमति मात उछंग लगाये बल मोहन को आय। बाल-भाव जिय में सुधि आई, अस्तन चले चुचाय—सारा. ७१७।

चुचुआना—क्रि. अ. [हिं. चुचाना] **चूना, टपकना।**

चुचुक—संज्ञा पुं. [सं.] **स्तन की गोल घुंडी।**

चुचुकना—क्रि. अ. [सं. शुष्क+ना (प्रत्य.)] **सूख कर इस तरह सिकुड़ना कि झुर्रियाँ पड़ जायँ।**

चुचुकारे—क्रि. स. [हिं. चुचुकारना] **पुचकारता या दुलराता है।** उ.—वै देखि निरखि नमित मुरली पर कर मुख नयन एक भए वारे। मैन सरोज बिधु बैर बिरंचि करि करत नाद बाहन चुचुकारे—१३३३।

चुटक—संज्ञा पुं. [देश.] **एक गलीचा या कालीन।**

संज्ञा पुं. [हिं. चोट+क] **कोड़ा, चाबुक।**

संज्ञा स्त्री. [अनु. चुटचुट] **चुटकी।**

चुटकना—क्रि. स. [हिं. चोट] **कोड़ा-चाबुक मारना।**

क्रि. स. [हिं. चुटकी] **(१) (साग, फूल आदि) चुटकी से तोड़ना। (२) साँप का काटना।**

चुटका—संज्ञा पुं. [हिं. चुटकी] **बड़ी चुटकी।**

चुटकि, चुटकी—संज्ञा स्त्री. [अनु. चुटचुट] **(१) अँगूठे और उँगली की पकड़।**

मुहा.—चुटकी देना—**चुटकी बजाना**। चुटकी देहिं, चुटकी दै दै—**चुटकी देकर**। उ.—(क) चुटकी देहिं नचावहीं, सुत जानि नन्हैया—१०-११६। (ख) जो मूरति जल-थल में ब्यापक निगम न खोजत पाई। सो मूरति तू अपने आँगन चुटकी दै दै नचाई। (ग) चुटकी दै-दै ग्वाल नचावत—१०-२१५। चुटकी बजाते—**चटपट**। चुटकी बजाने वाला—**खुशामदी**। चुटकी भर—**बहुत थोड़ा**। चुटकियों में—**बहुत शीघ्र**। चुटकियों में (पर) उड़ाना—**कुछ परवाह न करना**।

(२) **थोड़ी चीज**। (३) **चुटकी बजने का शब्द**। (४) **चिकोटी**।

मुहा.—चुटकी भरना (लेना)— (१) **हँसी उड़ाना**। (२) **चुभती हुई बात कहना**। (३) **चुटकी से दबाना, कुरेदना या काटना**। उ.—बार बार गहि गहि निरखत घूँघट ओट करौ किन न्यारौ। कबहुँक कर परसत कपोल छुइ चुटकि लेत ह्याँ हमहिं निहारौ।

(५) **पैर की उँगलियों का छल्ला**।

चुटकुला—संज्ञा पुं [हिं. चोट+कला] (१) **विनोद और चमत्कारपूर्ण बात**। (२) **दवा का नुस्खा जो बहुत सस्ता और कारगर हो**।

चुटपुट, चुटफुट—संज्ञा स्त्री. [अनु.] **फुटकर वस्तु**।

चुटला—संज्ञा पुं. [हिं. चोटी] (१) **स्त्रियों की वेणी**। (२) **वेणी के ऊपर लगाने का एक गहना**।

चुटाना—क्रि. अ. [हिं. चोट] **चोट खाना**।

चुटिया—संज्ञा स्त्री. [हिं. चोटी] **चोटी, शिखा, बालों की गुँथी हुई लट**। उ.—अरस-परस चुटिया गहैं, बरजति है माई—१०-१६२।

मुहा.—(किसी की) चुटिया हाथ में होना—**अपने अधीन, नीचे या वश में होना**।

चुटियाना, चुटीलना—क्रि. स. [हिं. चोट] **घायल करना**।

चुटीला—वि. [हिं. चोट] **चोट या घाव खाया हुआ**।

संज्ञा पुं. [हिं. चोटी] **छोटी चोटी या वेणी**।

वि.—**सबसे बढ़िया, चोटी पर का**।

चुटुकि, चुटुकी—संज्ञा स्त्री [हिं. चुटकी] **चुटकी**।

मुहा.—चुटुकि बजावति—**चुटकी बजाती हैं**।

उ.—चुटुकि बजावति नचावति जसोदा रानी, बाल-केलि गावति मल्हावति सुप्रेम भर—१०-१५१।

चुटैल—वि. [हिं. चोट] **घायल**। **चोट करनेवाला**।

चुड़िहार, चुड़िहारा—संज्ञा पुं. [हिं. चूड़ी+हार (प्रत्य.)] **चूड़ी बेचने का व्यवसाय करनेवाला**।

चुड़ैल—संज्ञा स्त्री. [सं. चूड़ा=चोटी+हार (प्रत्य.)] (१) **भूतनी, डायन**। (२) **कुरूपा स्त्री**। (३) **दुष्टा**।

चुत—वि. [सं. च्युत] **गिरा हुआ, च्युत**।

चुन—संज्ञा पुं. [सं. चूर्ण] **आटा, चूर्ण**।

चुनट—संज्ञा स्त्री. [हिं. चुनना] **शिकन, सिलवट**।

चुनत—क्रि. स. [हिं. चुनना] **चुग लेता है, खाता है**। उ.—एक समय मोतिन के धोखे हंस चुनत है ज्वारि—पृ. ३४३।

चुनन—संज्ञा स्त्री. [हिं. चुनना] **कपड़े की सिलवट**।

चुनना—क्रि. स. [सं. चयन] (१) **बीनना, इकट्ठा करना**। (२) **छाँटना, अलग करना**। (३) **पसंद या संग्रह करना**। (४) **सजाकर क्रम से रखना**। (५) **कपड़े में शिकन डालना**। (६) **फूल आदि चुटकी से नोच कर अलग करना**।

चुनरी—संज्ञा स्त्री. [हिं. चुनना] **रंग-बिरंगी ओढ़नी**।

चुनवाना—क्रि. स. [हिं. चुनाना] **चुनने का काम कराना**।

चुनही—क्रि. स. [हिं. चुनना] **चुनते हैं, चुगते हैं**। उ.—सूरदास मुकुताहल भोगी हंस ज्वारि को चुनही—३०१३।

चुनाई—संज्ञा स्त्री. [हिं. चुनना] (१) **चुनने की क्रिया या मजदूरी**।

(२) **दीवार की जोड़ाई**।

चुनाना—क्रि. स. [हिं. चुनना का प्रे.] (१) **इकट्ठा करवाना**। (२) **अलग छँटवाना**। (३) **सजवाना**। (४) **दीवार में गड़वाना**। (५) **कपड़े में शिकन डलवाना**।

चुनाव—संज्ञा पुं. [हिं. चुनना] (१) **चुनने या बीनने का काम**। (२) **किसी के पक्ष में मत देने की क्रिया**।

चुनावट—संज्ञा स्त्री. [हिं. चुनना] **कपड़े की चुनट**।

चुनावनहारे—संज्ञा स्त्री. [हिं. चुनाना+हारे] **चुनने का काम करनेवाले** । उ—सूर सुगंध चुनावनहारे कैसे दुरत दुराए—१२३३ ।

चुनिंदा—वि. [हिं. चुनना+इंदा (प्रत्य.)] (१) **चुना चुनाया, छाँटा हुआ** । (२) **बढ़िया** । (३) **मुख्य** ।

चुनि—क्रि. स. [हिं. चुनना] (१) **बीनकर, एक-एक उठाकर** । उ.—ऐसैं बसिऐ ब्रज की बीथिनि। ग्वारनि के पनवारे चुनि-चुनि, उदर भरीजै सीथिनि—१०-४९० । (२) **छाँटकर, संग्रह करके** । उ.—हंस उज्वल पंख निर्मल, अंग मलि-मलि न्हाहिं। मुक्ति-मुक्ता अनगिने फल, तहाँ चुनि-चुनि खाहिं—१-३३८ । (३) **चुटकी से नोच कर** । उ.—फूले-फूले मग धरे कलियाँ चुनि डारे—२०६७ ।

चुनियाँ—संज्ञा स्त्री. [हिं. चुन्नी] **मानिक का कण** ।

चुनी—संज्ञा स्त्री. [सं. चूर्ण, हिं. चूनी] (१) **रत्न-कण** । उ.—मरुवेति मानिक चुनी लागी बिच बिच हीरा तरंग—२२८१ । (२) **मोटा पिसा हुआ अन्न** ।

क्रि. स. [हिं. चुनना] **छाँट ली, चुन ली** ।

संज्ञा स्त्री. [हिं. चुनरी] **रंगीन ओढ़नी** ।

चुनौटिया—संज्ञा पुं. [हिं. चुनौटी] **कालापन लिये लाली** ।

चुनौटी—संज्ञा स्त्री. [हिं. चूना+औटी (प्रत्य.)] **छोटी डिबिया जिसमें पान का चूना रखा जाता है** ।

चुनौती—संज्ञा स्त्री. [हिं. चुनना] (१) **उत्तेजना, बढ़ावा** । उ.—मदन नृपति को देस महामद बुधिबल बसि न सकत उर चैन । सूरदास प्रभु दूत दिनहि दिन पठवत चरित चुनौती दैन—१३१३ । (२) **युद्ध के लिए ललकार या प्रचार** ।

चुन्नी—संज्ञा स्त्री. [सं चूर्ण] (१) **मानिक आदि रत्नों के कण** । (२) **अनाज का भूसी मिला चूरा** । (३) **स्त्रियों की चादर** । (४) **चमकी या सितारे जो स्त्रियाँ माथे या गाल पर चिपकाती हैं** ।

चुप—वि. [सं. चुप (चोपन) मौन] **अवाक्, मौन** ।

यौ.—चुपचाप—(१) **मौन रहकर** । (२) **शांति से** । (३) **छिपे छिपे** । (४) **निठल्ला, बेकार** ।

मुहा.—चुप करना—(१) **बोलने न देना** । (२) **मौन रहना** । चुप मारना, लगाना—**मौन रहना** ।

संज्ञा स्त्री.— (१) **मौन, खामोशी, शांति** ।

चुपकहिँ—क्रि. वि. [हिं. चुप, चुपका] **चुपके-चुपके, चुपके से** । उ.—पूजा करत नंद रहे बैठे, ध्यान समाधि लगाई । चुपकहिं आनि कान्ह मुख मेल्यौ, देखौ देव-बड़ाई—१०-२६२ ।

चुपका—वि. [हिं. चुप] (१) **चुप्पा** । (२) **मौन** ।

मुहा.—चुपके से—**शांत भाव से, गुप्त रूप से** ।

चुपकाना—क्रि. स. [हिं. चुपका] **बोलने न देना** ।

चुपकी—संज्ञा स्त्री. [हिं. चुप] **मौन, खामोशी** ।

मुहा.—चुपकी लगाना—**शांत रहना** ।

चुपचाप—क्रि. वि. [हिं. चुप] (१) **शांति से** । (२) **छिपे छिपे** । (३) **चेष्टारहित** । (४) **निर्विरोध** ।

चुपड़ना, चुपरना—क्रि. स. [हिं. चिपचिपा] (१) **लेप करना, पोतना** । (२) **दोष छिपाना** । (३) **चापलूसी करना** ।

चुपर्यौ—क्रि. स. [हिं. चुपड़ना] **थोड़े पानी से धोकर पोंछना** । उ.—करि मनुहारि कलेऊ दीन्हौ, मुख चुपर्यौ अरु चोटी—१०-१६३ ।

चुपाना—क्रि. अ. [हिं. चुप] **बोलने या रोने न देना** ।

चुप्पा—वि. [हिं. चुप] (१) **कम बोलनेवाला, जो सदा शांत रहे** । (२) **जो मन की बात न कहे, घुन्ना** ।

चुप्पी—संज्ञा स्त्री. [हिं. चुप] **मौन, खामोशी** ।

वि. स्त्री. [हिं. चुप्पा] (१) **शांत** । (२) **घुन्नी** ।

चुबलाना, चुभलाना—क्रि. स. [अनु.] **मुँह में रखकर धीरे धीरे रस या स्वाद लेना** ।

चुभकना—क्रि. अ. [अनु.] **पानी में डूबना-उतराना** ।

चुभकाना—क्रि. स. [अनु.] **गोता देना, डुबाना** ।

चुभकी—संज्ञा स्त्री. [अनु. चुभ चुभ] **डुब्की, गोता** ।

चुभना—क्रि. स. [अनु.] (१) **गड़ना, धँसना** । (२) **मन में खटकना या चोट पहुँचाना** । (३) **मन में बस जाना या बना रहना** । (४) **मग्न, लीन** ।

चुभलाना—क्रि. स. [अनु.] **मुँह में घुलाना** ।

चुभवाना, चुभाना—क्रि. स. [हिं. चुभना] **धँसाना** ।

चुभि—क्रि. स. [हिं. चुभना] **मन में बसकर या बनी**

रहकर। उ.—मनं चुभि रही माधुरी मूरति अंग-अंग उरझाई—३३१७।

चुभी—क्रि. स. [हिं. चुभना] **चित्त में बस गयी।** उ.—टरति न टारे यह छवि मन में चुभी—१४४६।

चुभीला—वि. [हिं. चुभना] (१) **चुभनेवाला।** (२) **मुग्ध या आकृष्ट करनेवाला।**

चुभोना—क्रि. स. [हिं. चुभाना] **धँसाना, गड़ाना।**

चुमकार, चुमकारी—संज्ञा स्त्री. [हिं. चूसना+कार] **पुचकार, दुलार, प्यार।**

चुमकारना—क्रि. स. [हिं. चुमकार] **पुचकारना।**

चुम्मा—संज्ञा पुं. [हिं. चूमना] **चुंबन।**

चुर—संज्ञा पुं. [देश.] (१) **बाघ की माँद।** (२) **बैठक।** वि. [सं. प्रचुर] **बहुत, अधिक, ज्यादा।**

संज्ञा पुं, [अनु.] **सूखी चीज के टूटने का शब्द।**

चुरकना—क्रि. अ. [अनु.] (१) **चहचहाना।** (२) **टूटना।**

चुरकी—संज्ञा स्त्री. [हिं. चोटी] **चुटिया, शिखा।**

चुरकुट—क्रि. वि. [हिं. चूर+करना] **चूर-चूर, चकनाचूर।** उ.—(क) मुष्टिकौ गर्द मरदि चार गूर चुरकुट करयौ कंस मनु कंप भयौ भई रंगभूमि अनुराग रागी—२६०६। (ख) रामदल मारि सो वृत्त चुरकुट कियो द्विविद सिर फट गयौ लगत ताके—१०उ.४५।

चुरकुस—क्रि. वि. [हिं. चूर] **चूर-चूर।**

चुरचुरा—वि. [अनु.] **चुरचुर शब्द करके टूटनेवाला।**

चुरचुराना—क्रि. अ. [अनु.] (१) **चुर-चुर शब्द करना।** (२) **चूर-चूर हो जाना।**

क्रि. स.—**चूर-चूर करना। चुर-चुर शब्द करना।**

चुरना—क्रि. अ. [सं. चूर] (१) **खौलते पानी के साथ पकना।** (२) **साधारण या गुप्त बात होना।**

चुरमुर—संज्ञा पुं, [अनु.] **कुरकुरी वस्तु टूटने का शब्द।**

चुरमुरा—वि. [अनु.] **करारा, चुरमुरानेवाला।**

चुरमुराना—क्रि. अ. [अनु.] **चुरमुर शब्द करना।**

चुरा—संज्ञा पुं. [हिं. चूरा] **वस्तु का पिसा हुआ अंश।**

चुराइ—क्रि. स. [हिं. चुराना] **चुरा कर, हरण करके।** उ.—तबहिं निसिचर गयौ छल करि, लई सीय चुराइ—६-६०।

चुराई—संज्ञा स्त्री. [हिं. चुरना] **पकने की क्रिया।**

चुराना—क्रि. स. [सं. चुर=चोरी] (१) **चोरी करना।**

मुहा.—चित्त चुराना— **मन मोहित करना।**

(२) **छिपाना, दूसरों की दृष्टि से बचाना।**

मुहा.—आँख चुराना—**सामने मुँह न करना।**

(३) **लेन-देन या काम में कमी करना।**

क्रि. स. [हिं. चुरना] **खौलते पानी में पकाना।**

चुरावत—क्रि. स. [हिं. चुराना] **चुराते हैं।** उ.—महा अक्षय निधि पाइ अचानक आपुहिं सबै चुरावत हैं—पृ. ३३०।

चुरावन—संज्ञा स्त्री. सवि. [हिं. चुराना] **चुराने के लिए।** उ.—सूर गए हरि रूप चुरावन उन अप-बस करि पाए—पृ. ३२४।

चुरावै—क्रि. स. [हिं. चुराना] **चुराता है, चोरी करता है।** उ.—घर-घर गोरस सोइ चुरावै—१०-३।

चुरिहार, चुरिहारा—संज्ञा पुं. [हिं. चूड़ी + हारा (प्रत्य.)] **चूड़ी का व्यवसाय करनेवाला।**

चुरी—संज्ञा स्त्री. [हिं. चूड़ा, चूड़ी] **चूड़ी।** उ.—(क) फूटी चुरी गोद भरि ल्यावैं, फाटे चीर दिखावैं गात—१०-३३२। (ख) किंकिनी करि कुनित कंकन कर चुरी झनकार—पृ.३४४ (२६)।

चुरू—संज्ञा पुं. [सं. चुलुक] **चुल्लू।** उ.—(क) हँसि जननी चुरू भराए। तब कछु-कछु मुख पखराए—१०-१८३। (ख) भरयौ चुरू मुख धोइ तुरतहीं पीरे पान-विरी मुख नावति—५१४। (ग) धरि तुष्टी भारी जल ल्याई। भरयौ चुरू खरिका लै आई।

चुरैहौं—क्रि. स. [हिं. चुराना] **चुराऊँगा।** उ.—यह परतीति नही जिय तेरैं सो कहा तोहि चुरैहौं—१२४३।

चुल—संज्ञा स्त्री. [सं. चल] **खुजलाहट, मस्ती।**

चुलचुलाना—क्रि. अ. [हिं. चुल] **खुजलाहट होना।**

चुलचुलाहट—संज्ञा स्त्री. [हिं. चुलबुलाना] **खुजलाहट।**

चुलचुली—संज्ञा स्त्री. [हिं. चुलचुलाना] **चुल।**

चुलबुल—संज्ञा स्त्री. [सं. चल+वल] **चंचलता।**

चुलबुला—वि. [हिं. चुलबुल] **चंचल, नटखट।**

चुलबुलाना—क्रि. अ. [हिं. चुलबुल] (१) **हिलना-डोलना**। (२) **चंचल होना**।
चुलुक, चुलूक—संज्ञा पुं. [सं.] **दलदल, कीचड़**।
चुल्ला, चुल्ली—वि.—**नटखट**।
चुल्लू—संज्ञा पुं. [सं. चुलुक] **हथेली का गड्ढा**।
मुहा.—चुल्लू भर—**जितना चुल्लू में आ सके**। चुल्लुओं रोना—**बहुत रोना**। चुल्लू में समुद्र न समाना—(१) **छोटे पात्र में बहुत वस्तु न आना**। (२) **साधारण व्यक्ति से महान् कार्य न हो सकना**।
चुल्हौना—संज्ञा पुं. [हिं. चूल्हा] **चूल्हा**।
चुवत—क्रि. अ. [हिं. चुवना] **बूँद बूँद टपकता है**। उ.—(क) विधु पर सुदंत विध्वंत अमृत चुवत सूर विपरीत रति पीड़ि नारी—१६०३। (ख) मुरली माहिं बजावत गावत बंगाली अधर चुवत अमृत बनवारी—२३६७। (ग) देखी मैं लोचन चुवत अचेत—३४५६।
चुवना—क्रि. अ. [हिं. चूना] **बूँद बूँद टपकता है**।
चुवा—संज्ञा पुं. [हिं. चौआ] **पशु, चौपाया**।
चुवाना—क्रि. स. [हिं. चूना का प्रे.] **टपकाना**।
चुवावत—क्रि. स. [हिं. 'चूना' का प्रे. 'चुवाना'] **टपकाती हैं, बूँद बूँद करते गिराती हैं**। उ.—राँभति गाइ बच्छ हित सुधि करि, प्रेम उमँगि थन दूध चुवावत—४८०।
चुसकी—संज्ञा स्त्री. [सं. चषक] **शराब का पात्र**।
संज्ञा स्त्री. [हिं. चूरना] **थोड़ा थोड़ा पीना**।
चुसना—क्रि. अ. [हिं. चूसना] (१) **चूसा या चचोड़ा जाना**। (२) **निचुड़ जाना**। (३) **सारहीन होना**। (४) **निर्धन या साधनहीन हो जाना**।
चुसवाना—क्रि. स. [हिं. चूसना] **चूसने देना**।
चुसाई—संज्ञा स्त्री. [हिं. चूसना] **चूसने की क्रिया**।
चुसाना—क्रि. स. [हिं. चूसना का प्रे.] **चूसने देना**।
चुसौअल, चुसौवल—संज्ञा स्त्री. [हिं. चूसना] (१) **अधिकता से चूसना**। (२) **अनेकों का चूसना**।
चुस्त—वि. [फ़ा.] (१) **कसा हुआ, जो ढीला न हो**। (२) **फुर्तीला, जिसमें आलस्य न हो**। (३) **दृढ़, मजबूत**।
चुस्ती—संज्ञा स्त्री. [फ़ा.] (१) **फुर्ती, तेजी**। (२) **तंगी, कसावट**। (३) **दृढ़ता, मजबूती**।
चुहँटी, चुहटी—संज्ञा स्त्री. [देश.] **चुटकी**।
चुहचुहा—वि. [अनु.] **चटक रंग का**।
चुहचुहाती—वि. [हिं. चुहचुहाना] **सरस, रसीला**।
चुहचुहाना—क्रि. अ. [अनु.] (१) **रस टपकना**। (२) **चिड़ियों का चहचहाना**।
चुहचुहानी—क्रि. अ. [हिं. चुहचुहाना] (**चिड़ियाँ**) **चहचहाने लगीं**। उ.—(क) चिरई चुहचुहानी चंद की ज्योति परानी रजनी बिहानी प्राची पियरी प्रवीन की। (ख) मैं जानी जिय जहँ रति मानी। तुम आए हौ ललना जब चिरियाँ चुहचुहानी।
चुहचुही—संज्ञा स्त्री. [अनु.] **फूलसुँघनी चिड़िया**।
चुहटना—क्रि. स. [देश.] **रौंदना, कुचलना**।
चुहना—क्रि. स. [सं. चूषण] **किसी वस्तु का रस चूसना**।
चुहल—संज्ञा स्त्री. [अनु. चुहचुह] **हँसी-विनोद**।
चुहलबाज—वि. [हिं. चुहल+फ़ा. बाज (प्रत्य.)] **ठठोल**।
चुहलबाजी—संज्ञा स्त्री. [हिं. चुहलबाज] **हँसी-ठठोली**।
चुहिया—संज्ञा स्त्री. [हिं. चूहा] **चूहा का स्त्रीलिंग तथा अल्पार्थक रूप**।
चुहिल—वि. [हिं. चुहचुहाना] **जहाँ खूब रौनक हो**।
चुहुकना—क्रि. स. [सं. चूष] **चूसना**।
चुहुचुहु—वि. [अनु.] **चटकीला, शोख**। उ.—पहिरे चीर सुहि सुरंग सारी चुहुचुहु चूनरी बहुरंगनो। नील लहँगा लाल चोली कसि उबरि केसरि सुरंगनो—१२८०।
चुहुटना—क्रि. अ. [हिं. चिमटना] **चिपकना**।
वि.—**चिपकने या पकड़नेवाला**।
चुहुटनी—संज्ञा स्त्री. [देश.] **गुंजा, घुँघुची**।
चूँ—संज्ञा पुं. [अनु.] (१) **चिड़ियों के बोलने का शब्द**। (२) **चूँ शब्द**।
मुहा.—चूँ करना—(१) **कुछ कहना**। (२) **विरोध में कुछ कहना**।
चूँकि—क्रि. वि. [फ़ा.] **क्योंकि, इसलिए कि**।
चूँच—संज्ञा स्त्री. [हिं. चोंच] **चोंच**। उ.—बींध्यो कनक परसि सुक संदर चुनै बीज गहि चूँच।

चूँचूँ—संज्ञा पुं. [अनु.] (१) चिड़ियों का शब्द। (२) चूँचूँ शब्द।

चूँचरा—संज्ञा पुं. [फ़ा. चूँ+चरा] (१) विरोध, प्रतिवाद। (२) आपत्ति, उज्र। (३) बहाना।

चूँदरी—संज्ञा स्त्री. [हिं. चूनरी] ओढ़नी।

चूँनी—संज्ञा स्त्री. [हिं. चून] अन्नकण। मानिककण।

चूक—संज्ञा स्त्री. [हिं. चूकना] (१) भूल, गलती। उ.—(क) अजामील तौ विप्र तिहारौ, हुतौ पुरातन दास। नैकुँ चूक तैं यह गति कीनी, पुनि बैकुंठ निवास—१-१३२। (ख) कौन करनी घाटि मोसौं, सो करौं फिरि काँधि। न्याइ कै नहिं खुनुस कीजै, चूक पल्लैं बाँधि—१-१९९। (ग) घोष बसत की चूक हमारी कछू न चित गहिवो—३४१५। (२) छल, कपट, फरेब, दगा।

संज्ञा पुं. [सं. चुक] (१) खट्टे फल के गाढ़े रस से बना एक पदार्थ। (२) एक खट्टा साग।

वि.—बहुत ज्यादा खट्टा।

चूकना—क्रि. अ. [सं. च्युतकृत. प्रा. चुक्कि] (१) भूल करना। (२) लक्ष्य से हटना। (३) अवसर खोना।

चूका—संज्ञा पुं. [सं. चुक] एक खट्टा साग।

चूकैं—क्रि. अ. [हिं. चूकना] चूकने पर, अवसर खोने पर। उ.—सूरदास अवसर के चूकैं, फिरि पछितैहौ देखि उघारी—१-२४८।

चूची—संज्ञा स्त्री. [सं. चूचुक] (१) स्तन, कुच। (२) स्तन का अग्र भाग।

चूचुक—संज्ञा पुं. [सं.] स्तन का अग्र भाग।

चूड़, चूड़क—संज्ञा पुं. [सं.] (१) चोटी, शिखा। (२) सिर की कलँगी। (३) छोटा कुआँ।

चूड़ांत—वि. [सं.] चरमसीमा, पराकाष्ठा।

क्रि. वि.—बहुत अधिक, अत्यंत।

चूड़ा—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) चोटी, शिखा। (२) मोर के सिर की चोटी। (३) कुआँ। (४) घुँघुची। (५) चूड़ाकरण नामक संस्कार।

संज्ञा पुं. [सं. चूड़ा = बाहु-भूषण] (१) कड़ा, कंकण। (२) वधू की चूड़ियाँ।

चूड़ाकरण, चूड़ाकर्म—संज्ञा पुं. [सं.] बच्चे का पहली बार सर मुँड़वाकर चोटी रखने का संस्कार, मूड़न।

चूड़ापाश—संज्ञा पुं. [सं] बालों का जूड़ा।

चूड़ामणि—संज्ञा पुं. [सं.] (१) शीशफूल नामक गहना। (२) सबसे श्रेष्ठ व्यक्ति। (३) घुँघुची।

चूड़ी—संज्ञा स्त्री. [सं. चूड़ा] (१) महीन गोलाकार पदार्थ। (२) हाथ में पहनने का एक गहना।

मुहा.—चूड़ियाँ ठंडी करना (तोड़ना)—विधवा वेश बनाना। चूड़ियाँ पहनना—स्त्री-वेश बनाना (व्यंग्य)। चूड़ियाँ बढ़ाना—चूड़ियाँ अलग करना।

चूड़ीदार—वि. [हिं. चूड़ी+फ़ा. दार] जिसमें चूड़ी या छल्ले की तरह घेरे पड़े हों।

चून—संज्ञा पुं. [सं. चूर्ण] (१) आटा, पिसान। (२) चूना। उ.—(क) सूर स्याम को मिली चून हरदी ज्यों रँग रजी—११७३। (ख) सूर स्याम मन तुमहिं लुभानो हरद चून रँग रोचन—१५१७।

संज्ञा पुं. [देश.] एक बड़ा पेड़।

चूनर, चूनरी—संज्ञा स्त्री. [हिं. चुनना] ओढ़ने का लाल रंगीन बूटियोंदार दुपट्टा। उ.—(क) पहिरे राती चूनरी, सेत उपरना सोहै (हो)—१-४४। (ख) पहिरि चुनि चुनि चीर चुहि चुहि चूनरी बहुरंग—२२७८।

चूना—संज्ञा पुं. [सं. चूर्ण] एक तीक्ष्ण भस्म जो पान में खाने, और औषध के काम आती है।

क्रि. अ. [सं. च्यवन] (१) बूँद बूँद टपकना। (२) (फल आदि का) गिरना। (३) (छत लोटा आदि में) दराज या छेद होना जिससे पानी टपके। (४) गर्भ गिरना।

वि.—जो टपक रहा हो।

चूनी—संज्ञा स्त्री. [हिं. चुन्नी] (१) मोटा पिसा अन्न। (२) रत्नकण, चुन्नी। उ.—धन. भूषन धन मुकुट जरयौ नग हीरा चुनी सय नाल—पृ.३४२ (३६)।

चूनै—वि. [सं. चूर्ण, हिं. चूरा] चूर चूर, टुकड़े टुकड़े। उ.—गए स्याम ग्वालिनि घर सूनैं। माखन खाइ, डारि सब गोरस, बासन फोरि किए सब चूनै—६१७।

चूनो—संज्ञा पुं. [हिं. चूना] चूना नामक भस्म। उ.—रंग कापे होत न्यारो हरद चूनो सानि—८९५।

मुहा.—जरो पर चूनो—**जले पर चूना छिड़कना, जो विपत्ति में हो उसे और दुख देना।** उ.—वैसहिं जाइ जरो पर चूनो दूनो दुख तिहिं काल—३१५६।

चूपड़ी—वि. स्त्री. [हिं. चुपड़ना] **घी चुपड़ी हुई।**

चूमति—क्रि. स. [हिं. चूमना] **चूमती है, प्यार करती है।** उ.—(क) मुख चूमति अरु नैन निहारति, राखति कंठ लगाई—१०-५२। (ख) चूमति कर-पग-अधर-भ्रू, लटकति लट चूमति—१०-७४।

यौ.—चूमति-चाटति—**प्यार करती हुई, चूम-चाटकर प्रेम जताती हुई।** उ.—लैं आई गृह चूमति-चाटति, घर-घर सबनि बधाई मानी—१०-७८।

चूमन—क्रि. स. [हिं. चूमना] **चूमना, प्यार करना।** उ.—महरि मुदित उलटाइ कै, मुख चूमन लागी—१०-६८।

चूमना—क्रि. स. [सं. चुंबन] **चुम्मा लेना।**

मुहा.—चूमकर छोड़ देना—**कार्य आरम्भ करके या वस्तु को छूकर छोड़ देना, पूरा उपयोग न करना।** चूमना-चाटना—**प्यार दिखाना।**

चूमा—संज्ञा पुं. [हिं. चूमना] **चूमने की क्रिया, चुंबन।**

चूमाचाटी—संज्ञा पुं. [हिं. चूमना+चाटना] **चूम-चाट कर प्रेम जताना या प्यार दिखाना।**

चूमि—क्रि. स. [हिं. चूमना] **चूमकर, प्यार करके, चुम्मा लेकर।** उ.—(क) निरखि हरषि मुख चूमि कै, मंदिर पग धारी—१०-६६। (ख) मुख चूमि हरषि लै आए—१०-१८३।

चूम्यौ—क्रि. स. [हिं. चूमना] **चूम लिया, प्यार किया।** उ.—(क) बड़ौ मंत्र कियौ कुँवर कन्हाई। बार-बार लै कंठ लगायौ, मुख चूम्यौ, दियौ घरहिं पठाई—७६१। (ख) काहू तुरत आइ मुख चूम्यौ कर सौं छुयौ कपोल—२४२७।

चूर—संज्ञा पुं. [सं. चूर्ण] **(१) छोटे-छोटे टुकड़े। (२) चूरा, बुरादा, भूर, महीन कण।**

मुहा.—चूर चूर कर डाला—**तोड़-फोड़ डाला, नष्ट कर दिया।** उ.—जोगन डेढ़ बिटप बेली सब चूर चूर कर डाल—सारा. ४१७।

वि.—**(१) किसी काम या भाव में लीन। (२) किसी नशे से प्रभावित, मद-मत्त।**

चूरण, चूरन—संज्ञा पुं. [सं. चूर्ण] **(१) चूरा।** उ.—घृत मिष्टान्न सबै परिपूरन। मिस्रित करत पाग कौ चूरन—१००६। **(२) बहुत महीन पिसी हुई औषध।**

चूरना—क्रि. स. [सं. चूर्णन] **(१) चूर-चूर करना। (२) तोड़-फोड़ डालना, बरबाद करना।**

चूरमा—संज्ञा पुं [सं. चूर्ण] **रोटी-पूरी का घी-शकर में मिलाकर भूना हुआ भोजन।**

चूरा—संज्ञा स्त्री. [सं. चूड़ा=बाहुभूषण] **कड़ा नामक आभूषण जो बच्चों के हाथ-पैर में पहनाया जाता है।** उ.—तन झँगुली, सिर लाल चौतनी, चूरा दुहुँ कर पाइ—१०-८६।

संज्ञा पुं. [सं. चूर्ण] **पिसा हुआ चूर्ण।**

संज्ञा पुं. [हिं. चिउड़ा] **चिउड़ा।**

चूरामनि—संज्ञा पुं. [सं. चूड़ामणि] **एक गहना।**

चूरि—क्रि. स. [हिं. चूरना] **चूर करके, तोड़कर, नष्ट करके।** उ.—भंजन-शब्द प्रगट अति अद्भुत, अष्ट-दिसा नभ-पूरि। स्रवन-हीन सुनि भए अष्टकुल नाग गरब भयौ चूरि—९-२६।

चूरी—संज्ञा स्त्री. [हिं. चूड़ी] **हाथ की चूड़ी।**

संज्ञा स्त्री. [सं. चूर्ण] **(१) चूरा। (२) चूरमा।**

चूरे—वि. [हिं. चूर] **डूबे हुए, निमग्न।** उ.—गूझा बहु पूरन पूरे। भरि-भरि कपूर रस चूरे—१०-१८३।

चूर्ण—संज्ञा पुं. [सं.] **(१) महीन पिसा पदार्थ। (२) महीन पिसी औषध। (३) अबीर। (४) धूल।**

वि.—**तोड़ा-फोड़ा या नष्ट किया हुआ।**

चूर्णिका—संज्ञा स्त्री. [सं.] **(१) सत्तू। (२) गद्य का एक प्रकार जिसमें सरल शब्द और वाक्य हों।**

चूर्णित—वि. [सं.] **चूर-चूर किया हुआ।**

चूल—संज्ञा पुं. [सं.] **चोटी, शिखा।**

संज्ञा स्त्री. [देश.] **लकड़ी का पतला सिरा जो दूसरी के छेद में ठोंका जाय।**

मुहा.—चूलें ढीली होना—**बहुत थकावट होना।**

चूलिका—संज्ञा स्त्री. [सं.] **नाटक का एक अंग जिसमें घटना होने की सूचना नेपथ्य से दी जाती है।**

चूल्हा—संज्ञा पुं. [सं. चुल्लि] **भोजन पकाने का पात्र।**

मुहा.—चूल्हा न्योतना—**घर भर को निमंत्रण**

देना। चूल्हा जलाना (फूँकना, झोंकना)—**भोजन पकाना**। चूल्हे में जाना (पड़ना)—**नष्ट-भ्रष्ट होना**। चूल्हे में डालना—**नष्ट-भ्रष्ट करना**। चूल्हे से निकल कर भट्ठी (भाड़) में पड़ना—**छोटी विपत्ति से बचकर बड़ी में फँसना**।

चूषण—संज्ञा पुं. [सं.] **चूसना**।

चूसना—क्रि. स. [सं. चूषण] (१) **किसी पदार्थ को दबा-दबा कर रस पीना**। (२) **किसी चीज (जैसे धन, स्वास्थ्य, यौवन आदि) का सार भाग खींच लेना**।

चूसे—क्रि. स. [हिं. चूसना] **खींच-खींचकर रस पिये**। उ.—सूरदास गोपाल छाँड़ि कै चूसै टेटा खारे-३०४५।

चूहड़ा, चूहरा—संज्ञा पुं.—**चांडाल, भंगी**।

चूहरी—संज्ञा स्त्री. [हिं. चूहरा] **भंगिन**।

चूहा—संज्ञा पुं. [अनु. चूँ+हा] **एक छोटा जंतु**।

चूहादंती—संज्ञा स्त्री. [हिं. चूहा+दाँत] **एक गहना**।

चें—संज्ञा स्त्री. [अनु.] **चिड़ियों की बोली**।

चेंचुआ—संज्ञा पुं. [अनु.] **चातक या पंछी का बच्चा**।

चेंचुला—संज्ञा पुं. [देश.] **एक पकवान**।

चेंचें—संज्ञा स्त्री. [अनु.] (१) **चिड़ियों की बोली, चीं चीं**। (२) **व्यर्थ की बक-बक या बकवाद**।

चेंदुआ—संज्ञा पुं. [हिं. चिड़िया] **चिड़िया का बच्चा**।

चें पें—संज्ञा स्त्री. [अनु.] (१) **धीमें स्वर में किया हुआ विरोध**। (२) **व्यर्थ की बकवाद**।

चेचक—संज्ञा स्त्री. [फ़ा.] **शीतला रोग**।

चेजा—संज्ञा पुं. [हिं. छेद (?)] **सूराख, छेद**।

चेट—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **दास**। (२) **पति**।

चेटक—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **जादू, इंद्रजाल, मंत्र, टोना**। उ.—तब हँसि कै मेरौ मुख चितयौ, मीठी बात कही। रही ठगी, चेटक सौ लाग्यौ, परि गई प्रीति सही—१०-२८१। (२) **दास, सेवक**। (३) **चटक-मटक**। (४) **चाट, चसका, मजा**। (५) **तमाशा**।

चेटकनी—संज्ञा स्त्री. [हिं. चेटी] **दासी, सेविका**।

चेटका—संज्ञा स्त्री. [सं. चिता] (१) **मुरदा जलाने की चिता**। (२) **श्मशान, मरघट**।

चेटकी—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **इंद्रजाली, जादूगर**। (२) **कौतुक या लीलाएँ करनेवाला, कौतुकी**। उ.—परम गुरु रतिनाथ हाथ सिर दियो प्रेम उपदेस। चतुर चेटकी मथुरानाथ सों कहियौ जाइ अदेस—३१२५।

चेटुआनि—संज्ञा पुं. बहु. [सं. चेटक=दास, हिं. चट्टा=चेला] **बालक, विद्यार्थी, शिष्य**। उ.—सब चेटुआनि मन ऐसी आई। रहे सबै हरि-पद चित लाई—७-२।

चेटिका, चेटिकी, चेटिया, चेटी, चेटुई, चेटुवी—संज्ञा स्त्री. [सं. चेटी] **दासी**।

चेत—क्रि. अ. [हिं. चेतना] **सावधान या सतर्क हो ले**। उ.—सोवत कहा चेत रे रावन, अब क्यों खात दगा—९-११४।

संज्ञा पुं. [सं. चेतस्] (१) **चेतना, संज्ञा, होश**। (२) **ज्ञान, बोध**। (३) **सावधानी, चौकसी**। उ.—मन सुवा, तन पींजना, तिहिं माँझ राखै चेत—१-३११। (४) **स्मरण, सुध**। (५) **चित्त**।

अव्य. [सं. चेत्] (१) **यदि**। (२) **शायद**।

चेतक—वि. [सं.] **चितानेवाला**।

चेतकी—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **हड़**। (२) **चमेली का पौधा**। (३) **एक रागिनी का नाम**।

चेतत—क्रि. स. [हिं. चेतना] **सचेत या सावधान होता है**। उ.—(क) सूरदास प्रभु क्यौं नहिं चेतत, जब लगि काल न आयौ—१-३०१। (ख) चेतत क्यौं नाहिं मूढ़ सुनि सुवात मेरी। अजहूँ नहिं सिंधु बँध्यौ, लंका है तेरी—९-११८।

चेतन—वि. [सं. चैतन्य] **चेतनायुक्त, सचेत**। उ.—जिन जड़ तैं चेतन कियौ, (रे) रचि गुनि-तत्व-विधान। चरन, चिकुर, कर, नख दए, (रे) नयन, नासिका, कान—१-३२५।

संज्ञा पुं. [सं.] (१) **आत्मा, जीव**। (२) **मनुष्य**। (३) **प्राणी, जीवधारी**। (४) **परमेश्वर**।

चेतनता—संज्ञा स्त्री. [सं.] **सज्ञानता**। उ.—सप्तम चेतनता लहै सोइ। अष्टम मास सँपूरन होइ—३-१३।

चेतनत्व—संज्ञा पुं. [हिं. चेतना+त्व] **चेतनता**।

चेतना—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **बुद्धि**। (२) **मनोवृत्ति**। (३) **स्मृति, याद**। (४) **संज्ञा, होश**।

क्रि. अ.—(१) **होश में आना**। (२) **सावधान होना**।

क्रि. स.—[सं. चिंतन] **सोचना-विचारना**।

चेतनावान—वि. [हिं. चेतना+वान् (प्रत्य.)] **सचेतन, चेतनायुक्त, सज्ञान।**

चेतनीय—वि. [सं.] **जो जानने योग्य हो।**

चेतवनि—संज्ञा स्त्री. [हिं. चेतावनी] **चेतावनी।**

संज्ञा स्त्री. [हिं. चितवन] **दृष्टि, कटाक्ष।**

चेता—संज्ञा पुं. [सं. चित्] (१) **संज्ञा, होश, बुद्धि।** (२) **स्मृति, याद।**

क्रि. अ. [हिं. चेतना] **होश में आया।**

चेताना—क्रि. स. [हिं. चिताना] **चेतावनी देना।**

चेतावनी—संज्ञा स्त्री. [हिं. चेतना] **सतर्क, सावधान या होशियार होने की सूचना।**

चेति—क्रि. अ. [सं. चेतना] **सचेत हो, होश में आ, सावधान हो।** उ.—क्यौं तू गोविंद नाम बिसारौ? अजहूँ चेति, भजन करि हरि कौ, काल फिरत सिर ऊपर भारौ—१-८०।

चेतिका—संज्ञा स्त्री. [सं. चिति] **मुरदे की चिता।**

चेतौनी—संज्ञा स्त्री. [हिं. चेतावनी] **चेतावनी।**

चेत्य—वि. [सं.] (१) **जानने योग्य** (२) **स्तुति-योग्य।**

चेत्यौ—क्रि. स. [हिं. चेतना] **चेता, सचेत या सावधान हुआ।** उ.—(क) चेत्यौ नाहिं गयौ टरि औसर, मीन बिना जल जैसैं—१-२६३। (ख) लोभ-मोह तैं चेत्यौ नाहीं, सुपनैं ज्यौं डहकातौ—१-३२६।

चेदि—संज्ञा पुं. [सं.] **एक प्राचीन देश जिसके अंतर्गत वर्तमान बुंदेलखंड का चंदेरी नगर है। शिशुपाल यहाँ का राजा था।**

चेदिराज—संज्ञा पुं. [सं.] **शिशुपाल जो श्रीकृष्ण द्वारा युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ में मारा गया था।**

चेप—संज्ञा पुं. [चिपचिप से अनु.] (१) **कोई चिपचिपा लस।** (२) **चिड़ियों के फँसाने का लासा।**

संज्ञा पुं.—**चाव, उमंग, उत्साह।**

चेपदार—वि. [हिं. चेप+फ़ा. दार] **चिपचिपा।**

चेपना—क्रि. स. [हिं. चेप] **चिपकाना, सटाना।**

चेय—वि. [सं.] **जो चयन करने योग्य हो।**

चेर, चेरा—संज्ञा पुं. [सं. चेटक, प्रा. चेड़अ, चेड़ा; हिं. चेला] (१) **दास, सेवक।** (२) **चेला, शिष्य।**

चेराई—संज्ञा स्त्री. [हिं. चेरा+ई] **सेवा, नौकरी।** उ.—ऐसे करि मोकों तुम पायौ मनौ इनकी मैं करौं चेराई। सूरस्याम वे दिन बिसराये जब बाँधे तुम ऊखल लाई।

चेरि, चेरी—संज्ञा स्त्री. [हिं. चेरा] **दासी।** उ.—सूरदास जसुदा मैं चेरी कहि कहि लेत बलैया—५१३।

मुहा.—बिन दामन की चेरी—**बे मोल की दासी, बहुत नम्र और आज्ञाकारिणी सेविका।** उ.—बहुरि न सूर पाइहैं हमसी बिन दामन की चेरी—२७१६।

चेरे, चेरो, चेरौ—संज्ञा पुं. [हिं. चेरा] **दास, सेवक।** उ.—(क) तुम प्रताप-बल बदत न काहूँ, निडर भए घर-चेरे—१-१७०। (ख) जच्छ, मृतु, बासुकी, नाग, मुनि, गंधर्ब, सकल बसु, जीति मैं किए चेरे—९-१२६। (ग) इहिं बिधि कहा घटैगौ तेरौ। नंदनँदन करि घरि कौ ठाकुर, आपुन ह्वै रहु चेरौ—१-२६६। (घ) जब मोहिं रिस लागति तब त्रासति, बाँधति, मारति जैसैं चेरौ—३६६।

चेल—संज्ञा पुं. [सं.] **वस्त्र, कपड़ा।**

चेलकाई, चेलहाई—संज्ञा स्त्री. [हिं. चेला] **शिष्य वर्ग।**

चेला—संज्ञा पुं. [सं. चेटक, प्रा. चेड़अ, चेड़ा] (१) **वह जिसने दीक्षा ली हो, शिष्य।** (२) **वह जिसने शिक्षा ली हो, छात्र।**

चेलिकाई—संज्ञा स्त्री. [हिं. चेला] **चेलों का समूह।**

चेलिन, चेली—संज्ञा स्त्री. [हि. चेला] **शिष्या, छात्रा।**

चेष्टक—संज्ञा पुं. [सं.] **चेष्टा करनेवाला।**

चेष्टा—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **उद्योग, यत्न, कोशिश।** (२) **काम।** (३) **परिश्रम।** (४) **इच्छा।**

चेहरई—संज्ञा स्त्री. [फ़ा. चेहरा] **चित्र या मूर्ति में चेहरे की रंगत या आकृति।**

चेहरा—संज्ञा पुं. [फ़ा.] **मुखड़ा, बदन।**

मुहा.—चेहरा उतरना—**लज्जा, निराशा आदि से चेहरा फीका हो जाना।** चेहरा तमतमाना—**गर्मी या क्रोध से चेहरा लाल होना।**

चैंटी—संज्ञा स्त्री. [हिं. चिउँटी] **चींटी।** उ.—सूरदास अबला हम भोरी गुर चैंटी ज्यौं पागी—३३३५।

चै—संज्ञा पुं. [सं. चय] **समूह, ढेर।**

चैत—संज्ञा पुं. [सं. चैत्र] **फागुन के बाद का महीना।**

चैतन्य—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **चेतन आत्मा।** (२) **ज्ञान।**

(३) परमात्मा। (४) प्रकृति। (५) चैतन्यदेव।

वि.—(१) सचेत। (२) होशियार।

चैती—संज्ञा स्त्री. [हिं. चैत+ई (प्रत्य.)] (१) रबी की फसल जो चैत में कटे। (२) एक गाना।

वि.—चैत संबंधी, चैत का।

चैत्त—वि. [सं.] चित्त संबंधी, चित्त का।

चैत्य—संज्ञा पुं. [सं.] (१) मकान, घर। (२) देवमंदिर। (३) यज्ञशाला। (४) गौतम बुद्ध या उनकी मूर्ति। (५) बौद्ध भिक्षुक या संन्यासी। (६) बौद्ध मठ या बिहार। (७) चिता। (८) पीपल का पेड़।

वि.—चिता संबंधी, चिता का।

चैत्र—संज्ञा पुं. [सं.] (१) चैत का महीना। (२) बौद्ध भिक्षुक। (३) यज्ञभूमि। (४) देवमंदिर।

वि.—चित्रा नक्षत्र संबंधी, चित्रा नक्षत्र का।

चैत्रसखा—संज्ञा पुं. [सं.] कामदेव, मदन।

चैत्री—संज्ञा स्त्री. [सं.] चैत की पूर्णिमा।

चैन—संज्ञा पुं. [सं. शयन] सुख, आनंद।

मुहा.—चैन से कटना—सुख से समय बीतना।

चैपला—संज्ञा पुं. [देश.] एक पक्षी।

चैयाँ—संज्ञा स्त्री.—बाँह। उ.—चैयाँ चैयाँ गहौ चैयाँ बैयाँ बैयाँ ऐसे बोल्यौ।

चैल—संज्ञा पुं. [सं.] कपड़ा, वस्त्र।

चैहौं—क्रि. स. [हिं. चाहना] चाहूँगा।

चोंके—संज्ञा स्त्री. [देश.] चुंबन का चिह्न।

चोंघना—क्रि. स. [हिं. चुगना] दाना चुगना।

चोंच—संज्ञा स्त्री. [सं. चंचु] (१) पक्षियों की चंचु या ठोंट। उ.—मनु सुक सुरंग बिलोकि बिंब-फल चाखन कारन चोंच चलाई—१६१६। (२) मुँह (व्यंग्य)।

मुहा.—दो दो चोंचें होना—कहा-सुनी होना।

चोंटना—क्रि. स. [हिं. चिकोटी या अनु.] नोचना।

चोंडा, चोड़ा—संज्ञा पुं. [सं. चूड़ा] (१) स्त्रियों का झोंटा। (२) सिर, माथा।

चोंथना—क्रि. स. [अनु.] नोचना, खसोटना।

चोंधर—वि. [हिं. चौंधियाना] (१) छोटी आँखवाला। (२) जिसे कम दिखायी दे। (३) मूर्ख।

चोआ—संज्ञा पुं. [हिं. चुआना] एक सुगंधित द्रव।

चोकर—संज्ञा पुं. [हिं. चून+कराई=छिलका] आटे का अंश जो छानने के बाद चलनी में बचता है।

चोका—संज्ञा पुं. [सं. चूषण] चूसने की क्रिया।

मुहा.—चोंका लगाना—मुँह लगाकर चूसना।

चोख—संज्ञा स्त्री. [हिं. चोखा] तेजी, फुरती।

चोखना—क्रि. स. [हिं. चूसना] चूसकर पीना।

चोखनि—संज्ञा स्त्री. [हि. चोखना] चोखने की क्रिया।

चोखा—वि. [सं. चोक्ष] (१) शुद्ध, बेमेल। (२) सच्चा, ईमानदार। (३) तेज धार का। (४) चतुर।

चोखाई—संज्ञा स्त्री. [हिं. चोखा+ई] चोखापन।

संज्ञा स्त्री. [हिं. चोखना=चूसना] चुसाई।

चोचला—संज्ञा पुं. [अनु.] (१) हावभाव। (२) नखरा।

चोज—संज्ञा पुं. (१) विनोदपूर्ण उक्ति, सुभाषित। (२) हास्य-व्यंग्यपूर्ण उपहास।

चोट—संज्ञा स्त्री. [सं. चुट=काटना (१) आघात, प्रहार, टक्कर, मार। (२) घाव, जख्म। उ.—दौरत कहा, चोट लगिहै कहुँ पुनि खेलिहौ सकारें—१०-२२६। (३) हथियार का वार या प्रहार। उ.—प्रेम-बान की चोट कठिन है लागी होइ कहो कत ऐसी—३३२६। (४) पशु का आक्रमण। उ.—गैयनि पै कहुँ चोट लगावहु—४०१। (५) दुख, शोक। (६) ताना, व्यंग्य, कटाक्ष। (७) दाँव-पेंच। (८) धोखा, दगा। (९) बार, दफा।

चोटइल—वि. [हिं. चुटैल] जिसे चोट लगी हो।

चोटत-पोटत—क्रि. स. [हिं. चोटना पोटना] फुसलाकर, मनाकर। उ.—तेल उबटनौ लै आगैं धरि, लालहिं चोटत-पोटत री—१०-१८६।

चोटना-पोटना—क्रि. स.—फुसलाना, मनाना।

चोटाना—क्रि. अ. [हिं. चोट] घायल होना।

चोटार—वि. [हिं. चोट+आर (प्रत्य.)] (१) चोट करने वाला। (२) चोट खाया हुआ।

चोटारना—क्रि. अ. [हिं. चोट] चोट करना।

चोटिया—संज्ञा स्त्री. [हिं. चोटी] बालों की लट।

चोटियाना—क्रि. स. [हिं. चोट] चोट लगाना।

क्रि. स. [हिं. चोटी] (१) चोटी पकड़ना। (२) बल का प्रयोग करना।

चोटी—संज्ञा स्त्री. [सं. चूड़ा] (१) **सिर की शिखा।**
मुहा.—चोटी हाथ में होना—**काबू में होना।**
(२) **स्त्रियों या बालकों के गुँधे हुए सिर के बाल।** उ.—करि मनुहार कलेऊ दीन्हौ मुख चुपरयौ अरु चोटी—१०-१६३।
मुहा.—करौं चोटी—**बाल गूँध दूँ, चोटी कर दूँ।** उ.—महरि कुँवरि सौं यहि कहि भावति, आउ करौं तेरी चोटी—१०-७०३।
(३) **ऊन, सूत या रेशम का डोरा जो बाल गूँधने के काम आता है।** (४) **जूड़े का एक गहना।** (५) **पक्षियों की कलँगी।** (६) **सबसे ऊपरी भाग।**
मुहा.—चोटी का—**सबसे अच्छा या बढ़िया।**

चाटी-पोटी—वि. स्त्री. [देश.] (१) **चिकनी-चुपड़ी या खुशामद से भरी (बात)।** (२) **झूँठी, बनावटी इधर-उधर की (बात)।** उ.—तुम जानति राधा है छोटी। चतुराई अँग अंग भरी है पूरन ज्ञान न बुधि की मोटी। हम सों सदा दुरावति सो यह बात कहत मुख चोटी-पोटी—१४७६।

चोट्टा—संज्ञा पुं. [हिं. चोर+टा (प्रत्य.)] **चोर।**

चोढ़—संज्ञा पुं.—**उत्साह, उमंग।**

चोप—संज्ञा पुं. [हिं. चाव] (१) **चाह, इच्छा।** (२) **शौक, रुचि।** (३) **उमंग, उत्साह।** (४) **उत्तेजना, बढ़ावा।**

चोपना—क्रि. अ. [हिं. चोप] **मुग्ध होना।**

चोपी—वि. [हिं. चोप] (१) **इच्छुक।** (२) **उत्साही।**

चोब—संज्ञा स्त्री. [फ़ा.] (१) **शामियाने का खंभा।** (२) **नगाड़ा बजाने की लकड़ी।** (३) **सोने-चाँदी से मढ़ा डंडा।** (४) **छड़ी, सोंटा।**

चोबदार—संज्ञा पुं. [फ़ा.] **नौकर जो सोने-चाँदी से मढ़ा हुआ डंडा लेकर चलता है।**

चोर—संज्ञा पुं. [सं.] **चोरी करनेवाला।** उ.—काम, क्रोध, मद, लोभ, मोह, ये भए चोर तैं साहू—१-४०।
मुहा.—चोर पर (के घर) मार पड़ना—**धूर्त के साथ धूर्तता होना।** मन में चोर बैठना—**मन में संदेह या खटका होना।** चोर सवनि चोरी करि जानी—**बुरा सबको बुरा ही समझता है।** उ.—चोर सवनि चोरी करि जानै ज्ञानी मन सब ज्ञानी—१२८७। बीस बिरियाँ चोर की तै कबहुँ मिलिहै साहु—**बुरा अपनी धूर्तता से दस-बीस बार भले ही सफलता पा ले, कभी तो चूककर साहु के फंदे में पड़ेगा ही।** उ.—कबहुँ तौ हम देखिहैं एक संग राधा कान्ह। भेद हमसों कियौ राधा नठुर भई निदान्ह। बीस बिरियाँ चोर की तौ कबहुँ मिलिहै साहु। सूर सब दिन चोर कौ कहुँ होत है निरबाहु—१२८०।
(२) **वह लड़का जिससे दूसरे खेल में दाँव लेते हैं।**
वि.—**जिसके सच्चे रूप का पता न लगे।**

चोरक—संज्ञा पुं. [सं.] **एक गंध-द्रव।**

चोरटा—संज्ञा पुं. [हिं. चोट्टा] **चोर।**

चोरटी—संज्ञा स्त्री. [हिं. चोरटा] **चोरी करनेवाली।** उ.—कैहै कहा चोरटी हमसौं बातैं बात उबरिहै—१२६४। प्र.—चोरटी भई—**छिपाकर, चोरी से।** सदा जाहु चोरटी भई, आजु परी फँग मोर—१०२२।

चोरत—क्रि. स. [हिं. चुराना] **चुराता है, चोरी करता हुआ।** उ.—(क) घर-घर डोलत माखन चोरत, षटरस मेरैं धाम—३७६। (ख) कछु दिन करि दधि-माखन-चोरी, अब चोरत मन मोर—७७६।
मुहा.—मन चोरत—**मोहित करता है।** उ.—सूरदास प्रभु बचन बनावत अब चोरत मनमोर—१६६५।

चोरथन—वि. [हिं. चोर+थन] **जो (पशु) थनों में दूध चुरा ले, पूरा न दुहने दे।**

चोरना—क्रि. स. [हिं. चुराना] **चुराना।**

चोराइ, चोराई—क्रि. स. [हिं. चुराना] **चुराकर, चोरी करके।** उ.—(क) माखन चोराइ बैठ्यौ, तौलौं गोपी आई—१०-२८४। (ख) प्रभु तबहीं जान्यौ यहै बिधि लै गयौ चोराइ—४३७। (ग) सोऊ तौ घर ही घर डोलतु माखन खात चोराई—१०-३२५।

चोराए—क्रि. स. [हिं. चुराना] **चोरी किये।**
मुहा.—चित्त चोराए—**मन हर लिये।** उ.—सूर नगर नर नारि के मन चित्त चोराए—२५१६।

चोराना—क्रि. स. [हिं. चुराना] **चोरी करना।**

चोरायो—क्रि. स. भूत. [हिं. चुराना] **चुराया, छिपा लिया।** उ.—चक्र काहु चोरायो, कैधौं भुजनि बल भयो थोर।

चोरावत—क्रि. स. [हिं. चुराना] **चुराते हैं।**

मुहा.—चितहिं चोरावत—**मन हरते या मोहते हैं।** उ.—सूर स्याम नागर नारिनि के चंचल चितहिं चोरावत—१३४३।

चोरि—क्रि. स. [हिं. चुराना] **चुराकर, चोरी करके।** उ.—नंद-सुत, सँग सखा लीन्हे, चोरि माखन खात—१०-२७३।

चोरिका, चोरी—संज्ञा स्त्री. [हिं. चोर] **चुराने की क्रिया।** उ.—चल सखि देखन जाहिं पिया अपने की चोरी—२४०८।

चोरीचोरा, चोरीचोरी—क्रि. वि. [हिं. चोरी] **चोरी से, लुक छिप कर, दूसरे की आँख बचाकर।**

चोरै—क्रि. स. [हिं. चुराना, चोराना] **चुराती हैं।** उ.—(क) अंजन रंजित नैन, चितवनि चित चोरै—१०-१५१। (ख) मेरौ माई कौन कौ दधि चोरै—१०-३२१।

चोरयौ—क्रि. स. [हिं. चुराना] **चुराया।** उ.—दूध दही काहे को चोरयौ काहे कौ बन गाइ चराए-३४३४।

चोल, चोलक—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **एक प्राचीन देश।** (२) **स्त्रियों की चोली का एक प्रकार।** (३) **ढीला-ढाला कुरता।** (४) **छाल, वल्कल।** (५) **कवच।**

चोलकी, चोलन—संज्ञा पुं. [सं. चोलकिन्] (१) **बाँस का कल्ला।** (२) **हाथ की कलाई।**

चोलना—संज्ञा पुं. [सं. चोल, हिं. चोला] **ढीला-ढाला कुरता।** उ.—अब मैं नाच्यौ बहुत गोपाल। काम-क्रोध कौ पहिरि चोलना, कंठ विषय की माल—१-१५३।

चोला—संज्ञा पुं. [सं. चोल] (१) **ढीला-ढाला कुरता।** (२) **बच्चे को पहली बार कपड़े पहनाने की रस्म।** (३) **शरीर, बदन।**

मुहा.—चोला छोड़ना—**प्राण त्यागना।**

चोली—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **स्त्रियों का एक पहनावा जो अँगिया से मिलता-जुलता होता है और जिसकी गाँठ पेट के ऊपर बँधती है।** (२) **ढीला-ढाला कुरता।** (३) **अँगरखे आदि का ऊपरी अंश जिसमें बंद रहते हैं।**

चोल्ला—संज्ञा पुं. [हिं. चोला] **ढीला कुरता।**

चोवा—संज्ञा पुं. [हिं. चौआ] **एक प्रकार का सुगंधित द्रव पदार्थ।** उ.—चोवा-चंदन-अबिर, गलिनि छिरकावन रे—१०-२८।

चोषण—संज्ञा पुं. [सं.] **चूसना, चूसने की क्रिया।**

चोषना—क्रि. स. [हिं. चोखना] **दूध पीना।**

चोष्य—वि. [सं.] **जो चूसने योग्य हो।**

चौंक—संज्ञा स्त्री. [सं. चमत्कृत, प्रा. चमंक्कि, चवँक्कि] **भय, आश्चर्य या पीड़ा-जन्य भड़क या झिझक।**

चौंकना—क्रि. अ. [हिं. चौंक+ना (प्रत्य.)] (१) **भड़कना, झिझकना।** (२) **चौकन्ना या सतर्क होना।** (३) **चकित या हैरान होना।** (४) **भय या आशंका से हिचकना।**

चौंकाना—क्रि. स. [हिं. चौंकना का प्रे.] (१) **भड़काना, झिझकाना।** (२) **चौकन्ना या सतर्क करना।** (३) **चकित या हैरान करना, आश्चर्य में डालना।**

चौंकि—क्रि. अ. [हिं. चौंकना] **(भय के सहसा उपस्थित होने से) चंचल होकर, काँप या झिझककर।** उ.—चौंकि परी तन की सुधि आई। आजु कहा ब्रज सोर मचायौ, तब जान्यौ दह गिरयौ कन्हाई—५४८।

चौंटना—क्रि. स. [हिं. चुटकी] **चुटकी से तोड़ना।**

चौंतरा—संज्ञा पुं. [हिं. चबूतरा] **चबूतरा।**

चौंतिस, चौंतीस—वि. [सं. चतुस्त्रिंशत्, प्रा. चतुत्तिंसो, या चउतीसो] **जो गिनती में तीस और चार हो।**

संज्ञा पुं.—**तीस और चार की संख्या।**

चौंध—संज्ञा स्त्री. [हिं. चौं=चारो ओर+अंध] **अधिक प्रकाश से दृष्टि की तिलमिलाहट।**

चौंधना—क्रि. अ. [हिं. चौंध] **चकाचौंध उत्पन्न करना।**

चौंधियाना—क्रि. अ. [हिं. चौंध] (१) **अधिक प्रकाश से चकाचौंध होना।** (२) **सुझाई न पड़ना।**

चौंधी—संज्ञा स्त्री. [हिं. चौंध] **तिलमिलाहट।**

चौंप—संज्ञा पुं. [हिं. चोप] **चाव, चोप।**

चौंर—संज्ञा पुं. [सं. चामर] (१) **सुरागाय की पूँछ के बालों का चँवर।** (२) **झालर, फुँदना।**

चौंरगाय—संज्ञा स्त्री. [हिं. चौर+गाय] **सुरागाय।**

चौंरा—संज्ञा पुं. [सं. चुंड] **अनाज रखने या संग्रह करने का गड्ढा, गाड़।**

चौंराना—क्रि. स. [सं. चामर] (१) **चँवर करना या डुलाना।** (२) **झाड़ू देना, बुहारना।**

चौंरी—संज्ञा स्त्री. [हिं. चौंर+ई (प्रत्य.)] (१) **घोड़े की पूँछ के बालों का चँवर।** (२) **चोटी या वेणी बाँधने की डोरी।** उ.—चौंरी डोरी विगलित केस। झूमत लटकत मुकुट सुदेस। (३) **सफेद पूँछवाली गाय।**

चौंसठ—वि. [सं. चतुष्षष्ठि, प्रा. चउसट्ठि] **जो गिनती में साठ और चार हो।**

संज्ञा पुं.—**साठ और चार की संख्या।**

चौ—वि. [सं. चतुः, प्रा. चउ] **चार (संख्या)।**

चौआ—संज्ञा पुं. [हिं. चौ+आर] (१) **चार अँगुलियों का समूह।** (२) **चार अंगुल की नाप।**

संज्ञा पुं.—**चौपाया।**

चौआई—संज्ञा स्त्री. [हिं. चौवाई] (१) **चारों तरफ से बहनेवाली हवा।** (२) **अफवाह।**

चौआना—क्रि. अ. [हिं. चौंकना] (१) **चकित होना, चकपकाना।** (२) **चौकन्ना होना, घबराना।**

चौक—संज्ञा पुं. [सं. चतुष्क, प्रा. चउक्क] (१) **चौकोर या चौखूँटी जमीन।** (२) **आँगन, सहन।** (३) **बड़ी वेदी।** (४) **मंगल अवसरों पर देव-पूजन के लिए आटे-अबीर आदि से खींचा गया चौखूँटा क्षेत्र जिसमें कई खाने होते हैं।** उ.—कदली खंभ, चौक मोतिन के बाँधे बंदनवार—सारा. २३६। (ख) मंगलचार भए घर घर में मोतिन चौक पुराए—सारा. ५३४। (ग) दधि अच्छत फल फूल परम रुचि अंगन चंदन चौक पुरावहु—१० उ.-२३। (५) **शहर का बड़ा बाजार।** (६) **चौराहा।** (७) **चौसर खेलने का कपड़ा, बिसात।** उ.—राखि सत्रह पुनि अठारह चोर पाँचो ~~मारि~~ डारि दे तू तीन काने चतुर चौक निहारि। (८) **सामने के चार दाँत।** (९) **चार का समूह।**

चौकड़ा—संज्ञा पुं. [हिं. चौ+कड़ा] **कान की बाली।**

चौकड़ी, चौकरी—संज्ञा स्त्री. [हिं. चौ=चार+सं. कला=अंग] (१) **हरिण की छलाँग।**

मुहा.—चौकड़ी भूल जाना—**भौचक्का होना।**

(२) **चार की मंडली।** (३) **एक गहना।** (४) **चार युगों का समूह।** (५) **पलथी।**

संज्ञा स्त्री. [हिं. चौ+घोड़ी] **चार घोड़ों की गाड़ी।**

चौकन्ना—वि. [हिं. चौ=चारो ओर+कान] (१) **सावधान, चौकस।** (२) **चौंका हुआ।**

चौकरी—संज्ञा स्त्री. [हिं. चौकड़ी] (१) **हरिण की छलाँग।** (२) **चार की मंडली।** (३) **चार युगों का समूह।**

चौकस—वि. [हिं. चौ=चार+कस] (१) **सावधान, सचेत, चौकन्ना।** (२) **ठीक, दुरुस्त।**

चौकसाई, चौकसी—संज्ञा स्त्री. [हिं. चौकस] **सावधानी, होशियारी, खबरदारी।**

चौका—संज्ञा पुं. [सं. चतुष्क, प्रा. चउक्क] (१) **पत्थर का चौकोर टुकड़ा।** (२) **चकला।** (३) **सामने के चार दाँतों की पंक्ति।** (४) **सीसफूल।** (५) **बराबर लंबाई-चौड़ाई की ईंट।** (६) **लिपा-पुता स्वच्छ स्थान।**

मुहा.—चौका लगाना—(१) **लीप-पोत कर बराबर करना।** (२) **सत्यानाश करना, चौपट करना।**

(७) **चार वस्तुओं का समूह।**

चौकी—संज्ञा स्त्री. [सं. चतुष्की] (१) **छोटा तखत।** (२) **कुरसी।** (३) **मंदिर के निचले खंभों के ऊपर का घेरा।** (४) **पड़ाव, टिकान, अड्डा।** (५) **वह स्थान जहाँ पुलिस रहती हो।** (६) **रखवाली, खबरदारी।** (७) **देवी-देवता की भेंट।** (८) **जादू, टोना।** (९) **गले का एक गहना।** उ.—और हार चौकी हमेल अब तेरे कंठ न नैहौं—१५५०।

चौकोन, चौकोना—वि. [सं. चतुष्कोण, प्रा. चउक्कोण, चउक्कोड़] **जिसके चार कोने हों, चौखूँटा।**

चौकोर—वि. [सं. चतुष्कोण] **जिसके चारो कोने बराबर हों, चार कोने का।**

चौकैं—संज्ञा पुं. सवि. [हिं. चौक] **मंगलकार्यों में देव-पूजन के उद्देश्य से छोटे-छोटे खानेदार चौकोर क्षेत्र को जो आटे या अबीर से बनते हैं।** उ.—चंदन आँगन लिपाइ, मुतियनि चौकैं पुराइ, उमँगि अंगनि आँनद सौं, तूर बजायौ—१०-९५।

चौखंडा—वि. [हिं. चार+खंड] **चौमंजिला।**

चौखट—संज्ञा स्त्री. [हिं. चार+काठ] (१) **दरवाजे की चार लकड़ियों का ढाँचा।** (२) **देहली, दहलीज।**

चौखटा—संज्ञा पुं. [हिं. चौखट] **चार लकड़ियों का ढाँचा।**

चौखना—वि. [हिं. चौखंडा] **चार खंड का।**

चौखानि—संज्ञा स्त्री. [हिं. चौ=चार+खानि=जाति, प्रकार] **अंडज, पिंडज, स्वेदज, उद्‌भिज आदि चार प्रकार के जीव।** उ.—जाके उदर लोकत्रय, जल-थल, पंच तत्व चौखानि। सो बालक ह्वै झूलत पलना, जसुमत भवनहिं आनि—४८७।

चौखूँट—संज्ञा पुं. [हिं. चौ+खूट] (१) **चारों दिशा।** (२) **भूमंडल।** क्रि. वि.—**चारो ओर।**

चौखूँटा—वि. [हिं. चौखूँट] **चौकोना।**

चौगड़ा—संज्ञा पुं. [हिं. चौ+गोड़] **खरगोश।**

चौगान—संज्ञा पुं. [फ़ा.] (१) **एक खेल जिसमें (हाकी या पोलो की तरह) लकड़ी के बल्ले से गेंद मारते हैं। यह खेल घोड़े पर चढ़कर भी खेला जाता है।** उ.—श्रीमोहन खेलत चौगान। द्वारावती कोट कंचन मैं रच्यौ रुचिर मैदान। यादव वीर बराइ बटाई इक हलधर इक आपै ओर। निकसे सबै कुँवर असवारी उच्चैश्रवा के पोर। लीले सुरँग, कुमैत स्याम तेहि पर दै सब मन रंग। (ख) मनमोहन खेलत चौगान—१० उ. ६। (२) **चौगान नामक खेल खेलने की लकड़ी जो आगे की ओर टेढ़ी या झुकी हुई होती है।** उ.—(क) बार-बार हरि मातहिं बूझत, कहि चौगान कहाँ है। दधि-मथनी के पाछैं देखौ, लै मैं धरयौ तहाँ है—१०-२४३। (ख) लै चौगान बटा करि आगे प्रभु आए जब बाहर। सूर स्याम पूछत सब ग्वालन खेलैंगे केहि ठाहर। (३) **चौगान खेलने का मैदान।** (४) **नगाड़ा बजाने की लकड़ी।**

चौगिर्द—क्रि. वि. [हिं. चौ+फ़ा. गिर्द] **चारो ओर।**

चौगुन, चौगुना, चौगुने, चौगुनौ, चौगून—वि. [सं. चतुर्गुण, प्रा. चउग्गुण, हिं. चौगुना] (१) **चतुर्गुण, चार बार उतना ही।** उ.—गोपालहिं माखन खान दै।...याकौ जाइ चौगुनौ लैहौं, मोहिं जसुमति लौं जान दै—१०-२७४। (२) **बहुत अधिक।** उ.—(क) यह मारग चौगुनौ चलाऊँ, तौ पूरौ ब्यौपारी—१-१४६।

मुहा.—मन चौगुना होना—**उत्साह बढ़ना।**

चौघड़—संज्ञा पु. [हिं. चौ=चार+दाढ़] **चबानेवाले चिपटे या चौड़े दाँत, चौभर।**

चौघड़ा, चौघरा—संज्ञा पुं. [हिं. चौ=चार+घर] (१) **चारखानेदार डिब्बा या बरतन।** (२) **चार घरों का समूह।** (३) **दीपट जिसके दीपक में चार बत्तियाँ जलती हैं।** (४) **एक बाजा।**

चौघर—वि. [देश.] **घोड़े की सरपट चाल।**

चौघोड़ी—संज्ञा स्त्री. [हिं. चौ=चार+घोड़ा] **चार घोड़ों की गाड़ी या रथ।**

चौचंद—संज्ञा पुं. [हिं. चौथ या चवाव+चंद] **बदनामी, निंदा, कलंक।**

चौचंदहाई—वि. स्त्री. [हिं. चौचंद+हाई (प्रत्य.)] **निंदा या बदनामी फैलानेवाली।**

चौड़ा—वि. [सं. चिपिट=चिपटा] **लंबा का उलटा।**

चौड़ाई—संज्ञा स्त्री. [हिं. चौड़ा+ई (प्रत्य.)] **लंबाई के दोनों किनारों के बीच का फैलाव।**

चौड़ान—संज्ञा स्त्री. [हिं. चौड़ा] **चौड़ाई।**

चौड़ाना—क्रि. स. [हिं. चौड़ा] **चौड़ा करना।**

चौडोल—संज्ञा पु. [हिं. चौ+डोल (?)] **एक बाजा।**

चौतनियाँ—संज्ञा स्त्री. [हिं. चौ (=चार)+तनी (=बंद) =चौतानी] (१) **चार बंदवाली बच्चों की टोपी।** उ.—(क) भाल-तिलक मसि बिंदु बिराजत, सोभित सीस लाल चौतनियाँ—१०-१०६। (ख) करत सिंगार चार भैया मिलि सोभा बरनि न जाई। चित्र विचित्र सुभग चौतनियाँ इंद्र-धनुष छबि छाई—सारा. १७२। (२) **अँगिया, चोली, चौबंदी।**

वि.—**चार बंदवाली।** उ.—स्याम बरन पर पीत झँगुलिया, सीस कुलहिया चौतनियाँ—१०-१३२।

चौतनी—संज्ञा स्त्री. [हिं. चौ=चार+तनी=बंद] **चार बंदवाली बच्चों की टोपी।** उ.—(क) तन झँगुली सिर लाल चौतनी, चूरा दुहुँ कर-पाइ—~~१०-१~~। (ख) सिर चौतनी डिठौना दीन्हौ, आँखि आँजि पहिराइ निचोल—१०-६४।

चौतार—संज्ञा पुं. [हिं. चौ+तार] **चार तार का बाजा।**

वि.—**जिसमें चार तार लगे हों।**

चौताल—संज्ञा पुं. [हिं. चौ+ताल] (१) **मृदंग का एक ताल।** (२) **होली का एक गीत।**

चौथ—संज्ञा स्त्री. [सं. चतुर्थी, प्रा. चउत्थि, हिं. चउथि] (१) **हर पक्ष की चौथी तिथि, चतुर्थी।** (२) **चतुर्थांश,**

चौथाई भाग। (३) एक कर जिसमें आय का चौथाई भाग ले लिया जाय।

वि.—चौथा। उ.—(क) चंपक लता चौथ दिन जान्यौ मृगमद सीर लगायौ। (ख) तीजै मास हस्त पग होंहिं। चौथ मास कर-आँगुरि सोहि—३-१३।

चौथपन, चौथापन—संज्ञा पुं. [हिं. चौथा+पन] बुढ़ापा।

चौथा—वि. [सं. चतुर्थ, प्रा. चउत्थ] तीसरे के बाद का।

संज्ञा पुं.—मृत्यु के चौथे दिन की एक रीति।

चौथाई—संज्ञा स्त्री. [हिं. चौथा+ई (प्रत्य.)] चौथा भाग।

चौथी—संज्ञा स्त्री. [हिं. चौथा] (१) विवाह के चौथे दिन होनेवाली एक रीति। (२) फसल की बाँट जिसमें जमींदार उपज का चौथा भाग ले लेता है।

चौदंता—वि. [सं. चतुर्दंत] (१) चार दाँतवाला (पशु), उभड़ती जवानी का। (२) अल्हड़, उद्दंड।

चौदंती—संज्ञा स्त्री. [हिं. चौदंत] उद्दंडता।

वि.—चार दाँतवाली (मादा पशु)।

चौदश, चौदस—संज्ञा स्त्री. [सं. चतुर्दशी, प्रा. चउद्दसि] किसी पक्ष की चौदहवीं तिथि, चतुर्दशी। उ.—फागुन बदि चौदस को सुभ दिन अरु रविवार सुहायौ। नखत उत्तरा आय विचारयौ काल कंस कौ आयौ।

चौदह—वि. [सं. चतुर्दश, प्रा. चउद्दस, अप. प्रा. चउद्दह] जो दस से चार अधिक हो।

संज्ञा पुं.—दस और चार की संख्या।

चौदाँत—संज्ञा पुं. [हिं. चौ=चार+दाँत] दो हाथियों की मुठभेड़।

चौदानिया, चौदानी—संज्ञा स्त्री. [हिं. चौ=चार+दाना +ई (प्रत्य.)] कान की बाली जिसमें चार मोती हों।

~~चौधराई~~, चौधरात, चौधराहट—संज्ञा स्त्री. [हिं. चौधरी] (१) चौधरी का काम। (२) चौधरी का पद। (३ चौधरी को मिलनेवाला धन।

चौधराना—संज्ञा पुं. [हिं. चौधरी] चौधरी का पद या पुरस्कार।

चौधरी—संज्ञा पुं. [सं. चतुर=मसनद+धर=धरनेवाला] किसी जाति, समाज आदि का मुखिया।

चौधारी—संज्ञा स्त्री. [हिं. चौ+धारा] चारखाना।

चौप—संज्ञा स्त्री [हिं. चोप] उमंग।

चौपई—संज्ञा स्त्री. [सं. चतुष्पदी] एक छंद।

चौपट—वि. [हिं. चौ+पट=किवाड़ा या हिं. चापट] चारो तरफ से खुला हुआ, अरक्षित।

वि.—नष्ट-भ्रष्ट, तबाह, बरबाद।

यौ.—चौपट चरण—जिस (व्यक्ति) के पहुँचते ही सब कुछ नष्ट-भ्रष्ट हो जाय।

चौपटहा, चौपटा—वि. [हिं. चौपट] काम बिगाड़ने वाला, सत्यानाशी। उ.—चंचल चपल, चबाइ, चौपटा, लिये मोह की फाँसी—१-१८६।

चौपड़—संज्ञा स्त्री. [सं. चतुष्पद, प्रा. चउप्पट] (१) चौसर का खेल। (२) चौसर की बिसात और गोटियाँ।

चौपत—संज्ञा स्त्री. [हिं. चौ=चार+परत] कपड़े की चार परत या तह।

चौपतना—क्रि. स. [हिं. चौपत] तह लगाना।

चौपथ—संज्ञा पुं. [सं. चतुष्पथ] चौराहा।

चौपद—संज्ञा पुं. [सं. चतुष्पद्] चौपाया।

चौपर, चौपारि—संज्ञा स्त्री. [हिं. चौपड़] चौसर नामक खेल जो बिसात और गोटियों से खेला जाता है। उ.—सभा रची चौपर क्रीड़ा करि कपट कियो अति भारी—सारा. ७६२।

चौपरना, चौपरतना—क्रि. स. [हिं. चौपत] तह लगाना, कपड़े की परत लगाना।

चौपहरा—वि. [हिं. चौ+पहर] चार पहर का।

चौपहल, चौपहला, चौपहलू—वि. [हिं. चौ+फ़ा. पहलू] जिसमें चार पहल हों, वर्गात्मक।

चौपाई—संज्ञा स्त्री. [सं. चतुष्पदी] एक छंद।

चौपाया—संज्ञा पुं. [सं. चतुष्पद, प्रा. चउप्पाव] चार पैर वाला पशु।

चौपार, चौपाल—संज्ञा पुं. [हिं. चौबार] (१) खुली हुई बैठक, बैठक। (२) दालान, (३) खुली पालकी।

चौपैया—संज्ञा पुं. [सं. चतुष्पदी] एक छंद।

चौफेर—क्रि. वि. [हिं. चौ+फेर] चारो ओर।

चौफेरी—संज्ञा स्त्री [हिं. चौ+फेरी] परिक्रमा।

चौबंदी—संज्ञा स्त्री. [हिं. चौ+बंद] चुस्त अंगा।

चौबाई—संज्ञा स्त्री. [हिं. चौ+बाई=हवा] (१) चारो

ओर से आनेवाली हवा। (२) उड़ती खबर। (३) धूमधाम की चर्चा।

चौबार, चौबारा—संज्ञा पुं. [हिं. चौ+बार=द्वार] (१) **खुली बैठक, बैठक। (२) दालान।**

क्रि. वि. [हिं. चौ+बार=दफा] **चौथी बार।**

चौबिस, चौबीस—वि. [सं. चतुर्विंशति, प्रा. चउवीसा] **बीस से चार अधिक।**

संज्ञा पुं—**बीस और चार की संख्या।**

चौबे—संज्ञा पुं. [सं. चतुर्वेदी, प्रा. चउव्वेदी, हिं. चउबे] **ब्राह्मणों की एक जाति।**

चौबोला—संज्ञा पुं [हिं. चौ+बोल] **एक छंद।**

चौभड़, चौभर—संज्ञा पुं.—**चबाने के दाँत।**

चौमंजिला—वि. [हिं. चौ+फ़ा. मंज़िल] **चौखंडा।**

चौमसिया—वि. [हिं. चौ+मास] **चार मास का।**

चौमार्ग—संज्ञा पुं. [सं. चतुर्मार्ग] **चौरस्ता।**

चौमास, चौमासा—संज्ञा पुं. [सं. चतुर्मास] (१) **वर्षा के चार महीने। (२) वर्षा-संबंधी कविता।**

चौमुख—क्रि. वि. [हिं. चौ+मुख] **चारो ओर।**

चौमुखा—वि. [हिं. चौमुख] **चार मुँहवाला।**

चौमुहानी—संज्ञा स्त्री. [हिं. चौ+फ़ा. मुहानी] **चौराहा।**

चौरंग—संज्ञा पुं. [हिं. चौ+रंग] **खड्ग-प्रहार की एक रीति, तलवार का एक हाथ।**

वि.—**तलवार के वार से खंड खंड।**

चौरंगा—वि. [हिं. चौ+रंग] **चार रंग का।**

चौर—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **चोर। (२) एक गंधद्रव।**
उ.—चंदन चौर सुगंध बतावत कहाँ हमारे पास—११३०।

चौरस—वि. [हिं. चौ+रस] (१) **जो ऊँचा-नीचा न हो, समथल। (२) चौपहल।**

चौरसाना—क्रि. स. [हिं. चौरस] **चौरस करना।**

चौरा—संज्ञा पुं. [सं. चतुर, प्रा. चउर] (१) **चौतरा, चबूतरा, बेदी। (२) देवी-देवता की बेदी। (३) चौपाल, चौबारा। (४) लोबिया नामक साग।**

चौराई—संज्ञा स्त्री. [हिं. चौ+राई] **चौलाई नामक साग।**
उ.—(क) चौराई लाल्हा अरु पोई—३९६। (ख) साग चना सँग सब चौराई—२३२१।

चौरानबे—वि. [सं. चतुर्नवति, प्रा. चउएणवइ] **नब्बे से चार अधिक।** संज्ञा पुं.—**नब्बे और चार की संख्या।**

चौरासी—वि. [सं. चतुरशीति, प्रा. चउरासीइ] **जो अस्सी से चार अधिक हो।**

संज्ञा पुं.—(१) **अस्सी और चार की संख्या। (२) चौरासी लाख योनि।**

मुहा.—चौरासी में पड़ना (भरमना)—**बार-बार शरीर धारण करना।**

(३) **एक तरह का पैर का घुँघरू।**

चौराहा—संज्ञा पुं. [हिं. चौ+राह] **चौरास्ता।**

चौरी—संज्ञा स्त्री. [हिं. चौरा] **छोटा चबूतरा, बेदी।**
उ.—रची चौरी आपु ब्रह्मा जरित खंभ लगाइ कै—१० उ. २४।

संज्ञा स्त्री. [सं.] **चोरी।**

चौरेठा—संज्ञा पुं. [हिं. चावल+पीठा] **पिसा चावल।**

चौर्य—संज्ञा पुं. [सं.] **चोर।**

चौलड़ा—वि. [हिं. चौ+लड़] **चार लड़वाला।**

चौलाई—संज्ञा स्त्री. [हिं. चौ+राई=दाने] **एक साग।**
उ.—चौलाई लाल्हा अरु पोई—३९६।

चौवन—संज्ञा पुं. [सं. चतुः पंचाशत, पा. चतुपंचासो, प्रा. चउवएण] **पचास और चार की संख्या।**

चौवा—संज्ञा पुं. [हिं. चौ=चार] **हाथ की चार उँगलियों का समूह या विस्तार।**

संज्ञा पुं. [सं. चतुष्पाद] **चौपाया।**

चौवालीस—संज्ञा पुं. [सं. चतुश्चत्वारिंशत, पा. चतुचत्तालीसति, प्रा. चउव्वालीसइ] **चालीस और चार की संख्या।**

चौसई—संज्ञा स्त्री.—**गंजी, बंडी।**

चौसर—संज्ञा पुं. [हिं. चौ=चार + सर=बाजी अथवा चतुस्सारि] **एक खेल जो गोटों और पासों से खेला जाता है।**

संज्ञा पुं. [सं. चतुरसृक] **चार लड़ों का हार, चौलड़ी।** उ.—चौसर हार अमोल गरे को देहु न मेरी माई—१५४४।

चौसिंघा, चौसिंहा—वि. [सिं. चौ+सींग] **चार सींग वाला (पशु या चौपाया)।**

चौहट, चौहटे, चौहट्ट, चौहट्टा—संज्ञा पुं. [हिं. चौ=चार+हाट] (१) वह स्थान जिसके चारो ओर दूकानें हों, चौक। (२) चौरस्ता, चौराहा। उ.—(क) ज्यौं कपि डोरि बाँधि बाजीगर, कन कन कौं चौहटै नचायौ—१-३२६। (ख) या गोकुल के चौहटे रंग भीगी ग्वालिन—२४०५।

चौहत्तर—संज्ञा पुं. [सं. [illegible] प्रा. चौहत्तरि] सत्तर से चार अधिक की संख्या।

चौहद्दी—संज्ञा स्त्री. [हिं. चौ+फ़ा. हद] चारो ओर की सीमा, चारदीवारी।

चौहरा—वि. [हिं. चौ=चार+हर (प्रत्य.)] (१) चार परतवाला। (२) चौगुना।

चौहान—संज्ञा पुं. [हिं. चौ=चार+भुजा] क्षत्रियों की एक शाखा।

चौहैं—क्रि. वि. [देश.] चारो ओर।

च्यवन—संज्ञा पुं. [सं.] एक ऋषि जिनके पिता का नाम भृगु और माता का पुलोमा था। इन्होंने इतने समय तक तप किया कि इनका सारा शरीर दीमक की मिट्टी से ढक गया, केवल आँखें खुली रहीं। राजा शर्याति की पुत्री सुकन्या ने खेल समझ कर इनकी चमकती हुई आँखों में काँटा चुभो दिया जिससे उनकी ज्योति जाती रही। पश्चात्, राजा ने क्षमा माँग कर अपनी पुत्री का विवाह वृद्ध ऋषि से कर दिया। सुकन्या के पातिव्रत से प्रसन्न होकर अश्विनीकुमारों ने वृद्ध ऋषि को युवक बना दिया।

च्युत—वि. [सं.] (१) टपका या गिरा हुआ। (२) पतित। (३) भ्रष्ट। (४) अपने स्थान से हटा हुआ। (५) कर्त्तव्य-विमुख।

च्युति—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) पतन। (२) उपयुक्त स्थान से हटना। (३) कर्त्तव्य-विमुखता। (४) अभाव।

च्यूड़ा—संज्ञा पुं. [हिं. चिउड़ा] चूड़ा।

च्यूत—संज्ञा पुं. [सं.] आम का पेड़ या फल।

च्योनो—संज्ञा पुं.—धातु गलाने की घरिया।

च्वै—क्रि. अ. [सं. च्यवन, हिं. चूना] (१) बहना। मु.—च्वै चले—बहने लगे, टपकने लगे। उ.—सुनत तिहारी बातैं मोहन च्वै चले दोऊ नैन—७४६। (२) गर्भपात होना।

छ

छ—चवर्ग का दूसरा व्यंजन; इसका उच्चारण-स्थान तालु है।

छंग—संज्ञा पुं. [सं. उत्संग, प्रा. उच्छंग] गोद, अंक।

छंगा, छंगू—वि. [हिं. छः+ उँगली] छः उँगलियोंवाला।

छँगुनिया, छँगुनी, छँगुलिया, छँगुली—संज्ञा स्त्री. [हिं छगुनी] हाथ की सबसे छोटी उँगली।

छंछाल—संज्ञा पुं. [डिं.] हाथी।

छंछोरी—संज्ञा स्त्री. [हिं. छाँछ+बरी] एक पकवान।

छँटना—क्रि. अ. [सं. चटन=तोड़ना, छेदना] (१) कट कर अलग होना। (२) दूर होना, निकल जाना। (३) तितर-बितर होना। (४) साथ छूट जाना। (५) चुना जाना। मुहा.—छँटा हुआ—चुना हुआ, बहुत चालाक। (६) साफ हो जाना। (७) दुबला हो जाना।

छँटनी—संज्ञा स्त्री. [हिं. छाँटना+ई (प्रत्य.)] (१) छाँटने की क्रिया या भाव, छँटाई। (२) (कर्मचारी को) काम से हटाने की क्रिया या भाव।

छँटवाना—क्रि. स. [हिं. छाँटना] (१) वस्तु आदि का कोई भाग कटवा देना। (२) चुनवाना। (३) छिलवाना।

छँटाई—संज्ञा स्त्री. [हिं. छाँटना] (१) छाँटने की क्रिया। (२) चुनने की क्रिया। (३) साफ करने की क्रिया। (४) इन क्रियाओं की मजदूरी।

छँटाना—क्रि. स. [हिं. छाँटना] छँटवाना।

छँटाव—संज्ञा पुं. [हिं. छाँटना] (१) छँटा-छँटाया शेष बेकार अंश। (२) छाँटने का भाव।

छँटैल—वि. [हिं. छँटना] (१) चुना हुआ। (२) धूर्त।

छंडना—क्रि. स. [हिं. छोड़ना] (१) छोड़ना, त्यागना। (२) ओखली में डालकर अन्न कूटना। (३) छाँटना।

क्रि. अ. [सं. छर्दन] कै या वमन करना।

छँड़ाना—क्रि. स. [हिं. छुड़ाना] छुड़ा लेना।

छँड़ावत—क्रि. स. [हिं. छँड़ाना] छुड़ाते हैं, छीन लेते हैं। उ.—ग्वालन कर तैं कौर छँड़ावत मुख लै मेलि सराहत जात—१०८४।

छँड़ावै—क्रि. स. [हिं. छँड़ाना] छुड़ा ले, मुक्त करावे। उ.—तब कत पानि धरो गोवर्द्धन कत ब्रजपतिहिं छँड़ावै—३०६८।

छँड़ैहै—क्रि. स. [हिं. छँड़ाना] छुड़ावेगा, मुक्ति दिलायेगा। उ.—सूर मोहिं अटक्यौ है नृपवर तुम बिनु कौन छँड़ैहै—११५४।

छँडुआ—वि. [हिं. छाँड़ना] जो दंड से मुक्त हो।

संज्ञा पुं.—(१) वह पशु जो किसी देवता के लिए छोड़ा गया हो। (२) ब्याज, ऋण आदि की छूट।

छंद—संज्ञा पुं. [सं. छंदस्] (१) वेद-वाक्यों का अक्षर-गणना के अनुसार किया गया एक भेद। (२) वेद। (३) वह वाक्य जिसमें वर्ण या मात्रा के अनुसार विराम लगे। (४) वह विद्या जिसमें छंदों के लक्षणों आदि का विचार हो। (५) इच्छा, अभिलाषा। (६) मनमाना व्यवहार। (७) बंधन, गाँठ। (८) समूह। (९) छल-कपट का व्यवहार। उ.—(क) घाट धरयौ तुम इहै जानि कै करत ठगन के छंद—११२१। (ख) वाके छंद-भेद को जानै मीन कबहिं धौं पीवति पानी—१२८४। (ग) छंद कपट कछु जानति नाहीं सूधी हैं ब्रज की सब बाल—१३१५।

मुहा.—छल-छंद-चालबाजी, धोखेबाजी।

(१०) चाल, युक्ति। (११) रंग-ढंग, चेष्टा। (१२) अभिप्राय। (१३) एकांत स्थान। (१४) विष। (१५) आवरण, ढक्कन। (१६) पत्ती।

संज्ञा पुं. [सं. छंदक] कलाई का एक गहना।

छंदक—वि. [सं.] (१) रक्षक। (२) छली।

संज्ञा पुं.—(१) श्रीकृष्ण का एक नाम। (२) बुद्धदेव के सारथी का नाम। (३) छल।

छंदज—संज्ञा पुं. [सं.] वसु आदि वैदिक देवता जिनकी स्तुति वेदों में है।

छंदन—संज्ञा पु. सवि. [हिं. छंद] छंदों में। उ.—सूरदास प्रभु सुजस बखानत नेति नेति स्तुति छंदन—४७६।

छंदना—क्रि. अ. [सं. छंद] रस्सी से बाँधा जाना।

छंदपातन—संज्ञा पुं. [सं.] बनावटी छली साधु।

छंदबंद—संज्ञा पुं. [हिं. छंद+बंद] छल-छपट।

छंदी, छंदेली—संज्ञा स्त्री. [हिं. छंद] कलाई का एक गहना।

वि.—छली, कपटी, धोखेबाज।

छंदोबद्ध—वि. [सं.] जो पद्य-रूप में हो।

छंदोभंग—संज्ञा पुं. [सं.] छंद-रचना में मात्रा-वर्ण आदि के नियम पालन न करने का दोष।

छ—संज्ञा पुं [सं.] (१) काटना। (२) ढाँकना। (३) घर। (४) खंड, टुकड़ा।

वि.—(१) निर्मल, साफ। (२) चंचल, तरल।

संज्ञा पुं. [सं. षट् ,प्रा. छ] वह संख्या, या अंक जो पाँच से एक अधिक हो।

छई—संज्ञा स्त्री. [सं. क्षयी] क्षय रोग।

वि.—नष्ट होनेवाला।

क्रि. अ. [हिं. छाना] छा गयी, फैल गयी। उ.—मेरे नैना बिरह की बेलि बई।····अब कैसैं निरवारौं सजनी सब तन पसरि छई—२७७३।

छए—क्रि. अ. [हिं. छाना] विराज रहे हैं, बस गये हैं। उ.—सूरस्याम सुंदर रस अटके उहँई छाए री—सा. उ. ७ और पृ. ३३३।

छक—संज्ञा स्त्री. [हिं. छकना] नशा, तृप्ति, लालसा।

छकइयै—क्रि. स. [हिं. छकना, छकाना] खिला-पिला करै तृप्त कीजिए, भोजन से संतुष्ट कीजिए। उ.—हम तौ प्रेम-प्रीति के गाहक, भाजी-साक छकइयै—१-२३६।

छकड़ा—संज्ञा पुं. [सं. शकट, प्रा. सगड़ो, छंगडो] दुपहिया बैलगाड़ी, लढ़ी, लढ़िया, सग्गड़।

वि.—जिसके अंजर-पंजर ढीले हो गये हों।

छकड़िया—संज्ञा स्त्री. [हिं. छः + कड़ी] छः कहारों द्वारा उठायी जानेवाली पालकी।

छःकड़ी, छकरी—संज्ञा स्त्री. [हिं. छः+कड़ा] (१) छः का समूह। (२) छः कहारों की पालकी। (३) छः बाँधों से चारपायी बिनने का ढंग।

वि.—जिसके छः अंग हों, छः से बना हुआ।

छकना—क्रि.अ. [सं. चकन=तृप्त होना] (१) खाकर अघाना या तृप्त होना। (२) नशे से चूर होना।

क्रि. अ. [सं. चक्रभ्रांत] (१) अचंभे में आना। (२) हैरान या दिक होना।

छकाछक—वि. [हिं. छकना] (१) तृप्त, अघाया हुआ, संतुष्ट। (२) भरा हुआ, परिपूर्ण। (३) नशे से चूर।

छकाना—क्रि. स. [हिं. चकना] (१) खिला-पिलाकर तृप्त करना। (२) नशे से चूर करना।

क्रि. स. [सं. चक्र=भ्रांत] (१) चक्कर या अचंभे में डालना। (२) दिक या हैरान करना।

छकि—क्रि. अ. [हिं. छकना] (१) तृप्त होकर। (२) मद से मस्त होकर। (३) हैरान होकर।

छकी—क्रि. अ. [हिं. छकना] छक गयी। उ.—सुनहु सूर रस छकी राधिका बातन बैर बढ़ैहै—१२६३।

छकीला—वि. [हिं. छकना] छका हुआ, मस्त।

छक्का—संज्ञा पुं. [सं. षंक, प्रा. छक्को] (१) छः अंगों से बनी वस्तु। (२) जुए का एक दाँव।

मुहा.—छक्का-पंजा—दाँव-पेच, चालबाजी। छक्का-पंजा भूलना—कोई उपाय या चाल न चलना।

(३) जुआ। (४) ताश जिसमें छः बूटियाँ हों। (५) होश-हवास।

मुहा.—छक्के छूटना—(१) बुद्धि का काम न करना। (२) हिम्मत हारना। (१) हैरान करना। (२) साहस छुड़ाना।

छग, छगड़ा—संज्ञा स्त्री. [सं. छागल] बकरा।

छगण—संज्ञा पुं. [सं.] सूखा गोबर, कंडा।

छगन, छगना—संज्ञा पुं. [सं. चंगट] छोटा प्रिय बालक।

वि.—बच्चों के लिए प्यार का एक शब्द।

यौ.—छगन-मगन, छगना मगना—छोटे-छोटे प्यारे बच्चे। उ.—(क) गिरि गिरि परत घुटुरुवनि टेकत खेलत हैं दोउ छगन-मगन (छगना मगना)। (ख) कहा काज मेरे छगन मगन को नृप मधुपुरी बुलायौ—२६७३।

छगरी—संज्ञा स्त्री. [सं. छाल, हिं. पुं. छगड़ा] बकरी।

छगुनी—संज्ञा स्त्री. [हिं. छोटी+उँगली] हाथ की सबसे छोटी उँगली, कनीनिका, कानी उँगली।

छछिआ, छछिया—संज्ञा स्त्री. [हिं. छाँछ] (१) छाँछ पीने या नापने का पात्र। (२) छाँछ, मट्ठा, तक्र।

छछुंदर, छछूँदर छछूँदरि—संज्ञा पुं. [सं. छछुंदरी] (१) चूहे की जाति का एक जंतु जिसके संबंध में प्रसिद्ध है कि यदि साँप इसे पकड़ कर छोड़ दे तो अंधा हो जाय और खा ले तो मर जाय। उ.—भई रीति हठि उरग छछूँदरि छाँड़ै बनै न खात—३१५७। (२) एक प्रकार का यंत्र या तावीज। (३) एक आतिशबाजी।

मुहा.—छछूँदर छोड़ना—झगड़ा कराना।

छछेरू—संज्ञा पुं. [हिं. छाछ] घी का फेन या मैल।

छजना—क्रि. अ. [सं. सज्जन, हिं. सजना] (१) शोभा देना, अच्छा लगना, सोहना। (२) ठीक या उचित होना।

छजाना—क्रि. स. [हिं. छजना] बनाना, छाना।

छज्जन, छज्जा—संज्ञा पुं. [हिं. छाजना या छाना] (१) छाजन या छत और कोठे या पाटन का भाग जो दीवार के बाहर निकला रहता है। उ.—छज्जन तें छूटति पिचकारी। भीगि गई सब महल अटारी। (२) टोपी का निकला हुआ किनारा।

छज्जे—संज्ञा पुं. बहु. [हिं. छज्जा] कोठे या छत के दीवार से बाहर या ऊपर निकले हुए भाग। उ.—छज्जे महलन देखि कै मन हरष बढ़ावत—२५६०।

छटंकी—संज्ञा स्त्री. [हिं. छटाँक] (१) छटाँक का बाँट। (२) बहुत छोटा और हल्का व्यक्ति।

छटकना—क्रि. अ. [हिं. छूटना] (१) सवेग अलग होना, सटकना। (२) अलग-अलग रहना। (३) हाथ न लगना, हत्थे न लगना। (४) उछलना-कूदना।

छटकाना—क्रि. अ. [हिं. छटकना] (१) सटने या अलग होने देना। (२) झटका देकर पकड़ या बंधन से छुड़ाना। (३) बलपूर्वक अलग करना।

छटकाये—क्रि. अ. [हिं. छटकाना] झटका दिया, झटका देकर छुड़ाया। उ.—रिसि करि खीझि खीझि लट झटकति स्याम भुजनि छटकाये दीन्हों।

छटना—क्रि. अ. [हिं. छँटना] अलग होना।

छटपट—संज्ञा पुं. [अनु.] छटपटाने की क्रिया।

वि.—चंचल, चपल, नटखट।

छटपटाना—क्रि. अ. [अनु.] (१) बंधन या कष्ट से हाथ-पैर पटकना, तड़पना। (२) व्याकुल होना। (३) किसी चीज के लिए अकुलाना।

छटपटाहट—संज्ञा स्त्री. [हिं. छटपटाना] छटपटाने या अधीर होने की क्रिया या भाव।

छटपटी—संज्ञा स्त्री. [अनु.] (१) बेचैनी। (२) उत्कंठा।

छटाँक—संज्ञा स्त्री. [हिं. छ:+टाँक] पाव का चौथाई।

मुहा.—छटाँक भर-(१) पाव का चौथाई। (२) थोड़ा।

छटा—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) प्रभा, दीप्ति। (२) छबि, शोभा। (३) बिजली।

छटाई—संज्ञा स्त्री. [सं. छटा+ई (प्रत्य.)] प्रकाश, दीप्ति। उ.—किलकत हँसत दुरति प्रगटति मनु घन मैं बिज्जु छटाई—१०-१०८।

छटाभा—संज्ञा स्त्री. [सं.]। (१) बिजली की चमक या कौंध। (२) मुख की कांति, प्रभा या दीप्ति।

छटैल—वि. [हिं. छँटना] छँटा हुआ, बहुत चालाक।

छट्ठ, छठि, छठ—संज्ञा स्त्री. [सं. षष्ठी, प्रा. छट्ठी] प्रति पक्ष की छठी तिथि। उ.—भादों देव छठि को सुभ दिन प्रगट भये बलभाई—सारा.४२२।

छठि, छट्ठी, छठि, छठी—संज्ञा स्त्री. [सं. षष्ठी, प्रा. छट्ठी] (१) जन्म के छठे दिन की पूजा। उ.—काजर रोरी आनहू (मिलि) करौ छठी कौ चार—१०-४०।

मुहा.—छठी आठे होना—परस्पर न बनना, आपस में झगड़ा होना। उ.—छठि आठैं मोहिं कान्ह कुँवर सों तिनकौ कहति प्रीति लों है—१२५६। छठी का दूध निकलना (याद आना)—बहुत कष्ट या हैरानी होना। छठी का दूध निकालना—बहुत हैरान करना। छठी का राजा—पुराना रईस। छठी में न पड़ना—(१) भाग्य में बदा न होना। (२) स्वभाव या प्रकृति के विरुद्ध होना।

(२) वह देवी जिसकी पूजा छठी को होती है।

छठएँ—क्रि. वि. [हिं. छठा] छठे (स्थान या घर) में। उ.—छठएँ सुक्र तुला के सनि जुत, सत्रु रहन नहिं पैहैं—१०-८६।

छठा—वि. [हिं. छठ] पाँचवें के बाद का।

छठैं—वि. [हिं. छठा] छठा। उ.—पंचम मास हाड़ बलि पावै। छठैं मास इंद्री प्रगटावै – ३-१३।

छड़—संज्ञा स्त्री. [सं. शर] धातु आदि की लंबी डंडी।

छड़ना—क्रि. स. [हिं. छँटना] अनाज कूटना-छाँटना।

क्रि. स. [हिं. छोड़ना] त्यागना, छोड़ना।

छड़ा—संज्ञा पुं. [हिं. छड़] (१) पैर में पहनने का एक गहना। (२) मोतियों की लड़ों का गुच्छा या लच्छा।

वि. [हिं. छाँड़ना] जिसके साथ कोई न हो।

छड़ाइ—क्रि. स. [हिं. छुड़ाना] छुड़ाना, छीन लेना।

प्र.—लई छड़ाइ—छुड़ा ली, छीन ली। उ.—चरन की छबि देखि डरप्यौ अरुन, गगन छपाइ। जानु करभा की सबै छबि, निदरि, लई छड़ाइ—१०-२३४।

छड़ाए—क्रि. स. [हिं. छुड़ाना] छुड़ा लिये।

छड़िया—संज्ञा पुं. [हिं. छड़ी] दरबान, द्वारपाल।

छड़ियाल—संज्ञा पुं. [हिं. छड़ी] एक तरह का भाला।

छड़ी—संज्ञा स्त्री. [हिं. छड़] (१) पतली लकड़ी। (२) झंडी।

वि. स्त्री [हिं. छाँड़ना] जिसके साथ कोई न हो।

छड़ीदार—संज्ञा पुं. [हिं. छड़ी+दार (प्रत्य.)] द्वारपाल।

छड़े—क्रि. स. [हिं. छोड़ना] छोड़े, अलग किये, त्यागे। उ.–जदपि अहीर जसोदानंदन कैसैं जात छड़े–३१५१।

छत—संज्ञा स्त्री. [सं. छत्र, प्रा. छत्त] (१) दीवारों का ऊपरी फर्श। (२) घर का खुला हुआ ऊपरी फर्श। (३) ऊपरी चादर।

मुहा.—छत बँधना—बादलों का घिरकर छाना।

संज्ञा पुं. [सं. क्षत] घाव, जख्म।

क्रि. वि. [सं. सत्] रहते या होते हुए।

छतना—संज्ञा पुं. [हिं. छाता, अव. छतौना] छाता जो पत्तों आदि से बनाया गया हो।

छतनार—वि. [हिं. छतना] दूर तक छाया हुआ।

छतरी, छतुरी—संज्ञा स्त्री. [सं. छत्र] (१) छाता। (२) पत्तों का छाता। (३) मंडप। (४) चिता या समाधि

पर बना ऊपरी मंडप। (५) डोली या वाहन का छाजन।

छतवंत—वि. [सं. क्षत+वंत] क्षतयुक्त।

छता—संज्ञा पु. [हिं. छाता] छतरी, छाता।

छति—संज्ञा स्त्री. [सं. क्षति] हानि, घाटा।

छतियाँ, छतिया—संज्ञा स्त्री. [हिं. छाती] (१) छाती, वक्षस्थल। उ.—(क) सूरस्याम विरमाने सोए लिए लगाइ छतियाँ महतारी—१०-१६६। (ख)······चिन्त चरनन लाग्यौ, छतियाँ धरकि रही—२२३६। (ग) छतियाँ लै लाऊँ बालक लीला गाऊँ—२६९९। (घ) वै बतियाँ छतियाँ लिखि राखीं जे नँदलाल कहीं—२९९९। (२) हृदय, कलेजा, मन, जी। उ.—कुलिसहुँ तैं कठिन छतियाँ चितै री तेरी, अजहूँ द्रवति जो न देखति दुखारि—३६२।

छतियाना—क्रि. स. [हिं. छाती] छाती के पास ले जाना।

छतीसा—वि. [हिं. छत्तीस] चतुर, धूर्त्त।

छतीसापन—संज्ञा पुं. [हिं. छतीसा] चालाकी, मक्कारी।

छतीसौं—वि. [हिं. छतीस] कुल छत्तीस। उ.—जाति पाँति पहिराइ कै समदि छत्तीसौं पौन—१०-४०।

छतौना—संज्ञा पुं. [हिं. छाता] छाता, छतरी।

छत्तर—संज्ञा पुं. [हिं. छत्र] (१) छाता। (२) छत्र।

छत्ता—संज्ञा पुं. [सं. छत्र, प्रा. छत्त] (१) छाता, छतरी। (२) पटाव जिसके नीचे रास्ता हो। (३) मधुमक्खी का घर। (४) छत्तेदार चकत्ता। (५) कमल का बीजकोश।

छत्तीस—संज्ञा पुं. [सं. पटत्रिंशति, प्रा. छत्तीसा] तीस और छः के जोड़ से बननेवाली संख्या।

छत्तीसा—संज्ञा पुं. [हिं. छत्तीस] नाई, हज्जाम।

वि.—धूर्त्त, बहुत चालाक, काँइयाँ।

छत्तीसी—वि. स्त्री. [हिं. छत्तीसा] छल-कपटवाली।

छत्तुर—संज्ञा पुं. [सं. छत्र] (१) छाता। (२) छत्र।

छत्र—संज्ञा पुं. [सं.] (१) छतरी। (२) राजाओं का राजचिह्न-सूचक छाता। उ.—चरन-कमल बंदौं हरिराइ। रंक चलै सिर छत्र धराइ—१०१।

मुहा.—किसी के छत्र की छाँह में होना (रहना)—किसी की शरण या रक्षा में होना (रहना)।

छत्रक—संज्ञा पुं. [सं.] (१) कुकुरमुत्ता। (२) छाता। (३) एक चिड़िया। (४) मंदिर। (५) शहद का छत्ता।

छत्रधर, छत्रधारी—संज्ञा पुं. [सं.] (१) छत्र धारण करनेवाला राजा। (२) छत्र लगानेवाला सेवक।

छत्रन—संज्ञा पुं. बहु. [हिं. छत्र] राजछत्र, उ.—ऊँच अटन पर छत्रन की छवि सीसन मानो फूली—२५६१।

छत्रपति—संज्ञा पुं. [सं.] छत्र धारण करनेवाला राजा। उ.—बन कौन नृपन बहुत जोगी छत्रपति केते कहे—१० उ. २४।

छत्रपन—संज्ञा पुं. [सं.] राजत्व, राज्याधिकार। उ.—अब तौ हौं तिनकौ तजि आयौ, सोइ रजायसु दीजै। जातैं रहै छत्रपन मेरौ, सोइ मंत्र कछु कीजैं—१-२६९।

छत्रबंधु—संज्ञा पुं. [सं.] नीच कुल का क्षत्रिय।

छत्रभंग—संज्ञा पुं. [सं.] (१) राजा का नाश। (२) वैधव्य। (३) अराजकता। (४) हाथी का एक दोष।

छत्रिय—संज्ञा पुं. [सं. क्षत्रिय] हिंदुओं के चार वर्णों में से दूसरा जिसका कर्तव्य देश-रक्षा था। विश्वास है कि इस वर्ण के लोग युद्ध में वीरों की भाँति मरने पर स्वर्ग जाते हैं। उ.—इतो न करौं सपथ तौ हरि की, छत्रिय-गतिहिं न पाऊँ—१-२७०।

छत्री—वि. [सं. छत्रिन्] छत्र धारण करनेवाला।

संज्ञा पुं.—नाई, हज्जाम।

संज्ञा पुं. [सं. क्षत्रिय] क्षत्रिय। उ.—मारे छत्री इकइस वार—९-१३।

छत्वर—संज्ञा पुं. [सं.] (१) घर। (२) कुंज।

छदंम, छद्म—संज्ञा पुं. [सं. छद्म] छिपाव, बहाना, छल।

छद, छदन—संज्ञा पुं. [सं.] (१) ढकने का आवरण, ढक्कन। (२) चिड़ियों का पंख। (३) पत्ता।

छदाम—संज्ञा पुं. [हिं. छः+दाम] चौथाई पैसा।

छदर—संज्ञा पुं. [हिं. छः+सं. रद] नटखट लड़का।

छद्म—संज्ञा पुं. [सं.] (१) छिपाव। (२) बहाना, हीला। (३) छल-कपट।

छद्मवेश—संज्ञा पुं. [सं.] बदला हुआ वेश।

छद्मवेशी—वि. [सं. छद्मवेशिन्] जो वेश बदले हो।

छद्मी—वि. [सं. छद्मिन्] (१) छद्मवेशी। (२) छली।

छन—संज्ञा पुं. [सं. क्षण] (१) क्षण भरका समय।

उ.—बरुन-पास तैं ब्रजपतिहिं छन माहिं छुड़ावै—१-४। (२) अवसर।

छनक—संज्ञा स्त्री. [अनु.] (१) छन-छन का शब्द। (२) तपी वस्तु पर पानी पड़ने से होनेवाला छन-छन शब्द।

संज्ञा स्त्री. [सं. शंका] चौंक कर भागना।

संज्ञा पुं. [हिं. छन+एक] एक क्षण का समय।

छनकना—क्रि. अ. [अनु. छनछद] (१) तपी धातु पर पानी की बूँद का गिरकर छनछन करके उड़ जाना। (२) झनझनाना।

क्रि. अ. [सं. शंका] चौंककर भागना।

छनक मनक—संज्ञा स्त्री. [अनु.] (१) गहनों की झनकार। (२) साजबाज। (३) आभूषण झनकारते फिरते बच्चे।

छनकहि—क्रि. वि. [हिं. छनक] जरा देर में, क्षणभर में। उ.—छनकहि मैं जरि भस्म होइगौ, जब देखै उठि जागि जम्हाई—५५०।

छनकाना—क्रि. स. [हिं. छनकना] तपे बरतन में पानी आदि किसी द्रव को डालकर छनछनाना।

क्रि. स. [सं. शंका, हिं. छनकना] भड़काना।

छनछनाना—क्रि. अ. [अनु.] (१) तपे हुए पात्र में पानी पड़ने से छनछन का शब्द होना। (२) खौलते हुए घी-तेल में तरकारी आदि पड़ने का शब्द होना।

क्रि. स.—(१) छनछन करना। (२) झनकारना।

छनछवि—संज्ञा स्त्री. [सं. क्षण + छवि] बिजली।

छनदा—संज्ञा स्त्री. [सं. क्षणदा] रात, रात्रि।

छननमनन—संज्ञा पुं. [अनु.] खौलते घी-तेल में किसी गीली वस्तु के पड़ने पर होनेवाला शब्द।

छनना—क्रि. अ. [सं. क्षरण] (१) छलनी से साफ होना। (२) छेदों से छनना। (३) नशे का पिया जाना।

मुहा.—गहरी छनना—(१) खूब मेल जोल होना, गाढ़ी मित्रता होना। (२) आपस में बिगाड़ होना।

(४) बहुत से छेद होना। (५) खूब बिध जाना। (६) छानबीन द्वारा सच्ची-झूठी बात का पता चलना।

संज्ञा पुं.—छानने का बहुत महीन कपड़ा।

छनभंगु, छनभंगुर—वि. [सं. क्षणभंगुर] शीघ्र नष्ट होने वाला। उ.—(क) इहि तन छनभंगुर के कारन गरबत कहा गँवार—१-८४। (ख) सुख-संपति, दारा-सुत, हय-गय, झूठ सबै समुदाइ। छनभंगुर यह सबै स्याम बिनु अंत नाहिं सँग जाइ—१-३१७। (ग) तनु मिथ्या छनभंगुर. जानौ—५-३। (घ) नर सेवा तैं जौ सुख होइ : छनभंगुर थिर रहै न सोइ—७-२।

छनवाना, छनाना—क्रि. स. [हिं. छानना] (१) छानने का काम दूसरे से कराना। (२) नशा आदि पिलाना।

छन्नाका—संज्ञा पुं. [अनु.] (रुपए आदि की) झनकार।

छनिक—वि. [सं. क्षणिक] थोड़े समय का।

संज्ञा पुं. [हिं. छन+एक] एकक्षण, थोड़ा समय।

छन्न—वि. [सं.] (१) ढका हुआ। (२) लुप्त।

संज्ञा पुं.—(१) एकांत स्थान। (२) गुप्त स्थान।

संज्ञा पुं. [सं. छंद] छंद नामक हाथ का गहना।

संज्ञा पुं. [अनु.] (१) खूब तपती धातु पर पानी आदि पड़ने से उत्पन्न छनछनाहट (२) खौलते हुए घी-तेल में गीली चीज पड़ने पर होनेवाला शब्द।

मुहा.—छन्न होना—छनछनाकर उड़ जाना।

(३) धातुओं के पत्तरों की छनकार।

छन्नमति—वि. [सं.] मूर्ख, जड़।

छन्ना—संज्ञा पुं. [हिं. छनना] छानने का कपड़ा।

छप—संज्ञा स्त्री. [अनु.] पानी में किसी वस्तु के जोर से गिरने का शब्द।

छपकना—क्रि. स. [छप से अनु.] (१) पतली छड़ी से पीटना। (२) कटारी आदि से काटना या छिन्न करना।

छपका—संज्ञा पुं. [हिं. चपकना] सिर का एक गहना।

संज्ञा पुं. [हिं. छपकना] पतली कमची, साँटा।

संज्ञा पुं. [अनु.] (१) पानी का जोरदार छींटा। (२) पानी में हाथ-पैर मारने की क्रिया या भाव।

छपछपाना—क्रि. अ. [अनु.] (१) पानी पर हाथ-पैर से छपछप शब्द करना। (२) कुछ-कुछ तैर लेना।

छपटना—क्रि. अ. [सं. चिपिट, हिं. चिपटना] (१) किसी वस्तु से सटना। (२) आलिंगित होना।

छपटाना—क्रि. स. [हिं. छपटना] (१) चिपकाना, सटाना। (२) छाती से लगाना, आलिंगन करना।

छपटी—वि. [हिं. छपटना] दुबला-पतला, कृश।

छपत—क्रि. अ. [हिं. छिपना] छिपते हैं। उ.—जदुपति

जल क्रीड़त जुवतिन सँग । ··· । जल ताकि परस्पर छपत दूर—२४५२ ।

छपद्—संज्ञा पु. [सं. षट्पद] **भौंरा, भ्रमर।** उ.—(क) छपद कंज तजि बेलि सों लटि प्रेम न जान्यौ । (ख) सूर अक्रूर छपद के मन में नाहिंन त्रास दई कौ—३०५५ ।

छपन—वि. [हिं. छिपना] **गुप्त, गायब, लुप्त ।**

संज्ञा पुं. [सं. क्षपण] **नाश, संहार, विनाश ।**

वि. [हिं. छप्पन] **छप्पन ।** उ.—छपन कोटि के मध्य राजत हैं जादवराइ—१० उ. ८ ।

छपनहार—वि. [हिं. छपन+हार] **नाशक ।**

छपना—क्रि. अ. [हिं. चपना=दबना] (१) **चिह्न पड़ना ।** (२) **चिह्नित होना ।** (३) **मुद्रित होना ।**

क्रि. अ. [हिं. छिपना] **छिप जाना, लुप्त होना ।**

छपरछपर—वि. [हिं. छपर] **तराबोर ।**

छपरबंद—वि. [हिं. छप्पर+बंद] (१) **अच्छे घर-द्वार वाला ।** (२) **छप्पर छानेवाला ।**

छपरबंदी—वि. [हिं. छपरबंद] (१) **छप्पर छाने की क्रिया ।** (२) **छप्पर छाने की मजदूरी ।**

छपरा—संज्ञा पुं. [हिं. छप्पर] **छप्पर ।**

छपरिया, छपरी—संज्ञा स्त्री. [हिं. छप्पर] (१) **छोटा छप्पर ।** (२) **साधुओं की झोपड़ी, मढ़ी ।**

छपवैया—संज्ञा पुं. [हिं. छापना] (१) **छापनेवाला ।** (२) **छपाने या मुद्रित करानेवाला ।**

छपटी—संज्ञा स्त्री. [देश.] **उँगलियों का एक गहना ।**

छपा—संज्ञा स्त्री. [सं. क्षपा] (१) **रात ।** उ.—छपा न छीन होत सुन सजनी भूमि डसन रिपु कहा दुरौनी—१० उ. ६३ । (२) **हलदी ।**

छपाइ, छपाई—क्रि. स. [हिं. छिपाना] (१) **छिप गयी ।** उ.—मुख छबि-कहौं कहाँ लगि माई। भानु उदै ज्यौं कमल प्रकासित रबि ससि दोऊ जोति छपाई—६३६ । (२) **छिपा ली ।** उ.—बोल्यौ नहीं, रह्यौ दुरि बानर, द्रुम मैं देहि छपाइ—९-८३ । (३) **छिपाकर, गायब करके ।** उ.—महरि तैं बड़ी कृपन है माई। दूध दही बहु बिधि कौ दीनौ, सुत सौं धरति छपाई—१०-३२५ । **प्र.**—रहो छपाइ—**छिप रहा ।** उ.—धनि रिषि साप दियौ खगपति कौं, ह्याँ तब रह्यौ छपाइ—५७३ । न रही छपाई—**छिपी न रही ।** उ.—प्रगटी प्रीति न रही छपाई—७२० ।

संज्ञा स्त्री. [हिं. छापना] (१) **छापने का काम या ढंग ।** (२) **छापने की मजदूरी ।**

छपाए—क्रि. स. [हिं. छिपाना] **छिपाये हुए हैं, आड़ में किये हैं ।** उ.—नील जलद पर उडगन निरिखत, तजि सुभाव मनु तड़ित छपाए—१०-१०४ ।

छपाकर—संज्ञा पुं. [सं. क्षपाकर] (१) **चंद्रमा ।** उ.—सोलह कला छपाकर की छबि सोभित छत्र सीस सिर तानी—२३८३ । (२) **कपूर ।**

छपाका—संज्ञा पुं. [अनु.] (१) **पानी पर जोर से गिरने का शब्द ।** (२) **पानी का जोरदार छींटा ।**

छपाना—क्रि. स. [हिं. छापना] (१) **छापने का काम कराना ।** (२) **चिह्नित कराना ।** (३) **मुद्रित कराना ।**

क्रि. स. [हिं. छिपाना] **छिपा लेना ।**

क्रि. अ. [हिं. छपछप] **खेत सींचना ।**

छपानाथ—संज्ञा पुं. [सं. क्षपानाथ] **चंद्रमा ।**

छपानी—क्रि. अ. [हिं. छिपना] **छिप गयी, ओट या आड़ में हो गयी ।**

प्र.—रहौं छपानी—**छिप जाऊँ, आड़ में हो जाऊँ ।** उ.—बैठैं जाइ मथनियाँ कैं ढिग, मैं तब रहौं छपानी—१०-२६४ । रहै छपानी—**छिपी रहे, प्रगट न हो ।** उ.—(क) वा मोहन सों प्रीति निरंतर क्यों अब रहै छपानी—११९८ । (ख) अब ही जाइ प्रगट करि दैहैं कहा रहै यह बात छपानी—१२६२ ।

छपाने—क्रि. अ. [हिं. छिपना] (१) **छिप गये, लुक गये, ओट या आड़ में हो गये ।** उ.—हरि तब अपनी आँख मुँदाई । सखा सहित बलराम छपाने, जहँ-तहँ गए भगाई—१०-२४० । (२) **अदृश्य हो गये, लुप्त हो गये ।** उ.—इहिं अंतर भिनुसार भयो । तारा-गन सब गगन छपाने, अरुन उदित, अँधकार गयौ—५२० ।

छपान्यौ—क्रि. अ. [हिं. छिपना] **छिप गया, ओट में हो गया ।** उ.—(क) खेलत तैं उठि भज्यौ सखा यह, इहिं घर आइ छपान्यौ ।—१०-२७० । (ख) कहत

स्याम मैं अतिहिं डरान्यौ। ऊखल तर मैं रह्यौ छपान्यौ—३९१।

छपायो, छपायौ—क्रि. अ. [हिं. छिपना] **छिप गया, लुक गया।** उ.—अंधाधुंध भयौ सब गोकुल, जो जहँ रह्यौ सो तहीं छपायौ—१०-७७।

छपाव—संज्ञा पुं. [हिं. छिपाव] **दुराव-छिपाव।**

छपावत—क्रि. स. [सं. क्षिप, हिं. छिपाना] **छिपाता है, ढकता है।** उ.—सूर स्याम के ललित बदन पर, गोरज छबि कछु चंद छपावत—५०९।

छपावहु—क्रि. स. [हिं. छिपाना] **छिपाओ, ओट में करो।** उ.—घटाघोर करि गगन छपावहु—१०४६।

छपैहौं—क्रि. स. [हिं. छिपाना] **छिपाओगे।**

छप्पन—संज्ञा पुं. [सं. षट्पंचाशत, प्रा. छप्पण्णम्, छप्पण्ण] **पचास और छः की संख्या।** उ.—चले साजि बरात जादव कोटि छप्पन अति बली—१० उ. २४।

छप्पय—संज्ञा पुं. [सं. षट्पद] **एक मात्रिक छंद।**

छप्पर—संज्ञा पुं. [हिं. छोपना] (१) **छाजन, छान।**

मुहा.—छप्पर पर रखना—**चर्चा या जिक्र न करना।** छप्पर पर फूस न होना—**बहुत ही निर्धन होना।** छप्पर फाड़ कर देना—**बैठे-बिठाये मिल जाना।** छप्पर रखना—(१) **एहसान लादना।** (२) **दोष देना।**

(२) **छोटा ताल, डाबर, पोखर, तलैया।**

छप्परबंद—वि. [हिं. छप्पर+फ़ा. बंद] (१) **छप्पर छानेवाले।** (२) **जिसने घर बना लिया हो।**

छप्यौ—क्रि. अ. [हिं. छिपना] **छिप गया, ओट में हो गया।** उ.—(क) इंद्र-सरीर सहस भग पाइ। छप्यौ सो कमल-नाल मं जाइ—६-८। (ख) पौरि सब देखि सो असोक बन मैं गयौ, निरखि सीता छप्यौ वृच्छ-डारा—९-७६।

छब—संज्ञा स्त्री. [सं. छवि] **कांति, शोभा।**

छबड़ा—संज्ञा पुं. [देश.] (१) **झाबा।** (२) **खाँचा।**

छबतखती—संज्ञा स्त्री. [हिं. छवि+अ. तक़तीअ] **शरीर की सुंदर गठन, सुंदरता, सजधज।**

छबना—क्रि. अ. [हिं. छवि] **सुंदर लगना।**

छबि—संज्ञा स्त्री. [सं. छवि] (१) **शोभा, सौंदर्य।** उ.—(क)कछुक अंग तैं उड़त पीतपट उन्नत बाहु बिसाल। स्रवत स्रौनकन, तन-सोभा, छबि-धन बरसत मनु लाल—१-२७३। (ख) भली बनी छबि आजु की क्यों लेत जम्हाई—२०२२। (२) **कांति, प्रभा।**

छबिधर, छबिमान, छबिवंत—वि. [हिं. छवि+धर, मान्, वंत (प्रत्य.)] **सुंदर, शोभायुक्त, रूपवान।**

छबीरा, छबीला—वि. [हिं. छवि+ईला (प्रत्य.), छबीला] **सुंदर, सजाधजा, शोभायुक्त, सुहावना।**

छबीरी, छबीली—वि. स्त्री. [हिं.पुं. छबीला] **शोभायुक्त, सुहावनी, सुंदर, सजी-धजी।** उ.—(क) चंद्र बदन लट लटकि छबीली, मनहुँ अमृत रस व्यालि चुरावति—१०-१४९। (ख) छोटी छोटी गोड़ियाँ, अँगुरियाँ छबीली छोटी, नख-ज्योती, मोती मानौ कमल-दलनि पै—१०-१५१। (ग) छबि की उपमा कहि न परति है, या छबि की जु छबीली—१०-२९९। (घ) सूर स्याम मुसकानि छबीरी अँखियन मैं रहीं तब न जानो हो कोही—८३८। (ङ) सूरदास प्रभु नवल छबीले नवल छबीली गोरी—पृ. ३४३ (२८)

छबीरे, छबीले, छबीलो, छबीलौ—वि. [हिं. छबीला] **छैल-छबीला, सुहावना, सुंदर।** उ.—(क) हौं बलि जाउँ छबीले लाल की। धूसर धूरि घुटुरुवनि रेंगति, बोलनि बचन रसाल की—१०-१०५। (ख) सोभा मेरे स्यामहिं पै सोहै। बलि-बलि जाउँ छबीले मुख की, या उपमा कौं को है—१०-१५८ (ग) नटवर रूप अनूप छबीलौ, सबहिनि कै मन भावत—४७९। (घ) मोहनलाल, छबीलौ गिरिधर, सूरदास बलि नागर नटकनि—६१८।

छब्बीस—संज्ञा पुं. [सं. षड्विंश, प्रा. छव्वीसा] **बीस और छः के जोड़ वाली संख्या तथा इसका सूचक अंक।**

छमंड—संज्ञा पुं. [सं.] **पितृहीन बालक।**

छम—संज्ञा स्त्री. [अनु.] (१) **घुँघरू बजने का शब्द।** (२) **पानी बरसने का शब्द।**

संज्ञा पुं. [सं. क्षम] **शक्ति, बल।**

छमक—संज्ञा स्त्री. [हिं. छम] **ठाटबाट, ठसक।**

छमकना—क्रि. अ. [हि. छम (अनु.)] **घुँघरू या गहने हिलाकर छमछम शब्द करना।**

छमछम—संज्ञा स्त्री. [अनु.] (१) **नूपुर, पायल या घुँघरू का शब्द।** (२) **पानी बरसने का शब्द।**

छमछमाना—क्रि. अ. [अनु.] **छमछम करना।**

छमता—संज्ञा स्त्री. [सं. क्षमता] **योग्यता, सामर्थ्य।**

छमना—क्रि. स. [हिं. क्षमा] **क्षमा करना।**

छमवाइ—क्रि. स. [सं. क्षमा] **क्षमा करवा कर।** उ.—बहुरि बिधि जाइ, छमवाइ कै रुद्र कौं बिष्नु बिधि, रुद्र तहँ तुरत आए—४-६।

छमहु—क्रि. स. [हिं. छमना] **क्षमा करो।** उ.—(क) सूर स्याम अपराध छमहु अब, हम माँगैं पति पावैं—५६६। (ख) छमहु मोहिं अपराध, न जानैं करी ढिठाई—५८६।

छमा, छमाई—वि. [सं. क्षमा] **शांत, ठंढा।** उ.—बरुन कुबेरारिक पुनि आइ। करी बिनय तिनहूँ बहु भाइ। तैहूँ क्रोध छमा नहिं भयौ—७-२।

संज्ञा स्त्री.—**क्षमा, माफ।** उ.—करौ छमा कियौ असुर सँहार—७-२।

छमाए—क्रि. स. [हिं. छमना] **क्षमा किये।** उ.—अब हम चरन-सरन हैं आए। तब हरि उनके दोष छमाए—८००।

छमाछम—संज्ञा स्त्री. [अनु.] (१) **गहनों के बजने का शब्द।** (२) **पानी बरसने का शब्द।**

क्रि. वि.—**छमछम के निरंतर शब्द के साथ।**

छमादिक—संज्ञा स्त्री. [सं. क्षमा+आदिक] **क्षमा आदि सतोगुणी वृत्तियाँ।** उ.—दया, धर्म, संतोषहु गयौ। ज्ञान, छमादिक सब लय भयौ—१-२९०।

छमाना, छमवाना—क्रि. स. [सं. क्षमा] **क्षमा कराना।**

छमापन—संज्ञा पुं. [हिं. क्षमा+पन] **क्षमा करने का भाव।**

छमायौ—क्रि. स. [हिं. छमना] **क्षमा कर दिया।** उ.—पहिलौ पुत्र देवकी जायौ लै बसुदेव दिखायौ। बालक देखि कंस हँस दीन्यौ, सब अपराध छमायौ—१०-४।

छमावति—क्रि. स. [हिं. छमाना] **क्षमा कराती है।** उ.—कर जोरति अपराध छमावति—१०१०।

छमावान—वि. [सं. क्षमावान्] **क्षमा करनेवाला।**

छमासी—संज्ञा स्त्री. [हिं. छः+सं. मास] **मृत्यु के छः महीने पश्चात् किया जानेवाला श्राद्ध।**

छमासील—वि. [सं. क्षमाशील] **क्षमा करनेवाला।**

छमि—क्रि. स. [हिं. छमना] **क्षमा करके।** उ.—रसना द्विज दलि दुखित होति बहु, तउ रिस कहा करै! छमि सब छोभ जु छाँड़ि छवौ रस लै समीप सँचरै—१-१०७।

छमिच्छा—संज्ञा स्त्री. [सं. समस्या] (१) **समस्या, उलझन, शंका।** (२) **इशारा, संकेत।**

छमियै—क्रि. स. [हिं. छमना] **क्षमा कीजिए।** उ.—ह्वै हैं जज्ञ अब देव मुरारी। छमियै क्रोध सुरनि सुखकारी—७-२।

छमी—वि. [सं. क्षमा] **क्षमावान्, क्षमा करनेवाले।** उ.—सुर हरि-भक्त, असुर हरि-द्रोही। सुर अति छमी, असुर अति कोही—३-६।

छमुख—संज्ञा पुं. [हिं. छः+मुख] **कार्त्तिकेय।**

छमौ—क्रि. स. [हिं. छमना] **क्षमा करो।** उ.—(क) कृपासिंधु, अपराध अपरिमित, छमौ, सूर तैं सब बिगरी—१-११५। (ख) छमौ, प्रलय कौ समय न भयौ—७-२।

छय—संज्ञा पुं. [सं. क्षय] **नाश, विनाश।** उ.—बान एक हरि सिव कौं दियौ। तासौं सब असुरनि छय कियौ—७-७।

प्र.—छय जाइ—**नष्ट हो जाय।** उ.—रवि-ससि-कोटि कला अवलोकत त्रिबिध ताप छय जाइ—४८७।

छयना—क्रि. अ. [सं. क्षय] **नष्ट होना।**

क्रि. अ. [हिं. छाना] **छा जाना, फैलना।**

छयल—संज्ञा पुं. [हिं. छैल] **सुंदर, बाँका, रसिक।** उ.—नित रहत मन्मथ मदहिं छाकी निलज कुच झाँपत नहीं। तब देखि देखि छयल मोहित बिकल ह्वै धावत तहीं—१० उ. २४।

छयौ—क्रि. स. [हिं. छाना] **छा लिया, ढक लिया।** उ.—(क) एक अंस जल कौं पुनि दयौ। ह्वै कै काई जल कौं छयौ—६-५। (ख) ताकौ जस तीनौ पुर छयौ—४-६।

छर—संज्ञा पुं. [हिं. छल] **छल, कपट।** उ.—(क)

सँहचरि चतुरातुर लै आई बाँह बोल दै करि कहत वह छर—१८०६। (ख) तबहीं सूर निरखि नैनन भरि आयौ उघरि लाल ललिता छर—२२६६।

संज्ञा पुं. [सं. क्षर] **नाशवान।**

संज्ञा स्त्री. [अनु.] **छर्रों या कणों के निकलने या गिरने का शब्द, छड़ी से पीटने की ध्वनि।** उ.—जब रजु सौं कर गाढ़ै बाँधे, छर-छर मारी साँटी—३७५।

छरकना—क्रि. अ. [अनु. छरछर] **छरछर करके छिटकना, बिखरना या उछलना।**

क्रि. अ. [हिं. छलकना] **छलकना।**

छरकीला—वि.—**लंबा और सुडौल।**

छरछंद—संज्ञा पुं. [हिं. छलछंद] **छल-कपट।**

छरछंदी—वि. [हिं. छलछंदी] **छली, कपटी।**

छरछर—संज्ञा पुं. [हिं. छर] (१) **कणों या छर्रों के गिरने का शब्द।** (२) **पतली छड़ी मारने से होनेवाला सटसट शब्द।** उ.—जब रजु सौं कर गाढ़ो बाँधे छरछर मारी साँटी—६६३।

छरछराना—क्रि. अ- [सं. क्षार, हिं. छार] **नमक या क्षार लगने से छिले या कटे हुए स्थान में पीड़ा होना।**

क्रि. अ. [अनु. छरछर] **छर्रों का बिखराना।**

छरछराहट—संज्ञा स्त्री. [हिं. छरछराना] (१) **कणों के बिखरने का भाव।** (२) **घाव के छरछराने की पीड़ा।**

छरत—क्रि. अ. [हिं. छरना] **छँटती है, दूर होती है, रह नहीं जाती।** उ.—जब हरि मुरली अधर धरत। थिर चर, चर थिर, पवन थकित रहैं। जमुना-जल न बहत। खग मोहैं, मृग-जूथ भुलाहीं, निरखि मदन-छबि छरत—६२०।

छरद—क्रि. स. [सं. छर्दि] **घिनाकर, घृणा करके।** उ.—जो छिया छरद करि सकल संतनि तजी, बिषय-बिष खात नहिं तृप्ति मानी—१-११०।

छरना—क्रि. अ. [सं. क्षरण, प्रा. छरण] (१) **बहना, टपकना।** (२) **चुचुआना।** (३) **छँट जाना।**

क्रि. अ. [हिं. छलना] **भूत-प्रेत के वशीभूत होना।**

क्रि. स. [हिं. छलना] **धोखा देना। लुभाना।**

क्रि. स. [हिं. छड़ना] **ओखली में अन्न कूटना।**

छरभार—संज्ञा पुं. [सं. सार+भार] **कार्य-भार, झंझट।**

छरहरा—वि. [हिं. छड़+हरा (प्रत्य.)] (१) **दुबला-पतला और हलका।** (२) **तेज, फुरतीला।**

छरा—संज्ञा पुं.—(१) **रस्सी।** (२) **नारा।** (३) **लड़ी।** (४) **पैर का एक गहना।**

छरिंदा—वि. [हिं. छरीदा] **अकेला।**

छरी—संज्ञा स्त्री. [हिं. छड़ी] **छड़ी।**

संज्ञा स्त्री. [हिं. छली] **छली-कपटी।**

छरीदा—वि. [अ. जरीद:] (१) **जिसके पास कुछ सामान न हो।** (२) **अकेला।**

छरीदार—संज्ञा पुं. [हिं. छड़ी+दार (प्रत्य.)] **द्वारपाल, रक्षक।** उ.—छरीदार वैराग बिनोदी, झिरकि बाहिरैं कीन्हे—१-४०।

छरै—क्रि. स. [सं. छल, हिं. छलना] **छलता है, भुलावे में डालता है।** उ.—जोगी कौन बड़ौ संकर तैं, ताकौं काम छरै—१-३५।

छर्दि—संज्ञा स्त्री. [सं.] **कै, वमन।**

छर्रा—संज्ञा पुं. [अनु. छर छर] **कंकड़ी, कण।**

छल—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **दूसरे को धोखा देने के लिए असली रूप छिपाने का कार्य।** (२) **बहाना, व्याज।** (३) **धूर्तता, धोखा।** उ.—(क) बकी जु गई घोष मैं छल करि, जसुदा की गति दीनी—१-१२२। (ख) छल कियौ पांडवनि कौरव, कपट-पास ढरन—१-२०२।

मुहा.—छल-बल करि—**उचित-अनुचित किसी भी उपाय से।** उ.—(क) छल-बल करि जित-तित हरि पर-धन, धायौ सब दिन-रात्र—१-२१६। (ख) जाकी घरनि हरी छल-बल करि—६-१३३।

(४) **दंभ।** (५) **युद्ध की नीति के विरुद्ध शत्रु पर प्रहार या आक्रमण।**

संज्ञा पुं. [अनु.] **पानी गिरने का शब्द।**

छलक—संज्ञा स्त्री. [हिं. छलकना] **पानी आदि द्रव-पदार्थों के छलकने की क्रिया या भाव।**

संज्ञा पुं. [सं.] **छल करनेवाला, कपटी।**

छलकत—क्रि. अ. [हिं. छलकना] **कोई द्रव-पदार्थ छलकता है।** उ.—छलकत तक्र उफनि अँग आवत नहिं जानति तेहि कालहिं सों—११८०।

छलकन—संज्ञा स्त्री. [हिं. छलकना] (१) छलकने का भाव। (२) छलकी हुई चीज। (३) उद्‌गार।

छलकना—क्रि. अ. [अनु.] (१) (पानी आदि का) उछल कर भरे पात्र के बाहर गिरना। (२) उमड़ना।

छलकाना—क्रि. स. [हिं. छलकना] पानी आदि द्रवों को उछाल कर पात्र के बाहर गिराना।

छलकै—क्रि. अ. [हिं. छलकना (अनु.)] उमड़ती है, बाहर प्रकटित होती है, उद्‌गारित होती है। उ.—तन दुति मोर-चंद जिमि झलकै, उमँगि-उमँगि-अँग अँग छबि छलकै—१०-११७।

छलछंद—संज्ञा पुं. [हिं. छल+छंद] चालबाजी।

छलछंदी—वि. [हिं. छलछंद] चालबाज, कपटी।

छलछलाना—क्रि. अ. [अनु.] (१) पानी का 'छलछल' शब्द करना। (२) मार से खून निकलने को होना।

छलछात, छलछाया—संज्ञा पुं. [सं. छल] छल-कपट, माया, मायाजाल।

छलछिद्र—संज्ञा पुं. [सं.] कपट, धोखेबाजी।

छलछिद्री—संज्ञा पुं. [हिं. छलछिद्र] छली, कपटी।

छलन—क्रि. स. [सं. छल, हिं. छलना] धोखा देने के लिए, भुलावे में डालने या प्रतारित करने के हेतु। उ.—ये तौ बिप्र होहिं नहिं राजा, आए छलन मुरारी—८-१४।

छलना—क्रि. स. [सं. छल] धोखा या दगा देना।

संज्ञा स्त्री. [सं.] छल-कपट, धोखा।

छलनी—संज्ञा स्त्री. [हिं. चालना] छानने की चलनी।

मुहा.—छलनी करना—(१) बहुत से छेद करना। (२) फाड़ डालना। छलनी में डाल छाज में उड़ाना—जरा सी बात को बढ़ा-चढ़ाकर झगड़ा करना। कलेजा छलनी होना—(१) दुख सहते-सहते ऊब जाना। (२) दुख या कष्ट की बातें सुनते-सुनते घबरा जाना।

छलहाई—वि. स्त्री. [सं. छल+हा (प्रत्य.)] छली।

संज्ञा स्त्री.—छल, कपट, धोखा।

छलहाया—वि. [हिं. छलहाई] छली, कपटी।

छलाँग—संज्ञा स्त्री. [हिं. उछल+अंग] कुदान, फलाँग।

छलाँगना—क्रि. अ. [हिं. छलाँग] कूदना, फलाँगना।

छला—संज्ञा पुं. [सं. छल्ली=लता] छल्ला।

संज्ञा. स्त्री. [सं. छटा] आभा, चमक।

छलाई—संज्ञा स्त्री. [हिं. छल+आई (प्रत्य.)] छल।

छलाना—क्रि. स. [हिं. छलना] धोखा दिलाना।

छलावा—संज्ञा पुं. [हिं. छल] (१) भूत-प्रेत आदि की कल्पित छाया जो क्षण भर में ही अदृश्य हो जाती है।

मुहा.—छलावा सा—बहुत चंचल।

(२) प्रकाश जो जंगलों में क्षण भर दिखायी देकर बार-बार लुप्त हो जाता है, अगियाबैताल।

मुहा.—छलावा खेलना—प्रकाश का क्षण भर इधर-उधर दिखायी देकर बार-बार लुप्त हो जाना।

(३) चपल, चंचल। (४) इंद्रजाल, जादू।

छलि—क्रि. स. [हिं. छलना] छलकर, धोखा देकर, भुलावे में डालकर। उ.—(क) जज्ञ करत बैरोचन कौ सुत, वेद-बिदित बिधि-कर्मा। सो छलि बाँधि पताल पठायौ, कौन कृपानिधि, धर्मा—१-१०४। (ख) हरि तुम बलि कौं छलि कहा लीन्यौ—८-१५।

छलित—वि. [सं.] जो छला गया हो।

छलिया—वि. [सं. छल+इया (प्रत्य.)] छली, कपटी।

छलियौ—क्रि. स. [हिं. छलना] छला, धोखा दिया, प्रतारित किया। उ.—जिन चरननि छलियौ बलि राजा, नख गंगा जु बहैया—१०-१४१।

छली—वि. [सं. छलिन्] छल-कपट करनेवाला।

क्रि. स. [हिं. छलना] कपट किया, धोखा दिया। उ.—मैं यह ज्ञान छली ब्रज बनिता दियौ सु क्यौं न लहौं—पृ. ५६८ (२)।

छलीक—वि. [हिं. छली] कपटी, मायावी।

छलु—संज्ञा पुं. [हिं. छल] कपट, धोखा। उ.—आवन आवन कहिगे ऊधौ करि गए हमसों छलु रे—३२२६।

छले—क्रि. स. [हिं. छलना] धोखा दिया, भुलावे में डाला। उ.—सूरदास प्रभु बोलि, छले बलि, धरयौ पीठि पद पावन—८-१३।

छल्ला—संज्ञा पुं. [सं. छल्ली=लता] (१) सादी मुँदरी या अँगूठी। (२) गोल चीज, कड़ा, कुँडली।

छल्ली—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) छाल। (२) लता। (३) संतान। (४) एक फूल।

छवना—संज्ञा पुं. [हिं. छौना] बच्चा, छौना।

छवा—संज्ञा पुं. [सं. शावक] (पशु का) छौना।
संज्ञा पुं. [देश.] ऍड़ी।

छवाई—संज्ञा स्त्री. [हिं. छाना, छावना] छाने की क्रिया, मजदूरी या भाव।

छवाना—क्रि. स. [हिं. छाना] छाने का काम करना।

छवावै—क्रि. स. [हिं. छवाना] छवाता है। उ.—कलि मैं नामा प्रगट ताकी छानि छवावै—१-४।

छवि—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) शोभा। (२) कांति।
संज्ञा स्त्री. [अ. शबीह] चित्र, प्रतिकृति।

छवैया—संज्ञा पुं. [हिं. छाना] छप्पर छानेवाला।

छवौ—वि. [हिं. छह] छहों। उ.—छमि सब छोभ जु छाँड़ि, छवौ रस लै समीप सँचरै—१-११७।

छह—संज्ञा पुं. [हिं. छः] छः की संख्या।

छहर—संज्ञा स्त्री. [हिं. छहरना] बिखरने की क्रिया।

छहरि—क्रि. अ. [हिं. छहरना] फैलना, छिटकना। उ.—तनु विष रह्यौ है छहरि—७५०।

छहरना—क्रि. अ. [सं. क्षरण, प्रा. खरण, छरण] बिखरना, छिटकना, छितर जाना।

छहरा—वि. [हिं. छः+हरा (प्रत्य.)] (१) छः परत या पल्ले का। (२) छठा भाग।

छहराना—क्रि. अ. [सं. क्षरण] बिखरना, गिरकर, इधर-उधर फैल जाना।
क्रि. स.—बिखराना, फैलाना, छितराना।
क्रि. स. [सं. क्षार] भस्म करना।

छहरीला—वि. [हिं. छरहरा] (१) हलका, इकहरा, छरहरा। (२) फुरतीला, चुस्त।

छहियाँ—संज्ञा स्त्री. [हिं. छाँह] छाँह, छाया। उ.—(क) खेलत फिरत कनकमय आँगन पहिरे लाल पनहियाँ। दसरथ-कौसिल्या के आगैं, लसत सुमन की छहियाँ—९-१९। (ख) सीतल कुंज कदम की छहियाँ छटक छहूँ रस खैऐ—४४५। (ग) सीतल छहियाँ स्याम हैं बैठे, जानि भोजन की बिरियाँ—४७०।

छहूँ—वि. [सं. षट्, प्रा. छ, हिं. छ+हूँ (प्रत्य.)] छहों। उ.—(क) मेरे लाड़िले हो तुम जाउ न कहूँ। तेरेहीं काजैं गोपाल, सुनहु लाड़िले लाल, राखे हैं भाजन भरि सुरस छहूँ—१०-२९५। (ख) सीतल कुंज कदम की छहियाँ, छाक छहूँ रस खैऐ—४४५।

छहौं—वि. [हिं. छ+हौं (प्रत्य.)] कुल छह, छह (वस्तुओं) में सब। उ.—छहौं रितु तप करतिं नीकैं गेह-नेह बिसारि—७६७।

छाँ, छाँउँ—संज्ञा स्त्री. [हिं. छाँह] छाया, छाँह।

छाँक—संज्ञा पुं. [फ़ा. चाक] खंड, भाग, टुकड़ा।
संज्ञा पुं. [हिं. छाक] (१) छाक। उ.—(क) छाँक खाय जूठन ग्वालिन कौं कछु मन मैं नहिं मान्यौ—सारा. ७५०। (ख) एक ग्वाल मंडली करि बैठति छाँक बाँटि कै देत। (२) टुकड़ा

छाँगना—क्रि. स. [सं. छिन्न+करण] काटना, छाँटना।

छाँगुर—वि. [हिं. छः+अंगुल] छः उँगलियोंवाला।

छाँछ—संज्ञा स्त्री. [हिं. छाछ] मट्ठा, मही। उ.—प्रथम ग्वाल गाइन सँग रहते भए छाँछ के दानी—३३०२।

छाँट—संज्ञा स्त्री. [हिं. छाँटना] (१) काटने-कतरने की क्रिया या ढंग। (२) कतरना। (३) भूसी, कन। (४) छाँटने से बची बेकार चीज।
संज्ञा स्त्री. [सं. छर्दि, प्रा. छड्डि] वमन, कै।

छाँटन—संज्ञा स्त्री. [हिं. छाँटना] (१) कटी-छँटी कतरन। (२) छाँट कर अलग की हुई बेकार चीज।

छाँटना—क्रि. स. [सं. खंडन] (१) काट या कतर कर अलग करना। (२) (कपड़ा आदि) काटना। (३) छान-फटक कर अनाज से भूसी अलग करना। (४) बेकार चीजें चुनना या निकालना। (५) गंदी या बुरी चीज हटाना। (६) साफ करना। (७) काट कर संक्षिप्त करना। (८) बाल की खाल निकालना। (९) सम्मिलित न करना।

छाँटा—संज्ञा पुं. [हिं. छाँटना] (१) छाँटने की क्रिया। (२) छल से किसी को दूर या अलग करना।

छाँड़त—क्रि. स. [हिं. छाँड़ना, छोड़ना] (१) छोड़ता (है), त्यागता (है)। उ.—निरखि पतंग बानि नहिं छाँड़त, जदपि जोति तनु तावत—१-२१०। (२) अलग करता है, (अपने से) दूर हटाता है। उ.—चलनि चहति पग चलै न घर कौं। छाँड़त बनत नहीं कैसेहूँ, मोहन सुंदर बर कौं—७३८।

छाँड़ना—क्रि. स. [सं. छर्दन, प्रा. छड्डन] छोड़ना।

छाँड़ि—क्रि. स. [हिं. छाँड़ना] **छोड़ कर, त्याग कर।** उ.—छाँड़ि सुखधाम अरु गरुड़ तजि साँवरौ पवन के गवन तैं अधिक धायौ—१-५।

छाँड़िबो—क्रि. स. [हिं. छाँड़ना] **छोड़ देना।** उ.—कह्यौ भगवान सौं कहा यह कियौ तुम छाँड़िबो हुतौ या भलौ मारे—१० उ. २१।

छाँड़िहौं—क्रि. स. [हिं. छाँड़ना, छोड़ना] **छोड़ूँगा, जाने दूँगा।** उ.—अब लैहौं वह दाउँ, छाँड़िहौं नहिं बिन मारे—३-११।

छाँड़ी—क्रि. स. [हिं. छाँड़ना] **छोड़ दी, त्याग दी।** उ.—नीरस करि छाँड़ी सुफलकसुत जैसे दूध बिन साठी—२५३५।

छाँड़े—क्रि. स. [हिं. छाँड़ना] (१) **छोड़ते हैं, अलग होते हैं।** उ.—विपति परी तब सब सँग छाँड़े, कोउ न आवै नेरे—१-७६। (२) **त्याग कर, विमुख होकर।** उ.—गृह गृह प्रति द्वार फिरयौ तुमकौं प्रभु छाँड़े—१-१२४। (३) **छोड़ दिये, अलग किये, साथ न लिये।** उ.–कहि मुद्रिके, कहाँ तैं छाँड़े मेरे जीवन-मूरि—६-८३।

छाँड़ै—क्रि. स. [हिं. छाँड़ना] (१) **छोड़ता है, अलग करता है।** उ.—कारौ अपनौ रंग न छाँड़ै, अनरँग कबहुँ न होई—१-६३। (२) **त्यागता है, अग्राह्य समझता है।** उ.—खाद-अखाद न छाँड़ै अबलौं सब मैं साधु कहावै—१-१८६।

छाँड़ौंगे—क्रि. स. [हिं. छाँड़ना] **त्याग करूँगी।** उ.—चतुर नाइक सौं काम परयौ है कैसे ह्व छाँड़ौंगी—१५११।

छाँड्यौ—क्रि. स. [हिं. छाँड़ना] **संधान किया, लक्ष्य पर चलाया।** उ.—देख्यौ जब दिव्य बान निसिचर कर तान्यौ। छाँड़्यौ तब सूर हनू ब्रह्म-तेज मान्यौ—६-६६।

छाँद—संज्ञा स्त्री. [सं. छंद=बंधन] **पशुओं के पैर बाँधने की रस्सी, नोई।**

छाँदना—क्रि. स. [सं. छंदन=बंधन] (१) **रस्सी से बाँधना।** (२) **रस्सी से (पशु के पैर) बाँधना।** (३) **हाथ से पैर जकड़ कर पकड़ना।**

छांदस—वि. [सं.] (१) **वेद-संबंधी।** (२) **वेदपाठी।** (३) **रट्टू।** (४) **अल्पबुद्धि, मूर्ख।**

छाँदा—संज्ञा पुं. [हिं. छाँटना] **हिस्सा, भाग।**

संज्ञा पुं. [हिं. छानना] **बढ़िया भोजन।**

छांदोग्य—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **सामवेद का एक ब्राह्मण।** (२) **इस (छांदोग्य) ब्राह्मण का एक उपनिषद।**

छाँव—संज्ञा स्त्री. [हिं. छाँह] **छाँह, छाया, शरण, आश्रय।** उ.—रसमय जानि सुवा सेमर कौं चौंच घालि पछितायौ। कर्म-धर्म, लीला-जस, हरि-गुन इहिं रस छाँव न आयौ—१-५८।

छाँवड़ा—संज्ञा पुं. [हिं. छौना] (१) **पशु का छौना या बछड़ा।** (२) **छोटा बच्चा, बालक।**

छाँस—संज्ञा स्त्री. [हिं. छाँटना] (१) **भूसी या कन जो अनाज छाँटने-फटकने पर बचता है।** (२) **कूड़ा।**

छाँह, छाँहरि—संज्ञा स्त्री [सं. छाया] (१) **छाया।** उ.—हरषित भए नँदलाल बैठि तरु-छाँह मैं।

मुहा.—छाँह में होना—**आड़ में होना, छिपना।**

(२) **ऊपर से छाया हुआ स्थान।** (३) **बचाव का स्थान, शरण।** (४) **बचाव, रक्षा।** उ.—छाता लौं छाँह किये सोभित हरि-छाती—१-२३। (५) **परछाईं।**

मुहा.—छाँह न छूने देना—**पास न आने देना।** छाँह बचाना—**पास न जाना।** छाँह छूना—**पास जाना।**

(६) **पदार्थों का जल या शीशे में दिखायी देनेवाला प्रतिबिंब।** (७) **भूत-प्रेत का प्रभाव।**

छाँहगीर—संज्ञा पुं. [हिं. छाँह+फ़ा. गीर] (१) **छत्र, राजछत्र।** (२) **दर्पण, शीशा, आइना।**

छाँही—संज्ञा स्त्री. [हिं. छाँह] **छाया, परछाईं।**

छाइ—क्रि. अ. [हिं. छाना] (१) **आसक्त (है), रम (रहा है)।** प्र.—छाइ रह्यौ—**आसक्त हुआ है, रम रहा है।** उ.—मैं कछू करिवे छाँड़्यौ, या सरीरहिं पाइ। तऊ मेरौ मन न मानत, रह्यौ अघ पर छाइ—१-१६६। (२) **फैलकर, भरकर।** उ.—रावन कह्यौ सो कह्यौ न जाई, रह्यौ क्रोध अति छाइ—६-१०४।

क्रि. स. [सं. छादन] (१) **फैलाकर, बिछाकर।** उ.–तब लौं तुरत एक तौ बाँधौं, द्रुम पाखाननिछाइ। द्वितीय सिंधु सिय-नैन-नीर ह्वै, जब लौं मिलै न आइ—६-११०। (२) **(मंडप आदि) छा कर।** उ.—लगन लै जु बरात साजी उनत मंडप छाइ—१० उ. १३।

छाईं—संज्ञा स्त्री. [हिं. छाँह] (१) **छाँह, छाया**। (२) **प्रतिबिंब**। उ.—छैलनि कै सँग यौं फिरै जैसैं तनु सँग छाईं (हो)—१-४४।

छाई—क्रि. अ. [हिं. छाना] (१) **फैली, भर गयी**। उ.—(क) लई विमान चढ़ाइ जानकी कोटि मदन छबि छाई—९-१६२। (ख) चित्र बिचित्र सुभग चौतनिया इंद्रधनुष छबि छाई—सारा. १७२। (ग) भीर भई दसरथ कैं आँगन सामबेद धुनि छाई—१-१७। (२) **ढक गयी, आच्छादित हो गयी**। उ.—अति आनन्द होत गोकुल मैं रतन भूमि सब छाई—१०-२१।

संज्ञा स्त्री. [सं. क्षार] (१) **राख**। (२) **पाँस**।

छाउँ—संज्ञा स्त्री. [हिं. छाँह] **छाया, छाँह**। उ.—कामधेनु, चिंतामनि, दीन्हौं कल्पवृच्छ-तर छाउँ—१-१६४।

छाए—क्रि. अ. [हिं. छाना] (१) **फैल गये, बिछ गये, भर गये**। उ.—आनँद मगन सब अमर गगन छाए पुहुप बिमान चढ़े पहर पहर के—१०-३०। (२) **डेरा डाले थे, बसे हुए थे, टिके थे**। उ.—(क) बंदीजन अरु भिच्छुक सुनि-सुनि दूरि दूरि तैं छाए। इक पहिलैं ही आसा लागे, बहुत दिननि तैं छाए—१०-३५। (ख) अंग-अंग प्रति मार निकर मिलि, छबि-समूह लै लै मनु छाए—१०-१०४।

छाक—संज्ञा स्त्री. [हिं. छकना] **दोपहर का भोजन**। उ.—(क) मध्य गोपाल-मंडली मोहन, छाक बाँटि कै लेत—४१६। (ख) अहिर लिए मधु-छाक तुरत बृंदाबन आए—४३७। (ग) छाक लेन जे ग्वाल पठाए—४५४। (घ) जाति-पाँति सबकी हौं जानौं, बाहिर छाक मँगाई। ग्वालनि कैं संग भोजन कीन्हौं, कुल कौं लाग लगाई—१-२४४। (२) **तृप्ति, तुष्टि**। (३) **नशा, मस्ती**। (४) **मैदे के सुहाल, माठ**।

छाकना—क्रि. अ. [हिं. छकना] (१) **खा-पीकर अघाना या तृप्त होना**। (२) **मद पीकर मस्त होना**।

क्रि. अ. [हिं. छकना] **हैरान या चकित होना**।

छाकी—वि. [हिं. छकना] **मस्त, नशे में भरी हुई**। उ.—नित रहत मदन मद छाकी—१० उ. २४।

छाके—वि. [हिं. छाकना] **छके हुए, मस्त, तृप्त**। उ.—धाइ धाइ द्रुम भेंटई ऊधौ छाके प्रेम—३४४३।

छाकैं—संज्ञा स्त्री. सवि. [हिं. छाक] **छाक, दोपहर का भोजन**। उ.—(क) घर-घर तैं छाकैं चलीं मानसरोवर-तीर। नारायन भोजन करैं, बालक संग अहीर—४९२। (ख) छाकैं खात खवावत ग्वालन सुंदर जमुना-तीर—सारा. ४६६।

क्रि. स. [हिं. छाकना] **हैरान करते हैं**।

क्रि. अ.—**तृप्त होते या अघाते हैं**।

छाक्यौ—क्रि. स. भूत. [हिं. छकना] **तृप्त हुआ, उन्मत्त हुआ**। उ.—(क) ते दिन बिसरि गए इहाँ आए। अति उन्मत मोह-मद छाक्यौ, फिरत केस बगराए—१-३२०। (२) कछु करि गए तनक चितवनि मैं यातैं रहत प्रेम-मद छाक्यौ—२५४६।

छाग—संज्ञा पुं. [सं.] **बकरा**।

छागन—संज्ञा पुं. [सं.] **उपले की आग**।

छागर, छागल—संज्ञा पुं. [सं. छागल] (१) **बकरा**। (२) **बकरे की खाल की बनी चीज**।

संज्ञा स्त्री. [हिं. साँकल] **स्त्रियों के पैर का एक घुँघरूदार गहना, झाँझ, झाँझन**।

छाछ—संज्ञा स्त्री. [सं. छच्छिका] (१) **पनीला दही, मट्ठा, मही**। उ.—राजनीति जानौ नहीं, गोसुत चरवारे। पीवौ छाछ अघाइकै, कब के रयवारे—१-२३८। (२) **घी तपने पर नीचे बैठनेवाला मट्ठा**।

छाछठ—संज्ञा पुं. [हिं. छासठ] **छासठ की संख्या**।

छाछि—संज्ञा स्त्री. [हिं. छाछ] **मही, मट्ठा**।

छाज—संज्ञा पुं. [सं. छाद] (१) **अनाज फटकने का सूप**।

मुहा.—छाज सी दाढ़ी—**लंबी दाढ़ी**। छाजों मेंह बरसना—**मूसलाधार पानी बरसना**।

(२) **छाजन, छप्पर**। (३) **गाड़ी के कोचवान के सामने का छज्जा**। (४) **मकान का छज्जा**। उ.—ऊँचे अटनि छाज की सोभा सीस ऊँचाइ निहारी—२५६२।

छाजत—क्रि. अ. [हिं. छाजना] **शोभा देता है, भला लगता है, फबता है**। उ.—युद्ध को करत छाजत नहीं है तुम्हैं—१० उ. ३१।

छाजति—क्रि. अ. स्त्री. [हिं. छाजना] (१) **सुशोभित होती है शोभा बढ़ाती है।** उ.—(क) पीत झँगुलिया की छबि छाजति, बिज्जुलता सोहति मनु कंदहिं— १०-१०७। (ख) भृगु-पद-रेख स्याम-उर सजनी, कहा कहौं ज्यौं छाजति—६३८।

छाजन—संज्ञा पुं. [सं. छादन] **वस्त्र, कपड़ा।**

संज्ञा स्त्री—**छान, छप्पर, खपरैल।**

छाजना—क्रि. अ. [सं. छादन] (१) **फबना, भला लगना, ठीक जान पड़ना।** (२) **सुशोभित होना।**

छाजा—संज्ञा पुं. [सं. छाद] **छज्जा।** उ.—ऊँचे भवन मनोहर छाजा, मनि कंचन की भीति—१० उ. ६६।

छाजी—क्रि. अ. [हिं. छाजना] **फबी, भली लगी।** उ.—यह गति करत नहीं छाजी—२६६५।

छाजैं—क्रि. अ. [हिं. छाजना] **सुंदर लगते हैं, सुशोभित हैं।** उ.—गोवर्धन बिंदाबन जमुना सघन कुंज अति छाजैं—सारा. ४६२।

छाजै—क्रि. अ. [हिं. छाजना] (१) **सुशोभित होता है।** उ.—जसुमति दधि-माखन करति, बैठी बर धाम अजिर, ठाढ़े हरि हँसत नान्हि दँतियनि छबि छाजै—१०·१४६। (२) **शोभा देती है, भली लगती है, फबती है, उपयुक्त जान पड़ती है।** उ.—(क) चित्रित बाँह पहुँचिया पहुँचै, हाथ मुरलिया छाजै— ४५१। (ख) पल्लव हस्त मुद्रिका भ्राजै। कौस्तुभ मनि हृदयस्थल छाजै—६२५।

छाड़ना—क्रि. अ. [सं. छर्दि] **वमन या कै करना।**

क्रि. स. [हिं. छाँड़ना] **छोड़ना, त्यागना।**

छाड़ौ—क्रि. स. [हिं. छाँड़ना] **त्यागो।** उ.—छाड़ौ नहिं स्याम-स्यामा की बृंदावन रजधानी—१-८७।

छाड़्यौ—क्रि. स. भूत. [हिं. छाँड़ना] **छोड़ा, त्यागा।** उ.—(क) संग लगाइ बीचि ही छाँड़्यौ, निपट अनाथ अकेलौ—१-१७५। (ख) पांडव सब पुरुषारथ छाँड़्यौ, बाँधे कपट-बचन की बेरी—१-१५१।

छात—संज्ञा पुं. [सं. छत्र, प्रा. छत्त] (१) **छाता, छतरी।** (२) **राजछत्र।** (३) **आश्रय, आधार।**

वि—[सं.] (१) **छिन्न।** (२) **दुबला-पतला।**

संज्ञा स्त्री. [हिं. छत] **छत, छाजन।**

छाता—संज्ञा पुं. [सं. छत्र, प्रा. छत्त] (१) **छतरी।** उ.—छाता लौं छाँह किए सोभित हरि छाती—१-२३। (२) **छत्ता, खुमी।** (३) **चौड़ी छाती।** (४) **छाती की चौड़ाई की नाप।**

छाती—संज्ञा स्त्री. [सं. छादिन्, छादी = आच्छादन करनेवाला] (१) **वक्षस्थल, सीना।**

मुहा.—छाती का जम—(१) **दुखदायी व्यक्ति।** (२) **ढीठ आदमी।** छाती पर का पत्थर (पहाड़)–(१) **चिंतित करनेवाली वस्तु।** (२) **सदा कष्ट देनेवाली वस्तु।** छाती कूटना (पीटना)—**शोक से छाती पर हाथ मारना।** छाती के किवाड़ खुलना—(१) **छाती फटना।** (२) **गहरी चीख निकलना।** (३) **ज्ञान का उदय होना।** छाती तले रखना–(१) **पास ही रखना।** (२) **बड़े प्रेम से रखना।** छाती तले रहना–(१) **पास रहना।** (२) **प्रिय होकर रहना।** छाती दरकना (फटना) —(१) **दुख से मानसिक कष्ट होना।** (२) **ईर्ष्या से जलना, कुढ़ना।** छाती निकाल कर चलना—**ऐंठकर चलना।** छाती पत्थर की करना—**अधिक से अधिक कष्ट या हानि सहने को तैयार होना।** छाती पर मूँग (कोदों) दलना—(१) **सामने ही ऐसा काम करना जिससे कोई कुढ़े।** (२) **बहुत कष्ट देना।** छाती पर चढ़ना—**कष्ट देने के लिए पास जाना।** छाती पर धर कर ले जाना—**अपने साथ परलोक ले जाना।** छाती पर पत्थर रखना—**दुख सहने को तैयार होना।** छाती पर बाल होना—**उदार और न्यायप्रिय होना।** छाती पर साँप लोटना (फिरना)—(१) **दुख से मानसिक कष्ट मिलना।** (२) **ईर्ष्या, डाह या जलन होना।** छाती पीटना—**दुख या शोक से छाती पर हाथ पटकना।** छाती फुलाना—(१) **अकड़ कर चलना।** (२) **घमंड करना।** छाती से पत्थर टलना— **चिंता का कारण सरलता से दूर होना।** (२) **बेटी का ब्याह हो जाना।** छाती से लगना—**गले लगना।** छाती से लगाना—**प्यार से गले लगाना।** छाती से लगाकर रखना—(१) **पास ही रखना।** (२) **प्रेम से रखना।** बज्र की छाती—**ऐसा कठोर हृदय जो बड़े से बड़ा कष्ट सहकर भी न फटे।** उ.—(क)

निकसि न जात प्रान ए पापी फाटत नाहिं बज्र की छाती—२८८२। (ख) बिहरत नाहिं बज्र की छाती हरि बियोग क्यों सहिए—३४३५।

(२) **कलेजा, हृदय, जी, मन।**

मुहा.—छाती उड़ी जाना—**दुख या कमजोरी से जी घबड़ाना।** छाती उमड़ आना—**प्रेम या दया से जी भर आना।** छाती छलनी होना—**दुख सहते-सहते या कुढ़ते-कुढ़ते जी ऊब जाना।** छाती जलना—(१) **अजीर्ण आदि के कारण हृदय में जलन जान पड़ना।** (२) **बड़े कष्टों के कारण मानसिक संताप होना।** (३) **ईर्ष्या या क्रोध से जी जलना या कुढ़ना।** छाती जरत—(१) **कष्ट मिलता है।** उ.—काम पावक जरत छाती लोन लायौ आनि—३३५५। (२) **जी कुढ़ता है, डाह होती है।** उ.—वह पापिनी दाहि कुल आई देखि जरत मोहिं छाती। छाती जलाना—(१) **मानसिक कष्ट पहुँचाना।** (२) **कुढ़ाना, जी जलाना।** छाती जारहु—**मानसिक कष्ट दो।** उ.—सूर न होई स्याम के मुख को जाहु न जारहु छाती—३१०६। छाती जुड़ाना—(१) **क्रि. अ.—मन की इच्छा पूरी होना।** (२) **क्रि. स.—मन की इच्छा पूरी करना।** छाती ठंडी करना—**मन की इच्छा पूरी करना।** छाती ठंडी होना—**मन की इच्छा पूरी होना।** छाती ठुकना—**हिम्मत बँधना।** छाती ठोंकना—**कठिन काम करने की हिम्मत बाँधना।** छाती धड़कना—**भय या आशंका से जी धक धक होना।** छाती थाम कर (पकड़कर) रह (बैठ) जाना—**मानसिक कष्ट या गहरी हानि सहने को लाचार हो जाना।** छाती पक जाना—**कष्ट सहते सहते जी ऊब जाना।** छाती पत्थर की करना—**भारी कष्ट या गहरी हानि सहने को तैयार होना।** छाती पत्थर की होना—**जी इतना कठोर करना कि भारी कष्ट या गहरी हानि सह लेना।** छाती पर फिरना—**बारबार याद आना।** छाती भर आना—**प्रेम या दया से जी गद्‌गद् होना।** छाती मसोसना—**कष्ट या हानि सहने को लाचार होना।** छाती में छेद होना (पड़ना)—**कुढ़ते-कुढ़ते कलेजा छलनी हो जाना** छाती से लाना—**आलिंगन करना।** छाती लै लावत—**कलेजे से लगाती है।** उ.—निरखत अंक स्याम सुंदर के बारबार लावत लै छाती—२६७७। छाती सों लाई—**कलेजे से लगाकर।** उ.—निसि बासर छाती सों लाई बालक लीला गाई—३४३५।

(३) **स्तन, कुच।**

मुहा.—छाती उभरना—**किशोरावस्था के पश्चात स्त्रियों के स्तन उठना या उभरना।** छाती देना—**दूध पिलाना।** छाती भर आना—(१) **दूध उतरना** (२) **प्रेम या दया उमड़ना, आँख में आँसू आ जाना।**

(४) **हिम्मत, साहस, दृढ़ता।**

छात्र—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **विद्यार्थी।** (२) **मधु।** (३) **छत्रया नामक मधुमक्खी।** (४) **इसका मधु।**

छात्रवृत्ति—संज्ञा स्त्री. [सं.] **धन जो विद्यार्थी को अध्ययन के लिए सहायतार्थ दिया जाय।**

छात्रालय, छात्रावास—संज्ञा पुं. [सं.] **बाहरी छात्रों के रहने या ठहरने का स्थान।**

छादक—संज्ञा पुं. [सं.] **छाने या ढकनेवाला।**

छादन—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **छाने या ढकने का काम।** (२) **वह जिससे छाया या ढका जाय।** (३) **छिपाव।**

छादित—वि. [सं.] **छाया या ढका हुआ।**

छादी—वि. [हिं. छादन] **ढकनेवाला।**

छाद्मिक—वि. [सं.] (१) **जो अपना वेश छिपाये हो।** (२) **पाखंडी, मक्कार।** (३) **बहुरूपिया।**

छान—संज्ञा स्त्री. [सं. छादन=छाजन] **छप्पर।**

संज्ञा स्त्री. [सं. छंद=बंधन] **पशु के पैर बाँधने की रस्सी, बंधन, नोई।**

छानत—क्रि. स. [हिं. छानना] (१) **ढूँढ़ते हैं, खोजते हैं।** उ.—परम कुबुद्धि, तुच्छ-रस लोभी, कौड़ी लगि मग की रज छानत—१-११४। (२) **छानते हैं।** उ.—अतिशय सुकृत-रहित, अघ-व्याकुल, बृथा स्रमित रज छानत—१-२०१।

छानन—संज्ञा स्त्री. [हिं. छानना] **छानने पर बच रहने वाली मोटी चीज जो छन न सके।**

छाननहार—संज्ञा पुं. [हिं. छानना+हार (प्रत्य.)] (१) **छाननेवाला।** (२) **अलग करनेवाला।**

छानना—क्रि. स. [सं. चालन या क्षरण] (१) किसी पिसी या तरल चीज को महीन कपड़े के पार इसलिए निकालना कि कूड़ा-करकट या मोटा अंश ऊपर ही रह जाय। (२) मिली-जुली चीजों को अलग करना। (३) जाँच-पड़ताल करना (४) ढूँढ़ना, खोज करना। (५) छेद कर आर-पार करना। (६) नशा पीना।

क्रि. स. [सं. छंदन, हिं. छादना] (१) रस्सी से बाँधना या जकड़ना। (२) पशु के पैर बाँधना।

छानबीन—संज्ञा स्त्री. [हिं. छानना+बीनना] (१) जाँच-पड़ताल, गहरी खोज। (२) विचार, विवेचना।

छाना—क्रि. स. [सं. छादन] (१) ढकना, आच्छादित करना। (२) ऊपर तानना या फैलाना। (३) बिछाना। (४) शरण में लेना।

क्रि. अ. (१) बिछ जाना, भर जाना, फैलना। डेरा डालना, बसना, रहना, टिकना।

छानबे—संज्ञा पुं. [सं. षण्णवति, प्रा. षण्णवइ या छः+नब्बे] नब्बे और छः की संख्या।

छानि, छानी—संज्ञा स्त्री. [सं. छादन=छाजन, हिं. छान] छप्पर, घासफूस की छाजन। उ.—टूटी छानि मेघ जल बरसै टूटे पलँग बिछइये—१-२३६।

क्रि. स.—ढक कर, आच्छादित करके। उ.—मैं अपने मंदिर के कोनैं राख्यौ माखन छानि—१०-२८०।

छाने छाने—क्रि. वि.—छिपे-छिपे, चुपके से, छिपाकर।

छान्यौ—क्रि. स. [हिं. छानना] महीन कपड़े में छान ली। उ.—मैदा उज्ज्वल करिकै छान्यौ—१००४।

छाप—संज्ञा स्त्री. [हिं. छापना] (१ खुदे या उभरे हुए ठप्पे का निशान। (२) किसी चीज के गड़ने से बननेवाला चिह्न। उ.—कंकन बलय पीठि गड़ि लागे उर पर छाप बनाए हो—२०११। (३) मुहर-चिह्न, मुद्रा। उ.—(क) दान दिंए बिनु जान न पैहौ। माँगत छाप कहा दिखराओ को नहिं हमको जानत। सूर-स्याम तब कह्यो ग्वारि सौं तुम मोकौं क्यौं मानत। (ख) आजुहिं दान पहिरि ह्याँ आए कहाँ दिखावहु छाप—१०८८। (४) वैष्णवों के अंगों पर मुद्रित शंख, चक्र, आदि के चिह्न, मुद्रा। उ.—मेटे क्यौं हूँ नं मिटति छाप परी टटकी। सूरदास-प्रभु की छबि हिरदय मौं अटकी। (५) अन्न की राशि पर लगाया जानेवाला चिह्न, चाँक। (६) अँगूठी जिस पर अक्षर या नाम का ठप्पा रहता है। (७) उपनाम।

संज्ञा स्त्री. [सं. क्षेप=खेप] (१) लकड़ी का बोझ। (२) टोकरी जिससे पानी उलीचा जाता है।

छापक—वि. [हिं. छापा] छोटा।

छापना—क्रि. स. [सं. चपन] (१) (आकृति आदि) चिह्नित करना। (२) अंकित करना। (३) (पुस्तक आदि) मुद्रित करना।

छापा—संज्ञा पुं. [हिं. छापना] (१) उभरा या खुदा हुआ साँचा या ठप्पा। (२) मुहर, मुद्रा। (३) ठप्पे या मुद्रा का चिह्न। (४) वैष्णवों के अंगों पर गुदे हुए शंख, चक्र आदि के चिह्न। (५) शुभ कार्यों में हल्दी आदि से लगाया जानेवाला हाथ का चिह्न, थापा। (६) मुद्रा यंत्र। (७) अन्न की राशि पर चिह्न डालने का ठप्पा। (८) किसी वस्तु की नकल। (९) असावधान शत्रु पर वार या धावा।

छाम—वि. [सं. क्षाम] दुबला-पतला, कृश।

छामोदरी—वि. [सं. क्षाम+उदर] जिसका पेट छोटा (और सुंदर लगनेवाला) हो।

छाय—संज्ञा स्त्री. [सं. छाया।] परछाहीं।

छायल—संज्ञा पुं. [हिं. छाना] स्त्रियों का एक पहनावा।

छायांक—संज्ञा पुं. [सं. छाया+अंक] चंद्रमा

छाया—संज्ञा पुं. [सं.](१) (पेड़ आदि का) साया। (२) वह स्थान जहाँ सूर्य आदि का प्रकाश न पड़े। (३) परछाईं। (४) जल, दर्पण आदि में दिखायी देनेवाली वस्तु या व्यक्ति की आकृति। (५) प्रतिकृति, अनुहार। उ.—जनक-तनया धरी अगिनि मैं, छाया-रूप बनाइ—९-६०। (६) नकल, अनुकरण। (७) सूर्य की एक पत्नी। (८) कांति। (९) शरण, रक्षा। (१०) घूस, रिश्वत। (११) पंक्ति। (१२) एक छंद। (१३) एक रागिनी। (१४) भूत-प्रेत का प्रभाव।

छायाग्राहिणी—संज्ञा स्त्री. [सं.] एक राक्षसी जो छाया पकड़ कर जीवों को खींच लिया करती थी।

छायातन—संज्ञा पुं. [सं. छाया+तन] वह जिसका शरीर छाया से बना हो, निराकार।

छायादान—संज्ञा पुं. [सं.] एक तरह का दान।
छायादार—वि. [सं. छाया+दार] जहाँ छाया हो।
छायापथ—संज्ञा पुं. [सं.] (१) आकाश। (२) आकाशगंगा।
।पुरुष—संज्ञा पुं. [सं.] आकाश म दृष्टि स्थिर करने पर दिखायी देनेवाली छायाकृति।
छायाभ—वि. [सं. छाला+भ] छाया से युक्त।
छायालोक—संज्ञा पुं. [सं.] अदृश्य जगत, स्वप्नलोक।
छायावाद—संज्ञा पुं. [सं.] एक सिद्धांत जिसमें लाक्षणिक प्रयोगों के आधार पर अव्यक्त के प्रति प्रणय, विरह आदि के भाव प्रकट किये जाते हैं।
छायावादी—वि. [सं] छायावाद-संबंधी। (२) छायावाद के सिद्धांत या उसकी पद्धति का समर्थक।
छाये—क्रि. अ. [हिं. छाना] लगे थे, रत थे। उ.—जहँ जड़भरत कृपी मैं छाये—५-३।
छायौ—क्रि. अ. [हिं. छाना] (१) फैल गया, छा गया। उ.—(क) गह्यौ गिरि पानि जस जगत छायौ—१-५। (ख) प्रात इंद्र कोपित जलधर लै ब्रजमण्डल पर छायौ—३०२१। (ग) चक्रबात ह्वै सकल घोष मैं रज धुंधर ह्वै छायौ—सारा. ४२८। (२) डेरा डाला, बसे रहे, टिके। उ.—(क) कहा भयो जो लोग कहत हैं कान्ह द्वारका छायौ। (ख) किहि मातुल कियौ जगत जस कौन मधुपुरी छायौ-३०७१।
क्रि. स. [सं. छादन] छप्पर आदि ताना या छाया। उ.—प्रीति जानि हरि गए विदुर कै, नामदेव-घर छायौ—१-२०।
छार—संज्ञा पुं. [सं. क्षार] (१) वनस्पतियों या धातुओं की राख का नमक। (२) खारी नमक या पदार्थ। (३) राख, खाक, भस्म मिट्टी। उ.—(क) जग मैं जीवत ही कौ नातौ। मन बिछुरैं तन छार होइगौ, कोउ न बात पुछातौ—१-३०२। (ख) धिक धिक जीवन है अब यह तन क्यौं न होइ जरि छार—९-८३। (ग) लंक जाइ छार जब कीनी—१०-२२१।
मुहा.—छार-खार करना—भस्म या नष्ट करना।
(४) धूल, गर्दा।
छाल—संज्ञा स्त्री [सं. छल्ल, छाल] (१) पेड़ की शाखा टहनी आदि का ऊपरी बक्कल। (२) एक मिठाई। (३) चीनी जो बहुत साफ न हो।
छालना—क्रि. अ. [सं. चालन्] (१) (आटा-आदि) छानना, चालना। (२) बहुत से छेद कर डालना।
छाला—संज्ञा पुं. [हिं. छाल] (१) छाल, चमड़ा। (२) जलने या रगड़ने से पड़नेवाला फफोला या झलका।
छालित—वि. [सं. प्रक्षालित] धोया हुआ।
छाली—संज्ञा स्त्री. [हिं. छाला] कटी हुई सुपारी।
छालो—संज्ञा पुं. [सं. छागल, प्रा. छाअलो] बकरा।
छावँ—संज्ञा स्त्री. [सं. छाया] (१) छाँह, छाया। (२) शरण, आश्रय। (३) अक्स, प्रतिबिंब।
छाव—क्रि. अ. [हिं. छाना] छा गया है, फैल रहा है। उ.—जे पद कमल सुरसरी परसे तिहुँ भुवन जस छाव—२४८४।
छावत—क्रि. अ. [सं. छादन, हिं. छाना] (१) फैलाती है, बिखराती है। उ.—वै देखौ रघुपति हैं आवत। दूरिहिं तैं दुतिया के ससि ज्यौं, ब्योम बिमान महा-छवि छावत—९-१६२। (२) चारों ओर छा जाती है। उ.—पावस विविध बरन बर बादर उड़ि नहि अंबर छावत—२८३५।
छावन—क्रि. स. [हिं. छाना] (१) छाने (के लिए,) तानने या फैलाने (के लिए)। उ.—तीनि पैंड़ बसुधा हौं चाहौं परनकुटी कौं छावन ८-१३। (२) रहने या बसने (के लिए)। उ.—हौं इह बात कहा जानौं प्रभु जात मधुपुरी छावन—३१०१ और ३१९६।
छावना—क्रि. स. [हिं. छाना] छाना, तानना।
छावनी—संज्ञा स्त्री. [हिं. छाना] (१) छप्पर, छान। (२) डेरा, पड़ाव (३) सेना के रहने का स्थान।
छावरा—संज्ञा पुं. [सं. शावक] छौना, बच्चा।
छावा—संज्ञा पुं. [सं. शावक] (१) छौना, बच्चा। (२) पुत्र, बेटा। (३) जवान हाथी।
छावैं—क्रि. अ. [हिं. छाना] एकत्र हो जाते हैं। उ.—सुर-मुनि देव कोटि तैंतीसौ कौतुक अंबर छावैं-१०-४५।
छावै—क्रि. अ. [हिं. छाना] बिखरती है, फैलती है, भर जाती है। उ.—गंधबास दस जोजन छावै—५-२।

छिनछवि, छिनौछवि—संज्ञा स्त्री. [सं. क्षण+छवि] **क्षण भर चमकनेवाली बिजली।**

छिनदा—संज्ञा स्त्री. [सं. क्षणदा] **रात।**

छिनना—क्रि. अ. [हिं. छीनना] **छिन जाना।**

क्रि. स. [सं. छिन्न] **छेनी या टाँकी से कटना।**

छिनभंग—वि. [सं. क्षणभंगुर] **शीघ्र नष्ट होनेवाला।**

छिनाइ, छिनाई—क्रि. स. [हिं. छिनाना] **छीनकर, हरण करके।** उ.—(क) इंद्र-हाथ तैं बज्र छिनाइ—६-५। (ख) लियौ सुरनि सौं अमृत छिनाइ—७-७। (ग) ग्वारनि पै लै खात हैं जूठी छाक छिनाइ—११२६। (घ) असुर सब अमृत लै गए छिनाई—८-८। (ङ) सिंधु मथि सुरासुर अमृत बाहर कियौ, बलि असुर लै चल्यौ सो छिनाई—८-६।

छिनाए—क्रि. स. [हिं. 'छीनना' का प्रे.] **छिनवाए, हरण कराए।** उ.—द्रौपदि के तुम वस्त्र छिनाए—१-२८४।

छिनाना—क्रि. स. [हिं. छीनना] **छीनने का काम कराना।**

क्रि. स.—**छीनना, हरण करना।**

क्रि. स. [सं. छिन्न] **टाँकी या छेनी से कटाना।**

छिनायौ—क्रि. स. [हिं. छिनाना] **छीन लिया, हरण किया।** उ.—भयौ आनंद सुर-असुर कौं देखि कै, असुर तब अमृत करि वल छिनायौ—८-८।

छिनार, छिनारि—वि. स्त्री. [हिं. छिनाल] **व्यभिचारिणी, कुलटा।** उ.- मैं बेटी बृषभानु महर की, मैया तुमकौ जानति। जमुना-तट बहु बार मिलन-भयौ, तुम नाहिंन पहिचानति। ऐसी कहि वाकौं मैं जानति, वह तौ बड़ी छिनारि—७०३।

छिनारौ—संज्ञा पुं. [हिं. छिनाल] **व्यभिचार।** उ.—चोरी रही, छिनारौ अब भयौ, जान्यौ ज्ञान तुम्हारौ। औरै गोप-सुतनि नहिं देखौ, सूर स्याम हैं बारौ—७७३।

छिनाल—वि. स्त्री. [सं. छिन्न+नारी, पू. हिं. छिनारि] **व्यभिचारिणी, कुलटा।**

छिनालपन, छिनालपना, छिनाला—संज्ञा पुं. [हिं. छिनाल+पन] **व्यभिचार।**

छिन्न—वि. [सं.] **कटा हुआ, खंडित।**

छिन्नभिन्न—वि. [सं.] (१) **कटा-फटा।** (२) **नष्ट-भ्रष्ट।** (३) **जिसका क्रम ठीक न हो, तितर-बितर।**

छिपकली—संज्ञा स्त्री. [हिं. चिपकना] (१) **एक जंतु।** (२) **कान में पहनने का एक गहना।**

छिपना—क्रि. अ. [सं. क्षिप+डालना] (१) **ओट में होना।** (२) **अदृश्य होना।** (३) **जो स्पष्ट न हो, गुप्त।**

छिपाइ—क्रि. स. [हिं. छिपाना] **छिपा लिया, ओट में कर लिया।** उ.—च्यवन रिषीस्वर बहु तप कियौ। ....। वामी ताकौं लियौ छिपाइ। तासौं रिषि नहिं देइ दिखाइ—६-३।

छिपाए—क्रि. स. [हिं. छिपाना] **ढँके हुए, आड़ में किये हुए, दृष्टि से ओझल किये हुए।** उ.—सकुचत फिरत जो बदन छिपाए, भोजन कहा मँगइयै—१-२३६।

छिपाछिपी—क्रि. वि. [हिं. छिपना] **चुपचाप।**

छिपाना—क्रि. स. [सं. क्षिप+डालना] (१) **ओट या आड़ में करना।** (२) **प्रकट न करना, गुप्त रखना।**

छिपाव—संज्ञा पुं. [हिं. छिपना] **दुराव, गोपन।**

छिपावति—क्रि. स. स्त्री. [हिं. छिपाना] **छिपाती है, प्रकट नहीं करती।** उ.—राधे हरि-रिपु क्यौं न छिपावति—सा. उ. ११।

छिपी—क्रि. अ. स्त्री. [हिं. छिपना] **प्रकट न हुई, गुप्त है, अस्पष्ट है।** उ.—मो सम कौन कुटिल खल कामी। तुम सौं कहा छिपी करुनामय, सब कैं अंतरजामी—१-२४८।

छिप्यौ—क्रि. अ. [हिं. छिपना] **छिप गया, ओट में हो गया।** उ.—सो हत्या तिहिं लागी धाइ। छिप्यौ सो कमलनाल मैं जाइ—६-५।

छिप्र—क्रि. वि. [सं. क्षिप्र] **शीघ्र, तुरंत।**

छिमा—संज्ञा स्त्री. [सं. क्षमा] **क्षमा।**

छिया—संज्ञा स्त्री. [सं. क्षिम, प्रा. छिव, हिं. छि:] (१) **घृणित वस्तु, घिनौनी चीज।** (२) **मल, गलीज, मैला।**

मुहा.—मल और वमन के समान घृणित समझ कर, घिना कर। उ.—जन्म तैं एक टक लागि आसा रही विषय-बिष खात नहिं तृप्ति मानी। जो

छिया छरद करि सकल संतन तजी, तासु तैं मूढ़मति प्रीति ठानी—१-११० ।

वि.—(१) **मैला, मलिन ।** (२) **घृणित ।**

संज्ञा स्त्री. [हिं. वछिया] **छोकरी, लड़की ।**

छियालीस—संज्ञा स्त्री. [सं. षट्चत्वारिंश, हिं. छः+ चालीस] **चालीस और छः की संख्या ।**

छियासी—संज्ञा स्त्री. [सं. षडशीति, पा. छासीति, प्रा. छासी] **अस्सी और छः की संख्या ।**

छिरक—क्रि. स. [हिं. छिड़कना] **छिड़ककर, छींटा देकर ।** उ.—भरि गंडूष, छिरक दै नैननि, गिरिधर भाजि चले दै कीकें—१०-२८७ ।

छिरकत—क्रि. स. [हिं. छिड़कना] **छिड़कते हैं, (हलके) छींटे डालते हैं ।** उ.—(क) छिरकत हरद दही, हिय हरषत, गिरत अंक भरि लेत उठाई—१०-१९ । (ख) मिलि नाचत करत कलोल, छिरकत हरद-दही—१०-२४ ।

छिरकना—क्रि. स. [हिं. छिड़कना] **छिड़कना ।**

छिरकावन—संज्ञा पुं. [हिं. छिड़काव] **(पानी जैसे द्रव पदार्थ) छिड़कने की क्रिया, छींटों से तर करना ।** उ.—चोवा-चंदन-अबिर, गलिनि छिरकावन रे—१०-२८ ।

छिरकि—क्रि. स. [हिं. छिड़कना] **छिड़ककर, छींटा देकर ।** उ.—सोवत लरिकनि छिरक मही सौं, हँसत चले दै कूक—१०-३१७ ।

छिरकैं—क्रि. स. [हिं. छिड़कना] **छिड़कते हैं, छींटें फेंकते हैं ।** उ.—कनक कौ माट लाइ, हरद-दही मिलाइ, छिरकैं परस्पर छल-बल धाइकै—१०-३१ ।

छिरक्यौ—क्रि. स. [हिं. छिड़कना] **पानी छिड़का, छींटों से तर किया ।** उ.—चकित देखि यह कहैं नर-नारी । धरनि अकास बराबरि ज्वाला, झपटति लपट करारी । नहिं बरष्यौ, नहिं छिरक्यौ काहू, कैसैं गई बुझाइ—५९८ ।

छिरना—क्रि. अ. [हिं. छिलना] **छिल जाना ।**

छिलकना—क्रि. स. [हिं. छिड़कना] **छींटा डालना ।**

छिलका—संज्ञा पुं. [हिं. छाल] **फलों का ऊपरी आवरण ।**

छिलछिला, छिलछिलौ—वि. [हिं. छूछा+ला (प्रत्य.), छिछला] **(पानी की) उथली या कम गहरी सतह ।** उ.—देखि नीर जु छिलछिलौ जग, समुझि कछु मन माहिं । सूर क्यौं नहिं चलै उड़ि तहँ बहुरि उड़िबौ नाहिं—१-३३८ ।

छिलन—संज्ञा स्त्री. [हिं. छिलना] (१) **छिलने की क्रिया या भाव ।** (२) **खरोंच, खरोंचा ।**

छिलना—क्रि. अ. [हिं. छीलना] (१) **छिलका उतरना ।** (२) **खरोंच लगना ।** (३) **खुजली सी होना ।**

छिलाई, छिलाव, छिलावट—संज्ञा स्त्री. [हिं. छीलना] **छीलने की क्रिया या भाव ।**

छिलौरी—संज्ञा स्त्री. [हिं. छाला] **छोटा छाला ।**

छिल्लड़—संज्ञा पुं. [हिं. छिलका] **भूसी, छिलका ।**

छिहत्तर—संज्ञा स्त्री. [सं. षट्सप्तति, प्रा. छसत्तति, पा. छसत्तरि, छहत्तरि] **छः और सत्तर की संख्या ।**

छिहरना—क्रि. अ. [हिं. छितरना] **बिखरना, फैलना ।**

छिहाई—संज्ञा स्त्री. [हिं. छिहाना] (१) **ढेर लगाने का काम ।** (२) **चिता, सरा ।** (३) **मरघट ।**

छिहाना—क्रि. स. [सं. चयन] **ढेर लगाना ।**

छिहानी—संज्ञा स्त्री. [हिं. छिहाना] **श्मशान, मरघट ।**

छींक—संज्ञा स्त्री. [सं. छिक्का] **नाक-मुँह से सहसा और सवेग निकलनेवाला वायु का स्फोट । हिंदुओं में किसी काम के आरंभ में छींक होना अशुभ माना जाता है ।** उ.—(क) महर पैठत सदन भीतर, छींक बाईं धार । सूर नंद कहत महरि सौं, आज कहा बिचार—५२४ । (ख) छींक सुनत कुसगुन कह्यौ, कहा भयौ यह पाप । अजिर चली पछितात छींक कौ दोष निवारन—५८९ ।

मुहा.—छींक होना—**असगुन होना ।**

छींकना—क्रि. अ. [हिं. छींक] **छींक आना ।**

मुहा.—छींकते नाक काटना—**जरा जरा सी बात पर चिढ़ना या दंड देना ।**

छींका—संज्ञा पुं. [सं. शिक्य] (१) **पतली डोरी का जाल जिसमें कुछ रखा जाता है, सिकहर ।** (२) **झूला ।**

छींकी—क्रि. अ. [हिं. छींक] **छींकने लगी, छींक दी । (हिंदुओं में किसी काम के समय छींकना अशुभ माना जाता है)** । उ.—जसुमति चली रसोई भीतर, तबहिं

ग्वालि इक छींकी । ठठकि रही द्वारे पर ठाढ़ी, बात नहीं कछु नीकी—५४० ।

छींके—संज्ञा पुं. सवि. [सं. शिक्य, हिं. छींका] **छींके से, सीके से, सिकहर से** । उ.—ग्वाल के काँधैं चढ़े तब, लिए छींके उतारि—१०-२८६ ।

छींट—संज्ञा स्त्री. [सं. क्षिप्त, प्रा. छित्त] (१) **पानी आदि की बूँद** । उ.—राधे छिरकति छींट छबीली। कुच कुंकुम कंचुकि बँद टूटे, लटकि रही लट गीली । (२) **बूँद या छींट का चिह्न** । उ.—भभकि कै दंत तैं रुधिर धारा चली छींट छबि बसन पर भई भारी—२५६५ । (३) **कपड़ा जिस पर रंगीन बेल-बूँटे हों** ।

छींटना—क्रि. स. [हिं. छींट] **छींटे डालना** ।

छींटा—संज्ञा पुं. [हिं. छींट] (१) **बौछार, झड़ी** । (२) **छींट का चिह्न** । (३) **व्यंग्यपूर्ण उक्ति** ।

छींटि—क्रि. स. [हिं. छींटना] **छींटे देना, छींटों से भिगोना, छींटे छितरा कर** । उ.—गोरस तन छींटि रही, सोभा नहिं जाति कही, मानौ जल-जमुन बिंब उडुगन पथ केरौ—१०-२७६ ।

छींटैं—संज्ञा पुं. बहु० [हिं. छींटा] **छोटी-छोटी बूँदें** । उ.—आनन रही ललित पय छींटैं, छाजति छबि तृन तोरे—७३२ ।

छींदा—संज्ञा स्त्री. [सं. शिंबी, हिं. छीमी] **छीमी, फली** ।

छी—अव्य. [सं.] **घृणा या घिनसूचक शब्द** ।

मुहा.—छी छी करना—**घृणा प्रकट करना** ।

संज्ञा पुं. [अनु.] **वह शब्द जो कपड़ा धोते समय धोबियों के मुँह से निकलता है** ।

छीउल—संज्ञा पुं. [देश.] **पलाश, ढाक** ।

छीका—संज्ञा पुं. [सं. शिक्य] (१) **सीका, सिकहर** ।

मुहा.—छीका टूटना—**अनायास ऐसी घटना होना जिससे कुछ लाभ हो जाय** ।

(२) **झरोखा** । (३) **पशुओं के मुख पर पहनाया जानेवाला जाल** । (४) **झूला** ।

छीके—संज्ञा पुं. [हिं. छीका] **छीके के ऊपर** । उ.—अब कहि देउ कहत किन यौं कहि माँगत दही धरयौ जो है छीके।

छीछल—वि. [हिं. छिछला] **उथला, छिछला** ।

छीछालेदर—संज्ञा स्त्री. [हिं. छी छी] **दुर्गति** ।

छीज—संज्ञा स्त्री. [हिं. छीजना] **घाटा, कमी, घिसन** ।

छीजत, छीजतु—क्रि. अ. [हिं. छीजना] **क्षीण होता है, घटता है, ह्रास होता है** । उ.—(क) अंजलि के जल ज्यौं तन छीजत, खोटे कपट तिलक अरु मालहिं—१-७४ । (ख) बायस अजा सब्द की मिलवनि याही दुख तनु छीजतु—३३०१ ।

छीजना—क्रि. अ. [सं. क्षयण या क्षीण] (१) **घटना, कम होना** । (२) **अवनत होना, ह्रास होना** ।

छीजै—क्रि. अ. [हिं. छीजना] **क्षीण या कम होती है** । उ.—आयु भग्न-घट-जल ज्यौं छीजै—१-३४२ ।

छीतना—क्रि. स. [सं. छिद्र+ना (प्रत्य.)] (१) **मारना** । (२) **बिच्छू, भिड़ आदि का डंक मारना** ।

छीतस्वामी—संज्ञा पुं—**वल्लभाचार्य के शिष्य, अष्टछाप के एक वैष्णव कवि** ।

छीति—संज्ञा स्त्री. [सं. क्षति] (१) **हानि, घाटा** । (२) **बुराई** । उ.—तेरो तन धन रूप महा गुन सुंदर स्याम सुनी यह कीर्ति । सो करु सूर जेहि भाँति रहै पति जनि बल बाँधि बढ़ावहु छीति—३३६३ ।

छीति छान—वि. [सं. क्षति+छिन्न] **छिन्न-भिन्न** ।

छीदा—वि. [सं. छिद्र] (१) **जिसमें बहुत से छेद हों, झाँझरा** । (२) **जो घना न हो, विरल** ।

छीन—वि. [सं. क्षीण] (१) **दुबला, पतला, कृश** । उ.—(क) दिन-दिन हीन-छीन भइ काया दुख-जंजाल जटी—१-६८ । (ख) बुधि, बिबेक, बलहीन, छीन तन सबही हाथ पराए—१-३२० । (२) **शिथिल, मंद, मलिन** । उ.—पूँछ को तजि असुर दौरि के मुख गह्यौ, सुरन तब पूँछ की ओर लीनी । मंथत भए छीन तब बहुरि अस्तुति करी श्री महाराज निज सक्ति दीनी—८-८ । (३) **क्षीण, क्षय होने का भाव** । उ.—बहुरि कह्यौ, सुरपुर कछु नाहिं । पुन्य-छीन तिहिं ठौर गिराहिं—१-२६० ।

छीनचंद—संज्ञा पुं. [सं. क्षीण चंद] **द्वितीया का चाँद** ।

छीनता—संज्ञा स्त्री. [सं. क्षीणता] **दुबलापन** ।

छीनना—क्रि. स. [सं. छिन्न+ना (प्रत्य.)] (१) **छिन्न या अलग करना** । (२) **दूसरे की वस्तु जबरदस्ती**

ले लेना, हरण करना। (३) अनुचित अधिकार करना। (४) छेनी से काटकर खुरदरा करना।
छीना—क्रि. स. [सं. छुप=छूना] स्पर्श करना।
वि. [सं० क्षीण] कृश, दुबला।
छीनि—क्रि. स. [हिं. छीनना] (दूसरे की वस्तु आदि) छीन कर या जबरदस्ती लेकर। उ.—(क) छल करि लई छीनि मही, बामन ह्वै धायौ—९-११८। (ख) एक जु हुतो मदन मोहन की सो छबि छीनि लियौ—३१४७।
छीनी—वि. [सं. क्षीण] क्षीण, दुबली। उ.—देह छिन होति छीनी, दृष्टि देखत लोग—१-३२१।
छीने—क्रि. स. [हिं. छीनना] छीन लिये, ले लिये।
प्र.—लेत कर छीने—छीने-झपटे लेते हैं। उ.—जेंवतऽरु गावत हैं सारँग की तान कान्ह, सखनि के मध्य कान्ह छाक लेत कर छीने—४६७।
छीनौ—क्रि. स. [हिं. छीनना] छिन्न किया, काटकर अलग किया। उ.—नीर हू तैं न्यारौ कीनौ चक्र नक्र-सीस छीनौ, देवकी के प्यारे लाल ऐंचि लाए थल मैं—८-५।
छीप—वि. [सं. क्षिप्र] तेज, वेगवान।
संज्ञा स्त्री. [हिं. छाप] चिह्न, दाग, धब्बा।
छीपना—क्रि. स. [हिं. छीप] (१) फँसी हुई मछली को बाहर फेंकना। (२) पानी का छींटा देना।
छीपी—संज्ञा पुं. [हिं. छीप] छींट छापनेवाला।
छीवर—संज्ञा स्त्री. [हिं. छापना] मोटी छींट।
छीमी—संज्ञा स्त्री. [सं. शिंबी] फली।
छीर—संज्ञा पुं. [सं. क्षीर] दूध। उ.—माता-अछत छीर बिन सुत मरै, अजा-कंठ कुच सेइ—१-२००।
छीरज—संज्ञा पुं. [सं. क्षीर+ज (प्रत्य.)] दही।
छीरधि—संज्ञा पुं. [सं. क्षीरधि] क्षीरसागर।
छीरप—संज्ञा पुं. [सं. क्षीरप] दूध पीता बालक।
छीरफेन—संज्ञा पुं. [सं. क्षीर+फेन] मलाई।
छीरसमुद्र, छीरसागर, छीरसिंधु—संज्ञा पुं. [सं. क्षीर+समुद्र, सागर, सिंधु] क्षीरसागर।
छीलक—संज्ञा पुं. [हिं. छिलक] छिलका।
छीलना—क्रि. अ. [हिं. छाल] (१) छिलका उतारना। (२) खुरचना। (३) खुजली-सी उत्पन्न करना।
छीलर—संज्ञा पुं. [हिं. छिछला अथवा सं. क्षीण] छोटा छिछला गढ़ा, तलैया। उ.—(क) सागर की लहरि छाँड़ि, छीलर कस न्हाऊँ—१-१६६। (ख) अब न सुहात बिषय-रस-छीलर, वा समुद्र की आस—१-३३७।
छीव—संज्ञा पुं. [सं. क्षीव] पागल, मतवाला।
छुँगनी—संज्ञा स्त्री. [हिं. छँगुली] सबसे छोटी उँगली।
छुँगली—संज्ञा स्त्री. [हिं. छँगुली] घुँघरूदार अँगूठी।
छुअत—क्रि. अ. [हिं. छूनाँ] छूते ही, स्पर्श करते ही। उ.—(क) बहुत दिननि कौ हुतौ पुरातन, हाथ छुअत उठि आयौ—९-२८। (ख) सूर प्रभु छुअत धनु टूटि धरनी परयौ—२५८४।
छुआई—संज्ञा स्त्री. [हिं. छूना] छूने की क्रिया या रीति। उ.—हाहा करिए लाल कुँअरि के पायँ छुआई—२४१६।
छुआछूत—संज्ञा स्त्री. [हिं. छूना] छूत-छात।
छुआना—क्रि. स. [हिं. छुलाना] स्पर्श करना।
छुई—क्रि. स. [हिं. छूना] स्पर्श की। उ.—बिन देखे की मया बिरहिनी अति जुर जरति न जात छुई—२४३३।
छुईमुई—संज्ञा स्त्री. [हिं. छूना+मुवना] लज्जावती नामक एक पौधा जो छूने से मुरझा जाता है।
छुगुनूँ—संज्ञा पुं. [अनु. छुनछुन] घुँघरू।
छुच्छा—वि. [हिं. छूछा] खाली, जो भरा न हो।
छुच्छी—संज्ञा स्त्री. [हिं. छूछा] (१) पोली नली। (२) नाक की लौंग की तरह का एक गहना।
छुछकारना—क्रि. स. [अनु.] डाँटना, फटकारना।
छुछहँड़—संज्ञा स्त्री. [हिं. छूछी+हंडी] खाली हाँड़ी।
छुछुआना—क्रि. अ. [अनु. छूछू] बेकार घूमना।
छुट—अव्य. [हिं. छूटना] छोड़कर, सिवाय, अतिरिक्त। उ.—जब तें जग जन्म पाय जीव है कहायौ। तब ते छुट अवगुन इक नाम न कहि आयौ।
छुटकाई—क्रि. स. [हिं. छूटना, छुटकाना] साथ छोड़कर, अलग होकर। उ.—साधु-संग, भक्ति

बिना, तन अकार्थ जाई। ज्वारी ज्यौं हाथ झारि, चाले छुटकाई—१-३३०।

छुटकाना—क्रि. स. [हिं. छूटना] (१) **छोड़ना, अलग करना।** (२) **छोड़ देना, साथ न लेना।** (३) **मुक्त करना, छुटकारा देना।**

छुटकायौ—क्रि. स. भूत. [हिं. छुटकाना] (१) **छुड़ाया, मुक्त किया, छुटकारा दिलाया।** उ.—हा करुनामय कुंजर टेरयौ, रह्यौ नहीं बल थाकौ। लागि पुकार तुरत छुटकायौ, काट्यौ बंधन ताकौ—१-११३। (२) **छोड़ दिया, साथ न लिया।** उ.—चितत ही चित मैं चिंतामनि, चक्र लिए कर धायौ। अति करुना-कातर करुनामय, गरुड़हु कौ छुटकायौ—८-३। (३) **अलग किया, पकड़े न रहे।**

छुटकारा—संज्ञा पुं. [हिं. छुटकाना] (१) **मुक्ति, छूटने की क्रिया।** (२) **रक्षा, निस्तार।** (३) **छुट्टी।**

छुटत—क्रि. अ. [हिं. छूटना] **छूटते ही।**

मुहा.—देह छुटत—**प्राण निकलते ही।** उ.—मेरी देह छुटत जम पठए दूत—१-१५१।

छुटति—क्रि. अ. [हिं. छूटना] **छूटती है।** उ.—कोउ अपने जिय मान करै माई हो मोहि तौ छुटति अति कँपनी—१६६२।

छुटना—क्रि. अ. [हिं. छूटना] **छूट जाना, रह जाना।**

छुटपन—संज्ञा पुं. [हिं. छोटा+पन (प्रत्य.)] (१) **छोटाई, लघुता।** (२) **बचपन, लड़कपन।**

छुटाई—संज्ञा स्त्री. [हि. छोटाई] (१) **छोटापन, लघुता।** (२) **तुच्छता, हीनता।**

छुटाना—क्रि. स. [सं. छूट] **छुड़ाना।**

क्रि. अ.—**गाय-भैंस का दूध देना बंद होना।**

छुटायो, छुटायौ—क्रि. स. [हिं. छुटाना] **छुड़ाया, मुक्त किया।** उ.—(क) तब गज हरि की सरनहिं आयो। सूरदास प्रभु ताहि छुड़ायो। (ख) ताकौ चरन परसि कै माधव दु:खित साप छुटायो—सारा. ८२३।

छुटावत—क्रि. स. [हिं. छुटाना] **छुड़ाते हैं, साफ करते हैं।** उ.—राहु केतु मानहु सुमीड़ि बिधु आँक छुटावत धोयौ—३४८२।

छुटि—क्रि. अ. [हिं. छूटना] **दूर हुई, संबंध न रहा।** उ.—लोक-लाज सब छुटि गई, उठि धाए सँग लागे हो)—१-४४।

छुटैया—संज्ञा स्त्री. [हिं. छुटाना] **छुड़ानेवाला।**

संज्ञा स्त्री. [हिं. छूट] **भाड़ों के चुटकुले।**

छुटैहै—क्रि. स. [हिं. छुटाना] **छुड़ावेगा।** उ.—जब गजेंद्र कौ पग तू गैहै। हरि जू ताकौ आनि छुटैहै—८-२।

छुटौती—संज्ञा स्त्री. [हिं. छूट] **सूद की छूट।**

छुट्टा—वि. [हिं. छूटना] (१) **जो बँधा न हो।** (२) **अकेला।** (३) **जिसके पास कुछ न हो।**

छुट्टी—संज्ञा स्त्री. [हिं. छूट] (१) **छुटकारा, मुक्ति।** (२) **अवकाश, फुरसत।** (३) **वह दिन जब दैनिक कार्य न करना हो।** (४) **जाने की आज्ञा।**

छुट्यौ—क्रि. अ. [हिं. छूटना] **दूर हुआ, नष्ट हुआ।** उ.—मैं मेरी अब रही न मेरैं, छुट्यौ देह अभिमान—२-३३।

छुड़ाइ—क्रि. स. [हिं. छुड़ाना] **छुड़ाकर, अलग करके।** उ.—भुजा छुड़ाइ, तोरि तृन ज्यौं हित, कियौ प्रभु निठुर हियौ—९-४६।

छुड़ाई—क्रि. स. [हिं. छोड़ना] **छुड़ाना, मुक्त कराना।** उ.—राज-रवनि सुमिरे पति-कारन, असुर-बंदि तैं दिए छुड़ाई—१-२४।

छुड़ाऊँ—क्रि. स. [हिं. छुड़ाना] (१) **दूर करूँ, अलग करूँ।** उ.—कै हौं पतित रहौं पावन ह्वै, कै तुम बिरद छुड़ाऊँ—१-१७९। (२) **बचाऊँ, रक्षा करूँ।** उ.—जहँ जहँ भीर परै भक्तनि कौं, तहँ तहँ जाइ छुड़ाऊँ—१-२७२।

छुड़ाए—क्रि. स. [हिं. छुड़ाना] **छुड़ाया, रक्षा की।** उ.—जब गज गह्यौ ग्राह जल-भीतर, तब हरि कौं उर ध्याए (हो)। गरुड़ छाँड़ि, आतुर ह्वै धाए, तो ततकाल छुड़ाए (हो)—१-७।

छुड़ाना—क्रि. स. [हिं. छोड़ना] (१) **अलग करना, खोलना।** (२) **दूसरे के अधिकार से निकालना।** (३) **लगी हुई वस्तु दूर करना।** (४) **नौकरी से हटाना।** (५) **क्रिया या प्रवृत्ति को दूर करना।**

क्रि. स. [हिं. छोड़ना का प्रे.] **छोड़ने का काम** **ाना या इसकी प्रेरणा देना ।**

—क्रि. स. [हिं. छुड़ाना] (१) **रक्षा की ।** —खंभ तैं प्रगट ह्वै जन छुड़ायौ—१-५ । (२) **त किया ।** उ.—अंत औसर अरध-नाम उच्चार रे सुम्रत गज ग्राह तैं तुम छुड़ायौ—१-११६ ।

—क्रि. स. [छुड़ाना] **छुड़ाता है, अलग करते** । उ.—(क) दुस्सासन कटि-बसन छुड़ावत, मरत नाम द्रौपदी बाँची—१-१८ । (ख) अवसर कह बाँह छुड़ावत, इहिं डर अधिक यौ—१-१५६ ।

—क्रि. स. [हिं. छुड़ाना] **छोड़ो, अलग करो, पने पास से) दूर करो ।** उ.—जहाँ जहाँ तुम धरत हौ, तहाँ तहाँ जनि चरन छुड़ावहु—४५० ।

—क्रि. स. [हिं. छोड़ना, छुड़ाना] **छुड़ाता है, ग करता है ।** उ.—दुस्सासन कटि-बसन छुड़ावै—२४६ ।

—वि. [हिं. छुड़ाना+ऐया] **बचानेवाला ।**

—संज्ञा स्त्री. [हिं. छुड़ाना] **छूट, छुटौती ।**

संज्ञा स्त्री. [सं. क्षुत्] **क्षुधा, भूख ।**

—संज्ञा पुं [हिं. छूत+हंडी] (१) **अशुद्ध बरतन पात्र ।** (२) **नीच या तुच्छ आदमी ।**

—वि. [हिं. छूत+हा (प्रत्य.)] (१) **जिसे छूत ी हो ।** (२) **दोषी, पतित, कलंकित ।**

वि. [सं. क्षुद्र] **छोटा, साधारण ।** उ.—छुद्र तेत तुम तारि रमापति, अब न करौ जिय रौ—१-१३१ ।

—संज्ञा पुं. [सं. क्षुद्रघंटिका] (१) **घुँघरू ।** (२) **घरूदार करधनी ।**

टका—संज्ञा स्त्री. [सं. क्षुद्रघंटिका] (१) **घुँघरू ।**) **करधनी जिसमें बहुत से घुँघरू लगे हों ।**

—संज्ञा पुं. [सं. क्षुद्रपति] **कुबेर ।** उ.— पति, छुद्रपति, लोकपति, वाकपति, धरनिपति गनपति, अगम बानी—१५२२ ।

ले, **छुद्रावली**—संज्ञा स्त्री. [सं. क्षुद्रावली] **द्रघंटिका, किंकिणी, करधनी ।** उ.—अंग-अभूषन जननि उतारति । ······ । क्षुद्रावली उतारति कहि सौंति धरति मनहीं मन वारति—५१२ ।

छुधा—संज्ञा स्त्री. [सं. क्षुधा] **क्षुधा, भूख ।** उ.—देखि छुधा तैं मुख कुम्हिलानौ, अति कोमल तन स्यामं —३६१ ।

छुधित—वि. स्त्री. , पुं. [सं. क्षुधित] **भूखी, भूखा ।** उ.—(क) माधौ, नैंकु हटकौ गाइ । ········ । छुधित अति न अघाति कबहूँ, निगम-द्रुम दलि खाइ—१-५६ । (ख छिन छिन छुधित जान पय-कारन, हँसि हँसि निकट बुलाऊँ—१०-७५ ।

छुनछुनाना—क्रि. अ. [अनु.] **'छुन छुन' करना ।**

छुननमुनन, छुनमुन—संज्ञा पुं. [अनु.] (१) **खौलते घी-तेल में तली जानेवाली चीज के पड़ने पर होने वाला शब्द** (२) **पैर के घुँघरूदार आभूषणों का शब्द ।**

छुप—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **स्पर्श ।** (२) **झाड़ी ।** (३) **वायु ।** वि.—**चंचल ।**

छुपना—क्रि. अ. [हिं. छिपाना] **सामने न होना ।**

छुपाना—क्रि. स. [हिं. छिपाना] **सामने न रखना ।**

छुबुक—संज्ञा पुं. [सं.] **चिबुक, ठुड्डी, ठोढ़ी ।**

छुभित—वि. [सं. क्षुभित] **विचलित, घबराया हुआ ।**

छुभिराना—क्रि. अ. [हिं. क्षोभ] **क्षुब्ध होना ।**

छुयौ—क्रि. अ. [हिं. छूना] **छुआ, स्पर्श किया ।** उ.—सोवत काग छुयो तन मेरौ – ६-८३ ।

छुरधार—संज्ञा स्त्री. [सं. क्षुरधार] **तीक्ष्ण धार ।**

छुरा—संज्ञा पुं. [सं. क्षुर] (१) **बड़ा चाकू ।** (२) **बाल मूँड़ने का उस्तरा ।**

छुराइ—क्रि. स. [हिं. छुड़ाना] (**फँसे, उलझे या झगड़नेवालों को) छुड़ाकर, अलग करके, हटाकर ।** उ.—मुख-छबि कहा कहौं बनाइ । ········ । अमृत अलि मनु पिवन आए, आइ रहे लुभाइ । निकसि सर तैं मीन मानौ लरत कीर छुराइ—२५२ ।

छुरित—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **नृत्य का एक भेद ।** (२) **बिजली की चमक ।**

छुरी—संज्ञा स्त्री. [हिं. छुरा] **छोटा छुरा**

मुहा.—छुरी चलना—**छुरी से लड़ाई होना ।** किसी पर छुरी चलाना—**बहुत कष्ट देना ।** छुरी

तेज करना—**हानि पहुँचाने की तैयारी करना।** छुरी फेरना—**भारी हानि पहुँचाना।**

छुलछुलाना—क्रि. अ. [अनु.] **इतराना।**

छुलाना—क्रि. स. [हिं. छूना] **स्पर्श कराना।**

छुवत—क्रि. अ. [हिं. छूना] (१) **छूते ही, स्पर्श करते ही।** उ.—नल अरु नील बिस्वकर्मा-सुत, छुवत पषान तरयौ—६-१२२। (२) **छूते हो, दौड़ की बाजी में पकड़ते हो।** उ.—जानिकै मैं रह्यौ ठाढ़ौ, छुवत कहा जु मोहिं—१०-२१३।

छुवना—क्रि. स. [हिं. छूना] **स्पर्श करना।**

छुवाई—क्रि. स. [हिं. छुआना, छुलाना] **छुआया, स्पर्श कराया।** उ.—अबहिं सिला तैं भई देव-गति जब पग-रेनु छुवाई—६-४०।

छुवाऊँ—क्रि. स. [हिं. छुवाना] **स्पर्श कराऊँ, छुलाऊँ।** उ.—ये दससीस ईस-निरमालय, कैसैं चरन छुवाऊँ—६ १३२।

छुवाना—क्रि. स. [हिं. छूना] **स्पर्श कराना।**

छुवाव—संज्ञा पुं. [हिं. छुवाना] **संबंध, लगाव।**

छुवावत—क्रि. स. [हिं. छुवाना] **छुआते हैं, स्पर्श कराते हैं।** उ.—षटरस के परकार जहाँ लगि, लै लै अधर छुवावत—१०८६।

छुवावैं—क्रि. स. [हिं. छूना] **स्पर्श करावें, छुलावें।** उ.—माखन खात अचानक पावैं, भुज भरि उरहिं छुवावैं—१०-२७२।

छुवै—क्रि. स. [हिं. छूना] **छूता है, स्पर्श करता है।** उ.—आरि करत कर चपल चलावत, नंद-नारि-आनन छुवै मंदहिं—१०-१०७।

छुहना—क्रि. अ. [हिं. छुवना] (१) **छू जाना, स्पर्श हो जाना।** (२) **रँग जाना, लिप-पुत जाना।**

क्रि. स. [हिं. छूना] **स्पर्श करना।**

छुहाना—क्रि. स. [हिं. छोहाना] **प्रेम या दया करना।**

छुहारा—संज्ञा पुं. [सं. क्षुत+हार] **एक प्रकार का खजूर, जिसका फल खाने में मीठा होता है।** उ.—ऊधौ, मन माने की बात। दाख छुहारा छाँड़ि कै बिष कीरा बिष खात।

छुही—संज्ञा स्त्री. [हिं. छूना] **सफेद मिट्टी।**

छूँछ, छूँछा—वि. पुं. [सं. तुच्छ, प्रा. चुच्छं, छुच्छ] (१) **खाली, रीता, रिक्त।**

मुहा.—छूँछा हाथ—(१) **पास में धन न होना।** (२) **पास में हथियार न होना।** (३) **साथ में कोई चीज न लाना।**

(२) **जिसमें कुछ तत्व न हो।** (३) **निर्धन।**

छूँछी—वि. स्त्री. [हिं. छूँछा] **खाली, रीती, रिक्त।** उ.—पैठे सखनि सहित घर सूनैं, दधि-माखन सब खाए। छूँछी छाँड़ि मटुकिया दधि की, हँसि सब बाहिर आऐ—१०-२६०।

छूँछे—वि. [हिं. छूछा] **सारहीन, तत्व-रहित।** उ.—तो हूँ प्रश्न तुम्हारे छूँछे।

छू—संज्ञा पुं. [अनु.] **फूँक मारने का शब्द।**

मुहा.—छू बनना (होना)—**उड़ जाना।** छू छू बनाना—**मूर्ख बनाना।** छू मंतर—**जादू या मंत्र की फूँक।** छू मंतर होना—**गायब हो जाना।**

छूआछूत—संज्ञा स्त्री. [हिं. छूना + छूत] **अस्पृश्य को न छूने का विचार, भाव या रीति।**

छूईमूई—संज्ञा स्त्री. [हिं. छूना+मूना=मरना] **लज्जावती पौधा जिसकी पत्तियाँ छूते ही मुरझा जाती हैं।**

छूचक—संज्ञा पुं. [सं. सूतक] (१) **वह समय जब धर्म-कर्म नहीं किये जाते।** (२) **बच्चा पैदा होने पर छः दिन का सूतक काल।**

छूछा—वि. [हिं. छूँछा] (१) **खाली।** (२) **निस्सार।**

छूट—संज्ञा स्त्री. [हिं. छूटना] (१) **मुक्ति, छुटकारा।** (२) **फुरसत।** (३) **ऋण-लगान की माफी, छुटौती।** (४) **कार्य के अंग-विशेष पर ध्यान न देना।** (५) **कार्य या व्यवहार विशेष की स्वतंत्रता।**

छूटत—क्रि. अ. [हिं. छूटना] (१) **दूर होते (हैं), नहीं रहते।** उ.—(क) मोसौं पतित न और गुसाईं। अवगुन मोपैं अजहुँ न छूटत, बहुत पच्यौ अब ताईं—१-१४७। (ख) ना हरि-भक्ति, न साधु-समागम, रह्यौ बीचहीं लटकैं। ज्यौं बहु कला काछि दिखरावै, लोभ न छूटत नट कैं—१-१९२। (२) **अस्त्र-शस्त्र चलते हैं।** उ.—बिबिध सस्त्र छूटत पिचकारी चलत रुधिर की धार—सारा. २६।

छूटति—क्रि. अ. [हिं. छूटना] **अलग रहना, मान करना, छुटकारा पाना, दूर हटना।** उ.—सुनि राधे रीझै हरि तोकों अब उनते तुम छूटति हो—पृ. ३१६ (८०)।

छूटना—क्रि. अ. [सं. छुट=(बंधन आदि) काटना] (१) **लगाव या संबंध न रहना, दूर होना।**

मुहा.—शरीर (प्राण) छूटना—**मृत्यु होना।**

(२) **बंधन आदि ढीला होना।** (३) **छुटकारा पाना।** (४) **चल देना, रवाना होना।** (५) **बिछुड़ना।** (६) **अस्त्र-शस्त्र चलना।** (७) **(काम या अभ्यास) न होना।** (८) **बहना, प्रवाहित होना।** (९) **धीरे-धीरे पानी निकलना।** (१०) **कण या छींटे निकलना।** (११) **काम बच या रह जाना।** (१२) **नौकरी आदि से हटाया जाना।**

छूटि—क्रि. अ. [हिं. छूटना] **छूटने पर, छूट कर।**

संयो.—छूटि गए—**छूट जाने पर, अलग होने पर** उ.—तुम्हारी भक्ति हमारे प्रान। छूटि गऐ कैसैं जन जीवत, ज्यौं पानी बिनु पान—१-१६६।

संज्ञा स्त्री. [हिं. छूट] **छुटकारा, मुक्ति।** उ.—जानति हौं, बली बालि सौं न छूटि पाई—६-११८।

छूटी—क्रि. अ. स्त्री. [हिं. छूटना] **(युद्ध में शक्ति आदि) चल पड़ी।** उ.—इंद्रजीत लीन्ही तब शक्ती, देवनि हहा करयौ। छूटी बिज्जु-रासि वह मानौ, भूतल बंधु परयौ—६-१४४।

वि.—**बिखरी हुई।** उ.—छूटी अलक भुअंगनि कुच तट पैठी त्रिबलि निकेत—१६२३।

छूटे—क्रि. अ. [हिं. छूटना] (१) **असंबद्ध होने पर।**

मुहा.—तन छूटे—**मृत्यु होने पर।** उ.—जीवत जाँचत कन कन निर्धन, दर-दर रटत बिहाल। तन छूटे तैं धर्म नहीं कछु, जौ दीजै मनि-माल—११५६।

(२) **सवेग निकले, बहे।** उ.—देखत कपि बाहु-दंड तन प्रस्वेद छूटे—६-६७। (३) **बिखर गये, बँधे या कसे न रहे।** उ.—छूटे चिहुर बदन कुम्हिलाने ज्यों नलिनी हिमकर की मारी—३४२५।

छूटै—क्रि. अ. [हिं. छूटना] **अलग होता है, छूट सकता है, दूर होता है।** उ.—तू तौ बिषया-रंग रँग्यौ है, बिन धोए क्यौं छूटै—१-६३।

छूटौं—क्रि. अ. [हिं. छूटना] **छूटूँ, मुक्त होऊँ, मुक्ति पाऊँ।** उ.—घर मैं ग्रंथ नहिं भजन तिहारौ, जौन दियैं मैं छूटौं—१-१८५।

छूटौगे—क्रि. अ. [हिं. छूटना] **मुक्ति पाओगे, बंधन-मुक्त होगे।** उ.—रामनाम बिनु क्यौं छूटौगे, चंद गहैं ज्यौं केत—१-२६६।

छूट्यौ—क्रि. अ. [हिं. छूटना] **छूटा, छूट गया।** उ.—सुमिरत ही अहि डस्यौ पारधी, कर छूट्यौ संधान—१-९७।

छूत—संज्ञा स्त्री. [हिं. छूना] (१) **स्पर्श, छूने का भाव।** (२) **गंदी या अपवित्र चीज का स्पर्श।** (३) **गंदी चीज छूने का दोष।** (४) **भूत-प्रेत की छाया।**

छूना—क्रि. अ. [सं. छुप, प्रा. छुव+ना (प्रत्य.), पू. हिं. छुवना] **थोड़ा-थोड़ा स्पर्श होना।**

क्रि. स.—(१) **स्पर्श करना।** (२) **हाथ लगाना।** (३) **दान देने के लिए किसी चीज का स्पर्श करना।** (४) **दौड़ या खेल में किसी को पकड़ना।** (५) **धीरे-धीरे मारना।** (६) **बहुत कम व्यवहार में लाना।**

छेंकना—क्रि. स. [सं. छद=ढाँकना+करण] (१) **स्थान घेरना।** (२) **रोकना, जाने न देना।** (३) **लकीरों से घेरना।** (४) **(अशुद्धि) काटना या मिटाना।**

छेक—संज्ञा पुं. [हिं. छेद] (१) **छेद, सूराख।** (२) **कटाव, विभाग।**

छेकानुप्रास—संज्ञा पुं. [सं.] **एक शब्दालंकार।**

छेकापह्नुति—संज्ञा पुं. [सं.] **एक काव्यालंकार।**

छेकोक्ति—संज्ञा पुं. [सं.] **एक काव्यालंकार।**

छेटा—संज्ञा स्त्री. [सं. क्षिप्त, प्रा. छित्त] **बाधा, रुकावट।**

छेड़—संज्ञा स्त्री. [हिं. छेद] (१) **तंग करना।** (२) **चिढ़ाना।** (३) **चिढ़ाने की बात।** (४) **झगड़ा।**

छेड़ना—क्रि. स. [हिं. छेदना] (१) **कोंचना, खोदना-खादना।** (२) **तंग करना।** (३) **चिढ़ाना।** (४) **(काम) शुरू करना।** (५) **छेद करना, काटना।**

छेत्र—संज्ञा पुं. [सं. क्षेत्र] **स्थान, प्रदेश।** उ.—बन बारानसि मुक्ति-छेत्र है—१-३४०।

छेद—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **काटने का काम।** (२) **नाश।**

(३) छेदने-काटनेवाला। (४) खंड।

संज्ञा पुं. [सं. छिद्र] (१) सूराख, छिद्र। (२) खोखला, बिवर, कुहर। (३) दोष, ऐब।

छेदक—वि. [सं.] (१) छेदने या काटनेवाला। (२) नाश करनेवाला। (३) विभाजक।

छेदन—संज्ञा पुं. [सं.] (१) छेदने-काटने की क्रिया। उ.—जसुदा, नार न छेदन दैहौं। मनिमय जटित हार ग्रीवा कौ, वहै आजु हौं लैहौं—१०-१५। (२) नाश, ध्वंस। (३) छेदने-काटने का अस्त्र।

छेदनहार—वि. [हिं. छेदन+हारा] छेदनेवाला।

छेदना—क्रि. स. [सं. छेदन] (१) बेधना, भेदना। (२) घाव करना। (३) काटना, अलग करना।

छेदि—क्रि. स. [सं. छेदन] अलग करके, छिन्न करके। उ.—(क) जारौं लंक, छेदि दस मस्तक, सुर-संकोच निवारौं—६-१३२। (ख) दसमुख छेदि सुपक नव फल ज्यौं, संकर-उर दससीस चढ़ावन—६-१३१।

छेदे—क्रि. स. [हिं. छेदना] काटे, छिन्न किये। उ.—रावन के दस मस्तक छेदे, सर गहि सारँगपानि—१-१३५।

छेद्य—वि. [सं.] छेदने-काटने के योग्य।

संज्ञा पुं.—परेवा, कबूतर।

छेना—संज्ञा पुं. [सं. छेदन] (१) फाड़े या फटे हुए दूध का खोया, पनीर। (२) कंडा, उपला।

क्रि. स.—कुल्हाड़ी आदि से काटना।

छेनी—संज्ञा स्त्री. [हिं. छेना] लोहे का एक औजार।

छेमंड—संज्ञा पुं. [सं.] अनाथ लड़का, यतीम।

छेम—संज्ञा पुं. [सं. क्षेम] कुशल, कल्याण, मंगल। उ.—छेम-कुसल अरु दीनता दंडवत सुनाई। कर जोरे बिनती करी, दुरबल-सुखदाई—१-२३८।

छेमकरी—संज्ञा स्त्री. [सं. क्षेमकरी] सफेद चील।

छेरी, छेली—संज्ञा स्त्री. [सं. छेलिका] बकरी। उ.—सूरदास प्रभु-कामधेनु तजि छेरी कौन दुहावै।

छेव—संज्ञा पुं. [सं. छेद, प्रा. छेव] (१) काटने-छीलने के लिए किया गया आघात या वार। (२) काटने-छीलने का चिह्न।

मुहा.—छल छेव—छल-कपट के दाँव। उ.—जानति नहीं कहाँ ते सीखे चोरी के छल छेव—३११४।

(३) आनेवाली विपत्ति। (४) अनिष्ठ।

संज्ञा स्त्री. [हिं. टेव] आदत, स्वभाव।

छेवन—संज्ञा पुं. [हिं. छेवना=काटना] कुम्हार का तागा।

छेवना—संज्ञा स्त्री. [हिं. छेना] ताड़ी।

क्रि. स. [सं. छेदन] काटना, चिह्न लगाना।

क्रि. स. [सं. क्षेपण] फेंकना, मिलाना।

छेवर, छेवरा—संज्ञा पुं. [हिं. छेवना] छाल, चमड़ा।

छेवा—संज्ञा पुं. [हिं. छेव] (१) छीलने-काटने का काम, आघात या चिह्न। (२) वेग से बहनेवाला जल।

छेह—संज्ञा पुं. [हिं. छेव] (१) काटने छीलने का काम, अघात या चिह्न। (२) खंडन, नाश। (३) अनिष्ट।

वि.—(१) खंडित, कटा-पिटा। (२) कम।

संज्ञा स्त्री. [सं. क्षार, हिं. खेह] राख, मिट्टी।

संज्ञा स्त्री. [हिं. छाया] साया, छाया।

छेहर—संज्ञा स्त्री. [सं. छाया] साया, छाया।

छै—संज्ञा पुं. [सं. क्षय] नाश। उ.—यह कहि पारथ हरि-पुर गए। सुन्यौ, सकल जादव छै भऐ—१-२८६।

वि. [हिं. छः] जो पाँच से एक अधिक हो।

छैऊ—वि. [सं. षट्, प्रा. छ] छहों। उ.—सार बेद चारौ कौ जोइ। छैऊ सास्त्र-सार पुनि सोइ—७-२।

छैना—क्रि. स. [हिं. छय+ना (प्रत्य.)] (१) छीजना, कम होना। (२) नष्ट-भ्रष्ट होना।

मुहा.—छै जाना—छेद का फटकर फैलना।

छैयाँ—संज्ञा स्त्री. [सं. छाया, हिं. छाँह] बचाव का स्थान, शरण, संरक्षा।

मुहा.—बसत तुम्हारी छैयाँ—तुम्हारी ही शरण हैं, तुम्हारे ही अधीन हैं। उ.—खेलत मैं को काको गुसैयाँ। ······· । जाति-पाँति हमतैं बड़ नाहीं, नाहीं बसत तुम्हारी छैयाँ—१०-२४५।

छैया—संज्ञा पुं. [हिं. छवना] बच्चा, वत्स। उ.—(क) बिसकर्मा सूतहार, रच्यौ काम ह्वै सुनार, मनिगन लागे अपार, काज महर-छैया—१०-४१। (ख) भूतनु के छैया, आस पास के रखैया और काली

नथैया हू ध्यान इतै न चलै।

छैल—संज्ञा पुं. [हिं. छैला] **रँगीले-सजीले युवक, बाँके शौकीन जवान।** उ.—छैलनि कै संग यौं फिरै, जैसैं तनु संग छाईं (हो)—१-४४।

छैल चिकनियाँ—संज्ञा पुं. [देश.] **शौकीन आदमी।**

छैल छबीला—संज्ञा पुं. [देश.] **बाँका शौकीन युवक।**

छैला—संज्ञा पुं. [सं. छवि+ऐला (प्रत्य.)] **बना-ठना, बाँका, सुंदर और रसिक पुरुष।**

छैलाना—क्रि. अ. [हिं. छैल] **बालकों का हठ करना।**

छोंकर, छोंकरा—संज्ञा पुं. [हं. शंकरा] **शमी वृक्ष।**

छोंड़ा—संज्ञा पुं. [सं. दवेड़] **दही मथने की मथानी।**

छोंड़ि—संज्ञा स्त्री. [सं. दवेड़िका] **मथानी।**

संज्ञा स्त्री. [सं. क्षोणि] **बड़ा बरतन या पात्र।**

छो—संज्ञा पुं. [सं. क्षोभ, हिं. छोह] (१) **प्रेम, चाह, छोह।** (२) **दया, क्रोध।** (३) **क्षोभ, झुँझलाहट।**

छोई—संज्ञा स्त्री. [हिं. छोलना] (१) **ईख की छीलकर फेंकी हुई पत्ती।** (२) **गन्ने की गँडेरी का चोफुर।**

छोकड़ा, छोकरा—संज्ञा पुं. [सं. शावक, प्रा. छावक+रा (प्रत्य.)] **(अनुभवहीन) लड़का, बालक।**

छोकड़िया, छोकड़ी, छोकरिया, छोकरी—संज्ञा स्त्री. [हिं. छोकड़ा] **(अनुभवहीन) लड़की।**

छोकला—संज्ञा पुं. [सं. छल्ल] **छाल, छिलका, बक्कल।**

छोट—वि. [हिं. छोटा] **छोटा, पद-मान में कम।** उ.—बैठत सबै सभा हरि जू की, कौन बड़ौ को छोट—१-२३२।

छोटका—वि. [हिं. छोटा+का (प्रत्य.)] **जो छोटा हो।**

छोटा—वि. [सं. क्षुद्र] (१) **आकार, डील-डौल या बड़ाई में कम।** (२) **उम्र या अवस्था में कम।** (३) **पद-प्रतिष्ठा या मान-मर्यादा में कम।** (४) **सार या महत्वहीन।** (५) **जो गंभीर या उदार न हो, ओछा।**

छोटाई—संज्ञा स्त्री. [हिं. छोटा+ई (प्रत्य.)] (१) **छोटापन, लघुता।** (२) **नीचता, ओछापन, तुच्छता।**

छोटापन—संज्ञा पुं. [हिं. छोटा+पन (प्रत्य.)] (१) **छोटा होने का भाव, छोटाई।** (२) **बचपन, लड़कपन।**

छोटि—वि. स्त्री. [हिं. छोटा] **तुच्छ, साधारण, महत्वहीन।** उ.—कोटि द्वैक जलहीं धरे, यह बिनती इक छोटि—५८६।

छोटियै—वि. स्त्री. सवि. [हिं. पुं. छोटा] **आकार या विस्तार में कम ही, छोटी ही।** उ.—छोटौ बदन छोटियै झिगुली, कटि किंकिनी बनाइ—१०-१३३।

छोटी—वि. स्त्री. [हिं. पुं. छोटा] (१) **जो बड़ी न हो, कम आकार की।** उ.—छोटी छोटी गोड़ियाँ, अँगुरियाँ छबीली छोटी, नख-ज्योति मोती मानौ कमल-दलनि पै—१०-१५१। (२) **अवस्था में कम।** उ.—जे छोटी तेई हैं खोटी साजति भाजति जोरी—१६२१।

छोटौ—वि. [हिं. छोटा] (१) **उम्र में छोटा।** (२) **तुच्छ, साधारण, मामूली।** उ.—जौ तुम पतितनि के पावन हौ, हौं हूँ पतित न छोटौ—१-१७६।

छोड़छुट्टी, छोड़ाछुट्टी—संज्ञा स्त्री [हिं. छोड़ना+छुट-ा] **संबंध न रहना, नाता छूटना।**

छोड़ना—क्रि. स. [सं. छोरण] (१) **किसी पकड़ी हुई वस्तु को पकड़ से अलग करना।** (२) **किसी लगी या चिपकी हुई वस्तु का अलग हो जाना।** (३) **बंधन से मुक्ति या छुटकारा देना।** (४) **अपराध क्षमा करना, दंड न देना।** (५) **ग्रहण न करना, न लेना।** (६) **ऋण आदि में छूट देना।** (७) **पास न रखना, त्यागना, अलग करना।** (८) **न उठाना, साथ न लेना।** (९) **चलाना, दौड़ाना।** (१०) **अस्त्र आदि चलाना।** (११) **किसी स्थान आदि से आगे बढ़ जाना।** (१२) **किसी काम को करते-करते बंद कर देना।** (१३) **रोग आदि का दूर होना।** (१४) **(पिचकारी, आतशबाजी आदि) चलाना।** (१५) **बाकी रखना, काम में न लाना।** (१६) **वेग से बाहर निकालना।** (१७) **किसी काम को भूल जाना।** (१८) **ऊपर से गिराना या डालना।**

छोड़ाना—क्रि. स. [हिं. छुड़ाना] **छुड़ाना।**

छोड़ावना—संज्ञा पुं. [हिं. छोड़ाना] **छुड़ाने के लिए।** उ.—परी पुकार द्वार गृह गृह ते सुनहु सखी इक जोगी आयो। पवन सधावन भवन छोड़ावन नवल रिसाल गोपाल पठायौ—२९९६।

छोत—संज्ञा स्त्री. [हिं. छूत] **अस्पृश्यता का भाव।**

छोनिप—संज्ञा पुं. [सं क्षोणी+प=पालक] **राजा।**

छोनी—संज्ञा स्त्री. [सं. क्षोणी] **पृथ्वी, भूमि।**

छोप—संज्ञा पुं. [सं. क्षेप, हिं. खेप] **गाढ़ी चीज का मोटा लेप। (२) यह लेप चढ़ाने की क्रिया। (३) वार, आघात। (४) छिपाव, दुराव।**

यौ.—छोप छाप—**(१) छिपाव। (२) बचाव।**

छोपना—क्रि. स. [हिं. छुपाना] **(१) गाढ़ा लेप आदि करना। (२) मिट्टी आदि थोपना।**

यौ.—छोपना छापना—**ठीक करना, बनाना।**

(३) धर दबाना, ग्रसना। (४) ढकना, छेंकना। (५) किसी बात को छिपाना। (६) वार से बचाना।

छोपाई—संज्ञा स्त्री. [हिं. छोपना] **(१) छोपने की क्रिया (२) छोपने का भाव या मजदूरी।**

छोभ—संज्ञा पुं. [सं. क्षोभ] **(१) दुख-क्रोध-जनित चित्त की विचलता।** उ.—रसना द्विज दलि दुखित होति बहु, तउ रिस कहा करै। छमि सब छोभ जु छाँड़ि छवौ रस लै समीप सँचरै—१-११७। **(२) नदी, तालाब आदि का उमड़ना।**

छोभना—क्रि. स. [हिं. छोभ+ना (प्रत्य.)] **(१) चित्त का दुख-क्रोध से विचलित होना। (२) नदी आदि का उमड़ना।**

छोभित—वि. [सं. क्षोभित] **क्षुब्ध, चंचल, विचलित।** उ.—आजु अति कोपे हैं रन राम। ....। छोभित सिंधु, सेष-सिर कंपित, पवन भयौ गति पंग—९-१५८।

छोम—संज्ञा पुं. [सं. क्षोम] **(१) चिकना। (२) कोमल।**

छोर—संज्ञा पुं. [हिं. छोड़ना] **(१) किसी वस्तु के दोनों ओर का किनारा। (२) विस्तार की सीमा। (३) किनारे का कुछ भाग।** उ.—वृंदावन के तृन न भए हम लगत चरन कैं छोर।

क्रि. स. [हिं. छुड़ाना] **खोलकर, छुड़ाकर, मुक्त करके।** उ.—बंधन छोर पिता माता के अस्तुति करि सिर नायौ—सारा. ५२६।

छोरटी—संज्ञा स्त्री. [हिं. छोरी] **लड़की, बालिका।**

छोरत—क्रि. स. [हिं. छोड़ना] **छोड़ते हैं, बंधन से मुक्त कराते हैं।** उ.—(क) आपु बँधावत भक्तनि छोरत, बेद बिदित भई बानी—१०-३४३। (ख) ब्रज-प्यारौ, जाकौ मोहिं गारौ, छोरत काहे न ओहि—३७५।

छोरन—संज्ञा पुं. [हिं. छोड़ना] **छोड़ने (के लिए), (बंधन से) मुक्त करने को।** उ.—जाहु चली अपनैं अपनैं घर। तुमहीं सबनि मिलि ढीठ करायौ, अब आईं छोरन बर—१-३४५।

छोरना—क्रि. स. [सं. छोरण=परित्याग, हिं. छोड़ना] **(१) बंधन या फँसाव दूर करना। (२) मुक्त करना, छुटकारा देना। (३) छीनना।**

छोरा—संज्ञा पुं. [सं. शावक, हिं. छावक+रा (प्रत्य.)] **छोकड़ा, बालक, लड़का।**

छोराए—क्रि. स. [हिं. छुड़ाना] **बंधन-मुक्त कराये।** उ.—मात पिता बंदि ते छोराए—२६३१।

छोरा-छोरी—संज्ञा स्त्री. [हिं. छोरना] **(१) नोच-खसोट, छीना-झपटी। (२) झगड़ा, बखेड़ा, झंझट।**

छोरि—क्रि. स. [हिं. छोड़ना] **(१) छुड़ाकर, मुक्त करके।** उ.—(क) सूर प्रभु मारि दसकंध, थापि बंधु तिहिं, जानकी छोरि जस जगत लीजै—९-१३६। (ख) नृपन को छोरि सहदेव को राज दियो देव नर सकल जै जै उचार्यौ—१० उ. ५१। **(२) छीन (लिए)।** उ.—जोरि अंजलि मिले, छोरि तंदुल लए, इंद्र के बिभव तैं अधिक बाढ़ौ—१-५।

छोरी—क्रि. स. [हिं. छोरना] **(१) बंधन दूर किये।** उ.—जरासिंधु कौ जोर उधार्यौ, फारि कियौ द्वै फाँकौ। छोरी बंदि बिदा किए राजा, राजा ह्वै गए राँकौ—१-११३। **(२) छुड़वा दी, खुलवा दी।** उ.—बीचहिं मार परी अति भारी, राम लछमन तब दरसन पाए। दीन दयालु बिहाल देखिकै, छोरी भुजा, कहाँ तैं आए?—९-१२०। **(३) अलग की।** उ.—जाके गुननि गुथति माल कबहूँ उर तैं नहिं छोरी—१० उ. ११६। **(४) त्याग दी।** उ.—त्रेता-जुग इक पत्नी ब्रत किए सोऊ बिलपति छोरी—२८६३।

संज्ञा स्त्री. [हिं. छोरा] **लड़की, छोकड़ी।**

छोरे—क्रि. स. [हिं. छोरना] **(१) बंधन से मुक्त किया।** उ.—कोटि छयानबे नृप-सेना सब जरासंध बँध छोरे—१-३१। **(२) खोलकर, बंधन में न रखकर।**

उ.—बिनवै चतुरानन कर जोरे। तुव प्रताप जान्यौ नहिं प्रभु जू करै अस्तुति लट छोरे—४८८।

छोरैं—क्रि. स. [हिं. छोरना] **खोलती हैं, उतारती हैं।** उ.—अंग अंग आभूषन छोरैं—७६६।

छोरै—क्रि. स. [हिं. छुड़ाना] (१) **छुड़ावे, बंधन से मुक्त कराता है।** उ.—(क) बाँधौं आजु कौन तोहिं छोरै—१०-३४४। (ख) कोउ छोरै जनि ढीठ कन्हाई। बाँधे दोउ भुज ऊखल लाई—३६०। (२) **खोलता है।** उ.—जिय परी ग्रंथ कौन छोरै निकट ननद न सास—पृ. ३४८ (५७)।

छोरयौ—क्रि. स. [हिं. छोड़ना] **छोड़ दिया, बंधन से मुक्त किया।** उ.—जब जब बंधन छोरयौ चाहहिं, सूर कहै यह कोवै—३४७।

छोल—संज्ञा स्त्री. [हिं. छोलना] **छिलने का चिह्न।**

छोलना—क्रि. स. [हिं. छाल] **छीलना, खुरचना।**

मुहा.—कलेजा छोलना—**बहुत व्यथा देना।**

छोलनी—संज्ञा स्त्री. [हिं. छोलना] **छीलने, खुरचने या छेद करने का औजार।**

छोला—संज्ञा पुं. [हिं. छोलना] **चना।**

छोलि, छोली—क्रि. स. [हिं. छाल, छीलना] **छीलकर, छिलका उतारकर।** उ.—छोलि धरे खरबूजा केरा। सीतल बास करत अति बेरा—३९६।

छोवन—संज्ञा पुं. [हिं. छेवना] **कुम्हारों का डोरा।**

छोह—संज्ञा स्त्री. [हिं. क्षोभ] (१) **ममता, प्रीति।** उ.—(क) नंद पुकारत रोइ बुढ़ाई मैं मोहिं छाँड़यौ। .... .. । यह कहिकै धरनी गिरत, ज्यौं तरु कटि गिरि जाइ। नंद-घरनि यह देखिकै कान्हहिं टेरि बुलाइ। निठुर भए सुत आजु, तात की छोह न आवति—५८६। (ख) माइ जसुदा देखि तोकौं करति कितनौ छोह—७०७। (२) **दया, अनुग्रह, कृपा।** उ.—मोसौं कहत तोहिं बिनु देख, रहत न मेरौ प्रान। छोह लगति मोकौ सुनि बानी, महरि तुम्हारी आन—७२३।

छोहना—क्रि. अ. [हिं. छोह] (१) **विचलित या क्षुब्ध होना।** (२) **प्रेम या दया का व्यवहार करना।**

छोहरा—संज्ञा पुं. [सं. शावक, प्रा. छावक, छाव+रा (प्रत्य.)] **लड़का, बालक।**

मुहा.—मो आगे को छोहरा—**मेरे सामने का लड़का, बहुत छोटा या अनजान बालक।** उ.—(क) मो आगे को छोहरा जीत्यौ चाहै मोहिं—११३१। (ख) भले रे नंद के छोहरा डर नहीं कहा जो मल्ल मारे बिचारे—२६१२।

छोहरिया, छोहरी—संज्ञा स्त्री. [हिं. छोहरा] **लड़की।**

छोहाना—क्रि. अ. [हिं. छोह] (१) **प्रेम, प्रीति या स्नेह करना।** (२) **दया या अनुग्रह करना।**

छोहारा—संज्ञा पुं. [हिं. छुहारा] **छुहारा।** उ.—ऊधो मन माने की बात। दाख छोहारा छाँड़ि कै बिष कीरा बिष खात।

छोहिनी—संज्ञा स्त्री. [सं. अक्षौहिणी] **अक्षौहिणी।**

छोही—वि. [हिं. छोह] **प्रेमी, स्नेही।**

संज्ञा स्त्री. [हिं. छोलना] **गँडेरी का चीफुर।**

छौंक—संज्ञा स्त्री. [अनु.] **बघार, तड़का।**

छौंकना—क्रि. स. [हिं. छौंक] **बघारना, तड़काना।**

छौंड़ा—संज्ञा पुं. [सं. चुंडा=गड्ढा] **खत्ता, गाड़।**

छौकना—क्रि. अ. [सं. चतुष्क, प्रा. चउक्क] **पशु का चौकड़ी भरते हुए कूदना या झपटना।**

छौना—संज्ञा पुं. [सं. शावक, प्रा. छाव+औना (प्रत्य.)] (१) **पशु-पक्षी का बच्चा।** उ.—मनौ मधुर मराल-छौना, किंकिनी कल-राव—१-३०७। (२) **वत्स, पुत्र, बालक।** उ.—मधु-मेवा-पकवान-मिठाई माँगि लेहु मेरे छौना—१०-१६२।

छौर—संज्ञा पुं. [हिं. छौरा] **कपास आदि का डंठल।**

संज्ञा पुं. [सं. क्षौर] **हजामत।**

छौरा—संज्ञा पुं. [सं. क्षर=नाशवान्, नष्ट] (१) **ज्वार या बाजरे का डंठल** (२) **कपास का डंठल।**

छ्यानबे—वि. [सं. षण्णवति, प्रा. षण्णावइ या छ + नब्बे] **नब्बे से छह अधिक।** उ.—कोटि छ्यानबे मेघ बुलाए आनि कियौ व्रज डेरौ—९५९।

छ्वै—क्रि. स. [पू. हिं. छुवना, हिं. छूना] **छूना, छूकर।**

प्र.—छ्वै आवै—**छू लेता है, अपवित्र कर देता है।** उ.—पाँड़े नहिं भोग लगावन पावै। करि-करि पाक जबै अर्पत है, तबहीं तब छ्वै आवै—१०-२४९।

ज—चवर्ग का तीसरा अल्पप्राण व्यंजन; इसका उच्चारण तालु से होता है।

जंग—संज्ञा स्त्री. [फ़ा.] (१) लड़ाई। (२) झगड़ा।
संज्ञा पुं. [फ़ा.] लोहे-टीन का मुरचा।

जंगजू—वि. [फ़ा.] वीर, लड़ाका।

जंगम—वि. [सं.] (१) चलने-फिरने वाला, चर। उ.—(क) तिन मोकौं आज्ञा करी, रचि सब सृष्टि बनाइ। थावर-जंगम, सुर-असुर, रचे सबै मैं आइ—२-३६। (ख) थावर-जंगम मैं मोहिं जानै। दयासील, सबसौं हित मानैं—३-१३। (२) जो इधर-उधर हटाया या रखा जा सके। संज्ञा पुं.—चल वस्तु।

जंगम-गुल्म—संज्ञा पुं. [सं.] पैदलों की सेना।

जंगमता—संज्ञा स्त्री. [हिं. जंगम+ता] चलने की क्रिया, शक्ति या क्षमता।

जँगरैत—वि. [हिं. जंग] परिश्रमी।

जंगल—संज्ञा पुं. [सं.] (१) भूमि जहाँ जल न हो। (२) मांस। (३) वन, अरण्य।
मुहा.—जंगल में मंगल—सूनसान जगह में चहल-पहल।

जँगला—संज्ञा पुं. [पुर्त. जेंगिला] (१) कटहरा। (२) जालीदार खिड़की। (३) दुपट्टे के किनारे की कढ़ाई।
संज्ञा पुं. [सं जांगल्य] (१) एक राग। (२) एक मछली। (३) अन्न के अनाजरहित डंठल।

जंगली—वि. [हिं. जंगल] (१) जंगल संबंधी। (२) अपने आप उगने वाले। (३) जंगल में रहने वाले। (४) जो पालू न हो।

जंगा—संज्ञा पुं. [फ़ा. जंगूला] घुंघरू का दाना।

जंगार, जंगाल—संज्ञा पुं. [फ़ा.] तूतिया। एक रंग।

जंगारी, जंगाली—वि. [फ़ा.] नीले रंग का।

जंगी—वि. [फ़ा.] (१) लड़ाई संबंधी। (२) फौजी। (३) बहुत बड़ा। (४) वीर, लड़ाका, बहादुर।

जंगुल—संज्ञा पुं. [सं.] जहर, विष।

जंगै—संज्ञा स्त्री. [हिं. जंगा] घुंघरूदार कमरपट्टी।

जंघ, जंघा—संज्ञा स्त्री. [सं. जंघा] (१) जाँघ, रान। उ.—(क) जानु-जंघ त्रिभंग सुंदर, कलित कंचन दंड—१-३०७। (ख) कर कपोल भुज धरि जंघा पर लखति माई नखन की रेखनि—२७२२। (२) पिंडली। (३) कैंची का दस्ता।

जँघारथ—संज्ञा पुं. [सं.] एक ऋषि।

जंघारि—संज्ञा पुं. [सं.] विश्वामित्र का एक पुत्र।

जंघाल—संज्ञा पुं. [सं.] (१) दूत। (२) मृग।

जंघाबंधु—संज्ञा पुं. [सं.] एक ऋषि।

जँचना—क्रि. अ. [हिं. जाँचना] (१) देखा-भाला जाना। (२) जाँच में पूरा होना। (३) मन में निश्चय होना, मन को ठीक लगना।

जँचा—वि. [हिं. जँचना] (१) जाँचा हुआ। (२) अचूक।
मुहा.—जँचा-तुला—सधा हुआ। ठीक-ठीक।

जँच्यौ—क्रि. अ. [हिं. जँचना] जाँचा जाना, देखा-भाला जाना। उ.—सोधि सकल गुन काछि दिखायौ, अंतर हो जो सच्यौ। जौ रीझत नहिं नाथ गुसाईं, तौ कह जात जँच्यौ—१-१७४।

जंजपूक—संज्ञा पुं. [सं.] मंद स्वर में जप करनेवाला।

जंजर, जंजल—वि. [सं. जर्जर] पुराना, बेकार।

जंजार, जंजाल, जंजाला—संज्ञा पुं. [हिं. जग+जाल, जंजाल] (१) प्रपंच, झंझट, कपट, संकट, कुचक्र। उ.—(क) सूर-प्रभु नँदलाल, मारयौ दनुज ख्याल, मेटि जंजाल ब्रज-जन उबारयौ—१०-६२। (ख) गाइ लेहु मेरे गोपालहिं। नातरु काल-ब्यालि लेतै है, छाँड़ि देहु तुम सब जंजालहिं—१-७४। (ग) मुरछि काहैं गिरे धरनी, कहा यह जंजाल। मैं यहाँ जो आइ देखौं, परे सब बेहाल—५०४। (घ) कह्यौ प्रहलाद पढ़त मैं सार। कहा पढ़ावत और जँजार—७-२। (२) बंधन, फँसाव, जाल, उलझन। उ.—(क) सब तजि भजिऐ नंदकुमार। और भजे तैं काम सरै नहिं, मिटै न भव-जंजार—१-६८। (ख) करि तप बिप्र जन्म जब लीन्हो मिल्यौ जन्म जंजाल—सारा. ६१६। (ग) हृदय की कबहुँ न पीर घटी। दिन दिन हीन छीन भई काया दुख जंजाल जटी। (घ) भव जंजाल तोरि तरु बन के पल्लव हृदय बिदारयौ। (च) अंग परसि मेटे जंजाला—७६६।

मुहा.—जंजाल में पड़ना (फँसना)—**कठिनता या संकट में पड़ना।** परिहै बहुरि जँजाला—**उलझन में फँसेगा, संकट में पड़ जायगा।** उ.—बार बार मैं तुमहिं कहति हौं परिहै बहुरि जँजाला—१०३८।

(३) **पानी का भँवर।** (४) **बड़ा जाल।**

जंजालिया, जंजाली—वि. [हिं. जंजाल+इया, ई (प्रत्य.)] **बखेड़ा करनेवाला, झगड़ालू, उलझनी।**

जंजीर—संज्ञा स्त्री. [फ़ा.] (१) **साँकल, कुंडी।** (२) **बेड़ी।**

मुहा.—जंजीर डालना—**बाँधना, बेड़ी डालना।**

जंजीर पड़ना—**जंजीर से जकड़ा जाना।**

जंजीरि—वि. [हिं. जंजीर] **जिसमें जंजीर लगी हो।**

जंतर—संज्ञा पुं. [सं. यंत्र] (१) **कल, यंत्र।** (२) **तांत्रिक यंत्र।** (३) **ताबीज।** (४) **गले का कठुला।** (५) **मानमंदिर।** (६) **वीणा, बीन।**

जंतरमंतर—संज्ञा पुं. [हिं. यंत्र+मंत्र] (१) **टोना-टुटका, जादू-टोना।** (२) **मानमंदिर जहाँ से नक्षत्रों की गति, स्थिति आदि देखी जाती है।**

जंतरी—संज्ञा स्त्री. [सं. यंत्र] (१) **पत्रा।** (२) **जादूगर।** (३) **बाजा बजाने में कुशल।** (४) **एक औजार।**

जँतसर—संज्ञा पुं. [हिं. जाँता] **गीत जो चक्की चलाते समय स्त्रियाँ गाया करती हैं।**

जँतसार—संज्ञा स्त्री. [सं. यंत्रशाला, हिं. जाँता] **चक्की गाड़ने या जमाने का स्थान।**

जँतसारी—संज्ञा स्त्री. [हिं. जँतसार] **जँतसर।**

जंता—संज्ञा पुं. [सं. यंत्र] (१) **यंत्र।** (२) **एक औजार।**

वि. [सं. यंतृ=यंता] **यातना देनेवाला।**

जँताना—क्रि. अ. [हिं. जाँता] **जाँते में पीसा जाना।**

जंती—संज्ञा स्त्री. [हिं. जंता] **तार खींचने का औजार।**

संज्ञा स्त्री. [हिं. जनना] **माता, जननी।**

जंतु—संज्ञा पुं. [सं.] **जन्म लेनेवाला, जीव।**

जंत्र—संज्ञा पुं. [सं. यंत्र] (१) **कल, उपकरण, औजार।** (२) **तांत्रिक यंत्र।** उ.—साधन, मंत्र, जंत्र, उद्यम, बल ये सब डारौ धोइ। जो कछु लिखि राखी नँद-नंदन, मेटि सकै नहिं कोइ—१-२६२। (३) **ताला।**

जंत्रना—क्रि. स. [हिं. जंत्र] **ताला बंद करना।**

संज्ञा स्त्री. [सं. यंत्रणा] **कष्ट, यातना।**

जंत्रमंत्र—संज्ञा पुं. [सं. यंत्रमंत्र] **जादू-टोना।**

जंत्रित—वि. [सं. यंत्रित] **बंद, बँधा।**

जंत्री—संज्ञा पुं. [सं. यंत्रिन्] **वीणा बजानेवाला।**

वि.—**जकड़ कर बंद करनेवाला।**

संज्ञा पुं. [सं. यंत्र] **बाजा।**

क्रि. स. [हिं. जंत्रना] **जकड़ दी, बाँध दी।**

संज्ञा स्त्री. [हिं. जंतरी] **पत्रा, तिथिपत्र।**

जंद—संज्ञा पुं. [फ़ा. ज़ंद] (१) **पारसियों का प्राचीन धर्म ग्रंथ।** (२) **इस ग्रंथ की भाषा।**

जंदरा—संज्ञा पुं. [सं. यंत्र] (१) **ताला।** (२) **चक्की।** (३) **यंत्र।**

मुहा.—जंदरा ढीला होना—(१) **कल-पुरजे बेकार होना।** (२) **थकावट से हाथ पैर सुस्त होना।**

जंपना—क्रि. स. [सं. जल्पन] **बोलना।**

जंबाल—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **कीचड़, काई।** (२) **सेवार।**

जंबालिनी—संज्ञा स्त्री.—**नदी, सरिता।**

जंबीर—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **एक नीबू।** (२) **बन तुलसी।**

जंबु—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **जामुन का वृक्ष या फल।** (२) **जंबु द्वीप।** उ.—सातौं द्वीप कहे सुक मुनि ने सोइ कहत अब सूर। जंबु, प्लक्ष, क्रौंच, साक, साल्मलि, कुस, पुष्कर भरपूर—सारा. ३४।

जंबुक—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **फरेंदा।** (२) **एक वृक्ष।** (३) **गीदड़, स्यार।** उ.—(क) सिंह रहै जंबुक सरनागत देखी सुनी न अकथ कहानी—पृ. ३४३। (ख) कृष्न सिंह बलि धरी तिहारी लेबे को जंबुक अकुलात—१० उ. ११। (४) **बरुण।**

जंबुखंड, जंबुद्वीप, जंबुध्वज, जंबूखंड, जंबूद्वीप—संज्ञा पुं. [सं.] **सात पौराणिक द्वीपों में से एक जो पृथ्वी के मध्य में स्थित है और खारे समुद्र से घिरा है**

जंबू—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **जामुन का वृक्ष।** उ.—जंबू वृच्छ कहो क्यौं लंपट फलवर अंबु फरै—३३११। (२) **जामुन का फल।** वि.—**बहुत बड़ा या ऊँचा।**

जंभ—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **दाढ़, चौभड़।** (२) **जबड़ा।** (३) **एक दैत्य जो महिषासुर का पिता था और इंद्र द्वारा मारा गया था।** (४) **भक्षण।** (५) **जम्हाई।**

जंभक—वि. [सं.] (१) **जँभाई या नींद लानेवाला।**

(२) हिंसा करनेवाला, भक्षक। (३) कामी, कामुक।

जंभका—संज्ञा स्त्री. [सं.] जम्हाई, जँभाई, उबासी।

जंभन—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) भक्षण। (२) रति, संभोग। (३) जम्हाई, उबासी।

जंभा, जँभाई—संज्ञा स्त्री. [सं. जृम्भा] जमुहाई, उबासी। उ.—नैन चपलता कहाँ गँवाई। ....। मनौ अरुन अंबुज पर बैठे मत्त भृंग रस आई। उड़ि न सकत ऐसे मतवारे लागत पलक जँभाई—२००५।

जँभात—क्रि. अ. [हिं. जँभाना] जँभाई लेते हैं, जँभाते हैं। उ.—(क) खीझत जात माखन खात। अरुन लोचन, भौंह टेढ़ी, बार-बार जँभात—१०-१००। (ख) बदन जँभात, अंग ऐंड़ावत—१०-२४२।

जँभाना—क्रि. अ. [सं. जृम्भण] जँभाई लेना।

जँभारि—संज्ञा पुं. [सं.] (१) इंद्र। (२) विष्णु।

जंभी, जंभीर—संज्ञा पुं.—एक तरह का नीबू।

जँभुआने—क्रि. अ. [हिं. जँभाना] जँभाई ली, जँभाने लगे। उ.—पौढ़ि गई हरुएँ करि आपुन, अंग मोरि तब हरि जँभुआने—१०-१६७।

ज—संज्ञा पुं. [सं.] (१) जन्म। (२) पिता।

वि.—(१) वेगवान। (२) जीतनेवाला।

प्रत्य.—उत्पन्न, जात (जैसे जलज)।

जइयै—क्रि. स. [हिं. जेंवना] भोजन कीजिए।

क्रि. अ. [हिं. जाना] जाइए, प्रस्थान कीजिए।

जई—संज्ञा स्त्री [हिं. जौ] (१) जौ की जाति का एक अन्न। (२) जौ का छोटा अंकुर।

मुहा.—जई डालना—अंकुर निकालने के लिए किसी अन्न को तर स्थान में रखना।

(३) फूलों की बतियाँ जिनमें फूल भी लगा रहता है। उ.—परस परम अनुराग सींचि सुख लगी प्रमोद जई—१३००।

वि.—[हिं. जयी] विजयी।

जईफ—वि. [अ. ज़ईफ़] बूढ़ा, वृद्ध।

जईफी—संज्ञा स्त्री. [हिं. जईफ] बुढ़ापा।

जउ, जऊ—अव्य. [हिं. जऊ] जब, यद्यपि। उ.—इतनी जउ जानत मन मूरख, मानत याहीं धाम—१-७६।

जउबन—संज्ञा पुं. [सं. यौवन] यौवन, युवावस्था।

जए—क्रि. स. [हिं. जनना] जने, पैदा किये।

वि. [हिं. जयी] विजयी, जयशील।

क्रि. स. [हिं. जीतना] जीत लिये।

जकंद—संज्ञा स्त्री. [फ़ा. जग़ंद] छलाँग, चौकड़ी।

जकंदना—क्रि. अ. [हिं. जकंद] (१) कूदना, उछलना, छलाँग मारना। (२) टूट पड़ना।

जकंदनि—संज्ञा स्त्री. [हिं. जकंद] दौड़धूप, उलझन।

जक—संज्ञा पुं. [सं. यक्ष] (१) धन के रक्षक भूत-प्रेत, यक्ष। (२) कंजूस आदमी।

संज्ञा स्त्री [हिं. झक] (१) जिद्द, हठ, अड़। उ.—हुतीं जिती जग मैं अधमाई सो मैं सबै करी। अधम-समूह उधारन-कारन तुम जिय जक पकरी—१-१३०। (२) धुन, रट। उ.—(क) ज्यों त्रिदोस उपजे जक लागत बोलति बचन न सूधो—३०१३। (ख) जागत सोवत स्वप्न दिवस निसि कान्ह कान्ह जक री—३३६०।

मुहा.—जक बँधना—रट या धुन लगना।

संज्ञा स्त्री. [फ़ा.] (१) हार, पराजय। (२) हानि, घाटा। (३) लज्जा, पराभव। (४) डर, खौफ।

जकड़—संज्ञा स्त्री. [हिं. जकड़ना] कसने का भाव।

जकड़ना—क्रि. स. [सं. युक्त+करण] कसकर बाँधना।

क्रि. अ.—(अंगों का) हिल-डुल न सकना।

जकना—क्रि. अ. [हिं. जक या चकपकाना] चकित या भौचक्का होना, अचंभे में आना।

जकरना—क्रि. स. [हिं. जकड़ना] बाँधना, जकड़ना।

जकरि—क्रि. स. [हिं. जकड़ना] जकड़ कर, अच्छी तरह बाँध कर, कड़ा बंधन करके। उ.—(क) सूरदास प्रभु कौं यौं राखौ, ज्यौं राखिऐ, गजमत्त जकरि कै—१०-३१८। (ख) अब मैं याहि जकरि बाँधौंगी, बहुतै मोहिं खिझायौ। साँटिनि मारि करौं पहुँनाई, चितवत कान्ह डरायौ—१०-३३०। (ग) काकौ ब्रज माखन दधि काकौ, बाँधे जकरि कन्हाई—३७५।

जकरयौ—क्रि. स. [हिं. जकड़ना] जकड़ा, बाँधा।

जकात—संज्ञा स्त्री. [अ. ज़कात] (१) दान। (२) कर।

जकाती—संज्ञा पुं. [हिं. जकात] कर वसूलने वाला।

जकि—क्रि. अ. [हिं. जकना] **भौचक्के होकर, चकपकाकर।** उ.—तरु दोउ धरनि गिरे भहराइ। ....। घरिक लौं जकि रहे जहँ तहँ देहगति बिसराइ—३८७।

जकित—वि. [हिं. चकित] **विस्मित, चकित।** उ.—हरि-मुख किधौं मोहिनी माई। ....। सूरदास प्रभु बदन बिलोकित जकित थकित चित अनत न जाई।

जक्त—संज्ञा पुं. [हिं. जगत] **संसार।**

जक्ष—संज्ञा पुं. [सं. यक्ष] **यक्ष।**

जक्षण—संज्ञा पुं. [सं.] **भोजन, खाना।**

जक्ष्मा—संज्ञा स्त्री. [सं. यक्ष्मा] **क्षयी।**

जखम, जख्म—संज्ञा पुं. [फ़ा. ज़ख्म] (१) **क्षत, घाव।** (२) **मानसिक दुख का आघात, सदमा।**

जखमी, जख्मी—वि. [हिं. जखम] **घायल।**

जखीरा—संज्ञा पुं. [अ. ज़ख़ीरा] **खजाना। ढेर।**

जग—संज्ञा पुं. [सं. जगत्] (१) **संसार, विश्व।** (२) **संसार के लोग।** उ.—जग जानत जदुनाथ, जिते जन निज भुज-स्त्रम-सुख पायौ—१-१५।

संज्ञा पुं. [सं. यज्ञ] **यज्ञ।** उ.—(क) चलिए बिप्र जहाँ जग-बेदी बहुत करी मनुहारी—८-१४। (ख) जग अरंभ करि नृप तहँ गयौ—६-३।

जगकर—संज्ञा पुं. [हिं. जग+करना] **ब्रह्मा।**

जगजगा—संज्ञा पुं. [जगमग से अनु.] **चमकदार पन्नी।**

वि.—**चमकदार, जगमगाया हुआ।**

जगजगाना—क्रि. अ. [अनु.] **चमकना।**

जगजीवन—संज्ञा पुं. [सं. जग+जीवन] **संसार के प्राणाधार, ईश्वर।** उ.—जे जन सरन भजे बनवारी। ते ते राखि लिए जगजीवन, जहँ जहँ बिपति परी तहँ टारी—१-२२।

जगजोनि—संज्ञा पुं. [सं. जगद्योनिः] **ब्रह्मा।**

जगझंप—संज्ञा पुं. [सं.] **एक बाजा।**

जगड्वाल—संज्ञा पुं. [सं.] **व्यर्थ का आडंबर।**

जगण—संज्ञा पं. [सं.] **तीन अक्षरों का एक गण जिसमें लघु, गुरु, लघु (जैसे महेश) का क्रम रहता है।**

जगत, जगत्—संज्ञा पुं. [सं. जगत्] (१) **विश्व, संसार। (श्री वल्लभाचार्य और सूर के विचार से 'जगत' ब्रह्म का सत्-अंश होने के कारण सत्य है और 'संसार' अहंता-ममतात्मक माया-जन्य होने के कारण मिथ्या है। ब्रह्म की सत् शक्ति से उत्पन्न सृष्टि जगत है और अध्यास से उत्पन्न सृष्टि संसार है।)** (२) **वायु।** (३) **महादेव।** (४) **जंगम।**

संज्ञा स्त्री. [सं. जगति = घर की कुरसी] **कुएँ के चारो तरफ का ऊँचा चबूतरा।**

जगत-गुरु—संज्ञा पुं. [सं. जगद्गुरु] **परमेश्वर।** उ.—देखौ री जसुमति बौरानी।........। जानत नाहिं जगत गुरु माधौ, इहिं आए आपदा नसानी—१०-२५८

जगतपति—संज्ञा [सं. जगत्+पति] **परमेश्वर।**

जगतपिता—संज्ञा पुं. [सं. जगत्पिता] **विश्व की सृष्टि करने वाले, सृष्टिकर्त्ता।**

जगतमणि, जगतमनि—संज्ञा पुं. [सं. जगत्+मणि] **संसार से सबसे श्रेष्ठ, परमेश्वर।** उ.—जहाँ बसत जदुनाथ जगतमनि वारक तहाँ आउ दै फेरी—२८५२।

जगतवंदन—वि. [सं. जगत्+वंदन] **जिसकी संसार वंदना करता है, संसार में वंदनीय।** उ.—नंदनंदन जगतवंदन धरे नटवर वेस—१० उ. ६४।

जगतसेठ—संज्ञा पुं. [सं. जगत+श्रेष्ठ] **बहुत धनी और विख्यात महाजन।**

जगतात—संज्ञा पुं. [हिं. जग+तात = पिता] **जगतपिता।** उ.—नाथत ब्याल बिलंब न कीन्हौ। ....। अस्तुति करन लग्यौ सहसौ मुख, धन्य धन्य जगतात—५३७।

जगती—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **संसार।** (२) **पृथ्वी।**

जगतीतल—संज्ञा पुं. [सं.] **भूमि, पृथ्वी।**

जगदंबा, जगदंबिका—संज्ञा स्त्री. [सं.] **दुर्गा।**

जगद्—वि. [सं.] **पालक, रक्षक।**

जगदाधार—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **ईश।** (२) **वायु।**

जगदानंद—संज्ञा पुं. [सं.] **परमेश्वर।**

जगदायु—संज्ञा पुं. [सं.] **वायु।**

जगदीश, जगदीस—संज्ञा पुं. [सं. जगत्+ईश] (१) **परमेश्वर।** (२) **विष्णु।** (३) **जगन्नाथ।**

जगदीश्वर—संज्ञा पुं. [सं.] **परमेश्वर।**

जगदीश्वरी—संज्ञा स्त्री. [सं.] **भगवती।**

जगदीसर—संज्ञा पुं. [सं. जगदीश्वर] **परमेश्वर।** उ.—

तुम्हरौ नाम तजि प्रभु जगदीसर, सु तौ कहौ मेरे और कहा बल—१-२०४।

जगद्गुरु—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **परमेश्वर** (२) **शिव**। (३) **नारद**। (४) **प्रतिष्ठित व्यक्ति**। (५) **शंकराचार्य की गद्दी के महंतों की उपाधि**।

जगद्गौरी—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **दुर्गा**। (२) **मनसा देवी जो नागों की बहन और जरत्कारु ऋषि की स्त्री थी**।

जगद्धाता—संज्ञा पुं. [सं. जगद्धातृ] (१) **ब्रह्मा**। (२) **विष्णु**। (३) **महादेव**।

जगद्धात्री—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **दुर्गा**। (२) **सरस्वती**।

जगद्वंद्य—वि. [सं.] **संसार भर में पूज्य**।

जगना—क्रि. अ. [सं. जागरण] (१) **नींद से उठना**। (२) **सचेत होना**। (३) **उत्तेजित होना**। (४) **जलना, दहकना**। (५) **चमकना**।

जगनाथ—संज्ञा पुं. [सं.] **संसार के स्वामी, ईश्वर**। उ.—ज्योतिरूप जगन्नाथ जगतगुरु, ज्योति पिता जगदीस—४८७।

जगन्नाथ—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **जगत का नाथ, ईश्वर**। (२) **विष्णु**। (३) **पुरी नामक स्थान में विष्णु की मूर्त्ति जो सुभद्रा और बलभद्र की मूर्तियों के साथ है**। (४) **उड़ीसा में समुद्र के किनारे एक प्रसिद्ध तीर्थ**।

जगनियंता—संज्ञा पुं. [सं. जगन्नियंतृ] **ईश्वर**।

जगन्मय—संज्ञा पुं. [सं.] **विष्णु**।

जगन्मयी—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **लक्ष्मी** (२) **संसार की संचालिका शक्ति**।

जगन्माता—संज्ञा स्त्री. [सं.] **दुर्गा**।

जगन्मोहिनी—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **दुर्गा**। (२) **महामाया**।

जगपति—संज्ञा पुं. [सं.] **संसार के स्वामी**।

जगपाल—संज्ञा पुं. [सं.] **संसार के पालक**। उ.—अब धौं कहौ कौन दर जाउँ। तुम जगपाल, चतुर चिंतामनि, दीनबंधु सुनि नाउँ—१-१६५।

जगप्रान—संज्ञा पुं. [हिं. जग + प्राण] **वायु**।

जगबंद—वि. [सं. जगद्वंद्य] **संसार भर में पूज्य**।

जगमग, जगमगा—वि. [अनु.] (१) **जिस पर प्रकाश पड़ता हो**। (२) **जो चमक रहा हो**।

जगमगाति—क्रि. अ. [हिं. जगमगाना (अनु.)] **जगमगाती है, चमकती है, दमकती है**। उ.—अरुन चरन नख-जोति जगमगाति, रुन-झुन करति पाइँ पैजनियाँ—१०-१०६।

जगमगाना—क्रि. अ. [अनु.] **चमकना, दमकना**।

जगमगाहट—संज्ञा स्त्री. [हिं. जगमग] **जमक, दमक**।

जगर—संज्ञा पुं. [सं.] **कवच**।

जगरन—संज्ञा पुं. [सं. जागरण] **जागना**।

जगरमगर—वि. [हिं. जगमग] **प्रकाश या चमकयुक्त**।

जगवाना—क्रि. स. [हिं. जगना] (१) **सोते से उठवाना**। (२) **मंत्र द्वारा किसी वस्तु में प्रभाव कराना**।

जगह—संज्ञा स्त्री. [फ़ा. जायगाह] (१) **स्थान, स्थल**। मुहा—जगह जगह—**सब जगह, हर जगह**। (२) **स्थिति**। (३) **मौका**। (४) **पद, ओहदा**।

जगहर—संज्ञा स्त्री. [हिं. जगना] **जगने का भाव**।

जगाइ—क्रि. स. [हिं. जगाना] **जगा दिया, नींद त्यागने को प्रेरित किया**। उ.—परसुराम उनकौं दियौ सोवत मनौ जगाइ—९-१४।

जगाऊँ—क्रि. स. [हिं. जगाना] (१) **नींद से उठाऊँ, सोते से जगाऊँ**। उ.—सकुच होत सुकुमार नींद मैं कैसैं प्रभुहिं जगाऊँ—९-१७२। (२) **यंत्र या सिद्धि आदि का साधन करूँ**। उ.—हरि कारन गोरखहिं जगाऊँ जैसे स्वाँग महेस—२७५४।

जगाए—क्रि. स. [हिं. जगाना] (१) **जगाया, नींद त्याग कर उठने को प्रेरित किया**। उ.—सोवत नृप उरबसी जगाए—९-२। (२) **उत्तेजित किया, सुप्त भाव को जाग्रत किया**। उ.—(क) दादुर मोर पपीहा बोलत सोवत मदन जगाए—२८८३। (ख) सूरजस्याम मिटी दरसन आसा नूतन बिरह जगाए—२९५९।

जगात—संज्ञा पुं. [अ. ज़कात] (१) **दान**। (२) **कर**।

जगाती—संज्ञा पुं. [हिं. जगात या फ़ा. जगाती] (१) **कर वसूलने वाला कर्मचारी**। (२) **कर वसूलने का काम या भाव**।

जगाना—क्रि. स. [हिं. जागना] (१) **नींद त्यागने की प्रेरणा देना**। (२) **चेत में लाना, सजग करना**। (३) **ठीक स्थिति में लाना**। (४) **सुप्त भाव को जाग्रत**

करना। (५) उत्तेजित करना, क्रुद्ध करना। (६) धीमी आग को तेज करना। (७) मंत्र या सिद्धि की साधना करना।

जगायौ—क्रि. स. [हिं. जगाना] (१) **जगा दिया, नींद से उठा दिया, क्रुद्ध कर दिया।**

मुहा.—सोवत सिंह जगायौ—**बलवान व्यक्ति को अपना शत्रु बना लिया; अपने से शक्तिशाली को छेड़ दिया।** उ.—तुम जनि डरपौ मेरी माता, राम जोरि दल ल्यायौ। सूरदास रावन कुल खोवन, सोवत-सिंह जगायौ—६-८८।

(२) **सचेत किया, होश में लाये।** उ.—ब्याकुल धरनी गिरि परे नंद भए बिनु प्रान। हरि के अग्रज बंधु तुरतहीं पिता जगायौ—५८६। (३) **तीव्र किया, उत्तेजित किया, सुलगाया।** उ.—प्रेम उमँगि कोकिला बोली बिरहिनि बिरह जगायौ—१३६२। (४) **प्रसिद्ध किया।**

मुहा.—नाम जगाओ—**नाम फैलाया, प्रसिद्ध किया।** उ.—त्रिभुवन मैं अति नाम जगायौ फिरत स्याम सँग ही—पृ. ३२२।

जगार—संज्ञा स्त्री. [हिं. जगाना] **जागरण, जागृति।** उ.—नैना ओछे चोर सखी री। स्याम रूप निधि नोखैं पाई देखत गए भरी री। ....। कहा लेहिं कह तजैं बिबस भए तैसिय करनि करी री। भोर भए भोरै सौ ह्वै गयौ धरे जगार परी री—२६१८।

जगावत—क्रि. स. [हिं. जगाना] (१) **उत्तेजित करता है।** उ.—बंसी री बन कान्ह बजावत। ....। सुर-नर-मुनि बस किए राग रस, अधर-सुधा-रस मदन जगावत—६४८। (२) **नींद से उठाती है, सोते से जगाती है।** उ.—प्रातकाल उठि जननि जगावत—सारा. १७०।

जगावति—क्रि. स. स्त्री. [हिं. जगाना] **जगाती है, नींद त्यागने को प्रेरित करती है, सोते से उठाती है।** उ.—बदन उघारि जगावति जननी, जागहु बलि गई आनँद-कंद—१०-२०४।

जगावते—क्रि. स. [हिं. जगाना] **जगाते थे, उत्तेजित करते थे।** उ.—इहिं बिरियाँ बन ते ब्रज आवते। ....। कबहुँक लै लै नाम मनोहर धवरी धेनु बुलावते। इहिं विधि वचन सुनाय स्याम घन मुरछे मदन जगावते—२६३५।

जगावन—संज्ञा. स्त्री. सवि. [हिं. जगाना] **जगाने, नींद त्यागने या (सोते से) उठाने को।** उ.—दासी कुँवर जगावन आई। देख्यौ कुँवर मृतक की नाई—६-५।

जगावै—क्रि. स. [हिं. जगाना] **जगाती है, निद्रा दूर करती है।** उ.—भरि सोवै सुख-नींद मैं, तहाँ सु जाइ जगावै - १-४४।

जगी—क्रि. अ. स्त्री. [सं. जागरण, हिं. जगना] (१) **(देवी, योगिनी आदि) प्रभाव दिखाने लगी।** उ.—भूमि अति डगमगी, जोगिनी सुनि जगी, सहस-फन-सेस कौ सीस काँप्यौ—६-१०६। (२) **जागती रही, सोयी नहीं।** उ.—कर मीड़ति पछिताति बिचारति इहिं बिधि निसा जगी—२७६०।

संज्ञा स्त्री. [देश.] **मोर की जाति का एक पक्षी।**

जगीत—संज्ञा स्त्री. [हिं. जगत] **कुएँ की जगत।**

जगीर—संज्ञा स्त्री. [हिं. जागीर] **जागीर।**

जगीला—वि. [हिं. जागना] **नींद न आने के कारण अलसाया हुआ, उनींदा।**

जगुरि—संज्ञा पुं. [सं.] **जंगम।**

जग्धि—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **भोजन।** (२) **सहभोज।**

जग्मि—संज्ञा पुं. [सं.] **वायु, हवा।**

वि.—**चलता-फिरता, हिलता-डोलता, गतियुक्त।**

जग्य—संज्ञा पुं. [सं. यज्ञ] **यज्ञ।** उ.—जोग-जग्य-जप-तप-ब्रत दुर्लभ, सो हरि गोकुल ईस—४८७।

जग्यौ—क्रि. अ. भूत. [हिं. जागना] **जागे, सोकर उठे।** उ.—अस्वत्थामा भय करि भग्यौ। इहाँ लोग सब सोवत जग्यौ—१-२८६।

जघन—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **कमर के नीचे आगे का भाग, पेड़ू।** (२) **नितंब।**

जघन्य—वि. [सं.] (१) **अंतिम, चरम।** (२) **त्याज्य, बहुत बुरा।** (३) **क्षुद्र, नीच।**

संज्ञा पुं.—(१) **शूद्र।** (२) **नीच जाति।**

जघ्नि—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **वधिक।** (२) **वधिक-अस्त्र।**

जचना—क्रि. अ. [हिं. जँचना] (१) **देखा-भाला जाना।**

(२) जाँच में ठीक उतरना। (३) जान पड़ना।
जच्चा—संज्ञा स्त्री. [फ़ा. ज़च्चा] वह स्त्री जिसे बच्चा हुआ हो।
जच्छ—संज्ञा पुं. [सं. यक्ष] यक्ष, एक प्रकार के देवता जो प्रचेता की संतान और कुबेर के सेवक माने जाते हैं। उ.—जच्छ, मृतु, बासुकी, नाग, मुनि, गंधरब, सकल बसु, जीति मैं किए चेरे—६-१२६।
जजना—क्रि. स.—पूजना, आदर करना।
जजमान, जजिमान—संज्ञा पुं. [सं. यजमान] (१) धर्म-कर्म करने और दान देनेवाला। (२) यज्ञ करने वाला।
जजवा—संज्ञा पुं.—प्रवृत्ति, झुकाव, रुचि।
जजा—संज्ञा स्त्री. [फ़ा. जज़ा] इनाम, पुरस्कार।
जजाति—संज्ञा पुं. [सं. ययाति] ययाति जो राजा नहुष के पुत्र थे और जिनका विवाह शुक्राचार्य की पुत्री देवयानी से हुआ था।
जजिया—संज्ञा पुं. [अ. जज़िया] (१) दंड। (२) एक कर जो हिंदुओं से लिया जाता था।
जज्ञ—संज्ञा पुं. [सं. यज्ञ] भारतीयों का प्रसिद्ध वैदिक कर्म जिसमें वेद-मंत्रों के साथ हवन और पूजन होता है।
जज्ञपुरुष—संज्ञा पुं. [सं. यज्ञपुरुष] विष्णु। उ.—(क) दत्तात्रेयऽरु पृथु बहुरि, जज्ञ पुरुष-बपु धार। कपिल, मनू, हयग्रीव पुनि, कीन्हौ ध्रुव अवतार—२-३६। (ख) जज्ञपुरुष प्रसन्न जब भए। निकसि कुंड तैं दरसन दए।
जज्ञ-भाग—संज्ञा पुं. [सं. यज्ञभाग] यज्ञ का भाग जो देवताओं को दिया जाता है। उ.—जज्ञ-भाग नहिं लियौ हेत सौं रिषिपति पतित बिचारे—१-२५।
जटना—क्रि. स. [हिं. जाट] धोखा देना, ठगना।
क्रि. स. [सं. जटन] जड़ना, ठोंकना।
जटल—संज्ञा स्त्री. [सं. जटिल] गप, बकवास।
यौ.—जटल काफिया—ऊटपटाँग बकना।
जटा—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) सिर के उलझे हुए लंबे-लंबे बाल। (२) जड़ के पतले-पतले सूत। (३) उलझे हुए रेशे। (४) शाखा। (५) जूट, पाट।
जटाचीर, जटाटीर—संज्ञा स्त्री. [सं.] महादेव, शिव।
जटाजूट—संज्ञा पुं. [सं.] (१) जटा का समूह। (२) लंबे बालों का समूह। (३) शिव जी की जटा।
जटाधर—संज्ञा पुं. [सं.] (१) शिव जी। (२) एक बुद्ध।
जटाधारी—वि. [सं.] (१) जो जटा रखता हो। (२) जिसके बाल लंबे और उलझे हुए हों।
संज्ञा पुं.—(१) शिव, महादेव। (२) एक बुद्ध।
जटाना—क्रि. अ. [हिं. जटना] ठगा जाना।
जटामाली—संज्ञा पुं. [सं.] शिव जी, महादेव।
जटामासी—संज्ञा स्त्री. [सं. जटामांसी] एक सुगंधित जड़।
जटायु—संज्ञा पुं. [सं.] रामायण का एक गिद्ध जो सूर्य के सारथी अरुण का, उसकी श्येनी नाम्नी स्त्री से उत्पन्न पुत्र था। सीता जी को हर कर लिये जाते हुए रावण से युद्ध करके यह घायल हुआ। रामचंद्र ने इसकी अंत्येष्टि क्रिया की।
जटाल—संज्ञा पुं. [सं.] (१) बरगद। (२) गुग्गुल।
वि.—जिसके लंबी जटा हो, जटाधारी।
जटासुर—संज्ञा पुं. [सं.] एक राक्षस जो द्रौपदी पर मोहित होकर युधिष्ठिर, नकुल, सहदेव और द्रौपदी को हरकर ले जाते समय भीम के द्वारा मारा गया था।
जटि—वि. [सं. जटित] जड़ा हुआ। उ.—किंकिनी कलित कटि, हाटक रतन जटि, मृदु कर कमलनि पहुँची रुचिर बर—१०-१५१।
संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) बरगद का वृक्ष। (२) पाकर का वृक्ष। (३) जटा। (४) समूह। (५) जटामासी।
जटित—वि. [सं.] जड़ा हुआ। उ.—(क) नगनि-जटित मनि-खंभ बनाए, पूरन बात सुगंध—६-७५। (ख) आगर इक लोह जटित लीन्ही बरिबंड। दुहूँ करनि असुर हयौ, भयौ मांस-पिंड—६-६६।
जटिल—वि. [सं.] (१) जिसके जटा हो, जटाधारी। (२) दुरूह, दुर्बोध, कठिन। (३) क्रूर, दुष्ट।
संज्ञा पुं.—(१) सिंह। (२) ब्रह्मचारी। (३) शिवजी।
जटिला—संज्ञा स्त्री [सं.] (१) ब्रह्मचारिणी। (२) जटामासी। (३) पीपल। (४) एक ऋषि-कन्या जिसका विवाह सात ऋषि-पुत्रों से हुआ था।
जटी—क्रि. स. [हिं. जटना] जकड़ी हुई। उ.—दिन-

दिन हीन छीन भइ काया दुख-जंजाल जटी—१-९८।

संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) पाकर-वृक्ष। (२) जटामासी।

जटै—संज्ञा स्त्री. [सं. जटा] जटा को, साधुओं के उलझे हुए बड़े-बड़े बालों को। उ.—जोगी जोग धरत मन अपनैं, सिर पर राखि जटै—१-२६३।

जठर—संज्ञा पुं. [सं.] (१) पेट।

मुहा.—जठर जरै—पेट की अग्नि में जले, गर्भ में यातना भोगे। उ.—यह गति-मति जानै नहिं कोऊ, किहिं रस रसिक ढरै। सूरदास भगवंत-भजन बिनु फिरि फिरि जठर जरै—१-३५।

(२) एक पर्वत। (३) शरीर। (४) एक देश।

वि.—(१) वृद्ध, बूढ़ा। (२) कठिन।

जठराग्नि, जठरानल—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) पेट की गर्मी जिससे अन्न पचता है। (२) माता-पिता का संतान से वात्सल्य या प्रेम।

जठरातुर—वि. [सं. जठर+आतुर] भूख से व्याकुल, भूखा। उ.—बालभाव अनुसरति भरति दृग अग्र-अंसुकन आनै। जनु खंजरीट जुगल जठरातुर लेत सुभष अकुलानै—२०५३।

जठेरा—वि. [हिं. जेठ या जठर] जेठा, बड़ा।

जड़—वि. [सं.] (१) चेतनारहित, अचेतन। (२) चेष्टाहीन, स्तब्ध। (३) मंद बुद्धि, नासमझ। (४) अनजान, अनभिज्ञ, मूर्ख। उ.—जड़ स्वरूप सौं जहँ तहँ फिरै। असन-बसन की सुधि नहिं धरै—५-३। (५) गूँगा। (६) बहरा। (७) जिसके मन में मोह हो।

संज्ञा पुं.—(१) जल। (२) सीसा नामक धातु।

संज्ञा स्त्री. [सं. जटा—वृक्ष की जड़] (१) वृक्षों या पौधों की मूल जो जमीन के भीतर रहकर उनका पोषण करती है। (२) नींव, बुनियाद।

मुहा.—जड़ उखाड़ना(खोदना)—हानि पहुँचाना, नाश करना। जड़ जमना—दृढ़ या स्थायी होना, स्थिति सम्हलना। जड़ पकड़ना—मजबूत होना। जड़ पड़ना—नींव पड़ना।

(३) हेतु, कारण। (४) आधार, आश्रय, सहारा।

जड़ता, जड़ताई—संज्ञा स्त्री. [हिं. जड़ता] (१) मूर्खता, अज्ञानता। उ.—(क) परम कुबुद्धि अजान ज्ञान तैं, हिय जु बसति जड़ताई—१-१८७। (ख) कहिए कहा दोष दीजै किहिं अपनी ही जड़ताई—२७८४। (२) अचेतनता। (३) चेष्टा न करने का भाव, स्तब्धता, अचलता।

जड़त्व—संज्ञा पुं. [सं.] (१) हिलडुल न सकने का भाव। (२) स्थिति और गति की इच्छा का अभाव।

जड़ना—क्रि. स. [सं. जटन] (१) एक चीज को दूसरी में ठोंक-पीट कर बैठाना। (२) किसी वस्तु से प्रहार करना। (३) चुगली खाना, शिकायत करना, कान भरना।

जड़भरत—संज्ञा पुं. [सं.] भरत नामक एक ब्राह्मण राजा का हिरन के बच्चे से इतना प्रेम था कि मरते समय उन्हें उसी की चिंता बनी रही। दूसरे जन्म में वे हिरन की योनि में जन्मे। पुण्य के प्रभाव से उन्हें पिछले जन्म का ज्ञान था। अतएव अगले जन्म में पुनः ब्राह्मण होने पर सांसारिक माया-मोह से अपने को बचाते रहकर वे जड़वत् रहने लगे। अतएव वे जड़भरत के नाम से विख्यात हो गये। उ.—ऐसी भाँति नृपति बहु भाषी। सुनि जड़ भरत हृदय मैं राखी—५-४।

जड़मति—वि. [सं.] मूर्ख बुद्धिवाला। उ.—जनि डरयौ मूढ़मति काहू सौं, भक्ति करौ इकसारि—७-३।

जड़वाद—संज्ञा पुं. [सं.] भौतिकवाद।

जड़वादी—वि. [सं.] भौतिकवादी।

जड़वाना—क्रि. स. [हिं. जड़ना] नग, कील आदि जड़ाना।

जड़ाई—क्रि. अ. [हिं. जाड़ा, जड़ाना) जाड़ा सहा, ठंड या सरदी खाई। उ.—छाँड़हु तुम यह टेक कन्हाई। नीर माहिं हम गई जड़ाई—७९९।

संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) जड़ने का काम, पच्चीकारी। (२) जड़ने का भाव। (३) जड़ने का वेतन।

जड़ाऊ—वि. [हिं. जड़ना] जिसमें नग आदि जड़े हों।

जड़ाना—क्रि. स. [हिं. जड़ना] जड़ने का काम कराना।

क्रि. अ. [हिं. जाड़ा] जाड़ा सहना, शीत लगना।

जड़ाव, जड़ावट—संज्ञा पुं. [हिं. जड़ना] जड़ने का काम, भाव या ढंग।

जड़ाँवर, जड़ावल—संज्ञा पुं. [हिं. जाड़ा] जाड़े के कपड़े।

जड़ित—वि. [हिं. जड़ना या सं. जटित] (१) जो (नग आदि) जड़ा गया हो। (२) जिसमें नग आदि जड़े हों। उ.—कुंडल स्रवन कनक मनि भूषित जड़ित लाल अति लोल मीन तन—२५७३।

जड़िमा—संज्ञा स्त्री. [सं.] जड़ता, जड़त्व।

जड़िया—संज्ञा पुं. [हिं. जड़ना] जड़नेवाला।

जड़ी—संज्ञा स्त्री [हिं. जड़] वह वनस्पति जिसकी जड़ से औषध बनती है।

यौ.—जड़ी-बूटी—जंगली औषध या वनस्पति।

जड़ीभूत—वि. [सं.] जड़वत्, सुन्न।

जड़ुआ—संज्ञा पुं. [हिं. जड़ना] पैर का एक गहना।

जड़ैया—संज्ञा स्त्री. [हिं. जूड़ी] जूड़ी।

संज्ञा पुं. [हिं. जड़िया] नग जड़नेवाला।

जढ़ता—संज्ञा स्त्री. [हिं. जड़ता] निश्चेष्टता। मूर्खता।

जत—वि. [सं. यत्] जितना, जिस मात्रा का।

जतन—संज्ञा पुं. [सं. यत्न] उपाय, यत्न। उ.—(क) करौं जतन, न भजौं तुमकौं, कछुक मन उपजाइ—१-४५। (ख) माधौ इतने जतन तब काहे को किए—२७२७।

जतननि—संज्ञा पुं. [हिं. जतन+नि] उपायों से, यत्न करके। उ.—अगम सिंधु जतननि सजि नौका, हठि क्रम-भार भरत—१-५५।

जतनी—संज्ञा पुं. [सं. यत्न] (१) यत्न या उपाय में लगा रहनेवाला। (२) बहुत चतुर, चालाक।

जतलाना, जताना—क्रि. स. [सं. ज्ञात, हिं. जताना] (१) ज्ञात कराना, बताना। (२) सूचना देना, सावधान करना।

जतारा—संज्ञा पुं. [हिं. जाति या यूथ] वंश, जाति।

जति, जती—संज्ञा पुं. [सं. यतिन, हिं. यती] संन्यासी। उ.—जती, सती, तापस आराधैं, चारौं बेद रटैं—१-२६३।

संज्ञा स्त्री. [सं. यति] छंद के चरणों का वह स्थान जहाँ पढ़ते समय रुका जा सकता है।

जतु, जतुक—संज्ञा पुं. [सं.] (१) गोंद। (२) लाख।

जतेक—क्रि. वि. [हिं. जितना + एक] जितना, जिस मात्रा का।

जत्था—संज्ञा पुं. [सं. यूथ] समूह, झुंड, गरोह।

जत्रु—संज्ञा पुं. [सं.] (१) गले की कमानीदार हड्डी, हँसली। (२) कंधे और बाँह का जोड़।

जथा—क्रि. वि. [सं. यथा] जिस प्रकार, जैसे। उ.—(क) पावक जथा दहत सबही दल तूल-सुमेरु समान—१-२६६। (ख) तिन मैं कहौं एक की कथा। नारायन कहि उधरयौ जथा—६-३।

संज्ञा स्त्री. [सं. यूथ] मंडली, समूह, झुंड।

संज्ञा स्त्री. [सं. गथ] धन-सम्पत्ति, पूँजी।

यौ.—जमा-जथा—धन-दौलत, पूँजी।

जथाजोग—अव्य. [सं. यथायोग्य] जैसा चाहिए, वैसा; उपयुक्त, यथोचित। उ.—जथाजोग भेंटे पुरवासी, गए सूल, सुख-सिंधु नहाए—६-१६८।

जथामति—अव्य. [सं. यथामति] बुद्धि के अनुसार। उ.—सूर प्रभु-चरित अगनित, न गनि जाहिं, कछु जथा मति आपनी कहि सुनाए—४-११।

जथारथ—वि. [सं. यथार्थ] (१) उचित। (२) ज्यों का त्यों।

जद—क्रि. वि. [हिं. यदा] जब, जब कभी।

अव्य. [सं. यदि] यदि, अगर।

जदपि—क्रि. वि. [सं. यद्यपि] यद्यपि। उ.—मुरली तऊ गुपालहिं भावति। सुन री सखी जदपि नँदलालहिं नाना भाँति नचावति—६५५।

जदबद—संज्ञा पुं. [हिं. जद्‌वद्‌] न कहने योग्य बात।

जदु—संज्ञा पुं. [सं. यदु] राजा ययाति का बड़ा पुत्र जो देवयानी के गर्भ से उत्पन्न हुआ था। वृद्ध होने पर ययाति ने इससे कहा—विलास से मेरा मन नहीं भरा है; अतः तुम मेरी वृद्धावस्था से अपनी युवावस्था का विनिमय कर लो जिससे मैं युवक हो जाऊँ। यदु ने यह प्रस्ताव स्वीकार न किया। इस पर पिता ने राज्य नष्ट हो जाने का इसे शाप दिया। इसका राज्य नष्ट तो हुआ; पर बाद में इंद्र की कृपा से इसे पुनः राज्य प्राप्त हुआ। इसके वंशज यादव कहलाते हैं। श्रीकृष्ण इसी के वंश में हुए थे। उ.—बड़े पुत्र जदु सौं कह्यौ आइ। उन कह्यौ,

बृद्ध भयौ नहिं जाइ—६-१७४।

जदुकुल—संज्ञा पुं. [सं. यदुकुल] **यदुवंश, यदुकुल।** उ.—आजु हो बधायौ बाजै नंद गोपराइ कै। जदुकुल जादौराइ जनमें हैं आइ कै—१०-३१।

जदुनंदन—संज्ञा पुं. [सं. यदुनंदन] **श्रीकृष्ण।**

जदुनाथ—संज्ञा पुं. [सं. यदुनाथ] **श्रीकृष्ण।**

जदुपति, जदुपाल—संज्ञा पुं. [सं. यदुपति, यदुपाल] **श्रीकृष्ण।** उ.—सातएँ दिन आइ जदुपति कियौ आप उधार—सा. ११८।

जदुपुर—संज्ञा पुं. [सं. यदुपुर] **राजा यदु की राजधानी मथुरा नगरी।**

जदुवंसी—संज्ञा पुं. [सं. यदुवंशी] **राजा यदु के वंशज।**

जदुराइ, जदुराई, जदुराज, जदुराय—संज्ञा पुं. [सं. यदुराज] **यादवराज, श्रीकृष्ण।**

जदुराम—संज्ञा पुं. [सं. यदुराम] **बलराम।**

जदुवर—संज्ञा पुं. [सं. यदुवर] **श्रेष्ठ यादव, श्रीकृष्ण।**

जदुवीर—संज्ञा पुं. [सं. यदुवीर] **वीर यादव, श्रीकृष्ण।**

जद्द—वि. [अ. ज्याद:] **अधिक, ज्यादा।**

वि. [सं. योद्धा] **प्रबल, प्रचंड।**

संज्ञा पुं. [अ.] **दादा, पितामह।**

जद्दपि, जद्यपि—क्रि. वि. [सं. यद्यपि] **यदि, अगर।**

जद्दबद्द—संज्ञा पुं. [सं. यत्+अवद्य] **न कहने योग्य बात।**

जद्दी—वि. [फ़ा. जद] **बाप-दादा के समय का।**

जन—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **लोक, लोग।** (२) **प्रजा।** (३) **देहाती, गँवार।** (४) **अनुयायी, भक्त, दास।** उ.—(क) खंभ तैं प्रगट ह्वै जन [illegible]—१-५। (ख) हरि अर्जुन निज जन जान। लै गए तहाँ न जहँ ससि भान—(५) **समूह, समुदाय।** उ.—दुर्बासा कौ साप निबारयौ, अंबरीष-पति राखी। ब्रह्मलोक-परजंत फिरयौ तहँ देवमुनीजन साखी—१-१०।

जनक—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **जन्मदाता।** (२) **पिता।** (३) **मिथिला के एक राजवंश की उपाधि। इस वंश के लोग अपने पूर्वज निमि विदेह के नाम पर वैदेह भी कहलाते थे। इसी कुल में उत्पन्न राजा सीरध्वज की पुत्री का नाम सीता था।** (४) **एक वृक्ष।**

जनकजा—संज्ञा स्त्री. [सं. जनक+जा] **सीता जी।**

जनकता—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **उत्पन्न करने का भाव या काम।** (२) **उत्पन्न करने की शक्ति।**

जनकनंदिनी—संज्ञा स्त्री. [सं.] **जनक की पुत्री सीता।**

जनकपुर—संज्ञा पुं. [सं.] **मिथिला की प्राचीन राजधानी जो हिन्दुओं का तीर्थ स्थान है।**

जनकसुता—संज्ञा स्त्री. [सं.] **जनक की पुत्री सीता।**

जनकौर—संज्ञा पुं. [हिं. जनक+औरा (प्रत्य.)] (१) **जनक का स्थान या नगर।** (२) **जनक का वंशज या संबंधी।**

जनचर्चा—संज्ञा स्त्री. [सं.] **अफवाह।**

जनतंत्र—संज्ञा पुं. [सं.] **जनता के प्रतिनिधियों का शासन।**

जनता—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **जनन या उत्पादन का भाव।** (२) **जनसाधारण, सर्वसाधारण।**

जनधा—संज्ञा पुं. [सं.] **अग्नि, आग।**

जनन—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **उत्पत्ति।** (२) **जन्म।** (३) **आविर्भाव।** (४) **वंश, कुल।** (५) **पिता।** (६) **परमेश्वर।**

जनना—क्रि. स. [सं. जनन=जन्म] **(संतान को) जन्म देना।**

जननि, जननी—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **उत्पन्न करने वाली।** (२) **माता।** उ.—(क) कपट हेत परसैं बकी जननी गति पावै—१-४। (ख) सूरदास भगवंत भजन बिनु धरनी जननि बोझ कत मारी—१-३४। (ग) हौं यहाँ तेरे ही कारन आयो। तेरी सौं सुन जननि जसोदा हठि गोपाल पठायो। (३) **जूही का पेड़।** (४) **दया, कृपा।** (५) **एक गंध-द्रव्य।**

जननेंद्रिय—संज्ञा स्त्री. [सं.] **इंद्रिय जिससे प्राणियों की उत्पत्ति होती है।**

जनपद—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **देश।** (२) **लोक, लोग।**

जनपाल, जनपालक—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **मनुष्य या लोक का पोषक।** (२) **सेवक, पालनेवाला।**

जनप्रवाद—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **जगनिंदा।** (२) **अफवाह।**

जनप्रिय—वि. [सं.] **जो सबका प्रिय हो, सर्वप्रिय।**

संज्ञा पुं.—(१) **धनिया।** (२) **एक वृक्ष।** (३) **शिवजी।**

जनप्रियता—संज्ञा स्त्री. [सं.] **लोकप्रियता।**

जनम—संज्ञा पुं. [सं. जन्म] (१) **उत्पत्ति, जन्म**। (२) **जीवन, आयु, ज़िंदगी**। उ.—अधिक सुरूप कौन सीता तैं जनम बियोग भरै—१-३५।

मुहा.—जन्म गँवाना (बिगोना)-**जीवन व्यर्थ नष्ट करना**। जनम बिगड़ना—**धर्म नष्ट होना**।

जनमत—वि. [हिं. जन्म+त (प्रत्य.)] **जीवन के आदि या आरंभ से, जीवन भर का, सारे जन्म का**। उ.—(क) प्रभु हौं सब पतितनि कौ टीकौ। और पतित सब दिवस चारि के, हौं तौ जनमत ही कौ—१-१३८। (ख) सुनहु कान्ह बलभद्र चबाई जनमत ही कौ धूत—१०-२१५।

संज्ञा पुं. [सं. जन=लोक + मत=सम्मति] **जनता का मत, सर्वसाधारण की सम्मति**।

जनमदिन—संज्ञा पुं. [सं. जन्मदिन] **जन्म का दिन**।

जनमधरती, जनमभूमि—संज्ञा स्त्री. [हिं. जन्म+धरती, भूमि] **वह स्थान जहाँ जन्म हुआ हो**।

जनमना—क्रि. अ. [सं. जन्म] (१) **पैदा होना, जन्म लेना**। (२) **खेल में हारी या 'मरी' हुई गोटी या गुइयाँ का फिर से खेलने योग्य होना**।

जनमनि—संज्ञा पुं. [सं. जन्म + नि (प्रत्य.)] **जन्म में, शरीर धारण करने पर**। उ.—सुजन-बेष-रचना प्रति जनमनि, आयौ पर-धन हरतौ। धर्म-धुजा अंतर कछु नाहीं, लोक दिखावत फिरतौ—१-२०३।

जनमपत्री—संज्ञा स्त्री. [सं. जन्मपत्री] **वह पत्र जिसमें जन्मकाल के ग्रहों की स्थिति आदि लिखी जाय**।

जनमर्यादा—संज्ञा स्त्री. [सं.] **लोकाचार**।

जनमसँगाती, जनमसँघाती—संज्ञा पुं. [हिं. जन्म+ सँघाती] **बहुत समय तक साथ रहनेवाला मित्र**।

जनमाना—क्रि. स. [हिं. जन्म] **संतान पैदा कराना**।

जनमारो—संज्ञा पुं. [सं.] **जन्म, जीवन**।

जनमि—क्रि. अ. [हिं. जन्मना] **जन्म लेकर, शरीर धारण करके**। उ.—जग मैं जनमि पाप बहु कीन्हें, आदि-अंत लौं सब बिगरी—१-११६।

जनमे—क्रि. अ. [सं. जन्म+ना (प्रत्य)=हिं. जन्मना] **पैदा हुए, अवतरे, उत्पन्न हुए**। उ.—रिषभदेव तब जनमे आइ। राजा कैं गृह बजी बधाइ—५-२।

जनमेजय—संज्ञा पुं. [सं. जन्मेजय] **एक कुरुवंशी राजा**।

जनमै—क्रि. अ. [हिं. जन्मना] **जन्मता है, पैदा होता है**। उ.—अज, अविनासी अमर प्रभु जन्मै-मरै न सोइ—२-३६।

जनम्यो, जनम्यौ—क्रि. अ. [हिं. जनमना] **जन्म लिया, पैदा किया, उत्पन्न किया**। उ.—(क) पुनि-पुनि कहत धन्य नँद जसुमति, जिनि इनकौं जनम्यौ सो धनि धनि—४२९। (ख) यह कोइ नहीं भलो ब्रज जन्मयो याते बहुत डरात—२३७७।

जनयिता—संज्ञा पुं. [सं. जनयितृ] **जन्मदाता**।

जनयित्री—संज्ञा स्त्री. [सं.] **जन्म देनेवाली**।

जनरव—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **किंवदंती, अफवाह**। (२) **लोकनिंदा**। (३) **कोलाहल, शोर**।

जनलोक—संज्ञा पुं. [हिं. जन+लोक] **सात लोकों में से पाँचवाँ लोक**। उ.—सत्यलोक, जनलोक, तपलोक और महर निज लोक। जहँ राजत ध्रुवराज महा निधि निसि दिन रहत असोक—सारा. २२।

जनवल्लभ—वि. [सं.] **जनप्रिय, लोकप्रिय**।

जनवाई—संज्ञा स्त्री. [हिं. जनाई] (१) **जनानेवाली, दाई**। (२) **दाई की क्रिया या मजदूरी**।

जनवाद—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **अफवाह**। (२) **बदनामी**।

जनवाना—क्रि. स. [हिं. जनना] **बच्चा पैदा कराना**।

क्रि. स. [हिं. जानना] **समाचार दिलवाना**।

जनवास, जनवासा—संज्ञा पुं. [सं. जन+वास] (१) **लोगों का निवास स्थान**। (२) **बरातियों के ठहरने का स्थान**। (३) **सभा**।

जनश्रुत—वि. [सं.] **प्रसिद्ध, विख्यात**।

जनश्रुति—संज्ञा स्त्री. [सं.] **अफवाह, किंवदंती**।

जनहरण—संज्ञा पुं. [सं.] **एक दंडक वृत्त**।

जनहित—संज्ञा पुं. [सं. जन + हित] **भक्त की भलाई**। उ.—का न कियौ जन-हित जदुराई—१-६।

वि.—**जो भक्तों की भलाई में लगे रहते हैं**।

जनांत—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **निश्चित सीमा का प्रदेश**। (२) **जनहीन स्थान**। (३) **अंत करनेवाला, यम**।

वि.—**मनुष्यों का नाश करनेवाला**।

जना—संज्ञा स्त्री. [सं.] **उत्पत्ति, पैदाइश**।

वि.—**उत्पन्न किया हुआ, जन्माया हुआ।**

जनाइ—क्रि. अ. [हिं. जनाना] (१) **जताकर, मालूम कराकर।** उ.—बाबा नंद बुरौ मानैंगे, और जसोदा मैया। सूरजदास जनाइ दियौ है, यह कहिकै बल भैया—४४५। (२) **विदित हो गया, प्रकट हो गया।** महर-महरि-मन गई जनाइ। खन भीतर, खन आँगन ठाढ़े, खन बाहिर देखत हैं जाइ—५४३।

जनाई—क्रि. स. [हिं. जनाना] **जताया, मालूम कराया।** उ.—(क) ग्वाल रूप ह्वै मिल्यौ निसाचर, हलधर सैन बताई। मनमोहन मन में मुसुक्यानैं, खेलत भलैं जनाई—६-४। (ख) सूरदास प्रीति हृदय की सब मन गए जनाई—(ग) द्वारावति पैठत हरि सौं सब लोगन खबरि जनाई—१० उ. २७।

संज्ञा स्त्री. [हिं. जनना] (१) **बच्चा पैदा करानेवाली दाई।** (२) **दाई की क्रिया या मजदूरी।**

जनाउ—संज्ञा पुं. [हिं. जनाना] **सूचना, जनाव।**

जनाऊँ—क्रि. स. [हिं जनाना] **जताऊँ, मालूम कराऊँ।** उ.—(क) बालक बछरनि राखिहौं, एक बार लै जाउँ। कछुक जनाऊँ अपुनपौ, अब लौं रह्यौ सुभाउँ—४३१ (ख) अहि कौं लै अब ब्रजहिं दिखाऊँ। कमल-भार याही पर लादौं, याकौं आपन रूप जनाऊँ—५५३।

जनाए—क्रि. स. [हिं. जनाना] **सूचित किये, जताये।** उ.—अमल अकास कास कुसुमित छिति लच्छन [illegible] —२८५४।

जनाचार—संज्ञा पुं [सं.] **लौकिक आचार या रीति।**

जनाजा—संज्ञा पुं. [अ. जनाज़ा] (१) **शव, लाश।** (२) **अरथी।**

जनाधिनाथ—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **ईश्वर।** (२) **राजा।**

जनानखाना—संज्ञा पुं. [फ़ा. ज़नाना + ख़ाना] **घर का वह भाग जहाँ स्त्रियाँ रहती हों, अंतःपुर।**

जनाना—क्रि. स. [हिं जानना] **मालूम कराना, जताना।**

क्रि. स. [हिं जनना] **बच्चा पैदा कराना।**

वि. [फ़ा. ज़नाना] (१) **स्त्री का, स्त्रीसंबंधी।** (२) **नपुंसक।** (३) **निर्बल, डरपोक।**

संज्ञा पुं.—(१) **जनखा।** (२) **अंतःपुर।**

जनाब—संज्ञा पुं [अ.] **आदरसूचक शब्द या संबोधन।**

जनायौ—क्रि. स. [हिं जानना] (१) **जताया, प्रकट किया।** उ.—जहँ जहँ गाढ़ि परी भक्तनि कौं, तहँ तहँ आपु जनायौ—१-२०। (२) **सूचित किया।** उ.—तबहीं तैं बाँधे हरि बैठे सो हम तुमकौं आनि जनायौ—३६६।

जनार्दन—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **विष्णु।** (२) **शालग्राम।**

वि.—**जनता को कष्ट पहुँचानेवाला, दुखदायी।**

जनाव—संज्ञा पुं. [हिं. जनाना] **सूचना, इत्तिला।**

जनावत—क्रि. स. [हिं. जनाना] **मालूम कराता है, जताता है, बताता है।** उ.—(क) को जानै प्रभु कहाँ चले हैं, काहू कछू न जनावत—८-४। (ख) अब वहि देस नंदनंदन कहुँ कोउ न समो जनावत—२८३५।

जनावति—क्रि. स. [हिं. जनावना, जनाना=बताना] **बताती हूँ।** उ.—इतनी बात जनावति तुमसौं, सकुचति हौं हनुमंत। नाहीं सूर सुन्यौ दुख कबहूँ प्रभु करुनामय कंत—६-६२।

जनावर—संज्ञा पुं. [हिं. जानवर] **पशु, पक्षी, पतिंगा।**

जनावे, जनावै—क्रि. स. [हिं. जनाना] **जताती है, बतलाती है, सूचित करती है।** उ.—जमुना तोहिं बह्यौ क्यौं भावै।.......भरि भादौं जो राति अष्टमी, सो दिन क्यौं न जनावै—५६१।

जनाशन—संज्ञा पुं. [सं. जन+अशन] **मनुष्य-भक्षक।**

जनाश्रय—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **घर।** (२) **धर्मशाला।**

जनि—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **जन्म, उत्पत्ति।** (२) **नारी, स्त्री।** (३) **माता।** (४) **पुत्रवधू।** (५) **जन्मभूमि।**

अव्य.—**मत, नहीं, न (निषेधार्थक)।** उ.—गुप्त मते की बात कहौ जनि काहू कैं आगे।

क्रि. स. [हिं. जनना] **जनकर, पैदा करके।** उ.—लछिमन जनि हौं भई सपूती राज-काज जो आवै—९-१५२।

जनिका—संज्ञा स्त्री. [हिं. जनाना] **पहेली।**

जनित—वि. [सं.] **उपजा हुआ, जन्य।**

जनिता—संज्ञा पुं. [सं. जनितृ] **उत्पन्न करनेवाला।**

जनित्र—संज्ञा पुं. [सं.] **जन्म स्थान।**

—संज्ञा स्त्री. [सं.] **उत्पन्न करनेवाली।**

जनियाँ—संज्ञा पुं. [सं. जन] (१) **जने, लोग, व्यक्ति।** उ.—झुनक स्याम की पैजनियाँ। जसुमति-सुत कौं चलन सिखावति, अँगुरी गहि-गहि दोउ जनियाँ—१०-१३२। (२) **समूह, समुदाय, (बहुवचन वाचक प्रत्य.)** उ.—जाकौ ध्यान धरैं सबै, सुर-नर-मुनि जनियाँ—१०-१४५।

संज्ञा स्त्री. [सं. जानि] **प्रियतमा, प्रेयसी।**

जनी—संज्ञा स्त्री [सं. जन] (१) **दासी।** (२) **स्त्री।** (३) **उत्पन्न करनेवाली।** (४) **जन्माई हुई, कन्या।**

वि. स्त्री.—**उत्पन्न या पैदा की हुई।**

क्रि. स. [हिं. जनना] **पैदा की।**

जनु, जनुक—क्रि. वि. [हिं. जानना] **मानो।** उ.—उदित बदन, मन मुदित सदन तैं, आरति साजि सुमित्रा ल्याई। जनु सुरभी बन बसति बच्छ बिनु, परबस पसुपति की बहराई—९-१६६।

संज्ञा स्त्री. [सं.] **जन्म, उत्पत्ति।**

जनेंद्र—संज्ञा पुं. [सं. जन+इंद्र] **राजा।**

जने—संज्ञा पुं. [सं.] **लोग, व्यक्ति, प्राणी।** उ.—तीनि जने सोभा त्रिलोक की, छाँड़ि सकल पुरधाम—९-४४।

जनेऊ, जनेव—संज्ञा पुं. [सं. यज्ञ या जन्म] (१) **यज्ञोपवीत।** उ.– हरि हलधर को दियो जनेऊ करि षट-रस जेवनार—२६२९। (२) **यज्ञोपवीत संस्कार।**

जनेत—संज्ञा स्त्री. [सं. जन+एत (प्रत्य.)] **बरात।**

जनेता—संज्ञा पुं. [सं. जनयिता] **पिता, बाप।**

जनेश—संज्ञा पुं. [सं. जन+ईश] **राजा, नरेश।**

जनै—क्रि. स. [हिं. जनना] **जनती है।** उ.—बाँझ सुत जनै उकठै काठ पल्लवै बिफल तरु फलै बिन मेघ-पानी—२२७३।

जनैया—वि. [हिं. जनना+ऐया (प्रत्य.)] **जाननेवाला, जानकार।** उ.—बदले को बदलो लै जाहु। उनकी एक हमारी दोइ तुम बड़े जनैया आहु—४६१९।

वि. [हिं. जनना] **जनने या पैदा करनेवाला।**

जनैहौं—क्रि. स. [हिं. जनाना] **बताऊँगा, जताऊँगा।** उ.—आगै आउ, बात सुनि मेरी, बलदेवहिं न जनैहौं। हँसि समुझावति, कहति जसोमति, नई दुलहिया दैहौं—१०-१९३।

जनो, जनौ—संज्ञा पुं. [हिं. जनेऊ] **जनेऊ।**

क्रि. वि. [हिं. जानना] **मानो, गोया।**

जनौं—क्रि. वि. [हिं. जानना] **मानों।**

जन्म—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **उत्पत्ति।** (२) **अस्तित्व प्राप्त करने का भाव, आविर्भाव।** (३) **जीवन।**

मुहा.—जन्म बिगड़ना—**धर्म नष्ट होना।** जन्म जन्म—**सदा, नित्य।** जन्म में थूकना—**धिक्कारना।** जन्म हारना—(१) **व्यर्थ जन्म खोना।** (२) **दूसरे का दास होकर रहना।**

जन्मअष्टमी—संज्ञा स्त्री. [हिं. जन्माष्टमी] **भादों की कृष्णाष्टमी जिस दिन श्रीकृष्ण का जन्म हुआ था।**

जन्मकुंडली—संज्ञा स्त्री. [सं.] **वह चक्र जिसमें जन्म-काल के ग्रहों की स्थिति का लेखा हो।**

जन्मकृत्—संज्ञा पुं. [सं.] **पिता, जन्मदाता।**

जन्मग्रहण—संज्ञा पुं. [सं.] **उत्पत्ति।**

जन्मतिथि—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **जन्म की तिथि, जन्म दिन।** (२) **वर्षगाँठ।**

जन्मतुआ—वि. [हिं. जन्म+तुआ (प्रत्य.)] **दुधमुहाँ।**

जन्मदिन—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **जन्मतिथि।** (२) **वर्षगाँठ।**

जन्मना—क्रि. अ. [सं. जन्म+ना (प्रत्य.)] (१) **जन्म लेना।** (२) **आविर्भूत होना, अस्तित्व में आना।**

जन्मपत्रिका, जन्मपत्री—संज्ञा स्त्री. [सं.] **वह पत्र जिसमें जन्म-काल के ग्रहों की स्थिति आदि दी गयी हो।**

जन्मभूमि, जन्मस्थान—संज्ञा स्त्री. [सं.] **स्थान या देश जहाँ किसी का जन्म हुआ हो।**

जन्मांतर—संज्ञा पुं. [सं.] **दूसरा जन्म।**

जन्मांध—वि. [सं. जन्म+अंधा] **जन्म का अंधा।**

जन्मा—वि. [सं. जन्मन्] **जो पैदा हुआ हो।**

जन्माना—क्रि. स. [हिं. जन्मना] **जन्म देना।**

जन्माष्टमी—संज्ञा स्त्री. [सं.] **भादों की कृष्णाष्टमी जब श्रीकृष्ण का जन्म हुआ था।**

जन्मि—क्रि. अ. [हिं. जन्मना] **जन्म लेकर, पैदा होकर।** उ.—चौरासी लख जोनि जन्मि जग, जल-थल भ्रमत फिरैगौ—१-७५।

जन्मी—संज्ञा पुं. [सं. जन्मिन्] प्राणी, जीव।
वि.—जो पैदा या उत्पन्न हुआ हो।
जन्मेजय—संज्ञा पुं. [सं.] (१) विष्णु। (२) कुरुवंशी राजा परीक्षित का पुत्र जिसने तक्षक नाग से अपने पिता का बदला लिया था। (३) एक नाग।
जन्य—संज्ञा पुं. [सं.] (१) जनसाधारण। (२) अफवाह। (३) एक देश के वासी। (४) लड़ाई। (५) बाजार। (६) निंदा। (७) वर, दूलह। (८) बराती। (९) दामाद। (१०) पुत्र। (११) पिता। (१२) महादेव। (१३) शरीर। (१४) जन्म। (१५) जाति।
वि.—(१) जन-संबंधी। (२) किसी देश या वंश संबंधी। (३) राष्ट्रीय। (४) जो उत्पन्न हुआ हो।
जन्यता—संज्ञा स्त्री. [सं.] जन्म होने का भाव।
जन्या—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) वधू। (२)प्रीति, स्नेह।
जन्यु—संज्ञा पुं. [सं.] (१) अग्नि। (२) ब्रह्मा। (३) जीव। (४) जन्म, उत्पत्ति। (५) एक ऋषि।
जन्यौ—क्रि. स. [हिं. जनना] जना, पैदा किया। उ.—कौन ऐसौ बली सुभट जननी जन्यौ, एकहीं बान तकि बालि मारै—९-१२९।
जप—संज्ञा पुं. [सं] (१) मंत्र आदि का बार-बार या निश्चित संख्या में पाठ करना। (२) जपनेवाला।
जपत—क्रि. स. [हिं. जपना] जप करती है, जपती है। उ.—दुर्बल दीन-छीन चिंतित अति, जपत नाइ रघुराइ—९-७५।
जपतप—संज्ञा पुं. [हिं. जप+तप] पूजा-पाठ।
जपता—संज्ञा स्त्री. [सं.] जप की क्रिया या भाव।
जपति—क्रि. स. [हिं. जपना] बारबार (नाम, मंत्र आदि) जपती या रटती है। उ.—ऐसी कै ब्यापी हौ मनमथ मेरो जी जानै माई स्याम कहि रैनि जपति —१६५९।
जपन—संज्ञा पुं. [सं.] जपने का काम, जप।
जपना—क्रि. स. [सं. जपन] (१) किसी नाम या बात को बार-बार कहना, दोहराना या रटना। (२) मंत्र आदि को निश्चित संख्या में कहना या उच्चारण करना। (३) जल्दी-जल्दी खा जाना, हड़प लेना।
क्रि. स. [सं. यजन] यज्ञ-यजन करना।
जपनी—संज्ञा स्त्री. [हिं. जपना] (१) माला। (२) माला रखने की थैली, गोमुखी। (३) जपने की क्रिया।
जपनीया—वि. [सं.] जो जपने योग्य हो।
जपमाला—संज्ञा स्त्री. [सं.] जपने की माला।
जपयज्ञ, जपहोम—संज्ञा पुं. [सं.] जप।
जपा—संज्ञा पुं. [हिं. जप] जप करनेवाला।
जपाना—क्रि. स. [हिं. जप, जपना] जप कराना।
जपिया—वि. [हिं. जप] जप करनेवाला।
जपिहैं—क्रि. स. [हिं. जपना] जपेंगे, जप करेंगे। उ.—कहत है, आगैं जपिहैं राम—१-५७।
जपिहौं—क्रि. स. [हिं. जपना] जपूँगा। उ.—जब लौं हौं जीवौं जीवन भर, सदा नाम तव जपिहौं—९-१६४।
जपी—संज्ञा पुं. [हिं. जप+ई (प्रत्य.)] जप करनेवाला।
जपै—क्रि. स. [हिं. जपना] जपता है। उ.—बिच नारद मुनि तत्व बतायौ जपै मंत्र चित लाय—सारा. ७४।
जप्तव्य—[सं.] जो जपने योग्य हो, जपनीय।
जफा—संज्ञा स्त्री. [फ़ा. जफ़ा] अन्याय, सख्ती।
जफाकश—वि. [फ़ा. जफ़ाकश] (१) सहिष्णु, सहनशील। (२) मेहनती, परिश्रमी।
जब—क्रि. वि. [सं. यावत्, प्रा. याव, जाव] जिस समय।
मुहा.—जब जब—जब कभी। जब तब—कभी-कभी। जब होता है तब—प्रायः। जब देखो तब—सदा।
जबड़ा—संज्ञा पुं. [सं. जंभ] मुँह में ऊपर-नीचे की हड्डियाँ जिनमें डाढ़ें रहती हैं, कल्ला।
जबर—वि. [फ़ा. ज़बर] (१) बली। (२) मजबूत।
जबरई—संज्ञा स्त्री. [हिं. जबर] सख्ती, ज्यादती।
जबरदस्त—वि. [फ़ा.] (१) बली। (२) दृढ़।
जबरदस्ती—संज्ञा स्त्री. [फ़ा.] अत्याचार, अन्याय।
क्रि. वि.—इच्छा के विरुद्ध, दबाव से।
जबरन्—क्रि. वि. [अ. ज़ब्रन्] जबरदस्ती।
जबरा—वि. [हिं. जबर] बली, प्रबल।
जबह—संज्ञा पुं. [अ. ज़बह] गला काट कर प्राण लेना।
जबहा—संज्ञा पुं.—साहस, हिम्मत।
जबान—संज्ञा स्त्री. [फ़ा. ज़बान] (१) जीभ, जिह्वा।
मुहा.—जबान खींचना—कठोर दंड देना। जबान खुलना—मुँह से बात निकलना। जबान चलना—

अनुचित शब्द या कड़ी बात निकलना। जबान चलाना—**कड़ी या अनुचित बात कहना**। जबान डालना—(१) **माँगना**। (२) **प्रश्न करना**। जबान थामना (पकड़ना)—**बोलने न देना**। जबान पर आना—**कहने को होना**। जबान पर रखना—(१) **चखना**। (२) **याद रखना**। जबान पर लाना—**मुँह से कहना**। जबान पर होना—**हरदम याद रखना**। जबान बंद करना (१) **चुप होना**। (२) **बोलने न देना**। (३) **वाद-विवाद में हराना**। जबान बंद होना—(१) **चुप होना**। (२) **विवाद में हारना**। जबान बिगड़ना—(१) **मुँह से अनुचित बात या गाली निकलने की आदत पड़ना**। (२) **स्वाद खराब लगना**। (३) **जबान चटोरी होना**। जबान में लगाम न होना—**अनुचित बात कहने की आदत पड़ना**। जबान रोकना—(१) **जबान पकड़ना**। (२) **चुप करना**। जबान सँभालना—**सोच-समझ कर बोलना**। जबान से निकलना—**बोला जाना**। जबान हिलाना—**मुँह से शब्द निकालना**। दबी जबान से कहना (बोलना)—**बात पर जोर न देना**।

(२) **मुँह से निकला हुआ शब्द, बात, बोल**।

मुहा.—जबान बदलना—**बात से हट जाना**।

(३) **प्रतिज्ञा, वादा, कौल**।

मुहा.—जबान देना (हारना)—**वादा करना**।

(४) **भाषा, बोलचाल**।

जबानी—वि. [फ़ा. ज़बानी] **मौखिक**।

जबै—क्रि. वि. [हिं. जब] **जब ही, जभी**। उ.—(क) जबै आवौं साधु-संगति, कछुक मन ठहराइ—१-४५। (ख) सूरस्याम तबहीं मन मानै संगहि रैहौं जाइ जबै—१३०० ।

जभी—क्रि. वि. [हिं. जब + ही (प्रत्य.)] (१) **जिस समय ही**। (२) **ज्योंही**।

जम—संज्ञा पुं. [सं. यम] **भारतीय आर्यों के एक प्रसिद्ध देवता। इन्हें दक्षिण दिशा का दिक्पाल माना जाता है। सूर्य इनके पिता और माता संज्ञा थी। प्राणियों के मरने पर उसके शुभ-अशुभ कर्मों के अनुसार स्वर्ग-नरक भेजने वाले ये ही हैं। इन्हें धर्मराज भी कहा जाता है। भैंसा इनका वाहन है**।

जमई—वि. [फ़ा.] **जो जमा हो, नगदी**।

जमकात, जमकातर—संज्ञा पुं. [सं. यम + हिं. कातर] **पानी में पड़नेवाला भँवर**।

संज्ञा स्त्री. [सं. यम+हिं. कर्त्तरी] **यम का छुरा**।

जमघंट, जमघट, जमघटा, जमघट्ट—संज्ञा पुं. [हिं. जमना + घट्ट] **भीड़, ठट्ट, जमाव**।

जमत—क्रि. अ. [हिं. जमना] **उगता है, उपजता है, (अंकुर) फूटता है**। उ.—जज्ञ मैं करत तब मेघ बरसत मही, बीज अंकुर तबै जमत सारौ—४-११।

जमदगिनि, जमदग्नि—संज्ञा पुं. [सं. जमदग्नि] **भृगु-वंशी एक ऋषि जो परशुराम के पिता थे**।

जमदिसा—संज्ञा स्त्री. [सं. यम + दिशा] **दक्षिण दिशा**।

जमन—संज्ञा पुं. [सं. यवन] **यवन, म्लेच्छ, विधर्मी**। उ.—जा परसैं जीतैं जम सैनी, जमन, कपालिक जैनी—९-११।

जमधर—संज्ञा पुं. [सं. यम + धर] **तलवार**।

जमना—क्रि. अ. [सं. यमन = जकड़ना] (१) **किसी तरल पदार्थ का ठोस हो जाना**। (२) **एक पदार्थ का दूसरे पर मजबूती से स्थित हो जाना**।

मुहा.—दृष्टि जमना—**किसी चीज पर नजर का देर तक ठहरना**। मन में बात जमना—**बात का मन पर पूरा-पूरा प्रभाव पड़ना**। रंग जमना—(१) **अच्छा प्रभाव पड़ना**। (२) **खूब आनंद आना**।

(३) **इकट्ठा होना**। (४) **अच्छा हाथ या प्रहार पड़ना**। (५) **पूरा अभ्यास होना**। (६) **किसी काम या बात का खूब प्रभाव पड़ना**। (७) **अच्छी तरह काम चलने लगना**।

क्रि. अ. [सं. जन्म + ना (प्रत्य.)] **उगना**।

संज्ञा स्त्री. [सं. यमुना] **एक प्रसिद्ध नदी**।

जमनि—संज्ञा पुं. बहु० [सं. यम + हिं. नि (प्रत्य.)] **यमदूत**। उ.—काल-जमनि सौं आनि बनी है, देखि देखि मुख रोइसि—१-३३३।

जमनिका—संज्ञा स्त्री. [सं. यवनिका] (१) **यवनिका, परदा**। (२) **काई**। (३) **मैल**।

जमपुर—संज्ञा पुं. [सं. यमपुर] **यम के रहने का स्थान, यमलोक। हिंदुओं का विश्वास है कि मरने पर**

प्रेतात्मा को यम के दूत पहले यहीं लाते हैं और यहाँ यम उसके भले-बुरे कर्मों का विचार करते हैं।

जमपुरी—संज्ञा स्त्री. [सं. यमपुरी] यमलोक, यमपुर।

जमराज—संज्ञा पुं. [सं. यमराज] धर्मराज, जो हिंदुओं के विश्वास के अनुसार, प्राणी के कर्मों का दंड या फल देते हैं।

जमलअर्जुन, जमलतरु, जमलद्रुम—संज्ञा पुं. [सं. यमल + अर्जुन, तरु, द्रुम] गोकुल में दो अर्जुन-वृक्ष। पुराणों के अनुसार ये कुबेर के पुत्र नलकूबर और मणिग्रीव थे। एक बार मतवाले होकर ये स्त्रियों के साथ नदी में नंगे क्रीड़ा कर रहे थे। इसी पर नारद ने इन्हें जड़ हो जाने का शाप दिया। पेड़ होकर ये दोनों नंद जी के आँगन में जमे। यशोदा ने जब कृष्ण को दंड देने के लिए मूसल से बाँधा तब इन्होंने उनका उद्धार किया।

जमल-द्रुम-भंजन—संज्ञा पुं. [यमल+द्रुम+भंजन] यमल वृक्ष को तोड़नेवाले, यमलार्जुन नामक वृक्षों के द्वारा कुबेर के दोनों पुत्रों का उद्धार करनेवाले, श्रीकृष्ण।

जमलार्जुन—संज्ञा पुं. [सं. यमलार्जुन] गोकुल में दो अर्जुन वृक्ष। कुबेर के पुत्र नलकूबर और मणिग्रीव नारद के शाप से वृक्ष बन गये थे। इनका उद्धार श्रीकृष्ण ने किया था जब वे यशोदा-द्वारा बाँधे गये थे। उ.—नारद-साप भए जमलार्जुन, तिनकौं अब जु उधारौं—१०-३४२।

जमलोक—संज्ञा पुं. [सं. यम+लोक] (१) वह लोक जहाँ मरने के बाद, हिंदुओं के विश्वास के अनुसार, लोग जाते हैं, यमपुरी। (२) नरक।

जमवार—संज्ञा पुं. [सं. यम+द्वार] यमद्वार।

जमा—वि. [अ.] (१) एकत्र, इकट्ठा, संगृहीत।

मुहा.—कुल जमा—सब मिलाकर, कुल।

(२) जो अमानत के तौर पर रखा गया हो।

संज्ञा स्त्री. [अ.] (१) मूल धन, पूँजी। (२) धन-संपत्ति, रुपया-पैसा। उ.–हरि, हौं ऐसौ अमल कमायौ। साबिक जमा हुती जो जोरी मिनजालिक तल ल्यायौ—१-१४३।

मुहा.—जमा मारना—बेइमानी या अनुचित रीति से किसी का धन या माल ले लेना।

(३) भूमिकर, लगान। (४) योग, जोड़।

जमाइ—क्रि. स. [हिं. जमाना] द्रव पदार्थ को ठोस बनाकर, (दही आदि) जमाकर। उ.—रैनि जमाइ धरयौ हौ गोरस परयौ स्याम कैं हाथ—१०-२७७।

जमाई—क्रि. स. [हिं. जमाना] स्थित की, (किसी पदार्थ पर दृढ़तापूर्वक) स्थित की। उ.—सूर-स्याम किलकत द्विज देख्यौ, मनौ कमल पर बिज्जु जमाई—१०-८२।

संज्ञा पुं. [सं. जामातृ] दामाद।

संज्ञा स्त्री. [हिंदी जमाना] जमने या जमाने की क्रिया, रीति या मजदूरी।

जमाए—क्रि. स. [हिं. जमाना] द्रव पदार्थ को ठोस बनाया, (दही आदि) जमाया। उ.—दूध भात भोजन घृत अमृत अरु आछो करि दह्यौ जमाए—१०-३०६।

जमाखर्च—संज्ञा पुं. [फ़ा. जमा+ख़र्च] आय-व्यय।

जमाजथा—संज्ञा स्त्री. [हिं. जमा+गथ] धन-संपत्ति।

जमात—संज्ञा स्त्री. [अ. जमाअत] (१) जत्था। (२) श्रेणी।

जमानत—संज्ञा स्त्री. [अ. ज़मानत] वह जिम्मेदारी जो किसी अपराधी या ऋणी के लिए ली जाय, जामिनी। उ.—धर्म जमानत मिल्यौ न चाहै, तातैं ठाकुर लूट्यौ—१-१८५।

जमानति—संज्ञा स्त्री. [अ. ज़मानत] जमानत रूप में। उ.—थाती प्रान तुम्हारी मोपै, जनमत हीं जौ दीन्ही। सौ मैं बाँटि दई पाँचनि कौं, देह जमानति लीन्ही—१-१६६।

जमानती—संज्ञा पुं. [हिं. जमानत + ई (प्रत्य.)] वह जो जमानत करे, जामिन, जिम्मेदार।

जमाना—क्रि. स. [हिं. जमना का सक. रूप.] (१) किसी द्रव पदार्थ को ठोस बनाना। (२) किसी पदार्थ को दूसरे पर मजबूती और स्थायी रूप से स्थित करना।

मुहा.—दृष्टि जमाना—एक टक देर तक किसी ओर देखना। मन में बात जमाना—किसी बात का मन पर पूरा-पूरा प्रभाव डालना। रंग जमाना–(१) बहुत अधिक प्रभावित करना। (२) बहुत आनंदित करना।

(३) प्रहार करना। (४) हाथ के काम का अच्छा अभ्यास करना। (५) किसी काम को अच्छी तरह

करना। (६) किसी कार-बार को अच्छी तरह चलने योग्य बनाना।

क्रि. स. [हिं. जमना = उगना] उपजाना।

संज्ञा पुं. [फ़ा. ज़माना] (१) समय, वक्त। (२) बहुत अधिक समय। (३) प्रताप, सौभाग्य या सुख-समृद्धि के दिन। (४) दुनिया, संसार।

मुहा.—जमाना देखना–बहुत अनुभव प्राप्त करना।

जमामार—वि. [हिं. जमा + मारना] अनुचित रीति या बेइमानी से दूसरों का धन मार लेने या हड़प जानेवाला।

जमायौ—क्रि. स. [हिं. जमाना] किसी द्रव पदार्थ को ठंडा करके गाढ़ा किया, जमाया। उ.—(क) माखन-रोटी लेहु सद्य दधि रैन जमायौ—४३१। (ख) अति मीठौ दधि आज जमायौ, बलदाऊ तुम लेहु—४४२।

जमाव—संज्ञा पुं. [हिं. जमाना] (१) जमने का भाव। (२) जमाने का भाव। (३) भीड़-भाड़, जमघट।

जमावट—संज्ञा स्त्री. [हिं. जमाना] जमने का भाव।

जमावड़ा—संज्ञा पुं. [हिं. जमना] भीड़-भाड़।

जमींदार—संज्ञा पुं. [फ़ा.] भूमि का स्वामी।

जमींदारी—संज्ञा स्त्री. [हिं. जमींदार] (१) जमींदार की भूमि। (२) जमींदार का स्वत्व या अधिकार।

जमी—वि. [सं. यमी] संयमी, इंद्रियनिग्रही।

जमीं, जमीन—संज्ञा स्त्री. [फ़ा. ज़मीन] (१) पृथ्वी। (२) धरती।

मुहा.—ज़मीन-आसमान एक करना—बहुत परिश्रम या उद्योग करना। जमीन आसमान का फरक—बहुत अधिक अंतर या भिन्नता। जमीन-आसमान के कुलाबे मिलाना—बहुत डींग या शेखी हाँकना। जमीन का पैर तले से निकलना—सन्नाटे में आ जाना, बहुत चकित होना। जमीन चूमने लगना—मुंह के बल जमीन पर गिरना। जमीन देखना—(१) मुंह के बल गिरना। (२) नीचा देखना। जमीन दिखाना—(१) मुंह के बल गिराना। (२) नीचा दिखाना। जमीन पकड़ना—जमकर बैठना। जमीन पर पैर न रखना (पड़ना)—बहुत घमंड या अभिमान करना (होना)।

(३) कपड़े, कागज आदि की सतह। (४) आधार-रूप सामग्री। (५) किसी कार्य की निश्चित प्रणाली या योजना।

जमुकना—क्रि. अ.—समीप होना।

जमुन—संज्ञा स्त्री [हिं. जमुना] यमुना नदी।

जमुन-जल—संज्ञा पुं. [सं. यमुना + जल] यमुना नदी का जल।

जमुना—संज्ञा स्त्री. [सं. यमुना] यमुना।

जमुनियाँ—संज्ञा पुं. [हिं. जामुन] जामुन का रंग।

वि.—जामुन के रंग का, जामुनी।

जमुने—संज्ञा स्त्री. [सं. यमुना] यमुना नदी। उ.—भक्त जमुने सुगम, अगम औरैं—१-१२२।

जमुवाँ—संज्ञा पुं. [हिं. जामुन] जामुन का रंग।

जमुहात—क्रि. अ. [हिं. जँभाना, जम्हाना] जँभाई लेते हैं। उ.—दोउ माता निरखत आलस मुख, छबि पर तन-मन वारतिं। बार-बार जमुहात सूर प्रभु, इहिं उपमा कवि कहै कहा री—१०-२२८।

जमुहाना—क्रि. अ. [हिं. जम्हाना] जँभाई लेना।

जमूरक, जमूरा—संज्ञा पुं. [फ़ा. जंबूरक] छोटी तोप।

जमोग—संज्ञा पुं. [हिं. जमोगना] (१) स्वीकार कराने की क्रिया। (२) अन्य द्वारा समर्थन।

जमोगना—क्रि. स. [अ. जमा+योग] (१) हिसाब जाँचना। (२) स्वीकार कराना, सरेखना। (३) समर्थन कराना।

जम्यौ—वि. [हिं. जमना] जमा हुआ। उ.—कमल-नैन हरि करौ कलेवा। माखन-रोटी, सद्य जम्यौ दधि, भाँति-भाँति के मेवा—१०-२१२।

क्रि. अ.—(१) बहुतों के सामने कोई काम उत्तमता पूर्वक हुआ, बहुतों को रुचा या प्रभावित किया। उ.—बटा धरनी डारि दीनौ, लै चले ढरकाइ। आपु अपनी घात निरखत, खेल जम्यौ बनाइ—१०-२४४। (२) उगा, उत्पन्न हुआ। उ.—मानौ आन सृष्टि रचिबे कौं अंबुज नाभि जम्यौ—१-२७३।

जम्हाइ—क्रि. अ. [हिं. जँभाना] (१) जँभाकर, जमुहाई लेकर, (मुख) खोलकर। उ.—मुख जम्हाइ त्रिभुवन दिखरायौ—१०-३६१।

जम्हाई—क्रि. अ. [हिं. जँभाना] जँभाकर, जमुहाई ली। उ.—(क) छनकहिं मैं जरि भस्म होइगौ, जब देखै उठि जागि जम्हाई—१०-५५० । (ख) सकसकात तन भीजि पसीना, उलटि पलटि तन तोरि जम्हाई—७४८।

जम्हात—क्रि. अ. [हिं. जँभाना, जम्हाना] जँभाई लेते हैं। उ.—(क) बल-मोहन दोऊ अलसाने। कछु-कछु खाइ दूध-अँचयौ तब जम्हात जननी जाने —१०-२३० । (ख) ऐंड़त अंग जम्हात बदन भरि कहत सबै यह बानी—३४५४ ।

जम्हाना—क्रि. अ. [हिं. जँभाना] जँभाई लेना।

जयंत—वि. [सं.] (१) विजयी। (२) बहुरूपिया।

संज्ञा पुं.—(१) एक रुद्र। (२) इंद्र का एक पुत्र। (३) कुमार कार्तिकेय। (४) अक्रूर के पिता।

जयंती—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) विजय करनेवाली। (२) ध्वजा, पताका। (३) दुर्गा का एक नाम। (४) पार्वती का नाम। (५) वर्षगाँठ का उत्सव। (६) ऋषभ देव की स्त्री का नाम। उ.—रिषभ राज सब मन उत्साह। कियौ जयंती सौं पुनि ब्याह—५-२। (७) एक बड़ा पेड़। (८) जन्माष्टमी। (९) अरणी।

जय—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) विपक्षियों का पराभव, जीत। (२) देवताओं या महात्माओं की अभिवंदना करने के लिए हृदयोल्लास-व्यंजक शब्द। उ.—(क) सूरदास सर लग्यौ सचानहिं, जय-जय कृपानिधान—१-९७। (ख) जय जय करत सकल सुर-नर-मुनि जल मैं कियौ प्रवेश—सारा. ४१।

संज्ञा पुं.—(१) विष्णु के एक पार्षद का नाम जो विजय का भाई था। सनकादिक के शाप से इसको हिरण्याक्ष, रावण और शिशुपाल तथा विजय को हिरण्यकशिपु, कुंभकर्ण और कंस के रूप में जन्मना पड़ा। उ.—(क) जय अरु बिजय कथा नहिं कछुवै दसमुख-बध बिस्तार—१-२१५। (ख) जय अरु बिजय असुर योनिन कौ भये तीन अवतार—सारा. ४४। (२) लाभ। (३) सूर्य। (४) इंद्र का पुत्र जयंत।

वि.—जीतने वाला, विजयी।

जयजयकार—संज्ञा स्त्री. [सं.] जय मनाने का घोष।

जयजीव—संज्ञा पुं. [हिं. जय+जी] एक अभिवादन जिसका तात्पर्य है—जय हो और जियो।

जयति—क्रि. अ. [सं.] जय हो।

जयदेव—संज्ञा पुं. [सं.] गीतगोविंद नामक संस्कृत काव्य के रचयिता।

जयद्रथ—संज्ञा पुं. [सं.] सौराष्ट्र का एक राजा जो दुर्योधन का बहनोई था।

जयध्वज—संज्ञा स्त्री. [सं.] विजयपताका।

जयना—क्रि. अ. [सं. जयत] जीतना।

जयपत्त, जयपत्र—संज्ञा पुं. [सं.] पराजित द्वारा विजयी को लिखकर दिया हुआ विजय-पत्र।

जयफर, जयफल—संज्ञा पुं. [हिं. जायफल] जायफल।

जयमंगल—संज्ञा पुं. [सं.] (१) राजा की सवारी का हाथी। (२) हाथी जिस पर राजा विजय के बाद सवार हो।

जयमाल, जयमाला—संज्ञा स्त्री. [सं. जयमाला] (१) विजय मिलने पर विजयी को पहनायी जानेवाली माला। (२) विवाह के पूर्व वरे हुए पुरुष के गले में कन्या द्वारा डाली जानेवाली माला।

जयश्री—संज्ञा स्त्री. [सं.] विजय, विजयलक्ष्मी।

जयस्तंभ—संज्ञा पुं. [सं.] स्तंभ जो विजय के स्मारक-रूप में बनवाया जाय।

जया—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) दुर्गा का एक नाम। (२) पार्वती का एक नाम। (३) पताका, ध्वजा।

वि.—जय दिलानेवाली, विजय करानेवाली।

जयिष्णु—वि. [सं.] जो जीतता हो, जयशील।

जयी—वि. [सं. जयिन्] विजयी, जयशील।

जयो—क्रि. स. [हिं. जीतना] जीता। उ.—तोर्यौ धनुष स्वयंवर कीनो रावन अजित जयो—२२६४।

जय्य—वि. [सं.] जो जीतने योग्य हो।

जर—संज्ञा पुं. [सं. जरा] (१) बुढ़ापा, वृद्धावस्था। (२) बूढ़ा मनुष्य। उ.—बाल, किसोर, तरुन, जर, जुग सो सुपक सारि ढिग ढारी—१-६०।

संज्ञा पुं. [सं.] जीर्ण होने की क्रिया।

संज्ञा पुं. [सं. ज्वर] रोग, ज्वर, बुखार।

संज्ञा स्त्री. [हिं. जड़] जड़, मूल। उ.—जमलार्जुन दोउ सुत कुबेर के तेउ उखारे जर तैं—९९३।

संज्ञा पुं. [फ़ा.] (१) **स्वर्ण**। (२) **धन**।

जरई—क्रि. अ. [हिं. जरना = जलना] **जलती है, भस्म होती है, जले**। उ.—जाकैं हिय-अंतर रघुनंदन, सो क्यौं पावक जरई—६-६६।

संज्ञा स्त्री. [हिं. जड़] **धान के अंकुरित बीज**।

जरकटी—संज्ञा पुं. [देश] **एक शिकारी पक्षी**।

जरकस, जरकसी—वि. [फ़ा. जरकश] **जिस पर सोने के तार आदि का काम बना हो**।

जरखेज—वि. [फ़ा. ज़रख़ेज] **उपजाऊ**।

जरजर—वि. [हिं. जर्जर] **जीर्ण, फटा-पुराना**।

जरठ—वि. [सं.] (१) **कर्कश**। (२) **बूढ़ा**। (३) **पुराना, जीर्ण**। (४) **पीलापन लिये सफेद**।

संज्ञा पुं.—**बुढ़ापा**।

जरठाई—संज्ञा स्त्री. [हिं. जरठ + आई] **बुढ़ापा**।

जरत—वि. [हिं. जलना] **जलते हुए**। उ.—लाखागृह तैं जरत पांडुसुत बुधि-बल नाथ उबारे—१-१०।

क्रि. अ.—**जलता है, बलता है**।

जरतार—संज्ञा पुं. [फ़ा. जर + तार] **सोने-चाँदी का तार जिससे जरी का काम होता है**।

जरतारा, जरतारी—वि. [हिं. जरतार] **जरी के काम का, जिसमें सुनहरे-रुपहले तार लगे हों**।

जरति—क्रि. अ. [हिं. जलना] **जलती है, भस्म होती है**। उ.—देखि जरनि जड़, नारि की, (रे) जरति प्रेत के संग—१-३२५।

जरतुआ—वि. [हिं. जलना] **ईर्ष्या करनेवाला**।

जरतौ—क्रि. अ. [हिं. जलना] **जलता, जल जाता**। उ.—अब मोहिं राखि लेहु मनमोहन, अधम अंग पद परतौ। खरकूकर की नाइँ मानि सुख, बिषय-अगिनि मैं जरतौ—१-२०३।

जरत्—वि. [सं.] (१) **बूढ़ा**। (२) **पुराना**।

जरत्कारु—संज्ञा पुं. [सं.] **एक ऋषि जिन्होने बासुकि नाग की मनसा नामक कन्या से विवाह किया था**।

जरद—वि. [फ़ा. ज़र्द] **पीला, पीत**।

जरदृष्टि—वि. [सं.] (१) **बूढ़ा**। (२) **दीघाय**।

जरदी—संज्ञा स्त्री. [फ़ा.] **पीलापन**।

जरन—क्रि. अ. [हिं. जलना] **जलना, जल सकना, जलने देना**। उ.—(क) पावक-जठर जरन नहिं दीन्हौं, कंचन सी मम देह करी—१-११६। (ख) छल कियौ पांडवनि कौरव, कपट-पासा ढरन। खवाय बिष, गृह लाय दीन्हौ, तउ न पाए जरन—१-२०२।

जरना—क्रि. अ. [हिं. जलना] **जलना, बलना**।

क्रि. अ. [हिं. जड़ना] **जड़ने का काम करना**।

जरनि—संज्ञा स्त्री. [हिं. जरना = जलना] (१) **जलने की पीड़ा, जलन**। उ.—(क) सुत-तनया-बनिता-बिनोद-रस, इहिं जुर-जरनि जरायौ—१-१५४। (ख) तब फिरि जरनि भई नख सिख तैं दिआ बात जनु मिलकी—२७८६। (२) **व्यथा, पीड़ा**। उ.—(क) देखि जरनि, जड़, नारि की, (रे) जरति प्रेत के संग। चिता न चित फीकौ भयौ, (रे) रची जु पिय कैं रंग—१-३२५। (ख) हृदय की कबहुँ न जरनि घटी। बिनु गोपाल बिथा या तन की कैसैं जाति कटी—१-६८। (ग) अति तप देखि कृपा हरि कीन्हो। तन की जरनि दूर भयी सबकी मिलि तरुनिनि सुख दीन्हौ—७६६।

जरनी—संज्ञा स्त्री. [हिं. जरना = जलना] (१) **जलन, जलने की पीड़ा**। उ.—बिछुरी मनौ संग तैं हिरनी। चितवत रहत चकित चारौ दिसि, उपजी बिरह तन जरनी—६-७३। (२) **पीड़ा, व्यथा, कष्ट**। उ.—(क) बड़ी करवर टरी साँप सौं ऊबरी, बात कैं कहत तोहिं लगति जरनी—६६८। (ख) देखौ चारौ चंद्र-मुख सीतल बिन दरसन क्यौं मिटती जरनी—३३३०।

जरब—संज्ञा स्त्री. [अ. ज़रब] (१) **चोट**। (२) **गुणा**।

जरबीला—वि. [फ़ा. ज़रब + ईला (प्रत्य.)] **जो देखने में बहुत चटक, भड़कीला और सुंदर हो**।

जरमुआ—वि. [हिं. जरना + मुअना] **ईर्ष्यालु**।

जरवारा—वि. [फ़ा. जर + वाला] **धनी**।

जरहु—क्रि. स. [हिं. जलना] **जल जाय, भस्म हो जाय, नष्ट हो जाय**। उ.—चारौं कर जु कठिन अति, कोमल नयन जरहु जिनि डाँटी—१०-२५६।

जरा—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **वृद्धावस्था**। उ.—(क) हा जदुनाथ जरा तन ग्रास्यौ, प्रतिभौ उतरि गयौ—१-२६८। (ख) सुरति के दस द्वार रूँधे जरा घेरयौ

आइ—१-३१६। (२) **एक राक्षसी जिसने जरासंध के शरीर के दो खंडों को मिलाकर जीवित कर दिया था।** उ.—(क) जरा जरासंध की संधि जोरयौ हुतौ भीम ता संध को चीर डारयौ—२७५१। (ख) जुग-जुग जीवै जरा बापुरी मिलै राहु अरु केतु—२८५६।

संज्ञा पुं. [सं.] **एक व्याध जिसके वाण से श्रीकृष्ण देवलोक सिधारे थे।**

वि. [अ. ज़र्रा, ज़रा] **थोड़ा, कम।**

क्रि. वि.—**थोड़ा, कम।**

जराइ—वि. [हिं. जड़ना] **जड़ी हुई, जड़ाऊ।** उ.—राजत जंत्रहार, केहरिनख, पहुँची रतन-जराइ—१०-१३३।

जराई—क्रि. स. स्त्री. [हिं. जराना = जलाना] **जला दी।** उ.—पवन कौ पूत महाबल जोधा, पल मैं लंक जराई—६-१४०।

राउ—वि. [हिं. जड़ना] **जिस पर नग इत्यादि जड़े हों, जड़ाऊ।** उ.—(क) पालनौ अति सुंदर गढ़ि ल्याउ रे बढ़ैया......। पँच रँग रेसम लगाउ, हीरा मोतिनि मढ़ाउ, बहुबिधि रुचि करि जराउ, ल्याउ रे जरैया—१०-४१। (ख) गोरे भाल बिंदु सेंदुर पर टीका धरयौ जराउ।

जराऊ—वि. [हिं. जड़ाऊ] **जिसमें नग जड़े हों।**

जराकुमार—संज्ञा पुं. [सं. जरा+कुमार] **जरासंध।**

जराग्रस्त—वि. [सं. जरा+ग्रस्त] **बहुत बूढ़ा।**

जराति—क्रि. स. [हिं. जराना, जलाना] **पीड़ित करती है, जलाती है।** उ.—मनसिज व्यथा जराति अरनि लौ उर अंतर दहिए—२८६२।

जराना—क्रि. स. [हिं. जलाना] **जलाना, बलाना।**

जराफत—संज्ञा स्त्री. [अ. ज़राफ़त] **मसखरापन।**

जराय—क्रि. स. [हिं. जलाना] **जलाकर, भस्म करके।** उ.—कृत्या चली जहाँ द्वारावति हरि जानी यह बात। आज्ञा करी चक्र को माधव छिन कृत्या कर घात। कासी जाय जराय छिनक में गये द्वारका फेर—सारा. ७०८, ७०६।

क्रि. स. [हिं. जड़ना] **जड़ाऊ बनवा कर।**

जरायु—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **वह झिल्ली जिसमें लिपटा हुआ बच्चा पैदा होता है।** (२) **गर्भाशय।** (३) **जटायु।**

जरायुज—संज्ञा पुं. [सं.] **गर्भ से झिल्ली में लिपटा हुआ पैदा होनेवाला जीव, पिंडज।**

जरायौ—क्रि. स. [हिं. जलाना] (१) **पीड़ित किया, तपाया।** उ.—(क) सुत-तनया-बनिता-बिनोद रस, इहिं जुर-जरनि जरायौ—१-१५४। (२) **जलाया, भस्म किया।** उ.—कपिल कुलाहल सुनि अकुलायौ। कोप-दृष्टि करि तिन्हैं जरायौ—६-६।

जराव—वि. [हिं. जड़ना] **जिसमें नग जड़े हों।**

संज्ञा स्त्री. पुं.—**वह जो जड़ाऊ हो, जड़ाऊ काम-वाली।** उ.—बहु नग लगे जराव की अँगिया भुजा बहूटनि बलय संग को—१०४२।

जरावत—क्रि. स. [हिं. जराना = जलाना] (१) **जलाता है, झुलसाता है।** उ.—बिरह ताप तन अधिक जरावत, जैसैं दव-द्रुम बेली—६-६४। (२) **पीड़ित करता है, कष्ट पहुँचाता है।** उ.—जब नहिं देख्यौ गुपाल लाल को बिरह जरावत छाती—२६८१।

क्रि. स. [हिं. जड़ाना] **नग आदि जड़ाते हैं।**

जरावन—क्रि. स. [हिं. जलाना] **जलाना, भस्म करना।** उ.—पठवौ कुटुँब-सहित जम आलय, नैंकु देहि धौं मोकौं आवन। अगिनि-पुंज सित धनुष-बान धरि, तोहिं असुर-कुल-सहित जरावन—६-१३१।

जरावै—क्रि. स. [हिं. जलाना] **जलाता है, पीड़ित करता है।** उ.—सूरदास प्रभु मोकों करहिं कृपा अब नित प्रति बिरह जरावै—१६७७।

जरासंध, जरासिंधु—संज्ञा पुं. [सं. जरा+संधि] **मगध देश का एक राजा जो बृहद्रथ का पुत्र और कंस का ससुर था। श्रीकृष्ण ने जब कंस को मार डाला तब दामाद की मृत्यु का बदला करने के लिए इसने मथुरा पर अठारह बार आक्रमण किया। युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ के अवसर पर भीम और अर्जुन को लेकर श्रीकृष्ण इसकी राजधानी गिरिव्रज पहुँचे। वहाँ भीम ने इसे मार डाला।**

जरासुत—संज्ञा पुं. [सं. जरा+सुत] **जरासंध।**

ज़रि—क्रि. अ. [हिं. जलना] **जलकर, भस्म होकर।**

उ.—धिक धिक जीवन है अब यह तन, क्यौं न होइ जरि छार—६-८३।

क्रि. स. [हिं. जड़ना] **नग आदि जड़ कर।** उ.—बहु बिधि जरि करि जराउ ल्याउ रे जरैया—१०-४१।

जरिबो—संज्ञा स्त्री. [हिं. जलना] **जलने की क्रिया।** उ.—चंदन चरचि तनु दहत मलयनिल स्रवन बिरहानल जरिबो—२८६०।

जरिया—वि. [हिं. जड़ना] **जड़ी हुई।** उ.—क्रीड़ा करत तमाल-तरुन-तर स्यामा स्याम उमँगि रस भरिया। यौं लपटाइ रहे उर उर ज्यौं, मरकत मनि कंचन मैं जरिया—६८८।

संज्ञा पुं. [हिं. जड़िया] **नग आदि जड़नेवाला।**

वि. [हिं. जरना] **जलाकर बनाया हुआ।**

संज्ञा पुं. [अ. ज़रिया] (१) **संबंध।** (२) **कारण।**

ज़रियौ—क्रि. स. [हिं. जलाना] **जला, जलाया।** उ.—उलटि पवन जब बावर जरियौ, स्वान चल्यौ सिर झारी—१-२२१।

जरिहै—क्रि. अ. [हिं. जलना] **जल जायगा।** उ.—जरिहै लंक कनकपुर तेरौ, उदवत रघुकुल भानु—९-७९।

जरी—क्रि. अ. [हिं. जलना] **(हाय) जली, (अरे) जल गयी, जली हुई।** उ.—ब्रह्म-बाण तैं गर्भ उबारयौ, टेरत जरी जरी—१-१६।

वि. [सं. जरिन्] **बुड्ढा, बूढ़ा, वृद्ध।**

संज्ञा स्त्री. [फ़ा. ज़री] **सोने के तारों का काम।**

जरीफ—वि. [अ. ज़रीफ़] **मसखरा, विनोदी।**

जरीब—संज्ञा स्त्री. [फ़ा.] (१) **एक नाप।** (२) **लाठी।**

जरूर—क्रि. वि. [अ. ज़रूर] **अवश्य।**

जरूरत—संज्ञा स्त्री. [हिं. जरूर] **अवश्यकता।**

जरूरी—वि. [हिं. जरूर] **जिसके बिना काम न चले।** (२) **जिसकी आवश्यकता हो।**

जरे—संज्ञा पुं. [हिं. जलना] **जला हुआ भाग।**

मुहा.—जरे पर चूना—**दुखी को और दुख पहुँचाना।** उ.—वैसहिं जाइ जरे पर चूनो दूनो दुख तिहिं काल—३१५६।

जरैं—क्रि. स. [हिं. जलना] (१) **जल जायें, नष्ट हों।** (२) **दुखी हैं, पीड़ित हैं।** उ.—ऊधौ तुम यह मत लै आए। इक हम जरैं खिझावन आए मानौ सिखै पठाए—३११०।

मुहा.—जरैं बरैं **नष्ट-भ्रष्ट हो जायँ।** उ.—(क) डीठि लगावति कान्ह को जरैं बरैं वै आँखि—१०६६। (ख) जरैं रिसि जिहिं तुम्हहिं बाध्यौ लगै मोहिं बलाइ—३८७।

जरै—क्रि. अ. [हिं. जलना] **डाह करता है, ईर्ष्या या द्वेष के कारण कुढ़ता है।** उ.—कोपै तात प्रहलाद भगत कौं, नामहिं लेत जरै—१-८२।

जरैगो—क्रि. अ. [हिं. जलना] **जल जायगी, सुलगेगी।** उ.—काहे को साँस उसाँस लेति है बैरी बिरह को दवा जरैगो—२८७०।

जरैया—संज्ञा पुं. [हि. जड़िया] **नग जड़ने का काम करनेवाला पुरुष, कुंदनसाज।** उ.—पालनौ अति सुंदर गढ़ि ल्याउ रे बढ़ैया।........। पँच रँग रेसम लगाउ, हीरा मोतिनि मढ़ाउ, बहु बिधि जरि करि जराउ, ल्याउ रे जरैया—१०-४१।

जरौंगी—क्रि. अ. [हिं. जलना] **जलूँगी, भस्म हो जाऊँगी।** उ.—हौं तव संग जरौंगी, यौं कहि तिया धूति धन खायौ—२-३०।

जरौ—वि. [हिं. जरना = जलना] **जलता हुआ, प्रज्वलित।** उ.—तेल, तूल, पावक पुट धरिकै, देखन चहैं जरौ—६-६८।

जरौट—वि. [हिं. जड़ना] **जड़ाऊ।**

जर्कबर्क—वि. [फ़ा. जर्क़बर्क़] **तड़क-भड़कदार।**

जर्जर—वि. [सं.] (१) **पुराना, घिसा हुआ।** (२) **टूटा-फूटा।** (३) **बूढ़ा।**

जर्जरता—संज्ञा स्त्री. [सं. जर्जर] **जीर्णता, कमजोरी।**

जर्जरित—वि. [सं. जर्जरित] (१) **पुराना** (२) **टूटा-फूटा, घिसा-घिसाया।**

जर्जरीक—वि. [स.] (१) **बूढ़ा।** (२) **छेददार।**

जर्द—संज्ञा पुं. [फ़ा. ज़र्द] **पीला, पीत।**

जर्दी—संज्ञा स्त्री. [हिं. जर्द] **पीलापन।**

जरयौ—क्रि. अ. [हिं. जलना] **जल गया, भस्म हो गया।** उ.—दच्छ-सीस जो कुंड मैं जरयौ। ताके बदलैं अज-सिर धरयौ—४-५।

जर्रा—संज्ञा पुं. [अ. ज़र्रा] (१) **कण**। (२) **खंड**।

जलंधर—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **एक राक्षस**। (२) **एक ऋषि**।

जल—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **पानी**। (२) **उशीर, खस**।

जल-अलि—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **पानी का भँवर**। (२) **पानी का एक काला कीड़ा, पैरौवा, भौंतुआ**।

जलकांत, जलकांतर—संज्ञा पुं. [सं.] **वरुण**।

जलक्रीड़ा—संज्ञा स्त्री. [सं.] **जलविहार**।

जलखावा—संज्ञा पुं. [हिं. जल+खाना] **जलपान**।

जलघुमर—संज्ञा पुं. [हिं. जल+घूमना] **पानी का भँवर**।

जलचर—संज्ञा पुं. [सं.] **पानी के जीव-जंतु**।

जलचरी—संज्ञा स्त्री. [सं.] **मछली**। उ.—हमते भली जलचरी बापुरी अपनो नेम निवाहयौ—३१४६।

जलचादर—संज्ञा स्त्री. [सं. जल+हिं. चादर] **ऊँचे स्थान से होनेवाला पानी का विस्तृत झीना प्रवाह**।

जलचारी—संज्ञा पुं. [सं.] **जल के जीव-जंतु**।

जलज—वि. [सं.] **जल में उत्पन्न होनेवाला**।

संज्ञा पुं.—(१) **कमल**। (२) **शंख**। (३) **मछली**। (४) **मोती**। उ.—दुर दमकत सुभग स्रवननि जलज जुग डहडहत—१०-१८४।

जलजन्य—संज्ञा पुं. [सं.] **कमल**।

जलजला—संज्ञा पुं. [फ़ा. ज़लज़ला] **भूकंप**।

जलजात, जलजातक—वि. [सं. जल+जात, जातक=उत्पन्न] **जो जल से उत्पन्न हो**।

संज्ञा पुं.—(१) **कमल, पद्म**। उ.—बिराजत अंग अंग रति बात। अपने कर करि धरे विधाता षग षग नव जलजात—सा. उ. ३। (२) **चंद्रमा**। उ.—अवर जु सुभग वेद जलजातक कनक नीलमनि गात। उदित जराउ पंच तिय रवि ससि किरनि तहाँ सुदुरात—सा. उ. ६।

जलजासन—संज्ञा पुं. [सं. जल+ज+आसन] **ब्रह्मा**।

जलतरंग—संज्ञा पुं. [सं.] **धातु की कटोरियों में पानी भर कर बजाया जानेवाला बाजा**।

जलथंभ—संज्ञा पुं. [सं. जलस्तंभ] **जल रोकना**।

जलद—वि. [सं. जल+द] **जल देनेवाला**।

संज्ञा पुं.—(१) **मेघ, बादल**। (२) **कपूर**।

जलदकाल—संज्ञा पुं. [सं.] **वर्षा ऋतु, बरसात**।

जलदक्षय—संज्ञा पुं. [सं.] **शरद ऋतु**।

जलदेव, जलदेवता—संज्ञा पुं. [सं.] **वरुण**।

जलधर—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **बादल**। उ.—(क) उमँगे जमुन-जल प्रफुलित कुंज-पुंज, गरजत कारे भारे जूथ जलधर के—१०-३४। (ख) पूजत नाहिं सुभग स्यामल तन, जद्यपि जलधर धावत—६६५। (ग) मोहन कर तैं धार चलति, परि मोहिनि-मुख अतिहीं छबि गाढ़ी। मनु जलधर जलधार वृष्टि लघु, पुनि-पुनि प्रेम-चंद पर बाढ़ी—७३६। (२) **समुद्र**।

जलधरमाला—संज्ञा स्त्री. [सं.] **बादलों की श्रेणी**।

जलधरी—संज्ञा स्त्री. [सं.] **पत्थर या धातु का अर्घा जिसमें शिवलिंग स्थापित किया जाता है**।

जलधार, जलधारा—संज्ञा स्त्री. [सं. जलधारा] (१) **जल-प्रवाह, पानी की धारा, पानी की झड़ी**। उ.—मोहन-कर तैं धार चलति, परि मोहनि-मुख अति हीं छबि गाढ़ी। मनु जलधर जलधार वृष्टि-लघु, पुनि-पुनि प्रेम-चंद पर बाढ़ी—७३६। (२) **तपस्या की एक रीति जिसमें धार बाँध कर पानी डाला जाता है**।

जलधारी—संज्ञा पुं. [सं. जलधारिन्] **बादल, मेघ**। उ.—सुतनि तज्यौ, तिय तज्यौ, भ्रात तज्यौ, तन तैं त्वच भई न्यारी। स्रवन न सुनत, चरन-गति थाकी, नैन भए जलधारी १-११८।

वि.—**पानी को धारण करनेवाला**।

जलधि—संज्ञा पुं. [सं.] **सागर, समुद्र**।

जलधिगा—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **लक्ष्मी**। (२) **नदी**।

जलधिज—संज्ञा पुं. [सं. जलधि+ज] **चंद्रमा**।

जलन—संज्ञा स्त्री. [हिं. जलना] (१) **जलने की पीड़ा या कष्ट**। (२) **बहुत अधिक ईर्ष्या या दाह**।

जलना—क्रि. अ. [सं. ज्वलन] (१) **दग्ध होना, बलना**।

मुहा.—जलती आग—**भयानक विपत्ति**। जलती आग में कूदना—**जान-बूझकर भारी विपत्ति में फँसना**।

(२) **आँच की तेजी से फुंक जाना**। (३) **झुलसना**।

मुहा.—जले पर नमक (चूना) छिड़कना

(लगाना)—दुखी को और दुख देना। जले फफोले फोड़ना—दुखी को बदला चुकाने के लिए और दुख देना।

(४) बहुत अधिक ईर्ष्या, डाह या द्वेष करना।

मुहा.—जली कटी (भुनी) बात कहना (सुनाना)—लगती या चुभती हुई बातें कहना। जल मरना—कुढ़ जाना, ईर्ष्या के कारण दुखी होना।

जलनिधि—संज्ञा पुं. [सं.] समुद्र।

जलपति—संज्ञा पुं. [सं.] (१) वरुण। (२) समुद्र।

जलपना—क्रि. अ. [सं. जल्पन] (१) लंबी-चौड़ी या बढ़ी-चढ़ी बातें करना। (२) बकवाद करना।

संज्ञा स्त्री.—डींग, व्यर्थ की बकवाद।

जलपहिं—क्रि. अ. [हिं. जलपना] बोलते हैं।

जलपाई—संज्ञा स्त्री. [हिं. जलपना] बोलना।

जलपाटल—संज्ञा पुं. [हिं. जल-पटल] काजल।

जलपान—संज्ञा पुं. [सं.] नाश्ता, हल्का भोजन।

जलपै—क्रि. अ. [हिं. जलपना] बोले, कहे, बके।

जलप्रवाह—संज्ञा पुं. [सं.] (१) पानी का बहाव। (२) शव को नदी में बहाने की क्रिया।

जलप्लावन—संज्ञा पुं. [सं.] (१) पानी की बाढ़। (२) एक प्रलय, जिसमें सारी सृष्टि जलमग्न हो जाती है।

जलमानुष—संज्ञा पुं. [सं.] एक कल्पित जलजंतु जिसका ऊपरी शरीर मनुष्य और निचला मछली का होता है।

जलयान—संज्ञा पुं. [सं.] जल की सवारी, जहाज।

जलरितु—संज्ञा स्त्री. [हिं. जल+ऋतु, जलर्तु] बरसात। जलरितु नाम जान अब लागे हरि-मख-बचन गयौ री—सा. उ. ५१।

जलरुह, जलरूह—संज्ञा पुं. [सं.] कमल। उ.—सुंदर कर आनन समीप अति राजत इहिं आकार। जलरुह मनौ बैर बिधु सौं तजि मिलत लए उपहार—२८३।

जलतता—संज्ञा स्त्री. [सं.] पानी की लहर, तरंग।

जलवर्त—संज्ञा पुं. [सं.] मेघ का एक भेद। उ.—सुनत मेघवर्तक साजि सैन लै आये। जलवर्त, वारिवर्त, पवन-वर्त, बीजुवर्त, आगिवर्तक जलद संग ल्याये—६४४।

जलवाना—क्रि. स. [हिं. जलाना का प्रे.] जलाने का काम दूसरे से कराना, सुलगवाना, बलवाना।

जलवाह—संज्ञा पुं. [सं.] मेघ, बादल।

जलविहार—संज्ञा पुं. [सं.] (१) नदी आदि पर नाव की सैर। (२) जल में स्नान और खेल।

जलशय, जलशयन—संज्ञा पुं. [सं.] विष्णु।

जलशायी—संज्ञा पुं. [सं. जलशायिन्] विष्णु।

जलसंस्कार—संज्ञा पुं. [सं.] (१) नहाना। (२) धोना। (३) शव को जल में बहा देना।

जलसा—संज्ञा पुं. [अ.] (१) किसी उत्सव में बहुत से लोगों का एकत्र होना। (२) सभा-समाज का बड़ा अधिवेशन।

जलसुत—संज्ञा पुं. [हिं. जल+सुत=पुत्र] (१) कमल। उ.—अलिसुत प्रीति करी जलसुत सौं संपुटि हाथ गह्यौ—सा. ३-३१। (ख) तैं जु नील पट ओट दियो री……। जल-सुत बिंब मनहुँ जल राजत मनहुँ सरदससि राहु लियौ री—सा. उ. १८। (२) मोती। उ.—स्यामहृदय जलसुत की माला अतिहिं अनूपम छाजै री—१३४३।

जलसुततिति—संज्ञा स्त्री. [हिं. जल+सुत (जल से उत्पन्न जोंक) + तित (=गति)] जोंक की गति, धृष्टता, ढिठाई। उ.—उठि राधे कह रैन गँवावै। महिसुत गति तजि जल-सुत-तित तजि सिंधु-सुता-पति-भवन न भावै—सा. उ. २२।

जलसुत—प्रीतम-सुत-रिपु-बांधव-आयुध—संज्ञा पुं. [सं. जल+सुत (जल से उत्पन्न कमल)+प्रीतम (प्रियतम=कमल का प्रियतम, सूर्य)+सुत (सूर्य का सुत या पुत्र कर्ण)+रिपु (कर्ण का रिपु या शत्रु अर्जुन)+बांधव (अर्जुन का भाई भीम)+आयुध (=हथियार, भीम का हथियार गदा ; यहाँ 'गदा' शब्द से 'गद' अर्थ लिया)] गद, रोग। उ.—जलसुत-प्रीतम-सुत-रिपु-बांधव आयुध आपुन बिलख भयौ री—सा. उ. २१।

जलस्तंभ—संज्ञा पुं. [सं.] समुद्र में बादलों से बननेवाला एक स्तंभ जिसका दर्शन अशुभ होता है।

जलस्तंभन—संज्ञा पुं. [सं.] मंत्र आदि की सहायता से पानी बाँधना या उसकी गति रोकना।

जलहर—वि. [हिं. जल+हर] जल से भरा हुआ।

संज्ञा पुं. [हिं. जलधर] तालाब आदि जलाशय।

उ.—वै जलहर हम मीन बापुरी कैसे जिवहिं निनारे —४८७० ।

जलहरी—संज्ञा स्त्री. [सं. जलधरी] **(१) पत्थर या धातु का अर्घा जिसमें शिवलिंग स्थापित किया जाता है। (२) शिवलिंग के ऊपर गर्मी में टाँगा जानेवाला जल भरा घड़ा जिससे पानी बराबर टपकता रहता है।**

जलांजलि—संज्ञा स्त्री. [सं.] **(१) पानी-भरी अँजुली। (२) पितरों को अँजुली भर कर जल देना।**

जलांतक—संज्ञा पुं. [सं.] **(१) एक समुद्र। (२) सत्यभामा के गर्भ से उत्पन्न श्रीकृष्ण का एक पुत्र।**

जलाक, जलाका—संज्ञा स्त्री.—**(१) पेट की ज्वाला या आग, प्रेम, भूख। (२) लू।**

जलाकर—संज्ञा पुं. [सं. जल+आकर] **समुद्र, नदी।**

जलाजल—संज्ञा पुं. [हिं. झलाझल] **गोटे की झालर।** उ.—गति गयंद कुच कुंभ किंकिणी मनहुँ घंट झहनावै। मोतिनहार जलाजल मानो खुभीदंत झलकावै।

जलातन—वि. [हिं. जलना+तन] **(१) क्रोधी। (२) द्वेषी।**

जलाद—संज्ञा पुं. [हिं. जल्लाद] **घातक।**

जलाधिप—संज्ञा पुं. [सं. जल+अधिप] **वरुण।**

जलाना—क्रि. स. [हिं. जलना का सक.] **(१) बलाना, प्रज्वलित करना। (२) आँच पर चढ़ाकर भाप या कोयले के रूप में करना। (३) झुलसाना। (४) ईर्ष्या, द्वेष आदि पैदा करना।**

मुहा.—जला जला कर मारना—**बहुत तंग करना।**

जलापा—संज्ञा पुं. [हिं. जलना+आपा (प्रत्य.)] **ईर्ष्या, डाह आदि के कारण होनेवाली जलन या कुढ़न।**

जलाल—संज्ञा पुं. [अ.] **रोब, आतंक, तेज।**

जलाव—संज्ञा पुं. [हिं. जलना+आव (प्रत्य.)] **खमीर।**

जलावन—संज्ञा पुं. [हिं. जलाना] **(१) ईंधन। (२) किसी पदार्थ का तपाने-गलाने पर जल जानेवाला अंश। (३) जलाने, तपाने, झुलसाने का काम या भाव।** उ.—तेज भगवान को पाय जलावन लगे असुरदल चल्यौ सबही पराई—१०उ.-३५।

जलावर्त्त—संज्ञा पुं. [सं. जल+आवर्त्त] **पानी का भँवर।**

जलाशय—संज्ञा पुं. [सं. जल+आशय] **(१) वह स्थान जहाँ पानी जमा हो। (२) उशीर, खस।**

जलाहल—वि. [सं. जलस्थल या हिं. जलाजल] **जलमय।**

जलिका, जलुका, जलूका, जलौका—संज्ञा स्त्री. [सं. जलिका] **जोंक।**

जलील—वि. [अ. ज़लील] **तुच्छ, अपमानित।**

जलूस—संज्ञा पुं. [अ.] **लोगों का सजधज कर किसी उत्सव में या सवारी के साथ चलना।**

जलेंद्र—संज्ञा पुं. [सं.] **(१) वरुण। (२) महासागर।**

जलेचर—संज्ञा पुं. [सं. जलचर] **जल का जीव।**

जलेतन—वि. [हिं. जलना+तन] **(१) क्रोधी, असहनशील। (२) डाह, ईर्ष्या आदि से सदा जलनेवाला।**

जलेबी—संज्ञा स्त्री. [हिं. जलाव=खमीर] **(१) एक मिठाई। (२) एक पौधा। (३) गोल घेरा, कुंडली।**

जलेश—संज्ञा पुं. [सं.] **(१) वरुण। (२) समुद्र।**

जलोदर—संज्ञा पुं. [सं.] **पेट फूलने का रोग।**

जल्द—क्रि. वि. [अ.] **(१) शीघ्र। (२) तेजी से।**

जल्दी—संज्ञा स्त्री. [हिं. जल्द] **शीघ्रता, फुरती।**

क्रि. वि.—**(१) शीघ्र, चटपट। (२) तेजी से।**

जल्प—संज्ञा पुं. [सं.] **(१) कथन। (२) बकवाद।**

जल्पक—वि. [सं.] **बकवादी, बातूनी।**

जल्पन—संज्ञा पुं. [सं.] **(१) बकवाद, डींग।**

जल्पना—क्रि. अ. [सं. जल्पन] **डींग मारना।**

जल्पाक—वि. [सं.] **बकवादी, वाचाल।**

जल्पित—वि. [सं.] **(१) मिथ्या। (२) कहा हुआ।**

जल्लाद—संज्ञा पुं. [अ.] **घातक, बधुआ, वधिक। (२) निर्दयी, कठोर।**

जव—संज्ञा पुं. [सं.] **वेग।**

संज्ञा पुं. [सं. यव] **जौ।**

जवन—वि. [सं.] **तेज, वेगवान।**

संज्ञा पुं. [सं.] **(१) वेग। (२) घोड़ा।**

संज्ञा पुं. [सं. यवन] **(१) यूनानी। (२) मुसलमान।**

जवनिका—संज्ञा पुं. [सं. यवनिका] **परदा, नाटक का परदा, यवनिका।** उ.—बदन उघारि दिखायौ अपनौ नाटक की परिपाटी। बड़ी बार भई, लोचन उघरे, भरम-जवनिका फाटी—१०-२५४।

जवनी—संज्ञा स्त्री. [सं.] **तेजी, वेग।**

जवाँमर्द—वि. [फ़ा.] **शूरवीर, बहादुर।**

जवाँमर्दी—संज्ञा स्त्री. [हिं. जवाँमर्द] **वीरता।**

जवाई—संज्ञा स्त्री. [हिं. जाना] (१) **जाने का काम या भाव, गमन।** (२) **धन जो जाते समय दिया जाय।**

जवादानी—संज्ञा स्त्री. [हिं. जौ+दाना] **चंपाकली।**

जवादि—संज्ञा पुं. [अ. ज़वाद] **एक सुगंधित वस्तु।**

जवान—वि. [फ़ा.] (१) **युवक।** (२) **वीर।**

संज्ञा पुं.—(१) **वीर पुरुष।** (२) **सिपाही।**

जवानी—संज्ञा स्त्री. [फ़ा.] **यौवन, तरुणाई।**

मुहा.—जवानी उठना (उभड़ना, चढ़ना)—(१) **यौवन का आगमन होना।** (२) **मस्त होना।** जवानी ढलना—बुढ़ापा आना। उठती (चढ़ती) जवानी—**यौवन का आरंभ।** उतरती जवानी—**यौवन का ढलाव।**

जवाब—संज्ञा पुं. [अ.] (१) **उत्तर।** उ.—(क) सूर आप गुजरान मुसाहिब लै जवाब पहुँचावै—१-१४२।

मुहा.—जवाब तलब करना—**कारण पूछना, कैफियत माँगना।** (कोरा) जवाब मिलना—**बात अस्वीकृत होना।** जबाब का जवाब देना—**प्रतिपक्षी के बदले या कथन का कड़ा जवाब देना।** उ.—सूर स्याम मैं तुम्हैं न डरैहौं जवाब कौ जवाब दैहौं—८४३।

(२) **बदला, बदले में किया हुआ कार्य।** (३) **जोड़, मुकाबले की चीज।** (४) **नौकरी छूटना।**

जवाबदेह—वि. [फ़ा.] **उत्तरदाता।**

जवाबदेही—संज्ञा स्त्री. [फ़ा.] **उत्तरदायित्व।**

जवाबसवाल—संज्ञा पुं. [अ.] **वाद-विवाद, प्रश्नोत्तर।**

जवार—संज्ञा पुं. [अ.] **अड़ोस-पड़ोस।**

संज्ञा पुं. [अ. ज़वाल] (१) **अवनति, गिरे या बुरे दिन।** (२) **झंझट, झगड़ा, जंजाल।**

जवारा—संज्ञा पुं. [हिं. जौ] **जौ के हरे अंकुर।**

जवारी—संज्ञा स्त्री. [हिं. जव] **एक तरह का हार।**

जवाल—संज्ञा पुं. [अ. ज़वाल] (१) **अवनति, घटी, उतार।** (२) **जंजाल, आफत, झंझट।**

जवास, जवासा—संज्ञा पुं. [सं. यवासक, प्रा. यवासअ] **एक कँटीला क्षुप जो वर्षा के बाद फूलता-फलता है।**

जवाहर, जवाहिर—संज्ञा पुं. [अ.] **रत्न, मणि।**

जवी, जवीय—वि. [सं. जविन्, जवीयस्] **तेज।**

जवैया—वि. [हिं. जाना+ऐया (प्रत्य.)] **जानेवाला।**

जशन—संज्ञा पुं. [फ़ा.] (१) **जलसा।** (२) **हर्ष।**

जस—संज्ञा पुं. [सं. यशस्, हिं. यश] (१) **कीर्ति, सुख्याति।** उ.—गह्यौ गिरि पानि जस जगत छायौ। (२) **महिमा, प्रशंसा।** उ.—(क) जरासंध बंदी कटैं नृप-कुल जस गावैं—१-४। (ख) कोपि कौरव गहे केस जब सभा मैं पांडु की बधू जस नैंकु गायौ।

क्रि. वि. [सं. यथा, प्रा. जहा] **जैसा।**

जसद, जस्ता—संज्ञा पुं. [सं. जसद] **एक धातु।**

जसुदा, जसुमत, जसुमति—संज्ञा स्त्री. [सं. यशोदा] **नंदजी की पत्नी जिन्होंने श्रीकृष्ण को पाला था।**

जसूस—संज्ञा पुं. [अ. जासूस] **भेदिया।**

जसोइ—संज्ञा स्त्री. [सं. यशोदा] **यशोदा।** उ.—दुतिया के ससि लौं बाढ़ै सिसु, देखै जननि जसोइ—१०-५६।

जसोद, जसोमति, जसोवा, जसोवै—संज्ञा स्त्री. [सं. यशोदा] **यशोदा।** उ.—दै री मोकौं ल्याइ बेनु, कहि, कर गहि रोवै। ग्वालिनि डराति जियहिं, सुनै जनि जसोवै—१०-२८४।

जस्ता—संज्ञा पुं. [सं. जसद] **एक मटमैली धातु।**

जहँ—क्रि. वि. [हिं. जहाँ] **जिस स्थान पर, जहाँ।** उ—जहँ जहँ गाढ़ परी भक्तनि कौं, तहँ तहँ आपु जनायौ—१-२०।

मुहा. जहँ के तहँ—**जिस स्थान पर हो, वहीं।** उ.—निरखि सुर नर सकल मोहे रहि गए जहँ कै तहँ—१० उ. २४।

जहँड़ना, जहँड़ाना—क्रि. अ. [सं. जहन, हिं. जहँड़ाना] (१) **घाटा या हानि उठाना।** (२) **धोखे या भ्रम में पड़ना।**

जहकना—क्रि. स. [हिं. झकना] **चिढ़ना, कुढ़ना।**

जहतिया—संज्ञा पुं. [हिं. जगात = कर] **भूमिकर, लगान या जगात उगाहने या वसूलने वाला।** उ.—साँचो सो लिखहार कहावै।......मन्मथ करै कैद अपनी में जान जहतिया लावै—१-१४२।

जहदना—क्रि. अ. [हिं. जहदा] (१) **कीचड़ या दलदल होना।** (२) **शिथिल पड़ना, थक जाना।**

जहँदी—संज्ञा पुं.—**दलदल, कीचड़ ।**

जहना—क्रि. स. [सं. जहन] (१) **त्यागना, छोड़ना ।** (२) **नाश, नष्ट या बरबाद करना ।**

जहन्नुम—संज्ञा पुं. [अ.] (१) **नरक ।** (२) **वह स्थान जहाँ बहुत दुख और कष्ट हो ।**

जहमत—संज्ञा स्त्री. [अ. ज़हमत] **मुसीबत, झंझट ।**

जहर, जहरि—संज्ञा स्त्री. [फ़ा जह्र] (१) **विष, गरल ।** उ.—अधर सुधा मुरली की पोषे जोग-जहर कत प्यावै रे—३०७० ।

मुहा.—जहर उगलना—(१) **बहुत चुभनेवाली बात कहना ।** (२) **जली-कटी सुनाना ।** जहर करना--**बहुत तेज नमक करना ।** कड़ुआ जहर—(१) **बहुत कड़ुआ ।** (२) **जिसमें बहुत तेज नमक पड़ा हो ।** जहर का घूँट—**बहुत बुरे स्वाद का ।** जहर का घूँट पीना—**क्रोध को मन ही मन दबाना ।** जहर का बुझाया हुआ—**बहुत कष्ट देनेवाला, बड़ा दुष्ट ।** जहर की गाँठ (पुड़िया)—**बहुत दुखदायी ।**

(२) **अप्रिय बात या काम ।**

मुहा.—जहर लगना—**बहुत बुरा लगना ।**

वि.—(१) **घातक ।** (२) **हानिकारक ।**

संज्ञा पुं. [हिं. जौहर] **जौहर-व्रत ।**

जहरी, जहरीला—वि. [हिं. जहर + ईला] **विषैला ।**

जहाँ—क्रि. वि. [सं. यत्र, पा. यत्थ, प्रा. जह] **जिस जगह, जिस स्थान पर ।**

मुहा.—जहाँ का तहाँ—**जिस स्थान पर हो, वहीं ।** जहाँ का तहाँ रह जाना–(१) **आगे न बढ़ पाना ।** (२) **कुछ काम या कारवाई न होना ।** जहाँ तहाँ—(१) (१) **इधर-उधर, इतस्ततः ।** उ.—जहाँ तहाँ तैं सब आवैंगे, सुनि-सुनि सस्तौ नाम । अब तौ परयौ रहैगौ दिन-दिन तुमकौं ऐसौ काम—१-१९१ । (२) **सब जगह, सब स्थानों पर ।** उ.—मंत्र-जंत्र मेरैं हरि-नाम । घट-घट मैं जाकौ बिस्राम । जहाँ तहाँ सोइ करत सहाइ । तासौं तेरौ क्छु न बसाइ—७-२ ।

जहाँगीरी—संज्ञा स्त्री. [फ़ा.] **हाथ का एक जड़ाऊ गहना ।**

जहाँदीद, जहाँदीदा—वि. [फ़ा.] **अनुभवी ।**

जहाँपनाह—संज्ञा पुं. [फ़ा.] **संसार का रक्षक ।**

जहाज—संज्ञा पुं. [अ. जहाज़] **जलयान ।** उ.—बिनती करत मरत हौं लाज । नख-सिख लौं मेरी यह देही है पाप की ज़हाज—१-९६ ।

मुहा.—जहाज का कौवा (काग या पंछी)—(१) **कौआ या पक्षी जो जहाज से इधर-उधर उड़कर जाय और आश्रय न मिलने पर फिर लौटकर आ जाय । इसकी तुलना ऐसे व्यक्ति से की जाती है जिसको इधर-उधर भटकने के बाद हारकर या लाचार होकर अंत में केवल एक व्यक्ति का ही आश्रय लेना पड़े ।** उ.—मेरौ मन अनत कहाँ सुख पावै । जैसे उड़ि जहाज को पंछी फिरि जहाज पै आवै—१-१६८ । (२) **धूर्त्त, चालाक ।**

जहाजी—वि. [हिं. जहाज] **जहाज से संबंधित ।**

जहान—संज्ञा पुं. [फ़ा.] **संसार, जगत ।**

जहानक—संज्ञा पुं. [सं.] **प्रलय ।**

जहालत—संज्ञा स्त्री. [फ़ा.] **अज्ञान, मूर्खता ।**

जहिया—क्रि. वि. [सं. यद्+हिया] **जब, जिस समय ।**

जहीं—क्रि. वि. [सं. यत्र, पा. यत्थ] (१) **जहाँ या जिस स्थान पर ही ।** (२) **ज्योंही, जैसे ही ।**

जहीन—वि. [अ. ज़हीन] **बुद्धिमान, स्मृतिवान् ।**

जहूर—संज्ञा पुं. [अ. ज़हूर] **प्रकाश ।**

जहूरा—संज्ञा पुं. [अ. ज़हूरा] (१) **दिखावा ।** (२) **ठाठ ।**

जहेज—संज्ञा पुं. [अ. जहेज़, मि. सं. दायज] **दहेज ।**

जह्नु—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **विष्णु ।** (२) **एक ऋषि जिन्होंने सारी गंगा का पान करके उसे कान से निकाल दिया था ।**

जह्नुजा, जह्नुतनया, जह्नुसुता—संज्ञा स्त्री. [सं. जह्नु + जा, तनया, सुता=पुत्री] **जह्नु की पुत्री, गंगा ।**

जह्नुसप्तमी—संज्ञा स्त्री. [सं.] **वैशाख शुक्ल सप्तमी, जब जह्नु ने गंगा का पान किया था ।**

जाँग—संज्ञा पुं. [देश.] **घोड़ों की एक जाति ।**

• संज्ञा स्त्री. [हिं. जाँघ] **जाँघ, उरु ।**

जाँगड़ा, जाँगरा—संज्ञा पुं. [देश.] **भाट, बंदी आदि जो राजाओं का यश गाते हैं ।**

जाँगर—संज्ञा पुं. [हिं. जाँघ] (१) **शरीर ।** (२) **हाथ-पैर ।**

जाँगल—संज्ञा पुं. [सं.] (१) तीतर। (२) मांस। (३) वह भू-भाग जहाँ जल कम बरसे। (४) इस भू-भाग में पाये जानेवाले हिरन आदि पशु।

वि.—जंगल-संबंधी, जंगली।

जाँगलि, जाँगलिक—संज्ञा पुं. [सं.] (१) साँप पकड़ने वाला। (२) साँप का विष उतारनेवाला।

जाँगलू—वि. [हिं. जंगल] जंगली, उजडु, गँवार।

जाँगुलि, जाँगुलिक—संज्ञा पुं. [सं.] (१) साँप पकड़ने-वाला। (२) साँप का विष उतारनेवाला।

जाँगुली—संज्ञा स्त्री. [सं.] विष उतारने की विद्या।

जाँघ—संज्ञा स्त्री. [सं. जंघा] घुटने और कमर के बीच का भाग, उरु।

जाँघा—संज्ञा पुं. [देश.] (१) हल। (२) कुएँ की गराड़ी का खंभा या धुरा।

संज्ञा स्त्री. [सं.] उरु, जाँघ।

जाँघिक—संज्ञा पुं. [सं.] (१) ऊँट। (२) एक मृग। (३) हरकारे आदि जिन्हें बहुत दौड़ना पड़ता है।

जाँघिल—वि. [हिं. जाँघ] पिछले पैर का लँगड़ा।

संज्ञा पुं. [देश.] एक तरह की चिड़िया।

जाँच—संज्ञा स्त्री. [हिं. जाँचना] (१) जाँचने की क्रिया, भाव या परख। (२) खोज, गवेषणा।

जाँचक—संज्ञा पुं. [सं. याचक] माँगनेवाला, भिखारी। उ.—जाँचक पैं जाँचक कह जाँचै ? जौ जाँचै तौ रसना हारी—१-३४।

संज्ञा पुं. [हिं. जाँच] जाँचने या परीक्षा करनेवाला।

जाँचकता—संज्ञा स्त्री. [सं. याचकता, हिं. जाचकता] माँगने की क्रिया या भाव, भिखमंगी।

जाँचत—क्रि. स. [हिं. याचना] (१) प्रार्थना या निवेदन करता है, माँगता है। उ.—असरन-सरन सूर जाँचत है, को अब सुरति करावै—१-१७।

जाँचति—क्रि. स. स्त्री. [हिं. याचना] प्रार्थना या निवेदन करती हूँ। उ.—प्रिय जनि रोकहि जान दै। हौं हरि-बिरह-जरी जाँचति हौं, इती बात मोहिं दान दै—८०५।

जाँचन—क्रि. स. [हिं. जाँचना] याचना करने (के लिए), माँगने (के हेतु)। उ.—नंद-पौरि जे जाँचन आए। बहुरौ फिरि जाचक न कहाए—१०-३२।

जाँचना—क्रि. स. [सं. याचन] (१) परख या परीक्षा करना। (२) प्रार्थना करना, माँगना।

जाँचा—क्रि. स. भूत. [हिं. जाँचना] (१) परख या परीक्षा की। (२) माँगा, याचना की, निवेदन किया।

जाँचि—क्रि. स. [हिं. याचना] प्रार्थना करके, माँगकर। उ.—सिव-बिरंचि, सुर-असुर, नाग-मुनि, सु तौ जाँचि जन आयौ। भूल्यौ भ्रम्यौ, तृषातुर मृग लौं, काहूँ स्रम न गँवायौ—१-२०१।

जाँचे—क्रि. स. [हिं. जाँचना] माँगे, माँगने पर, प्रार्थना करने पर, (आश्रय आदि के लिए) निवेदन किया। उ.—(क) कलानिधान सकल गुन-सागर, गुरु धौं कहा पढ़ाए (हो)। तिहि उपकार मृतक सुत जाँचे, सो जमपुर तैं ल्याए (हो)—१-७। (ख) जाँचे सिव बिरंचि-सुरपति सब, नैंकु न काहू सरन दयौ—९-६। (ग) देत दान राख्यौ न भूप कछु, महा बड़े नग हीर। भए निहाल सूर सब जाचक, जे जाँचे रघुबीर—९-१६।

जाँच्यो, जाँच्यौ—क्रि. स. [हिं. जाँचना] माँगा, (किसी वस्तु के देने की) प्रार्थना की। उ.—(क) जिन जो जाँच्यौ सोइ दीन, अस नँदराय ढरे—१०-२४। (ख) जिन जाँच्यौ जाइ रस नँदराय ढरे। मानो बरसत मास असाढ़ दादुर मोर ररे।

जाँजरा—वि. [सं. जर्जर] जीर्ण, जर्जर।

जाँझ—संज्ञा पुं. [सं. झंझा] आँधी और वर्षा।

जाँत, जाँता—संज्ञा पुं. [सं. यंत्र] आटा पीसने की चक्की जो जमीन में गड़ी होती है।

जांतव—वि. [सं.] (१) जीव-जंतु का। (२) जीव-जंतुओं से प्राप्त।

जाँपना—क्रि. स. [हिं. चाँपना] दबाना।

जाँब—संज्ञा पुं. [सं. जंबा] जामुन, जंबूफल।

जांबवंत—संज्ञा पुं. [सं. जांबवान] सुग्रीव का एक मंत्री। उ.—(क) महाधीर गंभीर बचन सुनि जाँबवंत समुझाए। (ख) जांबवंत सुतासुत कहाँ मम सुता बुधिबंत पुरुष यह सब सँभारे।

जांबव, जांबवक—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **जामुन का फल।** (२) **जामुन की बनी शराब या सिरका।** (३) **स्वर्ण।**

जांबवती—संज्ञा स्त्री. [सं. जाम्बवती] **जांबवान की कन्या जो श्रीकृष्ण को ब्याही थी।** उ.—जांबवती अरपी कन्या भरि मनि राखी समुहाय। करि हरि ध्यान गये हरि-पुर कौं जहाँ जोगेस्वर जाय।

जांबवान—संज्ञा पुं. [सं.] **सुग्रीव का रीछ मंत्री जो ब्रह्मा का पुत्र माना गया है। प्रसिद्धि है कि सतयुग में इसने वामन भगवान की परिक्रमा की थी ; द्वापर में इसने स्यमंतक मणि की खोज में गये श्रीकृष्ण से घोर युद्ध किया था और अंत में उन्हें पहचान कर अपनी पुत्री जांबवती उन्हें ब्याह दी थी।**

जांबवि—संज्ञा पुं. [सं.] **वज्र।**

जांबवी—संज्ञा स्त्री. [हिं. जांबवती] **जांबवान की कन्या जांबवती जो श्रीकृष्ण को ब्याही थी।**

जांबुवत्, जांबुवान—संज्ञा पुं. [सं. जांबवान] **सुग्रीव का मंत्री।**

जांबू—संज्ञा पुं. [सं. जंबू] **जंबू द्वीप।**

जाँवत—अव्य. [सं यावत्] (१) **सब, सारा।** (२) **जब तक।** (३) **जितना।**

जाँवर—संज्ञा पुं [हिं. जाना] **गमन,जाना, प्रस्थान।**

जा—सर्व. [हिं. जो] **जो, जिस, जिसे।** उ.—नीकैं गाइ गुपालहिं मन रे। जा गाए निर्भय पद पाए अपराधी अनगन रे—१-६६।

संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **माता।** (२) **देवरानी।**

वि. स्त्री.—**उत्पन्न, जन्य, संभूत।**

वि. [फ़ा.] **उचित, मुनासिब।**

क्रि. अ. [हिं. जाना] **(तुच्छतासूचक, आज्ञार्थक) जाओ, प्रस्थान या गमन करो।**

मुहा.—जा पड़ना—(१) **किसी जगह पर अकस्मात पहुँच जाना।** (२) **हारे-थके या लाचार होकर कहीं पहुँचना।** जा रहना—(१) **किसी स्थान पर थोड़ा समय काटने के लिए ठहरना।** (२) **जा बसना।**

जाइ—क्रि. अ. [हिं. जाना] (१) **जाती है।**

प्र.—बरनि न जाइ—**वर्णन नहीं की जा सकती।** उ.—बरनि न जाइ भगत की महिमा, बारंबार बखानौं—१-११

(२) **जाकर।** उ.—भरि सोवै सुख-नींद मैं तहाँ सु जाइ जगावै—१-४४।

वि.—**व्यर्थ, वृथा, निष्प्रयोजन।**

जाइगौ—क्रि. अ. [हिं. जाना] **जायगा।**

प्र.—लै जाइगौ—**ले जायगा।** उ.—पकरि कंस लै जाइगौ, कालहिं परै खँभारि—५८६।

जाइफर, जाइफल—संज्ञा पुं. [हिं. जायफल] **जायफल।**

जाइस—संज्ञा पुं. [हिं. जायस] **रायबरेली जिले का एक प्राचीन नगर जहाँ सूफी फकीरों की गद्दी है।**

जाई—संज्ञा स्त्री. [सं. जा = उत्पन्न] **पुत्री, बेटी।**

संज्ञा स्त्री. [सं. जाती] **चमेली।**

क्रि. अ. [हिं. जाना] **जाकर।** उ.—बहु दिन भए, हरि सुधि नहिं पाई। आज्ञा होउ तौ देखौं जाई—१-२८६।

जाउँ—क्रि. अ. [हिं. जाना] **जाऊँ, प्रस्थान करूँ।** उ.—तुम तजि और कौन पै जाउँ—१-१६४।

जाउँनि—संज्ञा स्त्री. [हिं. जामुन] **जामुन का फल।**

जाउ—वि. [हिं. जाना] **व्यर्थ, वृथा, असफल, अपूर्ण।** उ.—वरु मेरी परतिज्ञा जाउ। इत पारथ कोप्यौ है हम पर, उत भीषम भट-राउ—१-२७४।

क्रि. अ. [हिं. जाना] **जाय, प्रस्थान करे।**

प्र.—चली जाउ—**चली जाय, गमन करे।** उ.—चली जाउ सैना सब मोपर धरौ चरन रघुबीर। मोहिं असीस जगत-जननी की, नवत न बज्र-सरीर—९-१०७।

जाउनि—संज्ञा स्त्री. [हिं. जामुन] **जामुन।**

जाउर—संज्ञा पुं. [हिं. चाउर = चावल] **खीर।**

जाए—क्रि. स. [हिं. जनना, जाना] **उत्पन्न किय, पैदा किये।** उ.—(क) कह्यौ, सरमिष्ठा सुत कहँ पाए ? उनि कह्यौ, रिषि-किरिपा तैं जाए—९-१७४। (ख) ता संगति नव सुत तिन जाए—४-१२।

वि.—**पैदा किये हुए।** उ.—मथुरा क्यों न रहे जदुनंदन जो पै कान्ह देवकी जाए—३४३४।

जाएस—संज्ञा पुं. [हिं जायस] **रायबरेली जिले का एक नगर जहाँ सूफी फकीरों की गद्दी है।**

जाक—संज्ञा पुं. [सं. यक्ष] **यक्ष।**

जाकी—सर्व. [हिं. जा=जो+की] **जिसकी** । उ.—जाकी कृपा पंगु गिरि लंघै—१-१ ।

ज़ाके—सर्व. [हिं. जा=जो+के (प्रत्य.)] **जिसके** । उ.—मानी हार बिमुख दुरजोधन, जाके जोधा हे सौ भाई—१-२४ ।

जाकैं—सर्व. [हिं. जा+कैं (प्रत्य.)] **जिसके** । उ.—रघुबीर मोसैं जन जाकैं, ताहि कहा सँकराई—९-१४८ ।

ज़ाकों, जाकौं—सर्व. [हिं. जा+कौं (प्रत्य.)] **जिसे, जिसको** । उ.—जाकौं दीनानाथ निवाजैं । भव-सागर मैं कबहुँ न भूकै, अभय निसाने बाजैं—१-३६ ।

जाको, जाकौ—सर्व. [हिं. जा+को] **जिसको** । उ.—स्रवनन सुनत रहत जाको नित सो दरसन भए नैन—२५५८ ।

जाख—संज्ञा स्त्री. [सं. यक्षिणी] **यक्षिणी** । उ.—कोरी मटुकी दह्यौ जमायौ, जाख न पूजन पायौ—३४६ ।

जाखन—संज्ञा स्त्री. [देश.] **लकड़ी का पहिया जो कुओं की नींव में दिया जाता है, जमवट, नेवार** ।

जाखनी, जाखिनी—संज्ञा स्त्री. [सं. यक्षिणी] (१) **यक्ष जाति की स्त्री** । (२) **कुबेर की पत्नी** ।

जाग—संज्ञा पुं. [सं. यज्ञ] **यज्ञ, मख** । उ.—तप कीन्हैं सो देहैं आग । ता सेती तुम कीनौ जाग । जज्ञ कियैं ग्रंधबपुर जैहौ । तहाँ आइ मोकौं तुम पैहौं—९-२ ।

संज्ञा स्त्री. [हिं. जगह] (१) **स्थान** । (२) **घर** ।

संज्ञा स्त्री. [हिं. जागना] **जागने या सावधान होने की क्रिया या भाव, जागरण, सतर्कता** । उ.—घटती होइ जाहि ते अपनी ताकौ कीजै त्याग; धोखे कियो बास मन भीतर अब समुझे भइ जाग—११९५ ।

संज्ञा पुं. [देश.] **बिलकुल काला कबूतर** ।

जागता—वि. [हिं. जागना] (१) **प्रभाव या महिमा प्रकट रूप से और तुरंत दिखानेवाला**। (२)**प्रकाशमान** ।

मुहा.—जागता—**प्रत्यक्ष, साक्षात्** ।

जागतिक—वि. [सं.] **जगत से संबंधित, सांसारिक** ।

जागती जोत—संज्ञा स्त्री. [हिं. जागना+ज्योति] (१) **किसी देवी-देवता का प्रत्यक्ष चमत्कार** । (२) **दीपक** ।

ज़ागना—क्रि. अ. [सं. जागरण] (१) **नींद त्यागना** । (२) **जाग्रत अवस्था में होना** । (३) **सजग या सावधान होना** । (४) **चमक उठना, उदित होना** । (५) **बढ़-चढ़कर होना, धनी, आढच या समृद्ध होना** । (६) **संगठित होना** । (७) **जलना** । (८) **पैदा होना, उपजना** ।

जागनौल—संज्ञा पुं. [देश.] **एक हथियार** ।

जागबलिक—संज्ञा पुं. [सं. याज्ञवल्क्य] **याज्ञवल्क्य** ।

जागर—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **जागना, जागरण**। (२) **कवच** । (३) **आंतरिक वृत्तियों की जाग्रत अवस्था** ।

जागरण, जागरन—संज्ञा पुं. [सं. जागरण] (१) **जागना, नींद त्यागना** । (२) **किसी धार्मिक अनुष्ठान के उपलक्ष में देवी-देवता का भजन-कीर्तन करते हुए सारी रात जागना** । उ.—बासर ध्यान करत सब बीत्यौ । निसि जागरन करन मन चीत्यौ ।

जागरित—संज्ञा पुं. [सं] (१) **जागने की अवस्था, जागरण** । (२) **इंद्रियों द्वारा कार्यों का अनुभव होता रहने की स्थिति या अवस्था** ।

वि.—**जागा हुआ, सजग, सावधान** ।

जागरू—संज्ञा पुं. [देश.] **भूसा, भुसैला अन्न** ।

जागरूक—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **वह जो जाग्रत या चैतन्य हो** । (२) **पहरेदार, रखवाला** ।

जागरूप—वि. [हिं. जागना+रूप] **प्रत्यक्ष, स्पष्ट** ।

जागर्ति—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **जाग्रति** । (२) **चेतनता** ।

जागहु—क्रि. अ. [हिं. जागना] (१) **जागो, नींद त्यागो, सोकर उठो** । उ.—बदन उघारि जगावति जननी, जागहु बलि गई आनँद-कंद—१०-२०४ । (२) **सचेत, सजग या सावधान हो** ।

जागा—संज्ञा स्त्री. [हिं. जगह] **जगह, स्थान** ।

संज्ञा पुं. [हिं. जागरण] **किसी उत्सव या व्रत में रात भर जागकर भजन-कीर्तन करना** ।

जागि—क्रि. अ. [हिं. जागना] (१) **जागकर, जागनेपर** । उ.—(क) सोवत मुदित भयौ सपने मैं पाई निधि जो पराई । जागि परैं कछु हाथ न आयौ, यौं जग की प्रभुताई—१-१४७ । (ख) नारायन जल मैं रहे सोइ । जागि कह्यौ, बहुरो जग होइ—९-२ । (२) **सचेत या सजग होने पर** ।

जागी—संज्ञा पुं. [सं. यज्ञ] **भाट।**

क्रि. अ. [हिं. जागना] **होश में आयी, संज्ञा प्राप्त की, सचेत हुई।** उ.—(क) स्याम नाम चक्रृत भई स्रवन सुनत जागी—१६५१। (ख) किती दई सिख मंत्र साँवरे तउ हठ लहरि न जागी—२२७५।

जागीर—संज्ञा स्त्री. [फ़ा.] **राजा या शासक की ओर से किसी सेवा के पुरस्कार-रूप में मिली हुई भूमि।**

जागीरदार—संज्ञा पुं. [फ़ा.] **वह जिसे किसी राजा या शासक से जागीर मिली हो।**

जागीरी—संज्ञा स्त्री. [हिं. जागीर+ई (प्रत्य.)] (१) **जागीरदार होने की भावना।** (२) **अमीरी, रईसी।**

जागुड़—संज्ञा पुं. [सं.] **केसर।**

जागृति—संज्ञा स्त्री. [सं. जाग्रत] **जागरण, सजगता।**

जागे—क्रि. अ. [हिं. जागना] (१) **सोकर उठे।** उ.—कमलनैन पौढ़े सुख-सेज्या, बैठे पारथ पाइ तरी। प्रभु जागे, अर्जुन-तन चितयौ, कब आए तुम, कुसल खरी ?—१-२६८। (२) **सजग हुए, चेते, सावधान हुए।** उ.—जोग-जुगति बिसरी सबै, काम-क्रोध-मद जागे (हो)—१-४४।

जागै—क्रि. अ. [हिं. जागना] **जागन पर।** उ.—जब जागै तब मिथ्या जानै—१०उ-६।

जाग्यौ—क्रि. अ. [हिं जागना] **सचेत हुआ, सावधान हुआ।** उ.—तीनौं पन ऐसैं ही खोयौ समय गए पर जाग्यौ—१-७३।

जाग्रत—वि. [सं.] **जो जागता हो, सचेत, सजग।**

जाग्रति—संज्ञा स्त्री. [सं. जाग्रत] **जागरण, सजगता।**

जाघनी—संज्ञा स्त्री. [सं.] **जाँघ, जंघा, उरु।**

जाचक—संज्ञा पुं. [सं. याचक] (१) **माँगनेवाले, मंगन।** उ.—नंद-पौरि जे जाँचन आए। बहुरौ फिरि जाचक न कहाए—१०-३२। (२) **भीख माँगनेवाला, भिखमंगा।**

जाचकता—संज्ञा स्त्री. [सं. याचक + ता (प्रत्य.)] (१) **माँगने का भाव।** (२) **भीख माँगने की क्रिया।**

जाचना—क्रि. स. [सं. याचन] (१) **माँगना, याचना करना।** (२) **भीख माँगना।**

जाजम, जाजिम—संज्ञा स्त्री. [तु.] (१) **बेल-बूटेदार चादर।** (२) **गलीचा, कालीन।**

जाजरा—वि. [सं. जर्जर] **जीर्ण-शीर्ण, जर्जर।**

जाजरी—संज्ञा पुं. [देश.] **बहेलिया, चिड़ीमार।**

जाजात—संज्ञा स्त्री. [हिं. जायदाद] **जायदाद।**

जाज्वल्य—वि. [सं.] **प्रकाशयुक्त, तेजवान।**

जाज्वल्यमान—वि. [सं.] **प्रकाशमान, तेजवान।**

जाट—संज्ञा पुं—(१) **एक जाति।** उ.—ऐसे कुमति जाट सूरज कौं प्रभु बिनु कोउ न धात्र—१-२१६। (२) **एक तरह का गाना।**

संज्ञा स्त्री. [हिं. जाठ] **मोटा लट्ठा।**

जाटालि—संज्ञा स्त्री. [सं.] **मोखा नामक वृक्ष।**

जाठ, जाठि—संज्ञा पुं. [सं. यष्टि] (१) **कोल्हू का मोटा लट्ठा।** (२) **तालाब आदि में गड़ा हुआ लट्ठा।**

जाठर—संज्ञा पुं. [सं. जठर] (१) **पेट।** (२) **पेट की अग्नि जो भोजन पचाती है।** (३) **भूख।**

वि.—(१) **पेट संबंधी।** (२) **पेट से उत्पन्न।**

जाठराग्नि—संज्ञा स्त्री. [सं. जठराग्नि] (१) **पेट की आग।** (२) **भूख।** (३) **संतान आदि के प्रति माता की ममता।**

जाड़—संज्ञा पुं. [हिं जाड़ा] **शीत, सरदी, जाड़ा।**

वि.—**बहुत अधिक, अत्यंत।**

जाड़नि—संज्ञा पुं. सवि. [हिं. जाड़ा + नि (प्रत्य)] **जाड़-पाले से, ठंडक से।** उ.—हा हा लागैं पाइ तिहारैं। पाप होत है जाड़नि मारैं—७९६।

जाड़ा—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **शीत काल।** (२) **ठंड।**

जाड्य—संज्ञा पुं. [सं.] **जड़ता, मूर्खता।**

जात—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **जन्म।** (२) **पुत्र।** (३) **वह पुत्र जो माता के गुणों से युक्त हो।** (४) **जीव, प्राणी।**

क्रि. अ. [हिं जाना] (१) **नष्ट होता है, नाश होता है।** उ.—(क) रावन सौ नृप जात न जान्यौ, माया बिषम सीस पर नाची—१-१८। (ख) रस लै-लै औटाइ करत गुर, डारि देत है खोई। फिरि औटाए स्वाद जात है, गुर तैं खाँड़ न होई—१-६३। (२) **जाता हुआ, जाने से।** उ.—अधम कौन है अजामील तैं, जम जहँ जात डरै—१-३५।

वि.—(१) **उत्पन्न, जन्मा हुआ।** उ.—सदा हित यह रहत नाहीं, सकल मिथ्या जात—१९१७। (२)

व्यक्त, प्रकट। (३) अच्छा।

संज्ञा स्त्री. [हिं. जाति] जाति।

संज्ञा स्त्री. [अ. ज़ात] (१) शरीर। (२) जरिया।

जातक—संज्ञा पुं. [सं.] (१) बच्चा। उ.—जानै कहा बाँझ ब्यावर दुख जातक जनहि न पीर है कैसी—३३२६। (२) भिखारी। (३) वे बौद्धकथाएँ जिनमें बुद्धदेव के पूर्व जन्मों की बातें होती हैं।

जातकर्म, जातक्रिया—संज्ञा पुं., स्त्री. [सं.] एक संस्कार जो बालक के जन्म के समय हिंदुओं में होता है। उ.—जातकर्म करि पूजि पितर सुर पूजन बिप्र करायौ—सारा. ३९२।

जातना, जातनाई—संज्ञा स्त्री [सं. यातना] पीड़ा, कष्ट। उ.—सूर सुजस-रागी न डरत मन, सुनि जातना कराल—१-१९९।

जातपाँत—संज्ञा स्त्री. [सं. जाति+पंक्ति] जाति-बिरादरी।

जातरा—संज्ञा स्त्री. [सं. यात्रा] यात्रा।

जातरूप—संज्ञा पुं. [सं.] (१) सोना। (२) धतूरा।

जातवेद—संज्ञा पुं. [सं.] (१) अग्नि। (२) इंद्र।

जाता—संज्ञा स्त्री. [सं.] कन्या, पुत्री।

वि. स्त्री.—उत्पन्न।

संज्ञा पुं. [हिं. जाँता] आटे की चक्की।

जाति—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) हिंदू समाज का जन्मानुसार किया गया विभाग। (२) मानव समाज का निवास स्थान या कुल-परंपरा के अनुसार किया गया विभाग। (३) गुण, धर्म आदि के अनुसार किया गया विभाग, कोटि, वर्ग। उ.—याकी जाति अबै हम चीन्ही—३९१। (४) वर्ण। (५) कुल, वंश। (६) गोत्र। (७) जन्म। (८) सामान्य, साधारण।

क्रि. अ. [सं. यान=जाना, हिं. जाना] (१) जाती है, प्रस्थान करती है। उ.—यह अति हरिहाई, हटकत हूँ बहुत अमारग जाति—१-५१। (२) नष्ट होती है। उ.—कीजै कृपा दृष्टि की बरषा जन की जाति लुनाई—१-१८५।

जातिकर्म—संज्ञा पुं. [सं. जातिकर्म] बालक के जन्म के समय होनेवाला एक संस्कार।

जातिच्युत—वि. [सं.] जाति से निकाला हुआ।

जातित्व—संज्ञा पुं [सं.] जाति का भाव, जातीयता।

जातिधर्म—संज्ञा पुं. [सं.] हर वर्ण का कर्तव्य।

जाति-पाँति – संज्ञा स्त्री [सं. जाति + हिं. पाँति (पंक्ति)] जाति, वर्ण, कुल, गोत्र आदि। उ.—जाति-पाँति उन सम हम नाहीं। हम निर्गुन सब गुन उन पाहीं।

जातिवैर—संज्ञा पुं. [सं.] सहज वैर या शत्रुता।

जातिसंकर—संज्ञा पुं. [सं.] वर्णसंकर, दोगला।

जातिस्वभाव—संज्ञा पुं. [सं.] एक अलंकार।

जाती—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) चमेली। (२) मालती।

संज्ञा स्त्री. [हिं. जाति] वर्ण, कुल, गोत्र आदि।

संज्ञा पुं.—हाथी।

वि. [अ. जाती] (१) अपना। (२) निजी।

जातीय—वि. [सं.] जाति का, जाति-संबंधी।

जातीयता—संज्ञा स्त्री. [सं.] जाति का भाव या प्रेम।

जातु—अव्य. [सं.] कदाचित्, शायद।

जातुज—संज्ञा पुं. [सं.] गर्भवती की इच्छा।

जातुधान—संज्ञा पुं. [सं.] राक्षस, असुर।

जातुधानि—संज्ञा स्त्री. [सं. पुं. जातुधान] (१) राक्षसी, निशाचरी। (२) राक्षसी पूतना। उ.—सेसनाग के ऊपर पौढ़त, तेतिक नाहिं बड़ाई। जातुधानि-कुच-गर मर्षत तब, तहाँ पूर्नता पाई—१-२१५।

जातू—संज्ञा पुं. [सं.] वज्र, कुलिश, पवि।

जातैं—क्रि. वि. [हिं. जा + तैं (प्रत्य.)] जिससे। उ.—सोइ कछु कीजै दीनदयाल। जातैं जन छन चरन न छाँड़ै, करुनासागर, भक्तरसाल—१-१२७।

जातौ—क्रि. अ. [हिं. जाना] (१) जाता, होता। उ.—जम कौ त्रास सबै मिटि जातौ, भक्त नाम तेरौ परतौ—१-२९७। (२) नष्ट होता (है), जाता है। उ.—सूरदास कछु थिर न रहैगो जो आयौ, सो जातौ—१-३०२। (३) जाता, प्रस्थान करता।

संज्ञा पुं.—लै जातौ—क्रि. स.= ले जाता, साथ लिवा जाता। उ.—रावन मारि, तुम्हैं लै जातौ, रामाज्ञा नहिं पायौ—९-८८।

जात्य—वि. [सं.] (१) अच्छे वंश का, कुलीन। (२) श्रेष्ठ, उत्तम। (३) अच्छा लगनेवाला, सुंदर।

जात्र, जात्रा—संज्ञा स्त्री. [सं. यात्रा] यात्रा। उ.—हुतौ

आढय तब कियौ असद्व्यय, करी न ब्रज-बन-जात्र। पोषे नहिं तुव दास प्रेम सौं, पोष्यौ अपनौ गात्र—१-२१६।

जात्री—संज्ञा पुं. [सं. यात्री] **यात्रा करनेवाला।**

जाथका—संज्ञा स्त्री. [सं. जूथिका] **ढेरी, राशि।**

जादव—संज्ञा पुं. [सं. यादव] **यदुवंशी।** उ.—यह कहि पारथ हरि-पुर गए। सुन्यौ, सकल जादव छै भए—१-२८६।

जादवनाथ, जादवपति—संज्ञा पुं. [सं. यादव+नाथ, पति] **श्रीकृष्णचंद्र।** उ.—(क) जन यह कैसे कहै गुसाईं। तुम बिनु दीनबंधु जादवपति, सब फीकी ठकुराई—१-१६५।

जादवराइ, जादवराई—संज्ञा पुं. [सं. यादव+हिं. राय] **श्रीकृष्णचंद्र।** उ.—(क) भक्तबछल श्री जादवराइ। भीषम की परतिज्ञा राखी, अपनौ बचन फिराइ—१-२६७। (ख) हरि सौं भीषम बिनय सुनाई। कृपा करी तुम जादवराई—१-२७७।

जादसपति, जादसपती—संज्ञा पुं. [सं यादसांपति] **जल-जीव-जंतु के स्वामी, वरुण।**

जादा—वि. [फ़ा. ज़्याद:] **ज्यादा, अधिक।**

जादू—संज्ञा पुं. [फ़ा.] (१) **अद्‌भुत काम, इंद्रजाल।** (२) **अद्‌भुत खेल या कृत्य।** (३) **टोना, टोटका।** (४) **मोहनी शक्ति।**

जादूगर—संज्ञा पुं. [फ़ा.] **जादू करनेवाला।**

जादूगरी—संज्ञा स्त्री. [फ़ा.] **जादूगर का खेल।**

जादौ—संज्ञा पुं [सं. यादव] **यदुवंशी।** उ.—रोवत सुनि कुंती तहँ आई। कह्यौ, कुसल जादौ-जदुराई—१-२८८।

जादौकुल—संज्ञा पुं. [सं. यादव+कुल] **यादवकुल, यदुवंश।** उ.—फूले फिरैं जादौकुल आनँद समूल मूल, अंकुरित पुन्य फूले पाछिले पहर के—१०-३४।

जादौपति—संज्ञा पुं. [सं. यादव+पति] **श्रीकृष्णचंद्र।** उ.—अब किहिं सरन जाउँ जादौपति, राखि लेहु, बलि, त्रास निवारी—१-२६०।

जादौराइ, जादौराई—संज्ञा पुं. [सं. यादव+हिं. राय] **श्रीकृष्णचंद्र।** उ.—तुम्हरी गति न कछु कहि जाइ। दीनानाथ, कृपाल, परम सुजान जादौराइ—३-३।

जान—संज्ञा स्त्री. [सं. ज्ञान] (१) **ज्ञान, जानकारी।** (२) **समझ, अनुमान, ख़्याल, विचार।**

यौ.—जान-पहचान—**परिचय, जानकारी।**

मुहा.—जान में—**जानकारी में, ध्यान में।**

वि. [सं. ज्ञानी] **सुजान, ज्ञानवान, चतुर।** उ.—प्रभु कौ देखौ एक सुभाइ। अति-गंभीर-उदार-उदधि हरि जान-सिरोमनि राइ—१-८।

संज्ञा पुं. [सं. जानु] **घुटना।**

संज्ञा पुं. [फ़ा. जानू] **जाँघ, रान।**

अव्य. [हिं. जानो] **जानो, मानो।**

संज्ञा पु. [सं. यान] (१) **सवारी।** (२) **विमान।**

संज्ञा स्त्री. [फ़ा.] (१) **प्राण, जीव, दम।**

मुहा.—जान आना—**जी ठिकाने होना, चित्त स्थिर होना।** जान का गाहक (लेवा)—(१) **मार डालने की इच्छा रखनेवाला।** (२) **परेशान करनेवाला।** जान का रोग—**सदा कष्ट देनेवाला विषय, व्यक्ति या वस्तु।** जान के लाले पड़ना—**जान बचाना कठिन हो जाना।** अपनी जान को जान न समझना—(१) **अपने प्राण की चिंता न करना।** (२) **बहुत ज्यादा परिश्रम करना, परिश्रम के आगे अपने सुख-दुख की परवाह न करना।** दूसरे की जान को जान न समझना—**दूसरे से बहुत ज्यादा परिश्रम कराना, अपने काम के आगे दूसरे के सुख-दुख की परवाह न करना।** (दूसरी की, किसी की) जान को रोना—**कष्ट देनेवाले को झुँझलाहट के साथ याद करके उसे बुरा-भला कहना।** जान खाना—(१) **बार-बार परेशान करना।** (२) **किसी बात या काम के लिए बार-बार कहना।** जान खोना—**मरना।** जान चुराना—**किसी काम को न करने की इच्छा से टाल-टूल करना।** जान छुड़ाना—(१) **किसी झंझट से बचने के लिए अपने को अलग रखना, संकट टालना।** (२) **प्राण बचाना।** जान छूटना—(१) **किसी झंझट या मुसीबत से छुटकारा मिलना।** (२) **प्राण बचना।** जान जाना—**मरना।** (किसी पर) जान जाना—**(किसी से) इतना प्रेम होना कि उसे बिना देखे विकल हो**

जाना। जान जोखों—**जीवन का संकट या डर।** जान तोड़कर—**बहुत परिश्रम करके।** जान दूभर होना—**झंझटों, कष्टों या संकटों के मारे जीने की इच्छा न रह जाना।** जान देना—**मरना।** (किसी पर) जान देना—(१) **किसी के अप्रिय कार्य से दुखी होकर, लजाकर या क्रोध से मरना।** (२) **किसी को इतना चाहना कि उसके लिए प्राण देने को तैयार रहना।** (किसी के लिए) जान देना—**(किसी से) इतना ज्यादा प्रेम करना कि सब कुछ सहने, यहाँ तक कि प्राण तक देने, को तैयार रहना।** (किसी वस्तु के लिए या पीछे) जान देना—**किसी वस्तु की प्राप्ति या रक्षा के लिए प्राण तक देने को तैयार रहना।** जान निकलना—(१) **मरना।** (२) **डर लगना।** (३) **बहुत कष्ट होना।** जान पड़ना—**ज्ञात होना, मालूम पड़ना।** जान पर आ बनना (नौबत आना)—(१) **बहुत परेशानी होना।** (२) **जान बचना कठिन मालूम होना।** जान पर खेलना—**प्राण की परवाह न करके अपने को किसी संकट या मुसीबत में डालना।** जान बचाना—(१) **प्राण की रक्षा करना।** (२) **किसी झंझट या मुसीबत से बचने के लिए अपने को दूर रखना।** जान मार कर काम करना—**कड़ा परिश्रम करना।** जान मारना—(१) **मार डालना।** (२) **परेशान करना।** (३) **बहुत मेहनत करना।** (४) **कड़ा काम लेना।** जान में जान आना—**धीरज बँधना, भय या घबराहट का संकट-काल टल जाना।** जान लेना—(१) **मार डालना।** (२) **परेशान करना।** (३) **कड़ा काम लेना।** जान सी निकलने लगना—(१) **बहुत कष्ट होना।** (२) **संकट या कष्ट से घबड़ा जाना।** जान सूखना—(१) **भय या संकट के कारण स्तब्ध रह जाना।** (२) **बहुत बुरा लगना, परंतु कुछ कह न सकना; खल जाना।** (३) **बड़ा कष्ट होना।** जान से जाना—(१) **मरना।** (२) **बहुत कष्ट सहना या परेशान होना।** जान से मारना—**प्राण लेना।** जान से हाथ धोना—**मर जाना।** जान हलकान (हलाकान) करना—**तंग या हैरान करना।** जान हलकान (हलाकान) होना—**तंग या परेशान होना।** जान हथेली पर लिये फिरना—**जान की परवाह न करके संकट का सामना करना।** जान होंठों पर आना—(१) **प्राण निकलने को होना।** (२) **बहुत कष्ट होना।**

(२) **बल, शक्ति।** (३) **उत्तम या श्रेष्ठ अंश या भाग, सार भाग या तत्व।** (४) **शोभा, सुंदरता, मजा या स्वाद बढ़ानेवाली चीज।**

मुहा.—जान आना—**शोभा या सुंदरता बढ़ना।**

क्रि. अ. [हिं. जाना] (१) **जाना, प्रस्थान करना।** (२) **बीतना, व्यर्थ जाना, निष्फल होना।**

प्र.—लागे (लागो) जान—**बीतने लगे, व्यर्थ ही कटने लगे।** उ.—(क) हरि न मिले माई री जनम ऐसे ही लागो जान—२७४३। (ख) अब यों ही लागे दिन जान—२७४४। पाऊँ जान—**जाने का मार्ग पाऊँ।** उ.—चहुँ दिसि लंक-दुर्ग दानव दल, कैसैं पाऊँ जान—९-७५।

क्रि. स. [हिं. जानना] **जानकर, समझकर।**

मुहा.—जान-अजान—**जान बूझकर या बे समझे बूझे।** उ.—जान-अजान नाम जो लेइ। हरि बैकुंठ बास तिहिं देइ—६-४। अपनैं जान—**अपनी समझ में, जहाँ तक मेरी बुद्धि जाती है।** उ.—अपनैं जान मैं बहुत करी—१-११५। जान पड़ना—(१) **मालूम होना, प्रतीत होना।** (२) **अनुभव होना।** जानकर अनजान बनना—**दूसरे को धोखा देने या स्वयं झंझट और परेशानी से बचने के लिए जानते हुए भी किसी प्रसंग में अनभिज्ञ बनना।** जान-बूझकर—**समझ-बूझकर, सोच-विचार कर।** जान रखना—(१) **ध्यान में रखना।** (२) **(चेतावनी देते या धमकाते हुए) समझाना।**

जानई—क्रि. स. [हिं. जानना] (१) **जानता (है), अनुभव करता (है)।** उ.—दीपक पीर न जानई (रे) पावक परत पतंग। तनु तौ तिहिं ज्वाला जर्‌यौ, (पै) चित न भयौ रस-भंग—१-३२५। (२) **परवाह करती, ध्यान देती।** उ.—कछु कुल-धर्म न जानई, रूप सकल जग राँच्यौ (हौं)—१-४४।

जानकार—वि. [हिं. जानना + कार (प्रत्य.)] (१)

जाननेवाला, जानकारी रखनेवाला। (२)कुशल, चतुर।

जानकारी—संज्ञा स्त्री. [हिं. जानकारी] (१) विषय या प्रसंग का ज्ञान या परिचय। (२) कुशलता, विज्ञता।

जानकि, जानकी—संज्ञा स्त्री. [सं. जानकी] राजा जनक की पुत्री सीता जो श्रीरामचंद्र की पत्नी थीं। उ.—इहिं बिधि सोच करत अति ही नृप, जानकि-ओर निरखि बिलखात—९-३८।

जानकी-जानि—संज्ञा स्त्री. [सं.] जानकी जिनकी स्त्री है वे रामचंद्र जी।

जानकी जीवन—संज्ञा पुं. [सं.] जानकी के लिए जीवन-रूप हैं जो वे रामचंद्र जी।

जानकीनाथ—संज्ञा पुं. [सं.] जानकी के पति श्रीरामचंद्र-जी। उ.—सौ बातन की एकै बात। सब तजि भजौ जानकीनाथ।

जानकी-मंगल—संज्ञा पुं. [सं.] तुलसीदास जी का एक काव्य जिसमें जानकी-विवाह वर्णित है।

जानकीरमण, जानकीरमन, जानकीरवन—संज्ञा पुं. [सं. जानकीरमण] जानकी के पति श्रीराम।

जानत—क्रि. स. [हिं. जानना] जानते हैं। उ.—जिहिं जिहिं भाइ करत जन-सेवा अंतर की गति जानत—१-१३।

जानदार—वि. [फ़ा.] (१) जिसमें जान हो, सजीव। (२) जिसमें बल या बूता हो, सबल।

संज्ञा पुं.—जीव, जानवर, प्राणी।

जाननहार—वि. [हिं. जानना + हारा] जाननेवाला।

जानना—क्रि. स. [सं. ज्ञान] (१) किसी वस्तु या प्रसंग के संबंध में ज्ञान या जानकारी होना।

यौ.—जानना-बूझना—ज्ञान या जानकारी रखना।

मुहा.—किसी का कुछ जानना—(१) किसी से सहायता पाना। (२) किसी के किये हुए उपकार को मानना। मैं नहीं जानता—मैं जिम्मेदार नहीं हूँ।

(२) सूचना या खबर पाना या रखना। (२) सोचना, अनुमान करना, अटकल लड़ाना।

जानपद—संज्ञा पुं. [सं.] (१) जनपद संबंधी वस्तु या प्रसंग। (२) जनपद वासी। (३) देश। (४) लगान।

जानपदी—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) वृत्ति। (२) एक अप्सरा।

जानपन, जानपना—संज्ञा पुं. [हिं. जान+पन (प्रत्य.)] (१) जानकारी। (२) चतुराई, कुशलता।

जानपनी—संज्ञा स्त्री. [हिं. जान + पन (प्रत्य.)] (१) जानकारी, अभिज्ञता। (२) चतुराई, कुशलता।

जानमनि, जानराय—संज्ञा पुं. [हिं. जान + मणि, राय] ज्ञानियों में श्रेष्ठ, बहुत बुद्धिमान व्यक्ति, सुजान।

जानवर—संज्ञा पुं. [फ़ा.] (१) जीव, प्राणी। (२) पशु।

वि.—मूर्ख, उजड्ड, नासमझ।

जानशीन—संज्ञा पुं. [फ़ा.] (१) वह जो स्वीकृति लेकर किसी पद पर काम करे। (२) उत्तराधिकारी।

जानसिरोमनि—संज्ञा पुं. [सं. ज्ञानशिरोमणि] ज्ञानियों में श्रेष्ठ, बहुत बुद्धिमान मनुष्य। उ.—प्रभु कौ देखौ एक सुभाइ। अति गंभीर उदार उदधि हरि जान-सिरोमनिराइ—१-८।

जानहार—वि. [हिं. जानना + हार (प्रत्य.)] जानने-समझनेवाला, जानकार।

वि. [हिं. जाना + हारा] (१) जानेवाला। (२) खो जानेवाला। (३) मरने या नष्ट हो जानेवाला।

जानहु—अव्य. [हिं. जानना] जानो, मानो।

जाना—क्रि. स. [हिं. जानना] समझा, मालूम किया। उ.—पौरि-पाट टूटि परे, भागे दरवाना। लंका मैं सोर परयौ, अजहूँ तैं न जाना—९-१३९।

क्रि. अ. [सं. यान = सवारी] (१) गमन या प्रस्थान करना, अग्रसर होना।

मुहा.—किसी बात पर जाना—किसी बात या कथन पर ध्यान देना या उसे मान लेना।

(२) दूर या अलग होना। (३) हानि होना।

मुहा.—क्या जाना है—क्या हानि होनी है? किसी बात से भी जाना—बहुत कुछ करके भी कुछ हाथ या अधिकार न होना, कुछ करने योग्य न समझा जाना।

(४) खोना, चोरी होना। (५) (समय) बीतना या व्यतीत होना। (६) नष्ट या चौपट होना, बिगड़ जाना। (७) मरना। (८) बहना, प्रवाहित रहना।

क्रि. स. [सं. जनन] जन्म देना, पैदा करना।

जानि—संज्ञा स्त्री. [सं.] पत्नी, भार्या।

वि. [सं. ज्ञानी] (१) **जानकार। (२) ज्ञानी।**

क्रि. स. [हिं. जानना] (१) **जान कर, समझ कर, सूचना पाकर।** उ.—जैंसे तुम गज कौ पाउँ छुड़ायौ। अपने जन कौं दुखित जानि कै पाउँ पियादे धायौ—१-२०। (२) **सावधान हो, होश में आ, चेत जा।** उ.—रे मन, आपु कौ पहिचानि। सब जनम तैं भ्रमत खोयौ, अजहुँ तौ कछु जानि—१-७०। (३) **जान-बूझकर।** उ.—(क) जानि बँधाए श्री बनवारी—३६१। (ख) औरन जानि जान मैं दीन्हौ—१०-३१४।

मुहा.—जानि बूझि—**जान बूझकर, सब कुछ समझते हुए भी।** उ.—जानि-बूझि मैं होत अजान—१-३४२।

जानिब—संज्ञा स्त्री. [अ.] **ओर, दिशा।**

जानिबदार—संज्ञा स्त्री. [फ़ा.] **पक्षपाती, तरफदार।**

जानिबदारी—संज्ञा स्त्री. [फ़ा.] **पक्षपात, तरफदारी।**

जानिबो—क्रि. स. [हिं. जानना] **जानना, समझना।** उ.—मेरे जीव ऐसी आवर्त भइ चतुरानन की साँझ। सूर बिन मिले प्रलय जानिबो इनही दिवसनि साँझ—२७६२।

जानियत—क्रि. स. [हिं. जानना] **जानता (हूँ), समझता (हूँ), अनुभव करता (हूँ)।** उ.—जे जे जात, परत ते भूतल, ज्यौं ज्वालागत चीर। कौन सहाइ, जानियत नाहीं, होत बीर निर्बीर—१-२६६।

जानियै—क्रि. स. [हिं. जानना] **जानो, जान लो।**

प्र.—ना जानियै—**न जाने।** उ.-ना जानियै आहि धौं को वह, ग्वाल रूप बपु धारि—६०४।

जानिहौं—क्रि. स. [हिं. जानना] **जानूँगा, अनुभव करूँगा।** उ.—जानिहौं अब बाने की बात—१-१७६।

जानी—क्रि. स. [हिं. जानना] (१) **ज्ञात होना, जान पड़ना।** उ.—(क) अबिगत-गति जानी न परै। मन-बच-कर्म अगाध अगोचर, किहि बिधि बुधि सँचरै—१-१०५। (ख) हरि, हौं महापतित, अभिमानी। परमारथ सौं बिरत, विषय-रत, भाव-भगति नहिं नैंकहु जानी—१-१४६। (२) **जान ली, ज्ञात हो गयी।** उ.—(क) सूर स्याम उर ऊपर उबरे, यह सब घर-घर जानी—१०-५३। (ख) ब्रज-भीतर उपज्यौ मेरौ रिपु, मैं जानी यह बात—१०-६०। (ग) उन ब्रज-बासिनि बात न जानी समुझे सूर सकट पग पेलत—१०-६३। (घ) तुमहिं भलैं करि जानो—५३४।

वि. [फ़ा. जान] **जान से संबंध रखनेवाला।**

यौ.—जानी दुश्मन—**प्राण का गाहक शत्रु।**

संज्ञा स्त्री.—**प्राणप्यारी।**

जानु—संज्ञा पुं. [सं.] **घुटना।** उ.—जानु-जंघ त्रिभंग सुंदर कलित कंचन दंड—१-३०७।

संज्ञा पुं. [फ़ा. जानू] **जाँघ, रान।** उ.—जानु सुजानु करभ-कर आकृति, कटि-प्रदेस किंकिनि राजै—१-६६।

अव्य. [हिं. जानो] **मानो, जानो।**

जानुपाणि, जानुपानि—क्रि. वि. [सं. जानुपाणि] **पैयाँ-पैयाँ, हाथ-पैरों के बल।**

जानूँ—क्रि. स. [हिं. जानना] **समझूँ, मानूँ, जानता हूँ।** उ.—और बात नहिं जानूँ—सारा. ११७।

मुहा.—तो मैं जानूँ—**(यदि अमुक कार्य हो जाय या बात ठीक सिद्ध की जा सके) तो मैं समझूँ।**

जानू—संज्ञा पुं. [फ़ा.] **जंघा, जाँघ।**

जानै—क्रि. स. [हिं. जानना] **जान लेता है, ज्ञान रखता है, अनुभव करता है।** उ.—मन-बानी कौं अगम अगोचर सो जानै जो पावै—१-२।

जानो—अव्य. [हिं. जानना] **मानो, जैसे।**

जानौं—क्रि. स. [हिं. जानना] **जानता-समझता हूँ।**

जानौ—अव्य. [हिं. जानना] **मानो, जैसे।**

जानौगे—क्रि. स. [हिं. जानना] **समझोगे, मानोगे।**

मुहा.—तब जानौगे—**(सावधान या मना करते हुए कहना कि अमुक कार्य करने पर) बुरा फल या परिणाम देखोगे।** उ.—अब जु कालि ते अनत सिधारो तब जानौगे तुम्हहिं हरी—११८४।

जान्य—संज्ञा पुं. [सं.] **एक ऋषि का नाम।**

जान्यो, जान्यौ—क्रि. स. [हिं. जानना] (१) **पता हुआ, मालूम पड़ा, जाना, ज्ञात हुआ।** उ.—रावन सौं नृप जात न जान्यौ माया बिषम सीस पर नाची—१-१७।

(२) **समझा, माना, अनुमान किया।** उ.—पायौ बीच इंद्र अभिमानी हरि बिन गोकुल जान्यौ—२८२०।

जान्ह—संज्ञा पुं. [हिं. जाँघ] **जाँघ, रान।**

जाप—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **मंत्र या स्तोत्र की विधिपूर्वक आवृत्ति।** उ.—लंपट-धूत, पूत दमरी कौ, बिषय-जाप कौ जापी—१-१४०। (२) **भगवान के नाम का बार-बार स्मरण-उच्चारण।**

जापक—संज्ञा पुं. [सं.] **जप करनेवाला।**

जापन—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **जप।** (२) **निवारण।**

जापर—सर्व. [हिं. जा=जो+पर (प्रत्य.)] **जिस पर।** उ.—जापर दीनानाथ ढरै। सोइ कुलीन, बड़ौ सुंदर सोइ, जिहिं पर कृपा करै—१-३५।

जापा—संज्ञा पुं. [सं. जनन] **सौरी, सौरगृह।**

जापी—संज्ञा पुं. [सं. जापिन] **जापक, जप करनेवाला।** उ.—माधौ जू, मोतैं और न पापी। लंपट, धूत, पूत दमरी कौ, बिषय-जाप कौ जापी—१-१४०।

जापू—संज्ञा पुं. [सं. जाप] **जप, जाप।**

जाफ—संज्ञा पुं. [अ. ज़ोफ़, ज़ाफ] **मूर्च्छा, बेहोशी।**

जाफत—संज्ञा स्त्री. [अ. ज़ियाफत] **भोज, दावत।**

जाफरान—संज्ञा पुं. [अ. ज़ाफ़रान] **केसर।**

जाफरानी—संज्ञा पुं. [हिं. जाफरान] **केसर के रंग का।**

जाब—क्रि. अ. [हिं. जाना] **जाना, गमन करना।** उ.—इन नैननि के नीर सखी री सेज भई घरनाव। चाहत हौं ताही पै चढ़िकै हरि जी के ढिग जाब—२७६८।

जाबजा—क्रि. वि. [फ़ा.] **जगह-जगह, इधर-उधर।**

जाबर—वि. [सं. जर्जर] **बुड्ढा, वृद्ध।**

जाबाल—संज्ञा पुं. [सं.] **एक मुनि जिनकी माता का नाम जबला था। सत्यकाम नाम से भी इन्हें पुकारा जाता है।**

जाबालि—संज्ञा पुं. [सं.] **एक ऋषि जो राजा दशरथ के गुरु और मंत्री थे। इन्होंने चित्रकूट-सभा में राम को घर लौटने के लिए समझाया था।**

जाबिर—वि. [फ़ा.] **जबरदस्त, अत्याचारी।**

जाब्ता—संज्ञा पुं. [अ. ज़ाब्ता] **नियम, कानून।**

जाम—संज्ञा पुं. [सं. याम] **पहर, प्रहर, तीन घंटे का समय।** उ.—रघुनाथ पियारे, आजु रहौ (हौ)। चारि जाम बिस्राम हमारैं, छिन-छिन मीठे बचन कह्यौ (हौ)—६-३३।

संज्ञा पुं. [फ़ा.] (१) **प्याला।** (२) **कटोरा।**

संज्ञा पुं. [सं. जंबू] **जामुन का फल।**

जामगी—संज्ञा पुं. [लश.] **तोप का पलीता।**

जामत—क्रि. स. [हिं. जमना] (१) **उगता है।** (२) **उत्पन्न होता है।** उ.—बिरह दुख जहाँ नाहिं जामत नहीं उपजै प्रेम—२६०६।

जामदग्न्य—संज्ञा पुं. [सं.] **जमदग्नि के पुत्र परशुराम।**

जामदानी—संज्ञा स्त्री. [फ़ा. जाम:दानी] (१) **एक कढ़ा हुआ कपड़ा।** (२) **शीशे या अबरक की बनी पेटी।**

जामन—संज्ञा पुं. [हिं. जमाना] **वह दही या खट्टा पदार्थ जो दूध जमाने के काम आता है।**

संज्ञा पुं. [सं. जंबू] **जामुन का फल।**

जामना—क्रि. अ. [हिं. जमना] **उगना, उत्पन्न होना।**

जामनी—वि. [सं. यावनी] **यवनों की।**

जामल—संज्ञा पुं. [सं.] **एक तंत्र।**

जामवँत, जामवंत—संज्ञा पुं. [सं. जांबवान्] **सुग्रीव का मित्र जो ब्रह्मा का पुत्र था। त्रेता में इसने श्रीरामचंद्र की सहायता की थी, द्वापर में श्रीकृष्ण ने इसे हरा कर इसकी कन्या जांबवती से विवाह किया था और सतयुग में इसने वामन भगवान की परिक्रमा की थी।**

जामवती—संज्ञा स्त्री. [सं. जांबवती] **जांबवान की पुत्री जो श्रीकृष्ण को ब्याही थी।** उ.—रिच्छराज वह मनि तासौं लै जामवती कहँ दीन्हीं—१० उ. २६।

जामा—संज्ञा पुं. [फ़ा.] (१) **कपड़ा, वस्त्र।** (२) **एक ढीला-ढाला पहनावा जो प्रायः विवाह आदि के अवसर पर अब भी पहना जाता है।**

मुहा.—जामे से बाहर होना—**बहुत क्रुद्ध होना।** जामा (जामे) में फूला न समाना—**बहुत प्रसन्न होना।**

क्रि. अ. [हिं. जमना] **जमा, उगा, उत्पन्न हुआ।**

संज्ञा पुं. [सं. याम] **याम, पहर।**

जामात, जामाता, जामातु—संज्ञा पुं. [सं. जामातृ] **कन्या का पति, दामाद।**

जामातनि—संज्ञा पुं. बहु. [सं. जामातृ+हिं. (प्रत्य.)] **जामाताओं को, दामादों को।** उ.—तनया जामातनि कौं समदत, नैन नीर भरि आए—९-२७।

जामि—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **बहन, भगिनी।** (२) **पुत्री।** (३) **पतोहू।** (४) **कुल-गोत्र की स्त्री।**

जामिक—संज्ञा पुं. [सं. यामिक] **पहरेदार, रक्षक।**

जामिन—संज्ञा पुं. [अ. ज़ामिन] **जमानत करनेवाला।**

जामिनि, जामिनी—संज्ञा स्त्री. [सं. यामिनी] **रात।** उ.—जाम रहत जामिनि के बीतैं, तिहिं औसर उठि धाऊँ। सकुच होत सुकुमार नींद मैं, कैसैं प्रभुहिं जगाऊँ—९-१७२।

संज्ञा स्त्री. [फ़ा.] **जमानत, जिम्मेदारी।**

जामी—संज्ञा स्त्री. [सं. यामी] **पहरुआ, रक्षक।**

संज्ञा स्त्री. [सं. जामि] (१) **बहन।** (२) **पुत्री।**

संज्ञा पुं. [हिं. जमना, जनमना] **पिता।**

संज्ञा स्त्री. [हिं. जमीन] **भूमि, जमीन।**

जामुन—संज्ञा पुं. [सं. जंबु] **एक छोटा बेर के बराबर फल जिसका रंग बैंगनी और काला होता है।**

जामुनी—वि. [हिं. जामुन] **बैंगनी या काले रंग का।**

जामे—क्रि. अ. [हिं. जमना=उगना] **जमे, उगे, उत्पन्न हुए।** उ.—दधि-सुत जामे नंद-दुवार—१०-१७३।

जामेय—संज्ञा पुं. [सं.] **बहन का लड़का, भांजा।**

जाय—अव्य. [फ़ा. जा=ठीक] **व्यर्थ, निष्फल।**

वि.—**उचित, वाजिब, ठीक।**

जायका—संज्ञा पुं. [अ. ज़ायका] **स्वाद, लज्जत, मजा।**

जायकेदार—वि. [हिं. जायका+फ़ा. दार] **स्वादिष्ट।**

जायचा—संज्ञा पुं. [फ़ा. ज़ायचा] **जन्मपत्री।**

जायज—वि. [अ. जायज़] **उचित, मुनासिब, ठीक।**

जायजा—संज्ञा पुं. [अ.] (१) **जाँच।** (२) **हाजिरी।**

जायद—वि. [फ़ा. ज़ायद] **ज्यादा, अधिक।**

जायदाद—संज्ञा स्त्री. [फ़ा.] **भूमि और धन-संपत्ति।**

जायफर, जायफल—संज्ञा पुं. [सं. जातीफल] **एक सुगंधित फल।**

जायस—संज्ञा पुं.—**रायबरेली का समीपवर्ती एक प्राचीन स्थान जहाँ सूफी फकीरों की गद्दी है।**

जाया—संज्ञा स्त्री. [सं.] **पत्नी, भार्या।** उ.—जरा मरन ते रहित अमाया। मात पिता सुत बंधु न जाया।

वि. [फ़ा. जाया] **खराब, नष्ट, व्यर्थ।**

क्रि. स. [हिं. जनना] **पैदा या उत्पन्न किया।**

जायाजीव—संज्ञा पुं. [सं.] **बगुला पक्षी।**

जायु—संज्ञा पुं. [सं.] **औषध, दवा।**

वि.—**जीतनेवाला, जैता।**

जाये—क्रि. स. [हिं. जनना] **पैदा किये, जन्म दिया।**

जायो, जायौ—क्रि. स. [हिं. जनना] **जना, पैदा किया, जन्म दिया।** उ.—(क) मैया मोहिं दाऊ बहुत खिझायौ। मोसौं कहत मोल कौ लीन्हौं, तू जसुमति कब जायौ—१०-२१५। (ख) धनि जसुमति ऐसो सुत जायौ—१०-२४८।

वि.—**उत्पन्न या पैदा किया हुआ।** उ.—अहो जसोदा कत त्रासति हौ यहै कोखि कौ जायौ—३५६।

जार—संज्ञा पुं. [सं. जाल] **जाल, फंदा।** उ.—दसौं दिसि तैं कर्म रोक्यौ, मीन कौं ज्यौं जार—२-४।

संज्ञा पुं. [सं.] **उपपति, प्रेमी।**

वि.—**मारनेवाला, नाशक।**

क्रि. स.—**जलाना, आग लगाना।**

प्र.—जार दई—**जला दी।** उ.—चले छुड़ाय छिनक मैं तबहीं जार दई सब लंक—सारा. २८६।

जारकर्म—संज्ञा पुं. [सं.] **व्यभिचार।**

जारज—संज्ञा पुं. [सं.] **उपपति से उत्पन्न संतान।**

जारजयोग—संज्ञा पुं. [सं.] **जन्मपत्री में पड़नेवाला एक योग जिससे ज्ञात होता है कि संतान जारज है।**

जारण—संज्ञा पुं. [सं.] **धातु को भस्म करना।**

जारत—क्रि. स. [हिं. जलाना] **जलाती है, भस्मती है।** उ.—(क) काल अगिनि सबही जग जारत—१-२८४। (ख) हौं तो मोहन को बिरहजरी रे तू कत जारत रे पापी—२८४९।

जारन—संज्ञा पुं. [हिं. जलाना] (१) **ईंधन; लकड़ी, कंडे आदि।** (२) **जलाना, बलाना, सुलगाना।**

क्रि. स.—**जलाने, भस्म करने।** उ.—(क) अस्वत्थामा बहुरि खिस्याइ। ब्रह्म-अस्त्र कौं दियौ चलाइ। गर्भ परीच्छित जारन गयौ। तब हरि ताहि जरननहिं दयौ—१-२८९। (ख) पुनि रिषिहूँ कौं जारन लागयौ—९-५।